CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1.2

श्रीकृष्ण लीला रहस्य

अर्थात

श्रीगर्गसंहिता का

गद्य भाषानुवाद

श्यामां गौरांग नागेन्द्रकुरद मित मद प्रीति प्रगाव गुरुहां,
रम्यां वेणीं चिकुर निकरां लम्ब पादां किशोरीम् !

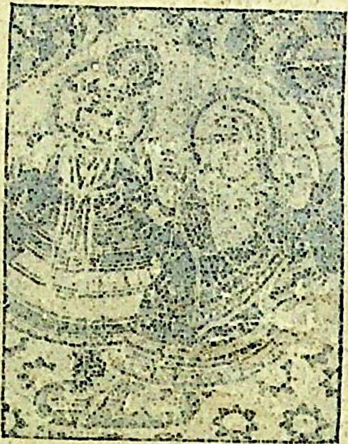

नत्राङ्गे गुञ्ज पुञ्जे हरि मुख कुहरे सुंदरीं नाग वल्ली पर्णी
कर्पूर वाद्यों निजनाले मधुरां राधिकां भावयामि ॥

लेखक— श्री चित्रगुप्त वंशोद्भव लाला कन्हैया लाला-
त्मज भक्त भूषण पाथिक बाबू बाँकेबिहारी
लाल सौख्यसेन उपनाम बाँकेप्रिया—

प्रकाशक—बाबू कुंजबिहारीलाल सौख्यसेन-लखनऊ !

प्रथम बार
१००० प्रति

सर्वाधिकार

मूल्य ॥)
डाक व्यय ।-)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3,4|10

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगौरचन्द्र

आम्नाय-ग्रन्थालय

समर्पणम्

इस "श्रीकृष्ण लीला रहस्य" नामिनी पुस्तक को मैं अपने परम पूज्य श्रीभगवद् रूप गुरुदेव (श्रीगोस्वामी मधुसूदनलाल जी महाराज) पीठस्थ श्रीराधारमण सेवाधिकारी, भगवत् लीला विभूति, आचार्य श्रीअनन्तलालजी गोस्वामी के कर कमलों में सप्रेम समर्पण करता हूँ—

बांकेबिहारीलाल

(बांकेपिया)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

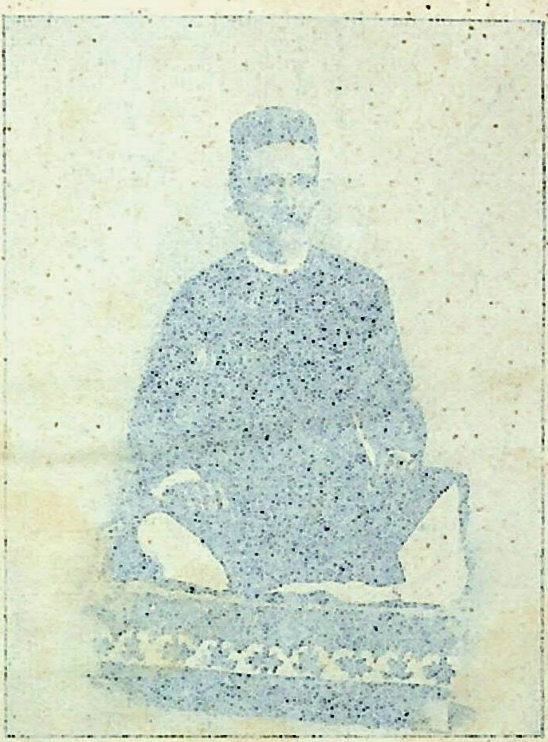

बाँकेबिहारीलाल सौख्यसेन उपनाम
बाँकेपिया, भक्तभूषण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

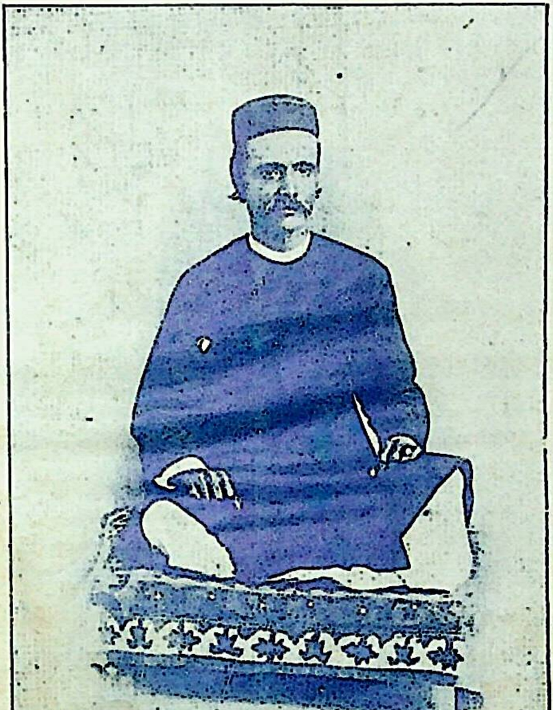

बांकेविहारीलाल सौख्यसेन उपनाम
बांकेपिया, भक्तभूषण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतमिलाप, करौंदी
वाराणसी-5

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतमिलाप, करौंदी
वाराणसी-5

श्रीगौरचन्द्रायनमः

नम्र निवेदन

उस परिपूर्णा तम प्रभु श्रीकृष्ण की समस्त अचिन्त्य शक्तियाँ दो भागों में विभक्त हो सकती हैं। एक ऐश्वर्य और द्वितीय माधुर्य और उन्हीं का तारतम्य, जो मनुष्य की ससीम बुद्धि से परे है, जगत् में अपना कार्य कर रहा है उसी पर आरूढ़ रहने और न रहने का नाम धर्माधर्म गुण दोष वा भलाई बुराई है जिसका परिणाम वर और शाप कहलाता है और उसी गुण दोष का शास्त्र कारों ने विधि निषेध द्वारा र्णिय कर दिया है— इस पुस्तक में ऐली ऐसी शक्तियों का समावेश पाया जाता है जिसमें मनुष्य बुद्धि अल्प तथा सीमा वद्ध होने से चकराने लगती है और जिसको न समझकर हम वनावटी और मिथ्या कह दिया करते हैं किन्तु ईश्वर एवं तपसिद्ध—मनुष्य शक्ति के लिये महान से महान कार्य न्यून ही कहा जा सकता है हम तनिक नहीं विचारते कि हमारे ऋषि लोग सत्य प्रज्ञ और आत्मशक्ति सम्पन्न थे वे अपनी आत्मशक्ति से समाधि द्वारा जगत् एवं जगत् के वाहर होते हुये समस्त कार्यों का निरीक्षण किया करते थे और उसी अनुभव को स्मृति रूप में लेख वद्ध कर गये हैं—

कोटि धन्यवाद है उस पर तत्व भगवान् श्रीकृष्ण का जिसने अपनी परम कृपा से इस मन्द मति तुच्छ दास द्वारा इस 'कृष्ण लीला रहस्य' पुस्तक को शीघ्र ही पूर्ण कराय दिया—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस पुस्तक की संक्षिप्त रचना कवि वर पं० गिरिधरदासजी रचित दोहा चौपाई बद्ध गर्ग संहिता के आधार पर की गई है ; यद्यपि मूल ग्रन्थ में केवल नव खण्ड संस्कृत गर्गसंहितानुसार दिये गये हैं और उनमें श्रीकृष्णावतार का मुख्य कारण दन्तवक्र और शिशुपाल वध अर्थात् जय विजयोद्धार एवं श्रीकृष्ण की महाभारत सम्बन्धीय लीलायें और अंतिम अन्तर्ध्यान लीला तथा यदुवंश का क्षय नहीं पाया जाता जिसका कारण यह ज्ञात होता है कि वे समस्त लीलायें श्रीगर्गमुनि और शौनक सम्वाद के पश्चात् की हैं इसीलिये उस पुस्तक में वर्णन नहीं हुई तथापि इस 'कृष्ण लीला रहस्य' में श्रीकृष्ण लीला पूर्ण करने को एक दशम खण्ड की सृष्टि भी "पार्षदोद्धार खण्ड" नाम से संक्षिप्त रूप में की गई है और पुस्तक में स्थान स्थान पर यथा योग्य कुछ पद भी दिये गये हैं—प्रथम इस दास का विचार व्रज भाषा में लिखने का था किन्तु कुछ मित्रों के आग्रह से देशीय सरल बोल चाल की भाषा में लिखी गई और इसी कारण इसकी भाषा मिश्रित हो गई है अतएव सज्जनों से सविनय निवेदन है कि कृपा करि इस अबोध बालभाषी दास की भाषा पर ध्यान न देकर एवं त्रुटियों को बनाकर भगवत् लीला रस पान करेंगे और दास के परिश्रम को सफल बनावेंगे—

आपका दासानुदास

बांकेबिहारीलाल सौख्यसेन

(बाँके पिया)

नादान महल रोड,

लखनऊ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* श्रीराधारमणोजयति *

श्रीकृष्ण लीला रहस्य

अर्थात्

श्रीगर्गसंहिता का गद्य भाषानुवाद

गोलोक खण्ड

दो०—श्री गौराङ्ग प्रिय सदा, श्रीव्रजराज कुमार ।
राधा रमण सुमि' हृदय, गुरु पद रज शिर धारि ॥१॥
गर्गसंहिता को लिखौं, कछु भाषा अनुवाद ।
प्रथम खण्ड गोलोक जो, वर्णौं सह आह्लाद ॥२॥

एक समय नैमिषारण्य में श्रीगर्गाचार्य मुनि का आगमन हुआ तहाँ श्रीशौनकजी ने शिष्यों सहित अभिवादन कर आदर सहित आसन देकर तिनका षोडष प्रकार पूजन किया तिसके उपरान्त हाथ जोड़ि सविनय प्रश्न किया कि हे मुनियों में श्रेष्ठ ! आप सर्वज्ञ और समर्थ हैं आप कृपा करि हम लोगों के प्रति आत्मज्ञान का उपदेश करने के योग्य हैं। जिससे हमारे समस्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संशयों का छेदन हो जाय। इतना सुनकर श्रीगर्गाचार्य जी बोले कि तुम्हारा ऐसा प्रश्न अति उत्तम और जगत् का कल्यान कारक है तिससे हम अति प्रसन्न हैं और उत्तर हेतु एक पूर्व इतिहास कहते हैं चित्त लगाकर सुनो जिसके श्रवणमात्र से सर्व पापन का नाश हो जाता है और आत्मज्ञान का रहस्य चित्त में स्थिर होता है।

मिथलापुर एक विशाल और परम रमणीक नगर है, तहाँ बहुलाश्व नाम राजा राज करता था। एक दिन श्रीनारद मुनि को आते देख बहुत आदर से दण्डवत् प्रणाम कर सिंहासन पर बैठारि और षोडष प्रकार पूजन करि हाथ जोड़ि पूछने लगा कि हे भगवन् यदि आप इस दास को अधिकारी समझें तो कृपा पूर्वक श्रीहरि के अवतारों का हेतु वर्णन करने को समर्थ हैं और यह भी कहिये कि भूमि पर श्रीहरि ने कितने अवतार अपने अंश से धारण किये और जो श्रीहरि अप्राकृत् गुण स्वरूप हैं तिनने प्राकृत् गुणों का आश्रय लेकर क्यों अवतार धारण किये, मेरी इस शंका को कृपा करके निवृत्त कीजिये। यह सुनि श्री नारदजी बोले कि राजा तू बड़ा धर्मात्मा है जो ऐसे उत्तम विषय जानने की इच्छा रखता है। अब चित्त लगाकर श्रवण कर। श्रीहरि के अनेक अवतार हैं वह स्वतन्त्र हरि अपनी इच्छा से किसी कार्यवश प्रकट होते हैं और कार्य करके अन्तर्हित हो जाते हैं सब में और सब से न्यारे हैं उन परिपूर्ण के गुण चरचा में कई हेतु हैं अंश, कला, अंशांश और आवेश अवतार धरा करते हैं यथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश अंश हैं, कपिल और कच्छपादिक कला अवतार हैं, मरीचादि अंशांश, भार्गवादि आवेश और श्रीनृसिंह, राम और नरनारायण जो श्वेतद्वीप साकेत और वैकुण्ठ निवासी हैं यह सब पूर्ण अवतार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं और गोलोक निवासी श्रीकृष्ण भगवान परिपूर्णतम हैं जो कोटि कोटि ब्रह्माण्ड के नायक हैं वे अव्यय, अविनाशी, घट घट वासी करुणाकर, आनन्द राशि और साधुजन के हृदय में ज्ञान प्रकाश करने वाले हैं, भूमि पर नर तन धारण करि कोटि कोटि कार्य करके अन्तर्ध्यान हो जाते हैं तिनके चरणों में वारम्वार नमस्कार है। यह सुनि राजा वहुलाश्व विनीत भाव से मुनिवर की वन्दना करके बोला हे विप्रवर कृष्ण भगवान् ही स्वयं परिपूर्ण तम हैं यह कैसे निश्चय होय सो कृपापूर्वक अपना दास जानि मेरे प्रति वर्णन कीजिये तब ब्रह्म पुत्र श्रीनारदजी हर्षित होकर बोले—कि संसार भार उतारने को यादव कुल में परिपूर्णतम श्रीकृष्ण भगवान् ही प्रकट होते हैं—जिसमें पूर्ण अंश, कला, विकला आवेशादि समस्त भाव लीन होते हैं तिसको परिपूर्णतम कहते हैं, एक अण्ड के नायक पूर्ण कहाते हैं और जिनमें सकल अण्ड की स्थिति और जो सूर्य समान सकल ब्रह्मांडों के प्रकाशक और परिचालक हैं सोई पूर्णतम श्री कृष्ण हैं। यह सुन राजा वहुलाश्व प्रेम से अधीर हो बोला हे भगवन् सो कृष्ण भगवान् मुझको कब दर्शन देयँगे, ऐसा प्रेम में गद्गद राजा को देखि श्रीनारद मुनि हर्षित हो बोले हे राजा धैर्य धर तेरे हेतु द्विज देव और साधु जनों के हेतु करुणानिधान श्रीकृष्ण भगवान् धरातल पर शीघ्र ही प्रकट होने वाले हैं। कोल कल्प में उन्होंने जो चरित्र किये उनको वर्णन करता हूँ सुन—जब अधर्मी जीवों ने मनुष्य शरीर पाय हरि भजन त्याग दिया और असुरों के अत्याचार से भूमि पर भारी भार होगया तब पृथ्वी कंपित हो गोरूप धारण कर रोती भई ब्रह्मा और रुद्र सहित वैकुण्ठ नाथ श्रीविष्णु के द्वार पर गई और भगवान् विष्णु की वन्दना करी तब रमापति नारायण जी बोले – यह कार्य हम से न सधैगा। अतएव विष्णुजी सब को साथ लेकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोलोक में श्रीकृष्ण के पास चले और श्रीवामनचरण छिद्र के निकट पहुँचे तहाँ से आगे ब्रह्म द्रव के समीप गये तहाँ अनेक अण्ड देखे जो पर्वत पर विल्व फल समान लुढ़क रहे थे। यह देख सुरगणों का सकल अभिमान नष्ट होगया। वहाँ से आगे जाय विरजा नदी देखी जिसकी रचना श्रीहरि ने स्वयं की थी और जिसकी सोपान मन की मोहने वाली अद्भुत विचित्र मणियों की बनी थीं जिसका तेज कोटि सूर्य चन्द्र के समान था तिसको देखि सब के नेत्रों में चकाचौंध होने लगी तब श्री विष्णु की आज्ञा से सब ने स्तुति करी तहाँ से आगे जाय अनन्त भगवान को देखा जो अपने अतुल प्रताप से सहस्र फणों पर गोलोक को धारण किये हुये थे जहाँ माया का लेश मात्र भी स्थान न था तिन शेष जी की वन्दना करी तहाँ श्याम स्वरूप क्रीट मुकुट धारण किये अनेक द्वारपाल देखे तिन पार्षदों से रोके जाने पर सब सुरगणों ने कहा कि हम लोग श्रीकृष्ण जी की सेवा हेतु उपस्थित हुये हैं। तब उन पार्षदों ने मंदिर में खबर करी तहाँ से एक सखी जिसका नाम शतशशिवदनी था निकसी उसने सब से पूछा कि तुम लोग किस अण्ड के वासी हो और क्या नाम है। यह वचन सुनि सब चकित हो गये और कहने लगे कि हम तो एक ही ब्रह्माण्ड गूलर फल समान जानते थे। यह सुनि वह सुन्दरी हँसी और कहने लगी कि यहाँ ब्रह्म द्रव में कोटि कोटि अण्ड हैं जब तुम लोग अपने स्थान का नाम तक नहीं बता सकते तो खबर किस प्रकार की जावै। तब श्रीविष्णु ने सुन्दरी को हास्य करते देखि कहा कि जब वामन भगवान् ने चरण विस्तार किया था उस विवर से जो अण्ड बना था हम लोग तहाँ के वासी और अधिपति हैं। तब उस बाला ने श्रीकृष्ण के समीप जाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सब व्यवस्था कही और आज्ञा पाय सब सुर गणों को भीतर लिवाय लै गई तहाँ मार्ग में सब ने गोवर्धन पर्वत देखा जो अति पुण्य प्रद था और परम सुहावन श्रीवृन्दावन देखा जो सुन्दर मनोहर कल्प वृक्ष और अद्भुत द्रुम वेलीलता से घिरा हुआ और सघन निकुंजों और गो गोपियों के विहार स्थानों से सुशोभित था और रास मंडल एवं परम पुनीत वन्शीवट देखा जिसके निकट श्रीयमुना अपनी तरङ्गों से कल्लोल कर रही थीं और अनेक स्वच्छ जल पूरित सरोवर भरे थे जहाँ हंस, मयूर, चकोर, कोकिलादि अनेक रङ्ग के पक्षी कलरव कर रहे थे और श्याम पीत, सित, रक्त कोटि सुर्भी एवं वृषभ समूह देखे तिनके सङ्ग षोडश वर्ष के श्याम स्वरूप मणिन जटित आभूषण और चरणों में नूपुर धारण किये अनेक गोप वृन्द विचर रहे थे फिर तहाँ एक परम पुनीत मणिन जटित भवन देखा जिसके मध्य में एक सहस्र दल पद्म देखा जिसके मध्य भाग में एक सौ अट्ठाइस दल कमल पर एक सिंहासन देखा जिसके तीन ओर तीन तीन सोपान कौस्तुभ मणि की वनी हुई थीं उस सिंहासन पर श्रीकृष्ण सहित श्रीराधिकाजी विराजमान थीं जिनकी सेवा में मोहनी आदि अष्ट सखी स्थित थीं और श्रीदामा आदि द्वादस गोपाल छत्र चँवर वीजना आदि लिये खड़े थे श्रीराधिकाजी के कंधा पर कर कमल धरे श्रीकृष्णजी को देखा जो पीताम्वर धारण किये कटि में किंकिणी गरे में कौस्तुभ मणि एवं वैजयन्ती माला वनमाला, शीश पर मोर मुकुट श्रवण में कुण्डल चर्णों में मणिन जटित नूपुर विराजमान थे जिनके मुखारविन्द की शोभा को देखकर कामदेव भी मोहित होता था तिन श्री कृष्ण को देखि समस्त सुरगण प्रेम से विह्वल हो गये और सब देवताओं ने विनीत भाव से दण्डवत् और स्तुति करी। राजा वहुलाश्व ने श्रीनारदजी से फिर पूँछा कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे मुनिवर श्रीकृष्णजी के दर्शन के अनन्तर फिर क्या हुआ सो कृपा पूर्वक वर्णन कीजिये। तब श्रीनारदजी बोले कि हे राजा इसके अनन्तर श्रीविष्णुजी उठकर सब के देखते हाथ फैलाय श्रीकृष्णजी की कान्ति में लीन हो गये और कोटि सूर्य समान तेज धारी श्रीनृसिंह भगवान् भी जैसे नदी समुद्र में लय हो जाती है इस भाँति अवतारी श्रीकृष्ण जी में लीन हो गये फिर श्वेत द्वीपाधिपति सहस्र भुजा धारी भूमादेव और साकेत द्वीपपति धनुष धारी श्रीरामकोटि कौश साथ लिये और छत्र चँवर धारण करे जिनका अर्बुद सूर्य समान तेज है सो भी श्रीकृष्ण तेज में लीन हो गये फिर यज्ञ नाम हरि अपनी स्त्री दक्षिणा सहित श्रीकृष्ण तेज में लीन हो गये फिर नर नारायण जिनका तेज श्रुति, द्विज, मुनि, और कोटि रवि के समान है सो भी जटा जूट धारण किये श्रीकृष्ण जी के तेज में सब के देखते लीन हो गये। यह आश्चर्य्य देखकर समस्त देव गण श्रीकृष्ण जी ही को सब का स्वामी और अवतारी विचार कर स्तुति वन्दना करने लगे देव गण बोले:—

हे राधापति श्रीकृष्ण, अव्यय, श्रीपति गोलोक नाथ, यज्ञ रक्षक गोवर्द्धन धारी परिपूर्णतम परम प्रभु मुनि मन मण्डन योगी मुनि वेद आपको अखण्ड, सत्य ब्रह्म कहकर वर्णन करते हैं कोई काल कोई साँख्य और कोई कर्म का नियन्ता कहकर पुकारते हैं,हे मुकुन्द अज मुरारि माधव आप को कोई धर्म जानि और परम श्रेयस्कर मानि सेवा करते हैं, हे सर्व भूतिपति सर्व आत्म साक्षी सर्व मय भगवान् भक्त जन आप का निवास सदा अपने हृदय में माँगते हैं। हे अघ हरण गुण निधान, आप सदा श्रीराधा के हृदय में निवास करते हैं व्रज गोपिकाओं के जीवन प्राण हैं हम आप के शरण हैं, हे वृन्दावन चन्द्र व्रजपति राधा रमण वंशीधर हम सब आप के शरण में आये हैं हमारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रक्षा कीजिये। इस प्रकार सुर गणों का आर्त्तनाद सुनि श्रीकृष्ण प्रभु मधुर गिरा से बोले कि हे देव गण तुम सब यदुकुल में अंश अंश करके उत्पन्न होउ हम कुछ काल में यदुकुल में प्रकट हो भूमि का भार हरेंगे और तुम सबन को सुख देवैंगे। सुर गणों प्रति ऐसी वाणी सुनकर श्रीराधा जी दुखित हो शपथ खाय कहने लगीं कि हे नाथ आप का वियोग हम नहीं सह सकैंगी हम को छोड़ि आप न जाइये सो सुनि श्रीकृष्ण जी बोले हे प्यारी धैर्य धरौ तुम सब मेरे संग चलौगी। तब श्रीराधा जी कहने लगीं कि हे मुरारि तहाँ भूमि पर वृन्दावन, गोवर्धन, यमुना आदि तो हैं नहीं सो मेरा मन तहाँ कैसे लगैगा। तब श्रीकृष्ण जी ने ८४ कोस भूमि जिसमें वृन्दावन और गोवर्धन था यमुना सहित भूतल पर भेजी तब ब्रह्मा आदि सुर गण बोले कि हे नाथ आप और हम सब कहाँ कहाँ और कौन नाम से विख्यात होयँगे। यह सुनि श्रीकृष्ण जी बोले कि हम वसुदेव के घर देवकी के उदर से, शेष रोहणी के गर्भ से प्रकट होयँगे और लक्ष्मी रुक्मिणी, शिवा भानु तनया यमुना, पृथ्वी सत्यभामा, तुलसी सत्या, सुदक्षिणा लक्ष्मणा, विरजा कालिन्दी भद्रा होयगी, सुरसरि मित्र विन्दा होयगी, रुक्मिणी में कामदेव का अवतार प्रद्युम्न नाम से होगा हे ब्रह्मा, तुम प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध होउ, द्रोण वसु नन्द होंगे। धरा यशोदा होगी सुचन्द्र नाम वृषभानु और कलावती उसकी स्त्री कीर्ति होगी तिनके घर श्रीराधिका प्रकट होंगी और मेरे सखा श्रीदामा, सुबल, तोक, कृष्णार्जुन और अंशुमान ये नन्द और उपनन्द के गृह षट वृषभानु होंगे तब ब्रह्मा जी हाथ जोड़ि बोले हे प्रभु कृपा कर इनके लक्षण भी बखान कीजिये यह सुनि श्रीकृष्णजी कहने लगे कि गोपालन वृत्ति से गोपाल प्रसिद्ध हुये जिसके गृह नव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लक्ष धेनु हों सो नन्द और पाँच लक्ष धेनु से उपनन्द कहाते हैं और दश लक्ष धेनु से वृषभानु और जिनके गृह कोटि धेनु हों सो नन्दराज कहाते हैं और कोटि खर्व धेनु से वृषभानु राय कहे जाते हैं सो द्रोण और सुचन्द्र नाम वसु प्रधान नन्द और वृषभानु होयँगे और इसी प्रकार व्रज सुन्दरियों के यूथ भी होयँगे तव ब्रह्माजी ने पूछा कि हे प्रभु यूथ की संख्या भी वर्णन कीजिये। तव श्रीकृष्णजी बोले कि दश कोटि का एक अर्वुद और दश अर्वुद का एक यूथ होता है और जो गोलोक के द्वारपाल और सेज सम्हारने वाले श्रृंगार करने वाले और वृन्दाविपिन और गोवर्धन के कुंज निवासी और पार्षद इन्हीं सब के व्रज सुन्दरियों के यूथ होंगे और यमुना, गङ्गा, विरजा, मधुमाधवी और ललिता विशाखा इत्यादि ५६ कोटि नारियों और तिन की सहचरियों के वड़े भारी यूथ होंगे और श्रुति रूपा, ऋषि रूपा, मिथला देश, कौशल देश, अवधपुरी पुलिन्द स्त्रियों को युग युग में जो हमने वरदान दिये हैं सो सब व्रज में गोपिका होंगी तिन सब के मनोर्थ मैं पूर्ण करूँगा। तव ब्रह्माजी ने पूँछा कि इन सबन ने कौन कौन तप और पुण्य किया था जो आप के संग रमण करैंगी सो भी कहने की कृपा कीजिये। यह सुनि श्रीकृष्णजी बोले कि एक समय श्वेत द्वीप में हरि भगवान् के ढिग जाय श्रुतियों ने बहुत स्तुति करी तव भगवान् ने प्रसन्न होकर मन माना वर माँगने को कहा तव श्रुतियों ने प्रार्थना करी कि आप का गोलोक जो प्रकृति से परे है हम देखना चाहती हैं। तव भगवान् ने अपना गोलोक दिखाया तहाँ श्रुतियों ने दिव्य श्रीवृन्दावन गोवर्धन उत्तम विरजा और कालिन्दी रत्न जटित घाट सहित अति रमणीक देखे तहाँ एक सुन्दर कदम्ब के नीचे राधिका सहित अपना श्याम सुन्दर रूप दिखाया। तव श्रुतियाँ सो मनोहर रूप निरख कर मोहित हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गई और बोलीं कि यह रूप आपका हमारे चित्त में बस गया है सो हम यह वर माँगती हैं कि तुम हमारे पति होहु और इस वन में हमारे साथ रमण करौ। यह सुनि भगवान् हरि बोले कि यद्यपि यह दुर्लभ वर तुम ने माँगा है किन्तु तुम्हारी स्तुति से हम बहुत प्रसन्न हैं अतएव माथुर देशान्तर्गत वृन्दावन में जब मैं रास रचौंगा तब तुम सबन की आशा पूर्ण करौंगा इस वर के अनुसार श्रुतियाँ भी गोकुल में गोपिका रूप से अवतरैंगी। त्रेता युग में धर्म क्षीण होने पर जब हम ने राम रूप धारण किया था तब सिया विवाह समय जनकपुर की नारियों ने मेरे रूप पर मोहित होकर मुझको अपना पति होने की अभिलाषा की थी और मेरा ध्यान एवं मेरा गुण चरित्र का गान करती रहीं तब तिन्हें हमने वरदान दिया था कि द्वापर में तुम्हारे मनोर्थ पूर्ण होंगे। फिर हम जब अवध लौट कर गये तब कौशलपुर की स्त्रियों ने यही अभिलाषा की उनको भी द्वापर में मनोर्थ पूर्ण होने का वर हम ने दिया था इसी प्रकार जब हम ने पिता दशरथ का वचन मान वन को गमन किया था तब वन की नारी सब मेरे रूप पर आसक्त होकर मुझको पति समान वरने की कामना करने लगीं उनको भी द्वापर में मनोर्थ पूर्ण करने का वर दिया था और वन के मुनि मेरे कृष्ण रूप के उपासक जो ध्यान मग्न थे उन्होंने जब मेरा राम रूप देखा तब मुझ को गोप रूप कृष्ण ही जानि माँगते भये कि मेरे पति रूप कृष्ण ही होंय यह सुनि मैंने उनको वर दिया कि द्वापर में तुम सब स्त्री रूप होकर मेरे साथ विहार करोगे, सो भी व्रज में गोपी रूप होयँगे और हम राम रूप से जब पंचवटी पहुँचे तहाँ पुलिन्द जाति की स्त्रियाँ मेरे रूप को देखि व्याकुल हो प्राण देने लगीं तब उनको भी द्वापर में संग होने का वर दिया पुनि कपि दल लै जब रावण विजय हेतु यज्ञ किये थे और उन यज्ञों में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुवर्ण की सीता मूर्ति वनाय प्राण प्रतिष्ठा की थी तब उन सुवर्ण मयी सीता ने मुझ राम स्वरूप ब्रह्मचारी से रमण करना चाहा था उनको भी धर्म मर्य्याद विचारि द्वापर में आशा पूर्ण करने का वर दिया था सो भी गोपी होयँगी। और भी जिन मनुष्य सुर असुर नाग किन्नर गंधर्व ने मेरे मिलने के लिये तप ध्यान योग किया था ते सब गोपी होयँगे और जब मैंने यज्ञ रूप धारण किया था तब सुर नारियों ने मोहित हो देवल मुनि से द्वापर में मिलने का वर पाया था सो भी गोपी होयँगी और जब मैंने धन्वन्तरि रूप को त्याग किया था तब सब औषधियों ने मेरे हेतु तप किया था उनको भी मैंने वर दिया था वे सब ब्रज में गुल्म लता होकर निवास करैंगी और रास में मेरे साथ रमण करैंगी। और मेरा हरि रूप देखि वहुत सी नारियों ने मोहित हो तप किया था सो भी वृन्दा आदि गोपी होयँगी और रास में मेरे साथ विहार करैंगी। इसी प्रकार मेरे मत्स्य रूप को देखि सिंधुकुमारी ने तप किया पुनि पृथ्वी दोहन हेतु प्रथु रूप को देखि जो जो नारि मोहित हुई थीं उन से अत्रि मुनि ने कहा था कि द्वापर में अवश्य मनोरथ पूर्ण होगा। ते सब गोपी होयँगी। फिर नर नारायण को उनके तप भग्न करने को इन्द्र की आज्ञा से जो अपसरा गई थीं और मोहित हो गई थीं सो भी गोपी होयँगी, मेरे वामन रूप को निरखि सुतल लोक की स्त्रियाँ मोहित भई थीं सो भी गोपी होयँगी और मेरे संकर्षण रूप को देखि जो स्त्रियाँ मोहित भई थीं सो गोपी होयँगी उनके हेतु बलराम रूप धारण करि ब्रज में उनके मनोर्थ पूर्ण करूँगा। और सुनो प्राण वायु शूरसेन होयँगे, कश्यप वसुदेव होयँगे, वसु देवता उद्धव होयँगे, ध्रुव देवक होयँगे पृश्नि देवकी, दक्ष अक्रूर, मारुत उग्रसेन होयँगे, कुवेर हृदीक,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वरुण कृतवर्मा, प्राचीन वरहीगद, अम्बरीष युयुधान होयँगे, प्रह्लाद सात्यकी, क्षीरसिंधु शान्तनु नृप होयँगे, भग धृतराष्ट्र, देवोदास शल्य, द्रोण वसु भीष्म होयँगे, कृपा पाण्डु नृप, धर्मराज युधिष्ठिर, वायु भीम, और स्वयंभुव मनु अर्जुन होयँगे, सतरूपा रोहिणी होयँगी, सूर्य पुत्र करण, अश्वनिकुमार नकुल और सहदेव होयँगे, अग्नि द्रोण, धाता वाह्लीक, कलियुग दुर्योधन होयगा, चन्द्र अभिमन्यु, इन्द्र अश्वत्थामा होयँगे इस प्रकार सब देव प्रकट होयँगे और लक्ष्मी की षोड़ष सहस्र सखियाँ इन सब की रानी होयँगी। इसके उपरांत श्रीकृष्ण ने योग माया को आज्ञा दी कि देवकी का सप्तम गर्भ आकर्षण करि रोहिणी के गर्भ में डारि देना और जब हम देवकी के गर्भ में आवैं तब तू यशोदा के गर्भ में वास करना इसके अनन्तर ब्रह्माजी पृथ्वी को सब समझाय सुरगणों सहित निज निज धाम को लौट गये, श्रीनारदजी राजा बहुलाश्व से कहते हैं कि इस प्रकार श्रीकृष्ण ही परिपूर्णतम हैं और सब तिन के चरण की धूलि हैं यदि रोम रोम जिह्वा हो जाय तौ भी हरि के गुण वर्णन नहीं हो सकते जैसे पक्षी अपनी अपनी शक्ति अनुसार उड़ते हैं तैसे ही पण्डित कवि लोग मति अनुसार हरि गुण चरित्र किंचित वर्णन करते हैं राजा के पूछने पर नारदजी बोले कि श्रीहरि ने कंस के मारने को अवतार धारण किया तब फिर राजा ने पूँछा कि कंस कौन था और उसको श्रीहरि ने किस कारण मारा तब मुनिवर बोले कि कालनेमि नाम दानव को जब श्रीभगवान् ने मारा था और शुक्राचार्य ने अपनी संजीवनी विद्या से उसको जिवाय दिया था तब वह दानव मंद्राचल पर्वत पर जाय घोर तप करने लगा और एक दिव्य सहस्र वर्ष तक तप किया जब ब्रह्माजी ने प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा तब दानव ने यह वर माँगा कि हरि, महा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देव शंकर और तुम एवं समस्त सुरगण कोई भी मुझको मार न सकै यह सुनि ब्रह्माजी ने "एव मस्तु" कहकर कहा जो इस ब्रह्माण्ड से परे होगा उससे तुम्हारी मृत्यु होयगी सोई दानव उग्रसेन के गृह में कंस नाम से प्रकट हुआ एक समय मगध देश का राजा जरासंधि दिग्विजय करता हुआ मथुरा पर चढ़ा और व्रज से चालीस कोस पर डेरा डाला और अपने कुवलयापीड़ नाम महा वलवान और मत्त गजराज को मथुरा पर छोड़ा जब वह हाथी नगर में प्रवेश करि वहुत से मकानों को गिराता हुआ कंस के अखाड़े में पहुँचा तिसको देखि वड़े वड़े मल्ल और गज भयभीत हो भागे यह देखि कंस ने उसको अपने वाहुवल से पकड़ कर और घुमाय कर चालीस कोस पर जरासन्ध के समीप फेंक दिया यह पराक्रम देखि जरासन्ध ने चकित हो अपनी दो पुत्री कंस को विवाह दीं और दायज में कुवलयापीड़ गज सहित दस करोड़ हाथी घोड़े और दस हज़ार दासी एवं तीन लाख रथ दिये इसके पश्चात् कंस दिग्विजय करने को निकला और महिषमती पुरी में आया तहाँ के नृप के यहाँ मुष्टक, चाणूर, शल, तोशल और कूट यह पाँच महावली मल्ल योधा थे तव दोनों ओर से यह स्थिर हुआ कि जो हारै सो दासत्व स्वीकार करै इस निश्चय अनुसार पाँचों मल्ल कंस से युद्ध करने आये तव कंस ने पाँचों को परास्त किया और अपना दास वनाय लिया फिर कंस प्रवर्षन पर्वत पर गया तहाँ द्विविद नाम वानर से वीस दिन संग्राम रहा जहाँ द्विविद की वानर सेना ने पर्वत के पाषाण उखाड़ि उखाड़ि मारे। तिन सव को कंस ने निवारि वहुत से वानर चूर्ण चूर्ण करि और नभ मण्डल में जाय द्विविद को भूमि पर गिराय दिया तिसके मुख से रुधिर की धारा वहने लगी तव उसे भी परास्त करि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दास बनाया फिर ऋक्ष मूक पर्वत पर जाय केशि दैत्य को जो महा बलवान था परास्त किया तहाँ से फिर महेंद्राचल पर्वत पर पहुँचा और उस पर्वत को सौ वेर हिलाया तहाँ परशुराम लाल लाल नेत्र से क्रोध करके बोले—अरे मशक समान क्षत्री तेरे मन में मेरा तनिक भय नहीं। ले मेरे इस धनुष को चढ़ाउ नहीं तो तेरा काल होगा यह धनुष श्रीहरि ने त्रिपुरासुर के बध हेतु शंकर को दिया था तिन से क्षत्रियों के बध करने को मैंने पाया है। यह सुनि कंस ने उस धनुष को तुरत उठाय प्रतंचा चढ़ाय सौ वेर बजाया जिस के शब्द से दिग्गज डोल उठे और ब्रह्मांड भर हिलने लगा। इस प्रकार धनुष चढ़ाय भूमि पर धर कर बोला कि मैं क्षत्री नहीं किन्तु दानव राज हूँ। तब परशुराम ने वह धनुष कंस को देकर कहा कि जिसके कर से यह धनुष टूटैगा उसके हाथ तेरी मृत्यु होयगी। तब कंस शीश नवाय अन्य देशों के जीतने को चला और समुद्र तट पर एक अघासुर नाम विकाल दानव देखि और उससे लड़ कर उसको भी पटक दिया। वह प्राण लेकर भागा। फिर प्राची दिशा में अरिष्टासुर ने गिर शिखर उखाड़ कर मारे। तब कंस ने उसको भी ग्रीवा मरोरि पटक दिया वह भी प्राण लेकर भाग गया। फिर प्राग्ज्योतिष पति भौमासुर से संग्राम माँगा उसने अपने दल के दानवों को लड़ने की आज्ञा दी तब प्रथम प्रलम्बासुर युद्ध में आया और भयंकर युद्ध करके परास्त हुआ। फिर धेनुकासुर भिड़ने को आया और कंस को भूमि पर पटक दिया। तब कंस ने उसको पकड़ कर चार सौ कोस पर फेंक दिया फिर तृणावर्त आया और कंस को लेकर चार सौ कोस ऊपर उड़ गया तहाँ लड़ाई हुई और कंस ने उसको भूमि पर पटक दिया तब बकासुर दैत्य ने चोंच पसारि कंस को निगल लिया तब कंस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने एक मुष्टक उसके कंठ में मारी उसने व्याकुल होकर कंस को उगल दिया। तब कंस ने उसको पकड़ि और घुमाय कर दूर फेंक दिया। यह देखि उसकी भगनी पूतना लड़ने चली तब कंस बोला—कि तू स्त्री है शूर वीर स्त्री से नहीं लड़ते। तेरे भ्राता बकासुर को परास्त कर चुका हूँ इस हेतु तू भी मेरी भगनी समान है तुझ से नहीं लड़ूँगा। यह सब देखि नरकासुर (भूमासुर) ने कंस को प्रबल जानि मित्रता कर ली। तहाँ से कंस शंबर दैत्य के नगर में पहुँचा। उसने भी सब समाचार सुन कर कंस से मित्रता करली। तहाँ से त्रिशृंग पर्वत पर व्योमासुर के नगर में पहुँचा उसने भी कंस को अति बलवान पाय दासत्व स्वीकार किया। तहाँ से आगे मुझ से भेंट हुई और कंस ने प्रणाम कर मुझ से पूछा कि और भी कोई बल-शाली हो सो मुझको बताइये तब मैंने कहा कि शोणितपुर में बाणासुर दनुज राज के पास जाउ कंस तब बाणासुर के ढिग गया तब बाणासुर ने क्रोधित हो एक बड़े भारी वृक्ष को उखाड़ि इतने ज़ोर से पटका कि भूमि फोड़ि पाताल में जाय गिरा और कंस से कहा उसको काढ़ लाओ तब कंस ने जाय उसको घसीटा तब सात पाताल उसके साथ ईंचने लगे जिससे बड़ा कुलाहल मच गया फिर कंस और बाणासुर में युद्ध होने लगा तब श्रीशंकरजी ने दोनों को सम बलवान देखि परस्पर मित्रता कराय दी और बाणासुर से बोले कि कंस का मद बिना श्रीकृष्ण कोई नहीं तोड़ सकता इसके उपरांत कंस तहाँ से पश्चिम दिशा में वत्सासुर के पास गया उसने भी कंस को बलवान पाय मित्रता करली फिर म्लेच्छों के देश में कालयमन के ढिग गया तब कालयमन एक लक्ष मन की गदा लेकर युद्ध को उद्यत हुआ तिसको भी सैना सहित कंस ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परास्त किया फिर भोज मित्र अंभोज को जीति अपने देश को लौट आया और शस्त्र धारण करि और समस्त विजय किये भये दानवों सहित अर्थात् शल्ल, तोशल्ल, मुष्टिक, चाणूर, कूट, प्रलम्ब, नरकासुर, द्विविद, तृणावर्त वृषभासुर, केशी, शम्बर, वाणासुर, व्योमासुर, वत्सासुर, वकासुर, अघासुर आदि को साथ ले सुर लोक में पहुँचा तहाँ इन्द्र सब देव गणों को साथ लेकर युद्ध हेतु निकसा और एक श्वेत वरण के शिखर समान मत्त गयंद पर चढ़ कर लड़ने को आया सो कंस ने देखि एक मुष्टिक इन्द्र के मारी और दूसरी मुष्टिक से गज पर प्रहार किया तब मुष्टिक लगने से व्याकुल हो इन्द्र भूमि पर गिर पड़ा और गज चिक्कार मारि भाग चला तब कंस ने उसे पकड़ कर और घुमाय कर चार लक्ष योजन पर फेंक दिया फिर ऐरावत गजराज दौड़ा तिसको कंस ने उठाय पटक दिया सो व्याकुल हो भागा फिर कंस ने रण में गर्जना कर वैष्णव को दण्ड से देव गण की बहुत सी सैना संहार की तब भयभीत हो सब देवता भाग चले और शरण शरण पुकार कंस के पैरों पर गिरे, हार स्वीकार करी और बहुत स्तुति करी कंस ने सब देवतान को जीति दुन्दभी बजवाई और देवराज का छत्र सिंहासन लै मथुरापुरी में लौट आया और अकृत राज करने लगा यह सुनि राजा बहुलाश्व अति प्रसन्न हो नारदजी से बोला कि जैसे श्रीराधिकाजी का अवतार हुआ सो विस्तार पूर्वक श्रवण करने की इच्छा है कृपा करि वर्णन कीजिये तब मुनिवर विहँस कर बोले राजा तू धन्य है जो हरि चरित्र श्रवण करने से तृप्त नहीं होता अब श्रीराधिकाजी की कथा जो सर्व बाधा हरने हारी है सुन, कीरतिजी वृषभानु गोपवर की स्त्री थीं जिनका मन्दिर यमुना तट अति रमणीक स्थान रावल में था तहाँ भाद्र शुक्ल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अष्टमी चन्द्रवार को श्रीराधाजी का अवतार हुआ तब वृषभान जी ने दो लक्ष गो दान करीं और बधाई बाँटी वृज युवतियों ने पालना झुलाया और नाना भाँति लाड़ लड़ाये सो लड़ैती चन्द्रमा की कला समान दिन दिन बढ़ने लगी फिर राजा ने पूँछा कि कलावती और सुचन्द्र ने कौन सा तप किया था जिसके फल से श्रीराधा का अवतार उनके गृह में हुआ यह सुनि मुनि वर बोले कि सूर्य वंश में विष्णु के अंश से सुचन्द्र राजा हुआ और कालकुंज नगरी के राजा भलन्दन के पुत्रेष्ट यज्ञ से कलावती, मैनका और रत्न दाम नाम वाली तीन कन्या प्रकट हुईं रत्न दाम जनक को व्याही गई जिसके गृह जिससे सीता प्रकट भई, मैनका हिमाञ्चलपर्वत को विवाही गई जिसके गृह पार्वतीजी प्रकट भईं और सुचन्द्र नृपति को कलावती दी गई जो रमा से थी सुचन्द्र नृप ने गोमती तट पर महा तप किया एक सहस्र वर्ष तप पीछे ब्रह्मा ने मोक्ष का वरदान दिया तब कलावती बोली मैं पति का त्याग नहीं कर सकती कारण कि नारी को पति परित्याग महा दुःख है और पति ही से उसका कल्याण है यह सुनि ब्रह्माजी बोले कि मेरा वरदान मिथ्या नहीं हो सकता इस कारण तुम दोनों प्रथम भूमि पर अवतार धारण करौ पीछे जब तुम्हारे घर श्रीराधाजी का अवतार होगा तब तुम दोनों की मोक्ष होगी इस प्रकार सुचन्द्र और कलावती वृषभानु और कीर्ति हुये जिनके चरित्र श्रवण करने से सर्व पापन का नाश हो जाता है इसके अनन्तर श्रीनारदजी बोले कि अब परम पुनीत श्रीकृष्ण जन्म का वृत्तान्त सुनौ, एक समय गर्गाचार्य का आगमन मथुरा नगर में हुआ जहाँ महाराज उग्रसेन राज करते थे जिनका इन्द्र समान विभव था और जिनकी सेवा में अक्रूर देवक और कंसादि थे सो गर्ग मुनि को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखि सिंहासन से उठे और बड़े आदर से तिनकी कुशल पूँछ कर और वंदना करके चरणों में पड़े तब गर्ग मुनिजी ने आशीर्वाद दिया और प्रसन्न होकर देवक से बोले कि राजा शूरसेन के पुत्र वसुदेव को अपनी कन्या देवकी विवाह देव, ऐसा श्रेष्ठ वर और समान सम्बन्ध दूसरा नहीं है। यह सुनि देवक ने हर्षित हो टीका भेजा और नृप शूरसेन वरात लै मथुरा में आये। देवकी वसुदेव का विवाह आनन्द पूर्वक हो गया और बहुत दायज देकर रथ पर बैठारि बिदा किया और कंस रथवान बनकर लगाम हाथ में लै रथ हाँकने लगा। संग में भारी सेना चली और दो सहस्र गज, एक सहस्र दासी, एक लक्ष उत्तम रथ, दो लक्ष धेनु राजा देवक ने दायज में दीं। इसी अवसर पर आकाशवाणी हुई कि हे कंस जिसके रथ को तू हाँक रहा है उसी भगनी के अष्टम् गर्भ से उत्पन्न हुआ बालक तेरा काल होगा। यह सुनि कंस क्रोध में हो खड्ग निकारि भगनी देवकी के केश पकड़ उसका शीश काटने को उद्यत हो गया। तब वसुदेवजी इस अनर्थ को देखि बोले कि हे कंस! बिना अपराध किसी अबला स्त्री के केश पकड़ना अधर्म है फिर यह तो तेरी भगनी ही है। इसके वध करने से सब प्रजा तुम को दूषण देयगी और बहुत अपकीर्ति होयगी। यदि कहो कि दूषण लगै तो लगै मेरी मृत्यु तो टरि जायगी सो जीव की मृत्यु विधाता के आधीन है और जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी अवश्य होयगी। बुद्धिमान इसका शोच नहीं करते। और यदि तुम बुद्धिमान होकर भावी वश नहीं मानते, तो इसके अष्टम पुत्र को जिसे तुम काल मानते हो उत्पन्न होने पर मैं तुम को दे दूँगा। यह सुनि कंस शांत हो गया और वसुदेवजी के वचन को स्वीकार करके देवकी को छोड़ दिया और वसुदेव देवकी को अपने नगर के कारागार में बन्द कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिया। जब वन्दीगृह में प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ। तब वसुदेवजी उसको लेकर कंस के ढिग गये। कंस ने बालक पर दया करि लौटाय दिया और कहा यह मेरा घातक नहीं है अष्टम् पुत्र मेरे पास लाना। तब मैं कंस के पास गया और कहा कि सकल गोप देवताओं के अवतार हैं और गोपी वेद ऋचा हैं, देवकी के सब बालक और सकल यादव सुर गण हैं, यह सब तुम्हारे शत्रु हैं। यह सुनि कंस ने बहुत से दानव गण गोप यादवों के वध करने को नियत किये और वसुदेव देवकी को कठिन कारागार में रखकर उनके सब बालक शिला पर पटकि पटकि मार डाले। यह देखि उग्रसेन कंस पर बहुत क्रोधित हुआ। तब कंस ने पिता से युद्ध करि उसको परास्त किया और वन्दीगृह में डाल दिया और आप राजसिंहासन पर बैठि अकृत राज करने लगा। इस प्रकार भगनी देवकी के छः पुत्र मारे गये। जब सप्तम गर्भ में शेषजी ने निवास किया तब योग माया ने आकर्षण करके उस गर्भ को नन्दराय के घर में स्थित वसुदेव की अन्य स्त्री रोहिणी के गर्भ में डार दिया और श्रावण शुक्ल पंचमी बुधवार स्वाती नक्षत्र तुला लग्न मध्यान्ह समय जब पाँच गृह एक स्थान में थे बलराम नाम से शेषजी का अवतार हुआ। जिसकी उत्पत्ति से नन्दराय बहुत हर्षित भये, बहुत सा दान द्विजों को दिया और जाति कर्म करवाया। तब देवल, देवराज, द्वैपायन, वसिष्ट और हम सब मिलकर नन्द राय के घर गये नन्दजी ने हम सब का पूजन सत्कार करके आसन पर बैठाया और पुत्रोत्पत्ति का आनन्द कह सुनाया। तब व्यासजी बोले कि यह बालक वसुदेवकी स्त्री देवकी के गर्भ में था और योग माया ने रोहिणी के गर्भ में लाय के डार दिया है और हरि इच्छा से शेषजी ने अवतार धारण किया है, तुम्हारे धन्य भाग हैं जो ऐसा बालक पाया और उसी के दर्शन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को हम सब यहाँ आये हैं । तब नन्दराय जी ने बालक के दर्शन कराये और हम सब ने स्तुति करी । व्यासजी बोले हे रेवती रमण, हे शेषजी ! आप सकल लोकों का भार अपने शीश पर धारण किये हैं. आपकी संकर्षण शक्ति प्रलय काल में समस्त जगत के अवयवों को आकर्षण कर अपने में लय कर लेती है । हे बिल्वल दैत्य संहारी, द्विविद वानर के मद को चूर्ण करि उसको यम लोक भेजने वाले आपकी जय होय। हे कालिन्दी आकर्षण करने वाले, आप कूष्माण्ड, प्रलम्ब और धेनुकासुर का संहार करने को समर्थ हैं । हे कूट संहारी हलायुध धारी, आप गजपुर के आकर्षण को उद्यत हो कौरवों के दर्प को हरि उनसे स्तुति किये गये हैं । आप यादव कुल में जन्म धारण करि गोप बालकों में एवं वर प्राप्त गोपियों में रमण करने वाले हैं आपकी जय होय । इस प्रकार स्तुति करि हम सब अपने अपने स्थान को लौट गये, इसके उपरान्त देवकी के अष्टम गर्भ में श्रीहरि का आगमन हुआ, तब देवकी के तन की कान्ति सूर्य के समान देदीप्त भई । सो देखि कंस ने निश्चय कर लिया कि यह गर्भ मेरा काल अवश्य है । तब बड़े बड़े बलवान दैत्यों की चौकी बैठार दी । वसुदेव देवकी के कठिन निगड़ कर दिये और पल क्षण अपने काल रूपी हरि के स्मरण में रहने लगा । सो निरन्तर ध्यान ही उसके मोक्ष का कारण हो गया । देवकी के गर्भ में श्रीहरि का वास देख कर सकल सुरगण स्वयम्भुव मनु शिवशंकर सहित गर्भस्तुति करने लगे । सुरगण शीश नवाय बोले—हे जगदीश विश्वाधार ! आप का अवतार संसार के कल्याण, देवताओं एवं भक्तों की रक्षा और असुरों के संहार हेतु होता है । आप अज, अनादि और अव्यक्त सर्वव्यापक हैं । अग्नि विस्फुलिंग जिस प्रकार प्रकट होकर अग्नि में समाय जाते हैं इसी प्रकार हे पूर्णतम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपके अंश रूपी समस्त भूतगण क्षण क्षण में प्रकट होकर आप में लीन हो जाते हैं। हे परिपूर्ण तम कृष्ण, योगी जन आप को ब्रह्म अक्षर और सर्व अंश कलाओं का अंशी कहकर पुकारते हैं। हे अशरण शरण, भक्त वत्सल, आप विश्व के परम धाम पुरुषोत्तम हैं। आप नर शरीर धारण करि अपनी लीला से अपने भक्त दासों को सदा आनन्द देते हैं। हे श्रीराधापति नन्द नन्दन! आपका अवतार कंसादि असुरों के संहार हित और गोपीजन के मनोर्थ पूर्ण करने को एवं देवताओं की रक्षा करने को ही हुआ है। आपकी जय हो। इसके पीछे श्रीकृष्ण के प्रकट होने के अवसर पर दशौ दिशा निर्मल होगई। सागर सरिता और सरोवर स्वच्छ उज्ज्वल जल से पूर्ण होगये। प्रफुल्लित कमलों पर भ्रमर गुंजार करने लगे। शीतल सुगंधित पवन चलने लगी। जगत के सब जीव नर नारि किन्नर गंधर्व, साधु वैष्णव सब प्रमुदित और हर्षित होगये। आकाश में सुरगण दुन्दुभी वजाने लगे। अपसरा नृत्य करने लगीं। मंद मंद वृष्टि होने लगी। इस प्रकार भाद्र कृष्ण अष्टमी बुधवार को जब सिंह राशि में सूर्य थे रोहिणी नक्षत्र और हर्षण योग वृष लग्न में अर्धनिशि को व्रजचन्द आनन्द कन्द शौरि गृह में प्रकट हुये, जिनके शीश पर मुकुट, श्रवण में कुण्डल, गरे में कौस्तुभ मणि, कटि में किंकिणि और चरणों में नूपुर विराजमान हैं। केसर का तिलक, वैजयंती माल धारण किये पीत वसन से सुशोभित, कमल सरीके विशाल नेत्र वेणु धारण किये हैं। घुँघरारी अलकावली छिटक रही हैं, मुखारविन्द की कान्ति से शौरिगृह प्रदीप्त हो रहा है। बालक की ऐसी अद्भुत छवि देखि वसुदेव देवकी परम हर्षित हो गये और तत्क्षण मन में दो सहस्र गो संकल्प करीं और दम्पति कर जोरि अस्तुति करने लगे कि हे करुणा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर, विश्वम्भरन. आनन्द सागर ! आपकी महिमा शिव विरंच भी नहीं जानते । आप अज अनादि अव्यक्त हैं । हे मधुसूदन. माधव, मुकुन्द ! आप परतत्व हैं । हे भक्त भय हारी, असुर प्रहारी, कंस का संहार करिये । यह सुनि परिपूर्णतम श्रीकृष्ण बोले—"हे वसुदेव ! तुम पूर्व जन्म में सुतपा और देवकी प्रश्नि नाम से थे । तुम दोनों ने एक मन्वन्तर मेरे समान पुत्र की इच्छा से घोर तप किया था और मेरे प्रसन्न होने पर मेरे समान पुत्र पाने का वर माँगा था । सो मेरे समान मैं हीं हूँ । यह विचार कर प्रथम भगवान, द्वितीय वामन, रूप और अब मैं स्वयं ही आया हूँ । इसलिये मुझको गोकुल ले चलो । तब तुम्हारा सब दुःख छूट जायगा । यह कहि श्रीहरि सुकुमार बालक हो गये । उधर नन्द भवन में योग माया प्रकट हुई । फिर इधर वसुदेव की बेड़ी खुलकर गिर पड़ीं, कपाट खुल गये, पहरुये निद्राग्रसित हो गये । तब बालक को शिर पर धरि वसुदेव बाहर निकसे । मन्द मन्द वर्षा होने लगी, शेषजी ने ऊपर छाया करली । इस प्रकार यमुना में धसे । तब यमुना प्रभु के चरण स्पर्श को बढ़ी और कंठ तक जल आने के पीछे चरण स्पर्श करि घूँटू तक हो गई । वसुदेव जी भगवान् को लेकर गोकुल में नन्द भवन में पहुंचे । तहाँ कपाट उघरे पाये और सब को सोता हुआ पाय उत्पन्न भई कन्या रूपी योग माया को ले और कृष्ण को पौढ़ाय मथुरा के शौरि गृह में लौट आये । पूर्ववत् बेड़ी पड़ गई, कपाट बन्द हो गये, पहरुये कन्या का रुदन सुनि जाग पड़े और कंस को खबर कर दी । तब कंस ने तुरत ही शौरि गृह में आय कन्या को माँगा । देवकी ने विनय पूर्वक कहा मेरे सब पुत्र वध कर दिये इस कन्या को ही मेरे लिये छोड़ देउ । कंस ने झपट कर कन्या को गोद से ऐंच लिया और शिला पर पटकने लगा । तब कन्या हाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से छूट कर अष्ट भुजा धारण करि आकाश में जाय यह वचन बोली कि हे हत्यारे कंस! जिस काल से तू भय करता है वह तेरा काल व्रज में प्रकट हो चुका है। यह सुनि कंस ने शौरि गृह में आय वसुदेव देवकी के निगड़ खोल दिये और हाथ जोड़ि कहने लगा कि मैं महा पापी हूँ जो तुम्हारे इतने बालक वृथा मारे। मेरा अपराध क्षमा कीजिये। मेरा काल अन्त ही प्रकट होगया है। तब वसुदेव देवकी रुदन करते हुए वन्दना करि भयभीत व्याकुल अपने स्थान पर चले गये। इसके उपरान्त कंस ने असुरों को बुलाय सब की सम्मति लई। असुर लोग बोले कि हरि का भय करना योग्य नहीं, फिर बालक रूप से। हे राजन्, गो द्विज साधु और बालकों को खोज कराय कराय वध कराय डालिये और सुख पूर्वक राज कीजिये। यह सुनि कंस बहुत हर्षित हुआ और तदनुसार कार्य करने लगा। इधर नन्द के गृह में जहाँ श्रीगोपाल का जन्म हुआ था उत्सव का आनन्द होने लगा। द्विजों को दान मिलने लगा। व्रज के नर नारी टीका बधाई ले नन्द गृह आने लगे और याचक जन मन भाया द्रव्य, मणि, मुक्ता, वस्त्र पाय पाय निहाल होगये। नन्द राय ने विपुल धेनु, धेन, दान दिया और चारों ओर हरद मिश्रित दधि की कीच होगई। उपनन्द और पट वृषभानु भेंट लै लै नन्द गृह आने लगे और गोप गोपी शृंगार करि करि शीश पर गोरस माट धरे भये मंगल सँवज लिये बधाई हेतु आय आय नृत्य मंगल गान करने लगीं और धन वस्त्र पकवान से सबका आदर सत्कार होने लगा। नन्द यशोदा मुदित मन सब को शीश नवाय बोले कि हमारे कर्म तो खोटे थे। यह बालक तुम्हारी सब की कृपा से इस वृद्ध अवस्था में प्राप्त हुआ है। मागध, सूत, भाट, बन्दीजन विरदावली गाने लगे और विध, शिव, व्यासादि हम सब एवं देवांगना अपने अपने वाहनों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर चढ़ि चढ़ि आये और दर्शन वन्दना करि करि अपने अपने स्थानों को जाते भये। इसके पीछे नन्दजी ने सब गोप उपनन्द वृषभानु के साथ गोरस और बहुत सी भेंट ले मथुरा जाय कंस को दे सारा वृत्तान्त बालोत्पत्ति का कह सुनाया। कंस ने बहुत आदर करि विदा किया। फिर अपने मित्र वसुदेवजी से मिले वसुदेवजी ने आदर सत्कार करि बधाई दी और कहा कि सावधान रहना बहुत से विघ्न होने वाले हैं। तब नन्दजी घर को लौटे। इधर कंस ने पूतना राक्षसी को गोकुल में पठाया। सो दिव्य स्त्री वेष धरि अद्भुत श्रृंगार करि नन्द भवन में आई। कुलीन स्त्री जानि किसी ने न रोका। तब वह पलना में पौढ़े हुये कृष्ण के समीप गई और कृष्ण को गोद में उठाय अपने विष लगाये भये स्तन को कृष्ण के मुख में दै पय पिवाने लगी। अन्तर्यामी कृष्ण ने उसके अन्तर कपट को जानि दोनों हाथ से स्तनों को पकड़ि मुख द्वारा उसके पाँचो प्राण खींच लिये। सो प्राण रहित हो माया रूप स्त्री-वेष तजि धरती पर गिर पड़ी। उसके गिरने से पृथ्वी हिल गई और योजन भर के बहुत से वृक्ष दब कर चूर्ण चूर्ण हो गये और बड़ा कुलाहल मच गया। सब ग्वाल ग्वालिनी भयभीत हो कृष्ण की ओर दौड़ी कृष्ण को पूतना की छाती पर स्तन पीते पाय तुरत उठाय लिया और गो पुच्छ से छुवाय विघ्न विनाश हेतु रक्षा के उपाय करने लगीं। गोप वधू बोलीं कृष्ण भगवान् विश्वपति तेरे शीश की रक्षा करैं, वैकुंठ भगवान् तेरे कंठ की रक्षा करैं, श्वेत द्वीप भगवान् तेरे कर्ण की रक्षा करैं, यज्ञ भगवान् तेरे नासिका की रक्षा करैं, दोनों नेत्रों की अरिसूदन नृसिंह भगवान् रक्षा करैं, रसना की श्री रघुनाथ भगवान् रक्षा करैं, अधरों की श्रीनर नारायण भगवान् रक्षा करैं, कमलों की श्रीसनकादि देव रक्षा करैं, भाल की श्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

श्वेत वाराह भगवान् रक्षा करैं, कपोलों की श्रीसनकादि देव रक्षा करैं, भाल की श्रीश्वेत वाराह भगवान् रक्षा करैं, सम्पूर्ण भूत गणों से श्रीनारद जी रक्षा करैं, श्रीकपिल देव चिबुक की रक्षा करैं, दत्तात्रेयजी उर की रक्षा करैं, स्कन्ध की श्रीहरि भगवान् रक्षा करैं, जनार्द्दन भगवान् कर कमलों की रक्षा करैं, कमठ भगवान् उदर की रक्षा करैं, भुजान की पृथु भगवान् रक्षा करैं, धन्वन्तरि भगवान् नाभि की रक्षा करैं, मोहिनी रूपधारी श्रीहरि तेरे गुह्य अंग की रक्षा करैं, तेरे कटि तट की श्रीत्रिविक्रम भगवान् रक्षा करैं, तेरे पृष्ट भाग की परशुराम भगवान् रक्षा करैं, श्रीव्यास भगवान् तेरे चरणों की रक्षा करैं, तेरे जानु की श्रीवलदेवजी रक्षा करैं। इस प्रकार इस कवचसे गोपियों ने कृष्णकी रक्षा करी। इस कवच को प्रथम श्रीविष्णु ने ब्रह्माजी से कहा, ब्रह्माजी ने श्रीशिवजी से, शिव ने दुर्वासाजी से और दुर्वासाजी से नन्दजी ने पाई थी। उधर नन्दजी जो मथुरा से लौटे थे पूतना को देखि विस्मित हुये और उसके अंगों को काटि एकत्रित करि जलाय दिया उसमें से चन्दन की सी सुगंध प्रकट हुई। यह सुनि राजा वहुलाश्व ने पूंछा कि यह पूतना कौन थी और किस कर्म के फल से इस को भगवान् ने बैर करने पर भी जननी की गति दी। तव नारदजी बोले कि जव श्रीहरि ने वामन रूप धारण किया था तव राजा वलि की कन्या ने मनोहर छोटा स्वरूप देखि भगवान् से यह वर माँगा था कि ऐसे ही बालक को मैं दूध पिलाऊँ। उसी के अनुसार उसने पूतना तन पाया और उसको मातु गति मिली। नारद जी कहते हैं कि जो इस पूतना चरित्र को श्रवण करता है उस को अवश्य श्रीकृष्ण मिलते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। फिर श्रीनारद मुनि बोले कि जव श्रीकृष्ण तीन वर्ष के हुए तव एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिन यशोदाजी ने बहुत उत्सव सहित कृष्ण का शृंगार किया और पलना में पौढ़ाया और छोटे बालकों को पलना के समीप बैठारि आप किसी कार्य को चली गई। तहाँ एक पुराना शकट टँगा हुआ था उसमें कंस का पठाया हुआ उत्कच नाम दानव अपनी माया शक्ति से समाय गया। तब सकल भूतपति कृष्ण ने उसके अभिप्राय को जानि अपने चरणों से उस शकट को गिराय चूर्ण कर डाला। तब उसमें से वायु रूप दानव, दानव रूप छोड़ि दिव्य रूप धरि और श्रीकृष्ण की स्तुति बन्दना करि आनन्द सहित परम धाम को चला गया। शकट गिरने का शब्द सुनि सब गोप गोपी दौड़े और बालकों से उसके गिरने का वृत्तान्त पूछने पर बालक बोले कि इस बालक कृष्ण के चरण प्रहार से ही यह शकट गिरा है किन्तु बालकों के वचनों पर किसी ने विश्वास न किया और कृष्ण को गोद में उठाय अरिष्ट निवारणार्थ विप्रों को बहुत दान दिया। राजा ने पूछा कि उत्कच दैत्य कौन था जिसने कृष्ण चरण स्पर्श्य से परम पद पाया। तब नारदजी बोले कि उत्कच नाम दैत्य हिरण्याक्ष का पुत्र एक समय लोमश ऋषि के आश्रम में जाय वृक्षों को उखाड़ि उखाड़ि फेंकने लगा तब लोमशजी ने शाप दिया कि तेरी मृत्यु हो जाय। यह सुनि दैत्य ने बहुत स्तुति बन्दना करि पूछा कि शाप निवृत्ति कैसे होयगी। ऋषि बोले वैवस्वत मन्वन्तर में कृष्ण के चरण स्पर्श से तेरी मुक्ति होयगी। सो कृष्ण ने शाप से उसका उद्धार किया। फिर एक दिन कृष्ण को अंक में लिये यशोदाजी आँगन में बैठी थीं, कृष्ण का शरीर-भार भारी होगया। तब यशोदा भूमि पर बैठारि मन्दिर में चली गई। उसी समय कंस के पठाये भये तृणावर्त्त दैत्य ने प्रचंड वायु सहित घोर अंधकार उत्पन्न कर दिया और कृष्ण को उठाय लेग या। यशोदा तुरत दौड़ी भई आई और कृष्ण को तहाँ न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाय व्याकुल हो गई। और अनुमान किया कि कृष्ण वायु के वेग से उड़ गया। सो गोविन्द गोविन्द कहि पुकारने लगी। तब व्रज गोपिका आर्त्तनाद सुनि दौड़ीं और कृष्ण को खोजने लगीं। इधर तृणावर्त्त कृष्ण को लिये एक लक्ष योजन पर्यन्त ऊपर उड़ गया और तहाँ से पटकने लगा। तब कृष्ण ने उसके गरे में लपट कर ऐसा दबाया कि प्राण त्यागि पृथ्वी पर गिर पड़ा और प्राण कृष्ण में समाय गये। असुर के गिरने से भूमि फट गई और घोर शब्द हुआ। तब गोपियों ने तृणावर्त्त के उदर पर मोहन प्यारे को पाय तुरत उठाय लिया और यशोदा के अंक में दै बोलीं कि तुम को सुत की नेकु प्रीति नहीं जो अकेला छोड़ देती हो। तब यशोदा बोलीं हे गोपियों, मैं क्या करूँ, मोहन का शरीर पाषाण समान अति भारी होगया था। यह सुनि गोपिका कहने लगीं कि यशोदा मिथ्या बातें न बनाओ कृष्ण का शरीर तो पुष्प के समान कोमल है और तुम भारी बताय रही हो। फिर यशोदा कृष्ण को गोद लिये बोली हे विधना यह एक बालक बड़ी आशा पीछे दिया है सो नित्य काल के मुख से बचा करता है। कौन सी ऐसी ठौर है जहाँ निर्भय होकर बसैं। हे भगवान! तुमहीं रक्षा करौ। तदुपरान्त विप्रों को बुलाय बहुत दान दिया। ब्राह्मण कुशा जल पुष्प लै बालक पर छिड़क छिड़क रक्षा करने लगे। विप्र बोले चरणों की रक्षा दामोदर भगवान् उर की हरि, नाभि की पूर्णतम भगवान्, कटि की राधापति पीत वस्त्र से शोभित, उदर की पद्म-नाभ प्रभु, पृष्ठ भाग की असुर प्रहारी भगवान्, भुजान की गिरिधर, शीश की द्वारिकेश, मुख की मथुरेश भगवान् रक्षा करैं, सर्वांग की बुद्धि निधान सुर त्राता भगवान् रक्षा करैं। इस भाँति विप्रों ने अभय देनेहारे स्तोत्र से बालक की रक्षा करि आशीर्वाद दिया और विपुल धन,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कंचन और धेनु पाय विदा हुये । राजा ने पूछा कि तृणावर्त्त कौन था जिसने ऐसी गति पाई । तब नारदजी बोले कि पाराडु नगर का राजा सहस्र कच्च वैष्णव धर्मवान् रेवा तट पर एक सहस्र स्त्री और सखियों सहित जल विहार कर रहा था। दुर्वासा ऋषि को आते देखि प्रणाम न करने पर ऋषि के शाप से असुर हो गया । पीछे बहुत वन्दना करने पर दुर्वासा ने कहा कि श्रीकृष्ण भगवान् तुमको मुक्ति देयँगे । सोई असुर श्रीकृष्ण कृपा से मुक्त हो गोलोक धाम को गया। फिर मुनि बोले कि एक दिवस यशोदाजी कृष्ण का शृंगार करिगोद में लिये खड़ी खिलाय रही थीं कि कृष्ण ने जमुहाई ले मुख खोला तब मुख के भीतर यशोदा ने अपने सहित विश्व की सारी रचना देखी और यह विचार करि कि बालक के मुख में कोई बलाय समाय गई है घबराय गई और देवताओं को मनाने लगीं। तिस यशोदा के भाग की बड़ाई एक रसना से नहीं करी जा सकती । यह सुनि राजा बहुलाश्व ने पूछा कि द्रोण वसु ने कौन तप किया था जिसके फल से ऐसा बालक पाया। तब नारदजी बोले कि अष्ट वसु में द्रोण वसु और उसकी स्त्री धरा ने मन्द्राचल पर्वत पर पुत्र हेतु घोर तप किया। एक अर्बुद वर्ष पर्यन्त तप करने के पीछे ब्रह्माजी ने प्रसन्न हो वर माँगने की आज्ञा दी। तब उन दोनों ने कर जोरि कहा कि पूर्णतम कृष्ण भगवान् के समान हम को पुत्र दीजिये । यह बचन सुनि ब्रह्माजी बोले कि यद्यपि यह वर अति कठिन है तथापि भगवान् निस्संदेह पूर्ण करैंगे। नारदजी कहते हैं कि यह वृत्तान्त नारायणजी ने गंधमादन पर्वत पर हम से कहा था, सोई दोनों नन्द यशोदा रूप से अवतरे और कृष्ण को सुत भाव से खिलाया । यह सुनि राजा ने पूछा कि आगे कौन कौन चरित्र श्रीकृष्ण भगवान् ने करे ? तब नारदजी बोले कि एक दिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वसुदेवजी ने गर्गाचार्य को गुप्त रूप से नामकरण हेतु नन्दजी के पास गोकुल में पठाया । तब नन्दजी ने अभिवादन करि आसन दै षोड़शोपचार से पूजन किया और बोले कि आज हमारे पितृ हम पर बहुत संतुष्ट हैं जिससे आपके दर्शन हुये, अब कृपा करि इन बालकों का नामकरण कर दीजिये । यह सुनि गर्गाचार्यजी नन्द यशोदा को एकान्त में लै गये और नामकरण करने लगे । गणपति को सुमिर गर्गजी बोले कि रोहिणी के पुत्र के नाम यद्यपि अगणित हैं तथापि कुछ वर्णन करता हूँ । सुनो सब में रमण करते हैं और सबको रमण कराते हैं, इस कारण इनको वेद में राम कहकर गाया है । सब से शेष हैं, इस हेतु शेष और सब से बलवान हैं, इस से बलदेव कहते हैं । गर्भ से आकर्षित होने से इनको संकर्षण कहते हैं । अब अपने सुत के अगणित नामों से कुछ नाम सुनो, ककार से यह कमलाकान्त हैं, रकार से रघुकुल तिलक राम हैं, शकार से षट गुण युत सकल द्वीप पति हैं, नकार से नृसिंह भगवान् हैं, अकार से यज्ञ भगवान् और द्वै बिन्दी से नर नारायण । इस प्रकार कृष्ण पूर्ण अवतार हैं और यह बालक युग युग में श्वेत, रक्त, पीत वर्ण धारण करता है । अब द्वापर में श्याम वर्ण धारण किया है । इसका नाम कृष्ण है । वसु इन्द्रिय के परिचालक हैं, इसलिये वासुदेव कहाते हैं । अपने समान वृषभानु नन्दनी के साथ रमण करने एवं अनेक लीला करने से राधापति हैं । हे नन्द, तुम्हारे धन्य भाग्य हैं जो ऐसा परिपूर्ण तम पुत्र पाया । यह कहि और विपुल दान दक्षिणा लै गर्गाचार्यजी तहाँ से चल करि बरसाने में वृषभानु भवन में आये । तब वृषभानुजी ने बड़े आदर सत्कार से पूजन किया और कर जोरि पूछने लगे कि हे भगवन् ! मेरी कन्या को कौन वर प्राप्त होगा ? तब बृहस्पति के भ्राता गर्गाचार्य मुनि बहुत हर्षित हो बोले कि हमारे श्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु देव ने हम से जो सत्य सत्य कहा है सो हम तुम से कहते हैं। सुनो, गो-लोक धाम वासी सकल गुण निधान पूर्ण तम ने भव-भार उतारने को नन्द के घर अवतार लिया है और उनकी पूर्ण शक्ति का स्वरूप श्रीराधा तुम्हारी कन्या है, ऐसा वेद कहते हैं, सो तुम ब्रजवासियों के भाग्य की बड़ाई कौन कर सकता है। तब वृषभानु और कीरतिजी कर जोड़ि बोले कि आप ही इसका विवाह कराय दीजिये। यह सुनि गर्गाचार्यजी बोले कि यह कार्य हमारी शक्ति का नहीं। वही श्रीकृष्ण अपनी इच्छा से विवाह करेंगे और भांडीर वन में ब्रह्माजी द्वारा विवाह होयगा। यह सुनि वृषभानु स्त्री सहित बहुत मुदित हुये और बोले कि राधा शब्द का अर्थ कह दीजिये। तब गर्ग मुनि बोले कि जिस भाँति श्रीनारायण जी ने हम से कहा था सो हम कहते हैं, रकार से रमा, आकार से लीला, धकार से धरा, और पुनि आकार से विरजा यह चार शक्ति मिलकर राधा होती हैं। जो मनुष्य राधाकृष्ण मुख से कहता है वह सम्पूर्ण सुख पाता है। यह कहि गर्गा-चार्यजी सनमानित हो अपने स्थान को लौट गये। फिर नारदजी बोले कि एक दिन वृद्ध नन्दजी कृष्ण को गोद लिये गोप और धेनु वृन्द सहित भांडीर वन में पहुँचे। उस समय अँधियारी घटा घिर आई तब कृष्ण मैया मैया कहकर रुदन करने लगे। नन्दजी ने बहुत आश्वासन किया किन्तु कृष्ण चुप न हुये। इसी अवसर पर सकल गुण आगरी कोटि सूर्य समान जिसके चरणों की ज्योति है, ऐसी राधा तहाँ प्राप्त हुई। उसको देखि नन्दजी ने शीश नवाय कहा कि यह पुरुषोत्तम तेरा पति है ऐसा वेदों का कहा हुआ श्रीगर्ग मुनि ने हम से कहा था। अतएव मेरे कर से अपने पति को सम्हारि इसकी माता ढिग इस रोते हुये बालक को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहुँचाय देउ। तब राधाजी बोलीं कि मेरा दर्शन अति दुर्लभ है और अकारथ नहीं जाता। इस कारण जो तुम्हारी इच्छा होय सो माँग लेउ। तब नन्द ने चरण कमल की भक्ति माँगी। सो वर पाय नन्दजी तहाँ से चले गये और वट वृक्ष के नीचे राधा और नन्द नन्दन व्रजचन्द रह गये। तब तहाँ गोलोक से रत्न-मयी भूमि आई और वृन्दावन वृत्तों और पत्तियों सहित दिव्य हो गया और यमुना की सब सीढ़ी मणि जटित हो गई। गोवर्द्धन पर्वत मणिमय दीखने लगा और मनोहर सघन निकुंज तथा वन हरियाली से सुशोभित हो गया और नाना भाँति के पत्तियों के कलरव से गूँज उठा। तहाँ एक विचित्र मंडप के नीचे विवाह की सब सामिग्री एकत्रित हो गई और बालक रूप कृष्ण मनमथ के भी मन मथने हारे परम सुन्दर किशोर वयस्क हो मधुर सुर से वंशी बजाते हुये श्रीराधा के करकमल को पकड़ि दोनों एक अद्भुत मणि जटित सिंहासन पर श्रीराधा को वाम ओर करि विराजमान हुये। तब चतुर मुख ब्रह्मा आय, कर जोड़ि इस प्रकार वन्दना करने लगे कि हे श्रीराधा गोविंद आप दोनों अनादि स्वरूप हैं और जब जब अपनी इच्छा से स्वरूप धारण करते हैं तब दोनों एक संग ही रहते हैं। गोलोक में लीला के साथ, वैकुण्ठ में लक्ष्मी के संग, रामरूप में सीता के साथ, भूमा अवतार में कमला के संग, यज्ञरूप में दक्षिणा के साथ, नर नारायण रूप में शांति नाम वामा के साथ, ब्रह्मरूप में प्रकृति के साथ रहते हैं। सगुणरूप में माया के संग अर्थात् प्रत्येक रूप के साथ आप की आनन्द शक्ति राधा का संग रहता है। कभी अंश रूप से और कभी पूर्ण रूप से ऐसे गौर श्याम रूप धारी हे द्वैत रूप अद्वैत प्रभु, आप के शरण हूँ। आप की आज्ञा होय तो विवाह लीला उपचार करूँ। फिर श्रीराधा कृष्ण की आज्ञा पाय ब्रह्मा ने दोनों को पीढ़ों पर बैठारि पाणिग्रहण कराय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

...ग्रन्थालय, ...निधि, ...

और पाँच मंत्र पढ़वाय आप ही कन्यादान दिया और अग्नि की प्रदक्षिणा करवाय सप्त भाँवरी फिरवाई। तब देवताओं ने पुष्प वर्षा करी। सिद्ध, चारण, विद्याधर और गंधर्वों ने दुंदुभी, मृदंगादि वाजन वजाय नृत्य गान किया। फिर भक्ति का वरदान पाय सुरगणों सहित ब्रह्मा निज निज लोक को गये। तदन्तर कृष्ण ने निज कर से राधिका को और राधिका ने कृष्ण को खवाया और रास चौतरा रचि अनेक लीला करि रास विलास और रमण किया, फिर जल विहार हेतु जल भीतर प्रवेश करि विविधि भाँति जल क्रीड़ा करी। फिर परस्पर पुष्प शृंगार किया और अनेक अपार लीला करि कृष्ण बाल रूप हो रुदन करने लगे। तव आकाशवाणी हुई कि हे राधा, अब अपने गृह जाउ। तुम्हारे सव मनोर्थ शीघ्र पूर्ण होयँगे। तव राधाजी कृष्ण का कर पकड़ि गोकुल में आईं और यशोदा की गोद में कृष्ण को दै बोलीं कि नन्द ने इनको तुम्हारे ढिग पठाया है सो लेउ। तब यशोदाजी ने कहा कि हे वृषभानु कुमारी तू धन्य है। तू ने मेरे सुत की रक्षा करी। यह सुनि राधाजी अपने धाम को चली गईं। इस श्रीराधा गोविंद के चरित्र को जो प्रेम से पढ़ता है, सुनता और स्मरण करता है उसको अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों फल सहज ही में प्राप्त होते हैं। फिर कृष्ण बाल चरित्र करि पितु माता को आनन्द देने लगे। कभी घुटुरुन चलते हैं, कभी तोतरे वचन बोलने से माता और हलधर भ्राता को सुख देते हैं, कभी आँगन में ठुमुक ठुमुक चलने से नूपुर ध्वनि होती है, कभी मातु-गोद में विराजते हैं। कटि प्रदेश में किंकिणि दामिनि समान शोभा देती है, कभी ब्रज बालकन सहित आँगन में लोटते हैं। शीश पर चौतनी, कर कमलों में ककना, उर में मुक्ता-माल और वघनखा विराजमान है। अंग धूलि से धूसरित है। कभी नन्दरानी के कण्ठ में लपट जाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं, कभी अँगुरी पकड़ि आँगन में डोलते हैं, कभी दौड़ चलने से गिर पड़ते हैं और पुनि उठ कर चलते हैं। अंग प्रति आभूषणों से दुगुणा शोभा हो रही है, पीत झँगा श्याम तन पर सुशोभित है, कभी नन्द बाबा की परछाई पकड़ने दौड़ते हैं इन चरित्रों के देखने को ब्रज गोपियाँ दौड़ि २ नन्दरानी के गृह में आती हैं। एक बेर बहुत सी गोपी आईं और यशोदा से कहने लगीं कि हे नन्दरानी तेरे सुत के ऊपर के छै दांत निकरे हैं सो मामा को भारी हैं कुछ दान कराना उचित है। तब रोहिणी और यशोदा कृष्ण के हाथ से दान कराती हैं। कुछ अधिक बड़े होने पर मधु, मंगल, तोक और श्रीदामा आदि ग्वाल बाल सखा साथ लै हाथन में लकुटी लये ब्रज ग्वालिनियों के घर जाय दधि दूध के भाँड़े फोड़ि लूटि लूटि खाते हैं और ऊधम मचाते हैं। एक दिन उपनन्द की स्त्री प्रभावती यशोदा पर उरहना देने आई कि तेरा बालक सूने भवन में जाय बड़ा उत्पात करता है। जब हम दूध दधि माखन देती हैं सो न लैकर हमारे पीछे सारे भाजन भड़फोड़ कर देता है। बरजने पर फूहर गारी देता है इतने बड़े ब्रजाधिप का बेटा होकर चोरी ऐसा खोटा कर्म करता है। तब दोनों माता कृष्ण को समझाती हैं और ताड़ना देती हैं कि तेरे घर कोटि धेनु हैं तू पराये घर जाय खोटा कर्म करता है। आगे जो ऐसा कर्म करैगा तो मारौंगी और जब वह गोपी चली गई तब फिर कृष्ण गोपी का भवन सूना पाय भीतर घसे। दधि गोरस छीकों पर धरा देखि एक ग्वाल को ऊखिल पर चढ़ाय उसके कंधा पर चढ़ि लकुटी से भाँड़े में छिद्र कर दिया। जब दूध दधि की धार गिरने लगी तब सब ग्वालों सहित पीने लगे। इतने में प्रभावती आय गई और यह कौतुक देखि पकड़ने को धाई, सब सखा भाजि गये कृष्ण को उसने पकड़ लिया और बड़ा सा घूँघट काढ़ि बाँह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पकड़ि नन्दरानी पर उरहना देने लै चली। तब माता का भय मानि कृष्ण ने यह लीला करी कि स्वयं प्रभावती के बालक का रूप धारण करि लिया। यशोदा ढिग पहुँचने पर प्रभावती बोली अरी यशोदा तेरे सुत को आज पकड़ कर लाई हौं, तू सदा अपने सुत की ओर हो मुझको ही दोष देती रही सो अपने सुत को ले। यह सुनि और देखि यशोदा ने ठट्ठा करि कहा कि बावरी यह तेरा सुत है कि मेरा? तू सदा मेरे सुत को झूठ ही लगाया करती है। तुझको क्या हो गया है। बावरी तो नहीं हो गई है। यह सुनि घूँघट उठाय देखा तो अपना सुत पाय अति लज्जित और विस्मित हो घर लौट आई। इस प्रकार घर घर माखन चोरी और बाल चरित्र करि गोप, गोपी, नन्द, उपनन्द आदि को सुख देने लगे। इन व्रज-वासियों के धन्य भाग्य हैं जिनकी महिमा ब्रह्मा शेष महेश भी वर्णन नहीं कर सकते।

राजा बहुलाश्व बोला कि हे मुनिवर! यह नन्द, उपनन्द और वृषभानु कौन थे और उनके नाम क्या थे? यह सुनि नारदजी बोले कि श्रीधर, श्रीश, विमल, सत्य मंगल, राग जीत, सुरतापन, रंगवल्लि, पति और मंगल ऐन यह नवनन्द हुये और बीति होत, श्रुति, अग्नि भुक, गोपति, श्रीकर, पावन, साँव, व्रजेश और सुदान्त यह नव उपनन्द हुये। और भार्गव, शुक्र, पतंग, नीतिवित, गोपेष्ठ और दिव्य वाहन यह षट वृषभानु हुये। यह नन्दादि गोलोक के द्वारपाल थे और मोर पिच्छ वंशी धारी गोलोक के कोटि रक्षकों में से कुछ उपनन्द हुये एवं षट वृषभानु गोलोक के निकुंज रक्षक थे। इन सब ने भगवत् इच्छा और आज्ञा से व्रज में जन्म धारण किया था। इनके मध्य में कृष्ण ने जो अन्य चरित्र करे उनको सुनौ—एक समय कृष्ण ने माटी खाई है, ऐसा बलदेव के कहने पर यशोदा मइया सांटी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लै दौड़ी और बोली अरे कान्ह दधि, माखन, मिश्री सकल पदारथ छोड़ि तू माटी क्यों खाता है. तू बहुत ढिठाई करने लगा। यह सुनि कृष्ण बोले कि यह सब बालक मेरे पीछे पड़े हैं, झूठ ही दोष लगाते हैं, मैंने माटी नहीं खाई, देख ले। यह कहि मुख खोल दिया तो यशोदा ने कृष्ण के मुख में सकल व्रज, सप्त-द्वीप, नवखंड गोकुल तथा निज सदन देखि नयन मूँद लिये और चकित हो घबराय गई, माया से मुग्ध हो बहुत दान मान कराया। फिर एक दिन नन्दरानी प्रात समय उठि मथानी लै दधि मथने लगी, तब कृष्ण के बहुत माँगने पर भी मइया ने माखन नहीं दिया। तब कृष्ण ने रिस करके लकुटी मारि मथानी फोड़ डारी और दधि बहने लगा। तब यशोदा पीछे पीछे पकड़ने को दौड़ी और कृष्ण आगे आगे भाजने लगे। जिनको योगी जन भी नहीं खोज पाते सो कृष्ण यशोदा के हाथ कब आने लगे? किन्तु भक्त वत्सल कृष्ण मैया के परिश्रम को सहन न कर सके और मैया के कर में अपने को पकड़ाय दिया और यशोदा कृष्ण को धमकाय बाँधने की युक्ति करने लगी। जो रसरी कटि में बाँधती थी सो दो अंगुल छोटी पड़ जाती थी। इस प्रकार मैया को व्याकुल देखि दयानिधान को दया आय गई और तुरन्त ऊखिल में बँध गये। जो भगवान् ब्रह्मा, शिव, शेष पर भी ऐसी कृपा नहीं करते सो यशोदा की भक्ति से रसरी में बँध जाते हैं। कृष्ण के बंधन का समाचार सुनि सब गोपी दौड़ि दौड़ि-यशोदा के भवन में आईं और क्रोधित हो कहने लगीं कि अरी यशोदा तू अति निर्दई है जो ऐसे कोमलांग को रसरी से बाँधा है। वृद्धावस्था में एक बालक पाया है उसको ऐसी ताड़ना देती है, हमारे व्रज के बालक कितना उत्पात करते हैं किन्तु कोई दण्ड नहीं पाते। तू बौराय गई है जो किंचित हानि के लिये कठोरता से इतना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दण्ड दे रही है। यह सुनि यशोदा ने गोपियों से कहा कि प्रति दिवस तुम सब उरहना लाती हो और अब ऐसा कह रही हो, अपने-अपने गृह चली जाउ। तब सब तहाँ से चली गईं और यशोदा गृह कार्य में लग गईं। तब कृष्ण ऊखल घसीटते भये यमुना तीर लगे हुये बहुत पुराचीन यमलार्जुन के वृक्षों के समीप आये और दोनों वृक्षों के मध्य में ऊखल को फंसाय ऐसा झिटका दिया कि दोनों वृक्ष अर्राय कर गिर पड़े और उनमें से दो देवता निकल आये और कृष्ण की परिक्रमा और स्तुति करि स्वर्ग को चले गये। तब कुलाहल शब्द सुनि नन्दराय ने आय कृष्ण के कटि से रसरी खोलि गोद में उठाय लिया और बालकन से जो तहाँ खेल रहे थे सारा वृत्तान्त सुना और यशोदा पर बहुत क्रोध किया। तब यशोदा ने लज्जित हो कृष्ण को अंकम भरि बहुत दान कराया। राजा बहुलाश्व पूछने लगे कि वे देव कौन थे जिनको कृष्ण ने शाप से मुक्त किया। तब नारदजी बोले कि एक समय कुबेर के बेटा मणिग्रीव और नल कूवर नाम नन्दन वन के सरोवर में स्त्रियों सहित नग्न जल-क्रीड़ा कर रहे थे तहाँ देवल ऋषि का आगमन हुआ तिनको देखि न लज्जा करी और न प्रणाम किया उन्मत्त से क्रीड़ा करते रहे। तब ऋषि ने शाप दिया कि हे जड़ बुद्धि वाले, तुम भूमि पर जड़रूप वृक्ष होउ और शत वर्ष पश्चात् जब गोकुल में कृष्ण भगवान् अवतार धारण करैंगे तिनके हाथ तुम्हारी शाप-मुक्ति होयगी। सोई यमलार्जुन वृक्षों का कृष्ण ने शाप से उद्धार किया और उसी दिन से कृष्ण का एक नाम दामोदर भी हुआ। फिर एक समय अत्रिसुवन दुर्वासा कृष्णावतार जानि दर्शन हेतु व्रज में आये तब देखा कि रमण-रेती में गोप बालकों के साथ कृष्ण लोटि-लोटि खेल रहे हैं. यह देखि दुर्वासा को भ्रम हुआ कि यह तो गोप बालक जान पड़ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं; भगवान् ऐसी लीला नहीं करते, यह विचारि निकट गये। तब कृष्ण की स्वाँस के साथ मुख भीतर चले गये, तहाँ घोर, निर्जन और तम आच्छादित वन देखा; तब व्याकुल हो गये। फिर एक अजगर ने निगल लिया, उस अजगर के उदर में ब्रह्माण्ड देखा, तहाँ बैठि एक कोटि वर्ष तप किया फिर नैमित्तिक प्रलय होने पर सात सिंधु का जल बढ़ा और सब पृथ्वी डूब गई। तहाँ दुर्वासा एक सहस्र वर्ष भटकते रहे फिर एक अन्य ब्रह्माण्ड देखा तिसके छिद्र में पैठि दूसरा उत्तम ब्रह्माण्ड देखा जिसमें कोटि-कोटि अंड लटक रहे थे। तब दुर्वासा का सारा घमंड जाता रहा, फिर विरजा नदी पार करि यमुना गोवर्द्धन और अनेक वनों सहित गोलोक देखा तहाँ निकुंज में अगणित गोप गोपी और राधा सहित कृष्ण को देखा जो एक विशाल कमलासन पर विराजमान थे, तिनके हँसने पर फिर मुख में समाय गये, तहाँ से निकल कर पुनि देखा कि रमण रेती में बालकों सहित कृष्ण खेल रहे हैं, जिनके प्रफुलित कमल सरीके नेत्र हैं, श्यामवरण, पूर्ण चन्द मुखारबिंद पर कारी-कारी अलकावली छूट रही हैं। भ्रकुटी की कसन, मन्द-मन्द हँसन मनको मोहित करती है। वनमाल धारण किये हैं। अंग-अंग प्रति मणि जटित आभूषण अनोखी छवि दे रहे हैं। छोटे छोटे ग्वाल बालकन साथ केलि कर रहे हैं। तब दुर्वासा ने कृष्ण को पूर्णतम निश्चय करि बहुत स्तुति करी। यहाँ तक इस गोलोक खण्ड में कृष्ण लीला वर्णन करि श्रीनारदजी बोले कि जो मनुष्य इस गोलोक खंड का नित्य पाठ और हरि चरित्र का स्मरण करता है सो इस लोक के सब विभव भोग करि अन्त में गोलोक में निवास करता है।

इति श्रीगर्ग संहिता अंतर्गत बाँके पिया अनुवादित
गोलोक खण्ड सम्पूर्ण शुभमस्तु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्रीवृन्दावन खण्ड प्रारम्भः

दोहा—सुमिरि कृष्ण परि पूर्णतम, लीला जासु अखण्ड ।
वर्णों अति उत्साह सों, श्रीवृन्दावन खण्ड ॥

श्रीनारद मुनि बोले कि नित्य उत्पात और अरिष्टागमन देखि सब नन्द और उपनन्द एक ठौर बैठि विचार करने लगे कि अब गोकुल में निवास करना ठीक नहीं, किसी अन्य ठौर निवास करना उचित है। तब सब में वृद्ध सन्नन्द बोले कि वृन्दावन उत्तम ठौर है जहाँ पशुओं को चरने का भी सुपास है और जहाँ कोई उपद्रव आने की भी आशंका नहीं है और तुम्हारे सब के पुत्र कृष्णादि बालकों के खेलने का ठौर भी उत्तम है यह सुनि नन्दराय पूँछने लगे कि हे भाई यह व्रज कितने योजन में है, इसका सम्पूर्ण वृत्तांत हम से कहो। क्योंकि आप सब में वृद्ध और ज्ञानी हैं। तब सन्नन्दजी बोले कि यह माथुर मंडल इक्कीस योजन का है और इसको सब तीर्थों ने पूजा है सो अति पवित्र है। तिसमें वृन्दावन अति उत्तम वन है और पूर्णतम परमेश्वर का उत्तम धन है जो यमुना के तट पर बसा हुआ है। बैकुण्ठ से भी अधिक उत्तम है, जहाँ सकल पर्वतों का राजा गोवर्द्धन पर्वत कालिंदी तट पर सुशोभित है जिसका विस्तार षट योजन में है। यह सुनि नन्दराय ने हर्षित हो फिर पूछा कि व्रज को समस्त तीर्थों ने कब पूजा था जिससे यह तीर्थ राज हुआ। यह सुनि सन्नन्दजी बोले कि नैमित्तिक प्रलय होने पर जब ब्रह्माजी ने शयन करी और शंखासुर वेदों को चुराय ले गया तब भगवान् ने मत्स्य रूप धारण करि और उस महाबली दैत्यराज से घोर युद्ध करि चक्र से उसका शीश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छीन लिया और वेदों को ब्रह्माजी को दे प्रयाग में स्नान किया फिर प्रयाग को राजतिलक करि सब तीर्थों का राजा किया। अक्षय वृक्ष छत्र समान हुआ और गंगा यमुना चँवर भये तब सकल तीर्थों ने आय भेंट धरी। फिर एक समय नारदजी ने तहाँ जाय पूजन करि कहा कि तुम अपने को तीर्थराज वृथा ही मानते हो क्योंकि सब तीर्थों ने तो भेंट दी किन्तु व्रज का एक तीर्थ भी नहीं आया और न पूजा भेंट करी। यह सुनि प्रयाग रिस करि सकल तीर्थों सहित श्रीहरि धाम में गया और श्रीहरि की स्तुति प्रणाम करि बोला कि आप ने मुझ को सब तीर्थों का राजा करि तिलक किया है परन्तु व्रज का एक तीर्थ भी भेंट ले नहीं आया। यह वचन सुनि भूमि मद प्रहारी हरि हँसकर बोले कि हम ने तुमको अपने घर का राज्य नहीं दिया है. व्रज मेरा निज स्थान है जो प्रलय में भी नाश न होगा तुम जाय उसकी पूजा करो। तब प्रयाग ने सब तीर्थों सहित आय व्रज का पूजन किया। तब से मथुरा मण्डल सब तीर्थों में उत्तम व्रज धाम तीर्थ कहाता है ऐसा हमने सुना है। फिर कौतुकी कृष्ण यह चरित्र सुनि सनन्दजी से पूछने लगे कि हे सनन्दजी श्रीहरि ने भूमि का मद कैसे हरण किया सो चरित्र कहिये। यह सुनि सनन्द हर्षित हो बोले कि हिरण्याक्ष के पृथ्वी को पाताल में ले जाने पर जब भगवान् वाराह रूप धरि अपने दन्त पर पृथ्वी को लेकर चले तब भूमि गर्वित हो बोली कि सर्वत्र अथाह जल है मुझको कहाँ धरोगे। तब श्रीवाराह भगवान् बोले कि जहाँ वृक्ष दीख पड़ेंगे तहाँ हम तुमको धरेंगे। तब पृथ्वी विस्मित हो बोली कि समस्त गिरि वृक्षादि तो मेरे ऊपर हैं इसके अतिरिक्त कौन स्थान है जहाँ मुझ को धरोगे। यह कहते ही भूमि ने अपने को एक पद के तले आजाय इतना लघु देखा तब फिर धरा बोली कि यह सामने कहाँ के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृक्ष दीख पड़ते हैं। तब श्रीवाराह ने उत्तर दिया कि यह गोलोक का स्थान माथुर मंडल कहाता है, इसका विनाश प्रलय काल में भी नहीं होता। तब पृथ्वी का सारा मद टूट गया और व्रज मंडल को सब से परे और अपार जाना। इस प्रकार व्रज माहात्म्य जो मनुष्य श्रद्धा से चित दे सुनता है सो श्रीहरि की भक्ति पाता है। तदन्तर नन्दराय सनन्दजी से बोले कि आप वृद्ध और व्रज के परम ज्ञाता धन्य हैं अब कृपा करि अघ हरनि यमुना और गोवर्द्धन के आने की कथा वर्णन करिये। तब सनन्दजी बोले कि जैसे हमने हस्तनापुर में भीष्म और पाण्डु सम्बाद सुना था उसी के अनुसार कहते हैं कि जब परिपूर्णतम श्रीकृष्ण ने गोलोक से पृथ्वी पर आने का विचार किया और श्रीराधाजी से चलने को कहा तब श्रीराधाजी बोलीं कि तहाँ यमुना, गोवर्द्धन और वृन्दावन न होने से मेरा मन न लगैगा। तब श्रीकृष्ण की आज्ञा से गोलोक की चौरासी कोश भूमि जिस पर यमुना, गोवर्द्धन और वृन्दावनादि केलि स्थान थे धरातल पर आई। शाल्मलिद्वीप में द्रोण पर्वत के पुत्र गोवर्द्धन ने श्रीहरि की आज्ञा से जब चलने का विचार किया तब सब मेरु आदि पर्वत विदा करने को आये और बोले कि तुम ने परिपूर्णतम कृष्ण की सेवा की है और करोगे और वे तुम्हारे ऊपर केलि करैंगे इस हेतु तुम सब पर्वतों में राजा कहाओगे। इसी अन्तर में तहाँ विचरते हुये पुलस्त्य मुनि का आगमन हुआ श्याम स्वरूप गोवर्द्धन को अमित वृक्षों झरनों और खग मृग वानरादि सहित परम रमणीय देखि हर्षित हो और द्रोण पर्वत ढिग जाय बोले कि अहो द्रोण, तुम सब पर्वतों में शिरताज हो, मैं तुम से इस गोवर्द्धन पर्वत की याञ्चा करता हौं, इसको ले जाय काशी में जो केशव निर्मित श्रीशिव की नगरी है और जहाँ मुक्ति फिरा करती है, गंगा और विश्वेश्वर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहाँ विराजमान हैं तहाँ धरौंगा और इस पर बैठि तप करौंगा। द्रोण यह वचन सुनि नेत्रों में जल भरि गोवर्द्धन से बोला कि द्विज की आज्ञानुसार कार्य करौ। तब गिरराज ने कहा कि हे मुनिवर मैं आठ योजन लम्बा, द्वै योजन ऊँचा और चार योजन चौड़ा हौं सो समूचा कैसे जाय सकता हौं। तब मुनिवर बोले कि मेरे हाथ पर बैठकर चलौ काशी में धरि देउँगा यह सुनि गोवर्द्धन बोला कि एक प्रण से चलता हौं कि बीच में जहाँ धरि देउगे तहाँ से फिर आगे न जाउँगा। तब मुनिराय ने शपथ करि वचन दिया कि जहाँ धरि देउँगा तहाँ से न उठना। तब गिरिनाथ को मुनिवर हाथ पर गेंद समान धरि लै चले, चलते-चलते जब व्रज भूमि में आये तक गोवर्द्धन ने विचार किया कि यहाँ पूर्णतम भगवान् श्रीकृष्ण यमुना तट पर केलि और रास लीला करेंगे यहाँ जीवत ही मुक्ति है। काशी में तो मरे पर मुक्ति होती है तहाँ जाय क्या करौंगा, यह विचारि अपने भार को बढ़ाय दिया। तब मुनि ने अपने वचन को भूलि हरि इच्छा से व्रज में गोवर्द्धन को धरि दिया और लघु शंका करने चले गये। फिर तिस से निवटि स्नान करि गिरि-राज के समीप आय बोले कि अब चलौ और बहुत शक्ति लगाय उठाने लगे किन्तु गिरिराज धरती से टसके तक नहीं। तब मुनि बोले कि क्यों नहीं चलते। तब गोवर्द्धन ने मुनि को उनके शपथ खाय वचन देने का स्मरण कराया। तब मुनिवर ने अपने श्रम को निष्फल देखि कुपति हो शाप दिया कि आशा दै मुझको निराश किया इसलिये तुम नित्य ही तिल-तिल घटा करोगे। यह शाप दै मुनिवर चले गये तब से गोवर्द्धन तिल-तिल नित्य घटता है और जब तक गंगाजी धरातल पर रहैंगी तब तक गिरिराज भी रहेंगे। इस चरित्र के श्रवण करने से सर्व पाप का नाश होता है। फिर सनन्दजी बोले कि जब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्णाज्ञा से यमुना गोलोक से चलीं तब बीच में विरजा और गंगा से भेंट भई और तीनों एक धारा हो प्रमुदित चलीं और मार्ग की सब नदियों में प्रवेश करती हुई वामन चरण विवर में धँसि विष्णु लोक, ध्रुव लोक, ब्रह्म लोक, सुर लोक होती हुई सुमेरु पर्वत की शिखर पर आईं, तहाँ से जब दक्षिण दिशा में पहुँचीं तब गंगा पृथक् होकर हेमांचल पर्वत पर गईं और यमुना कलिंद गिरि पर आय कालिंदी नाम से विख्यात भईं, तहाँ से कल्लोल करती हुई खाँडव बन में आय और एक श्रेष्ठ रूप धारण करि श्रीहरि को पति रूप से वरने के हेतु घोर तप करने लगीं और द्वितीय नदी रूप से व्रज मंडल में आईं और वृन्दावन, मथुरा और गोकुल को पूर्ण किया और श्रीकृष्ण संग रास हेतु तहाँ कृष्णारूप से निवास किया। फिर तहाँ से पश्चिम वाहिनी हो प्रयाग में आय गंगा से मिलि सिंधु समीप जाय गंगा से बोलीं कि अहो जग पावनी गंगा, हम गोलोक जाती हैं। तुम पति से मिलकर पृथ्वी पर विचरौ, तुमको प्रणाम करती हौं, मुझे अब विदा करौ। तब गंगा बोलीं कि हे परिपूर्णतम कृष्ण-प्यारी यमुना, तुम धन्य हौ, तुम्हारे दर्शन से यम का त्रास नहीं रहता, हम हरि आज्ञा से पाताल जाती हैं और तुम गोलोक जाओ, प्रणाम करती हौं अब हमारा तुमारा सम्मिलन व्रज में होगा। यह कहि गंगा पाताल को चली गईं और भोगवती नाम से विख्यात हुईं और श्याम स्वरूप यमुना सप्तद्वीप और सप्त सागर भेदन करि आलोकाचल में आय ऊर्ध्वगति से स्वर्ग को पवित्र करती हुई ब्रह्मद्रव में पहुँच कर गोलोक को चली गईं। जो मनुष्य यमुना के चरित्र और गुणों का गान करता है सो परम कल्याण को पाता है। सनन्दजी के ऐसे वचन सुनि नन्दजी परम हर्ष युत उपनन्द और वृषभानु सहित सब गोपवृन्द और यशोदा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोहिणी इत्यादि गोपियों को रथों पर चढ़ाय और शकटों में सब वस्तु भराय गोधन साथ लै वृन्दावन में आय निवास करने लगे। चारयोजन में नन्दराय ने अपना कोट बनाया और वृष-भानु आदि गोप-गण के न्यारे-न्यारे भवन रचे गये। रामकृष्ण गोप बालकों सहित बन में धेनु चराने और खेलने लगे। पीत वस्त्र बनमाल धारण करे मुरली बजाते कभी यमुना तट, कभी बरसाने के निकुंजों में, कभी गोवर्द्धन की तलहटी में विहार करने लगे।

एक दिन कंस का पठाया हुआ वत्सासुर दानव आय वत्सरूप धरि चरणों से प्रहार करने लगा तब गोप बालक भागे। यह देखि गोपाल ने उसको पकड़ि एक कैथ वृक्ष पर पटक दिया सो प्राण रहित हो भूमि पर गिर पड़ा और पर-मपद को प्राप्त हुआ। तब सब बालकों ने रामकृष्ण की बड़ी प्रशंसा करी और आकाश से पुष्प-वर्षा भई। यह सुनि नृप बहुलाश्व ने पूछा कि वत्सासुर कौन था, जिसने मुक्ति पाई।

तब नारदजी बोले कि एक समय मरु का पुत्र प्रमीलक वसिष्ठजी के आश्रम पर गया और तहाँ नन्दनि नाम धेनु का प्रतापदेखि और विप्र रूप धरि धेनु लेकर चला। तब सुरभि-नन्दनी ने उसका कपट और छल जानि शाप दिया कि रे पापी, तू पशु होजा। फिर प्रमीलक के बहुत वन्दना करने पर सुरभी ने कहा कि द्वापर युग में तेरा कल्याण होयगा। इस प्रकार व्रज में बछरा रूप प्रमीलक का शापोद्धार हुआ।

फिर एक दिन जब कृष्ण बालकों सहित यमुना तट पर खेल रहे थे तहाँ बकुनाम असुर को देखा, तिस बगुला ने आय कृष्ण को निगल लिया। यह देखि सब बालक रोते हुये भागे और इन्द्र सहित सब देवतों ने बकासुर के बध हेतु निज-निज शस्त्रों का प्रहार किया। इन्द्र के वज्र से पीड़ित हुआ, ब्रह्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के ब्रह्म दण्ड से मूर्छित हुआ, शिव के त्रिशूल से एक पंख कट गया। वायु के वायु अस्त्र से ताड़ित हुआ. यम ने दण्ड मारा, सूर्य ने शतबाण मारे, कुवेर ने खड्ग मारि दूसरा पंख काट दिया, शशि ने शीतलास्त्र से शीत पहुंचाई, अग्नि के अग्न्यस्त्र से अंग के सब रोम जर गये, वरुण ने वरुणपाश से खींचा सो भी टूट गई। भद्रकाली ने गदा से प्रहार किया तिससे मूर्छित हो फिर उठ बैठा, शक्तिधर ने शक्ति मारि एक पद काट दिया किन्तु वीर असुर की मृत्यु नहीं भई और विकाल रूप धारण करि दौड़ा तब सब देवगण भाजे और रुद्रगण ने कृष्ण की स्तुति करी फिर सब देवतों ने एक साथ अस्त्रों का प्रहार किया परन्तु असुर न मरा। कारण कि जिसके उदर में श्रीकृष्ण भगवान् हों सो कैसे मरै। तब कृष्ण ने देवगणों को विकल और उनका पुरुषार्थ देखि अपना शरीर गिरि समान भारी कर लिया। तब असुर ने उगल दिया और मारने को धाया। तब श्रीकृष्ण ने दोनों हाथ से उसकी चोंच पकड़ कर चीर डाला और भूमि पर फेंक दिया तब उसके मुख से एक ज्योति निकसि कृष्ण के अंग में समाय गई। यह सब समाचार गोप बालकों ने नन्दराय को सुनाये और कहा कि आज कृष्ण ने हम सबकी काल से रक्षा करी सो सुनि व्रजवासियों को बड़ा आश्चर्य हुआ और कृष्ण गुण गाने लगे। नृप बहुलाश्व ने पूछा कि ऐसा बलवान बकासुर कौन था। तब नारदजी बोले कि अति बल-धारी दैत्य हयग्रीव का पुत्र उत्कल नाम समस्त सुर गणों को अपने बल से जीति राज्य करने लगा और एक शत वर्ष राज्य के पीछे एक दिन सागर संगम पर जहाँ जाजलि मुनि का आश्रम था जाय बगुला रूप धरि मछरी निकारि-निकारि खाने लगा। यह देखि मुनि को दया आई और कितने बेर मना किया किन्तु मद से गर्वित उन्मत्त बगुला रूप असुर ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न माना। तब ऋषि ने रिसखाय शाप दिया कि बगुला होजा। तब वह असुर भयभीत हो ऋषि के चरणों में गिरा और बोला हे मुनि मैं आपका प्रताप नहीं जानता था, आप परमदयालु और सरल सुभाव हैं, मेरे ऊपर कृपा करिये। क्योंकि साधु दूसरे के अवगुण नहीं देखते, सदा दीनों पर कृपा और स्नेह करते हैं। जैसे पारस लोह का अवगुण न देखि कंचन कर देता है और गंगाजी पतित को भी पावन कर देती हैं। हे मुनि, मैं आपकी शरण हौं।

तब ऋषि जाजलि बोले कि द्वापर के अन्त तक भ्रमता डोलैगा, जब ब्रज में यमुना तट पूर्णतम श्रीकृष्ण अवतार धारण करि वत्स चरावैंगे तब उन्हीं के हाथ से तेरा उद्धार होयगा। इसी बकुरूप दैत्य को मारि कृष्ण ने मुक्ति दी। कारण कि किसी भाँति भी कृष्णस्मरण से उद्धार हो जाता है। बकुला इतने समय तक सदा श्रीकृष्ण स्मरण में रहता था इसी कारण उसकी मुक्ति हो गई।

फिर एक दिन श्रीकृष्ण बालकों सहित यमुना तट वेणु बजाते धेनु चराय रहे थे तहाँ कंस की आज्ञा से अघासुर नाम दैत्य एक बड़े अजगर का रूप धरि आय बैठा, जिसका मुख गुफा समान, एक कोश के घेरे में था। उसको गिरि कन्दरा जानि सब बालक धेनु सहित उसमें घुस गये। यह देखि सबकी रक्षा हेतु कृष्ण भी तिसमें प्रवेश कर गये और अपने शरीर को इतना बढ़ाया कि अघासुर के प्राण उसका शीश फोड़ि निकसि गये। और जीवात्मा हरिधाम को गया और कृष्ण भगवान् ने बाहर निकसि सब बालकों एवं धेनुवृन्द को निकारि सबको जिवाय लिया, तब सुरगणों ने दुंदभी बजाई और पुष्प वर्षा करी। यह सुनि राजा बहुलाश्व ने पूछा कि अघासुर पूर्व में कौन था और किस पुण्य के फल से ऐसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गति पाई। तब नारदजी बोले कि शंखासुर का पुत्र अघासुर बाल अवस्था से महा दुष्ट था, सो एक दिन विप्र अष्टावक्र को देखि हँसने लगा। तब विप्रवर ने शाप दिया कि रे अघी, अजगर होजा। फिर उसके बहुत वंदना करने पर अष्टावक्र बोले कि द्वापर में श्रीकृष्ण भगवान् तेरा उद्धार करेंगे, इस हेतु कृष्ण ने उसका शापोद्धार करि मुक्ति दी। तदन्तर सब बालकों ने यह समाचार यशोदा को सुनाया। तब यशोदा कहने लगी कि हे देव अब कहाँ जायँ? गोकुल छोड़ि वृन्दावन आये यहाँ भी नित्य नये उत्पात होते हैं। उस दिन वत्सासुर से बचा, फिर बकुला से बचा, आज इस उत्पात से रक्षा भई। तब नन्दराय विचार करि बोले कि गर्गाचार्य ने कहा था कि कृष्ण को किसी से भय नहीं है, संकट से रक्षा भई इस हेतु दान कराय देउ। तब यशोदा ने दो सहस्र धेनु और अन्न वस्त्र कंचनादि बहुत सा दान कृष्ण के हाथ से कराय द्विजों को दिया।

नारदजी बोले कि कृष्ण बलदेव गोप बालकों और बछड़ों सहित अनेक रंग की सुरभी वृन्द जिनके सुवर्ण के शृंग, पुच्छ में मुक्ता के गुच्छा लटक रहे हैं, शीश पर रत्न जड़ित फूल बँध रहे हैं, गरे में घंटा, चरणों में घुँघरू बज रहे हैं। संग लिये यमुना तीर जहाँ अनेक वृक्ष तमाल, निंबु बट, कदम्ब, प्रयाल, जम्बु, पनस, कचनार, रसाल, केला, गुलाब, बकुल, केतकी, माधवी, बेला इत्यादि लगे भये हैं। ऐसे वृन्दावन और गोवर्द्धन जिसमें झरना झर रहे हैं और चंपक, पलाश, अशोक, चन्दन, देवदारु, अर्जुन के वृक्षों युत कोकिलावन, कुशवन, भद्रवन, कामवन, बहुलावन, भांडीरवन, वंशीवट, खिदरवन, बरसाना, गह्वरवन में जहाँ अनेक भाँति के पक्षी मोर चकोर, कोकिला, पिक, सारिका, शुक इत्यादि बोल रहे हैं। नटवर वेष धरे धेनु चराने और नाना भाँति के विहार केलि करने लगे। फिर दिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुँदे पीछे धेनु वृंद आगे करि जब वेणु बजाते भये धेनु के खुरन की धूलि से धूसरित अंग युक्त भवन को लौटते थे तब सिगरी दर्शनाभिलाषी व्रजांगना निज-निज अटारी और द्वारों पर एकत्रित हो जाती थीं। और यशोदा एवं रोहिणी माता अंचल से मुख की रज झाड़ि अंक में लेती थीं। और वन की कुशल पूँछि आरति उतारती थीं। और ब्यालू कराय शयन कराती थीं। एक दिन दो घड़ी दिन चढ़े गो चारण करते एक ताल वन नाम वन में, जहाँ धेनुक नाम असुर के भय से कोई न जाय सकता था गये। बलराम ने ताल फल खाने के हेतु एक बड़े ताल वृक्ष को हिलाया तिस का शब्द सुनि कंस का सखा धेनुकासुर जिसका रूप खर समान था दौड़ा और पिछले चरणों से बलदेव पर प्रहार किया। तब बलराम ने उसके चरण पकड़ि ताल वृक्ष पर पटक दिया जिससे बहुत वृक्ष टूट कर गिर पड़े। तब धेनुक ने उठकर अपने चरणों से बलराम जी को उठाय एक योजन पर फेंक दिया और ग्वालों की ओर दौड़ा। तब श्रीदामा ने लाठी से, सुवल्ल ने मुष्टक से, तोक ने फरसा से, प्रहार किया। अर्जुन ने भुजान से ढकेला, देवप्रस्थ ने पत्थर मारा. श्रीकृष्ण ने क्रोध करि उठाय गिरि शिखर पर फेंक दिया। तब असुर मूर्छित हो गया, फिर उठकर कृष्ण को अपने शृंग से उठाय आकाश को लै गया। कृष्ण ने उसको तहाँ से भूमि पर पटक दिया, तब असुर ने गोवर्द्धन की एक शिला उखाड़ि चलाई, सो कृष्ण ने हाथ से रोकि उसी से असुर पर प्रहार किया। इसी अन्तर में बलरामजी उठकर आय गये और खर रूप असुर के चरण पकड़ि बल सहित भूमि पर ऐसा पटका कि धेनुकासुर प्राण त्यागि और दिव्य श्याम स्वरूप धारण करि कृष्ण बलराम को दण्डवत् करके छत्र चँवर युत भगवत् पार्षदों के संग गोलोक को चला गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह सुनि राजा वहुलाश्व ने पूछा कि धेनुकासुर कौन था जिसको बलराम ने मारा। तब नारदजी बोले कि राजा बलि का पुत्र साहसी नाम एक समय स्त्रियों सहित नन्दन वन में जहाँ दुर्वासा ऋषि तप कर रहे थे जाय रमण करने लगा। तब घोर शब्द होने से ऋषि की समाधि भङ्ग हो गई और ऋषि ने क्रोधित हो शाप दिया कि रे शठ! खर समान शब्द करने से खर होजा। फिर बहुत वन्दना करने पर ऋषि बोले कि चार लक्ष वर्ष पीछे ताल वन में बलराम के हाथ से तेरी मोक्ष होयगी। कृष्ण ने इस कारण नहीं मारा कि राजा बलि को पूर्वकाल में बरदान दिया था कि सात पीढ़ी तक तेरी रक्षा करौंगा। इसलिये उसको गोलोक पठाय दिया।

एक दिन बलराम की अनउपस्थिति में कृष्ण ग्वाल बालों सहित धेनु चराते हुये यमुनातट कालीय ह्रद पर पहुँचे तहाँ सुरभी गण और गोप बालक जल पान करि मुर्च्छित हो गये। तब कृष्ण ने अपनी अमृत दृष्टि से सब को सचेत कर दिया और यमुना जल विष रहित करने का विचार करि फेंट बाँधि एक कदम्ब के वृक्ष पर से यमुना में कूद पड़े और जल भीतर जहाँ काली नाम नाग रहता था जाय चरणाघात से उसको जगाया। तब काली क्रोधित हो दौड़ा और कृष्ण को अपनी पूँछ से लपेट लिया। कृष्ण ने अपना अंग बढ़ाया तब पीड़ित हो कृष्ण को पूछ से छोड़ि सौ फन फैलाय दौड़ा। कृष्ण ने चरणों और तमाचों से उसको पीड़ित किया। फिर उचककर उसके शीश पर जाय चरण की ठोकरों से उसका मद चूर्ण कर दिया और नटवर वेष करि नृत्य करने लगे। यह देखि सुर गणों ने पुष्प वर्षा करी और ताल देने लगे। काली की नागिनियों ने भयभीत हो कृष्ण की स्तुति करी कि हे जगदीश व्रजचन्द! आप सकल ब्रह्माण्डों के नायक हैं, आप की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महिमा हम तुच्छ अधम जीव नहीं जान सकते। हमारे पति को आपने चरण कमलों से पवित्र किया है, सो उसके अति भाग्य हैं। अब इसके अपराध को क्षमा करि जीवदान दीजिये। हम आपके शरण हैं। यह बन्दना सुनि कृष्ण शीश पर से उतर पड़े और काली से बोले कि इस ठौर को छोड़ि रमणक द्वीप में निवास करो तुम्हारे मस्तक पर मेरे चरण चिन्ह से तुमको गरुड़ से भय न रहेगा। यह आज्ञा मानि काली अपने परिवार सहित रमणकद्वीप को चला गया। और इधर कृष्ण को कालीयहृद् में कूदते देखि सब बालकों ने हाहाकार करते हुये नन्द यशोदा को खबर करी, सो सुनि बलदेव सहित सब रोते भये यमुना तट पर आये। तब बलदेवजी ने सबको धैर्य धराया। इसी अन्तर में कृष्ण कालीयहृद् से निकस आये, तब सब कृष्ण को आलिङ्गन करि हर्षित भये और संध्या हो जाने के कारण तहाँ ही विश्राम किया। रात्रि में प्रचंड वायु चलने पर बाँसों की परस्पर रगड़ से दावा अग्नि लग गई और वन को जराने लगी। तब सब व्याकुल हो कृष्ण की शरण आये और कृष्ण के कहने पर सबने नेत्र मूँद लिये। तब कृष्ण ने अग्नि पान करि सबकी रक्षा करी और भोर भये भवन को लौट आये।

यह चरित्र सुनि राजा ने पूछा कि कालीनाग यमुना में आय क्यों रहा था।

तब नारदजी बोले कि स्वायंभुवमनु के राज्य में विंध्याचल पर्वत पर वेदशिरा नाम मुनि तप करते थे। तहाँ हयशिरा मुनि भी तप करने आये तब वेदशिरा मुनि ने कहा कि यह मेरा आश्रम है तुम दूसरी ठौर बैठि तप करो। तब हयशिराजी बोले सब पृथ्वी श्रीहरि की है। तुम मेरी-मेरी क्यों करते हो और तुम जो त्रिकाल स्वास छोड़ि-छोड़ि कटु वचन कह रहे हो, इस कारण तुम सदा व्यालरूप हो रहोगे। तब वेदशिराजी बोले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि तुम काग की समान अपनी ही काय-कायँ कर रहे हो इससे तुम भी सदा कागरूप रहोगे। यह विवाद जानि विष्णु भगवान तहाँ प्रकट भये और दोनों भक्तों को आश्वासन दे मृदु वचन से बोले कि तुम दोनों वृथा कलह कर रहे हो। हे वेदशिरा, अब तुम निज स्थान पर जाउ, जब मेरे पद का चिन्ह तुम्हारे मस्तक पर होगा तब तुमको गरुड़ से भय न रहैगा। और हयशिरा से बोले कि तुमको ज्ञान अधिक रहेगा यह कहि श्रीहरि अन्तर्ध्यान हो गये। सोई हयशिरा नीलाचल पर्वत पर कागभुशुण्ड* हो वास करने लगे और बड़े रामभक्त हुए। जिन ने गरुड़ को रामायण सुनाय उनका संदेह निवारण किया। और दक्ष प्रजापति ने जब अपनी ग्यारह कन्या कश्यपजी को दीं उनमें जो कद्रू नाम कन्या थी सोई आय रोहिणी हुई। जिसमें शेषरूपी बलरामजी ने अवतार धारण किया और कद्रू की सन्तान जो सर्प थी उसी में एक पुत्र वेदशिरा मुनि भी काली नाम से हुए।

नारदजी बोले कि हे राजा, कद्रू के प्रथम पुत्र जो शेषजी थे उनकी कथा सुनो। सृष्टि के रचने पर नारायणजी ने अनन्त जी से कहा कि तुम प्रजा का उपकार जानि इस पृथ्वी को अपने शीश पर धारण कर लेउ। सो सुनि अनन्तजी ने पूछा कि कितनी अवधि पर्यन्त धारण करना होगी। तब विष्णु भगवान् बोले कि मेरे नामों मेंसे प्रति दिन एक सहस्र नाम लिया करो। जब मेरे सब नाम समाप्त हो जायँ तब पृथ्वी को धर देना। फिर अनन्तजी ने पूँछा कि मैं किसके आधार पर ठहरों। तब विष्णुजी बोले कि मेरे कमठ रूप की पृष्ठ पर तुम रहोगे।

---

* रामायण में जो कागभुशुंड का चरित्र अन्य प्रकार से वर्णित है उसका कारण कल्प भेद समझना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह सुनि हर्षित हो पाताल से भी लक्षयोजन नीचे जाय अनन्त शेष ने पृथ्वी को शीश पर धारण कर लिया और सब सर्प ब्रह्माजी की आज्ञा से सप्त अधोलोक अतल, वितल, सुतल, महातल, तलातल, रसातल और पाताल में जाय वास करने लगे। और कोई कोई ब्रह्मा की आज्ञा ले रमणक द्वीप में रहने लगे। तब राजा विदेह ने पूछा कि रमणक द्वीप में तो बहुत सर्प रहते थे। काली और गरुड़ में शत्रुता कैसे हुई ?

नारदजी बोले कि रमणक द्वीप में जहाँ तक्षकादि बहुत विषले सर्प बसते थे, एक दिन गरुड़जी जीविका हेतु गये। तब तक्षकादि ने एक सर्प नित्य देने का वचन दिया और वारी-वारी से देने लगे और गरुड़ खाय चले जाते थे। एक दिन एक सर्प जो गरुड़ के लिये धरा गया था उसको काली सर्प ने आय खाय लिया। तब खगपति क्रोधित हो दौड़े और काली को भूमि पर पटक दिया। तब काली उठकर मुख पसारि विष ज्वाला उगलता हुआ गरुड़ की ओर दौड़ा। खगपति ने चोंच और पंजों से काली को बहुत ताड़ित किया। तब काली ने गरुड़ के दो पंख नोच लिये उन्हीं दो पंखों से मयूर और नीलकंठ की उत्पत्ति हुई, जिनका दर्शन विजय-दशमी को शुभ सूचक होता है। फिर खगपति क्रोधित हो काली के मारने को दौड़े। तब काली भयभीत हो भागा और गरुड़ ने पीछा किया। तब काली सब लोकों में घूमता हुआ अनन्त शेष के ढिग जाय शरण-शरण कहि बोला कि खगपति से मेरी रक्षा करिये। तब अनन्त शेष बोले कि खगपति से तुम्हारी कोई रक्षा नहीं कर सकता। एक उपाय यह है कि तुम वृन्दावन में यमुना तट पर सौभरि ऋषि का आश्रम है ताँह गरुड़ नहीं जाय सकता सो तहाँ जाय रहो। कारण कि सौभरि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऋषि एक समय तप कर रहे थे, तहाँ जल में एक मीन को विहार करते देखि और कामातुर हो राज कन्या शतमंधा से विवाह करि और तप प्रभाव से विभव प्राप्त करि रमण करने लगे। तहाँ गरुड़ ने जाय मीनादि जलचर निकारि-निकारि खाना प्रारंभ किया। तब ऋषि ने दया विचारि गरुड़ को शाप दिया कि आगे जो यहाँ आओगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जायगी। इसी कारण तहाँ तुम को गरुड़ से भय न रहेगा और आनन्द से निवास कर सकोगे, तब से काली यहाँ यमुना में निवास करता था। तिस को श्रीकृष्ण ने अभय करि पुनि रमणकद्वीप में पठाय दिया।

राजा बहुलाश्व ने कहा कि हे भगवन् जब भांडीर वन के निकट श्रीहरि राधा विलास होने के उपरांत श्रीकृष्ण के बाल-रूप हो जाने के पश्चात् जो नभ गिरा हुई, वर्णन करी थी कि श्रीवृन्दावन में रास समय मनोर्थ पूर्ण होगा। सो रास चरित्र को वर्णन करिये।

तब नारदजी बोले कि ब्रज में श्रीकृष्ण को धेनु चराते उनके नटवर वेष की अद्भुत छवि देखि मोहित भई राधिका से ललिता विशाखा आदि सखियों ने कहा कि हे राधे! यदि तुम मनमोहन प्यारे को देखना चाहती हो, तो प्रात समय इसी मार्ग से कृष्ण नित्य धेनु चराने यमुना तट पर जाते हैं, तिनको तुम देख सकती हो। तदनुसार श्रीराधा ने कृष्ण को देखि सखियों से कहा कि मनमोहन प्यारे का एक चित्र लाय देउ उसको देखि देखि कुछ धैर्य अवश्य होयगा। तब चित्रा सखी ने जो चित्र खींचने में कुशल थी कृष्ण का चित्र खींच-कर राधाजी को दिया। तिसको राधा ने कण्ठ से लगाय लिया और रात्रि में चित्र को देखि जब शयन किया तब स्वप्न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में देखा कि भांडीर वन में बन माली के संग रास कर रही है। किंतु नेत्र खुलने पर कृष्ण के वियोग में बहुत दुखित भई। तब सखियों ने राधा को कृष्ण विरह में विकल देखि धैर्य धराय कहा कि हम सब कृष्ण से संयोग कराने का उपाय करती हैं। तब तक तुम प्रातकाल धेनुचारण समय कृष्ण दर्शन किया करौ, सो नित्य झरोखे से कृष्ण दर्शन करने लगी। और तिनसे मिलने को आतुर रहने लगी और सखियों से कहा कि मनमोहन प्यारे बिना मेरा जीवन कठिन है। तब ललिता ने एक दिन कृष्ण को अकेला पाय कहा कि तुम्हारे बिना राधा बहुत दुखित है। जब से तुमको देखा है तब से तुम्हारे विरह में रयन दिन तलफती है। दूसरे से बोलना, फुलेल तथा जावक लगाना, आभूषण धारण करना, सुंदर वस्त्र पहरना और अंजन लगाना इत्यादि शृङ्गार सब परित्याग कर दिये हैं। यह सुनि कृष्ण बोले कि हे ललिता धैर्य धरौ। हम और राधा दोनों एक रूप हैं, दो देहि एक प्राण हैं, इसमें कुछ संदेह नहीं। जिस भाँति भांडीर वन में रास किया था उससे अधिक राधा संग वृन्दावन में बहुत प्रकार रास एवं विहार करेंगे। जो मेरे और राधिका में किंचित भी भेद भाव रखता है सो महा अज्ञानी है। यह सुनि ललिता ने राधा ढिग आय कहा कि मनमोहन भी तुम्हारी भाँति तुम से प्रेम करते हैं, किंतु उनसे मिलने का कोई उपाय अवश्य करना चाहिये। सो सब मिल देवी पूजन नित्य किया करैं। यह सुनि चन्द्रानना नाम सखी से राधाजी बोलीं कि कोई पूजन ऐसा बताओ जिसके फल से प्राणप्यारे का मिलन होय। क्योंकि तुमने गर्ग मुनि से पूजा विधान श्रवण किया है। तब चन्द्रानना सखी बोली कि तुलसी की पूजा के समान कोई शीघ्र फलदायक पूजा नहीं है। दर्शन, स्पर्श्य, कीर्त्तन, ध्यान, सिंचन, नाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जप, चन्दन, नैवेद्य इत्यादि से पूजन, स्तुति और परिक्रमा नव प्रकार की भक्ति से ज्यों-ज्यों तुलसी बढ़ती है त्यों-त्यों पाप पुंज का नाश होता है। वह मनुष्य धन्य है जो प्रीति युक्त तुलसी पूजन करता है। जिसका एक पत्र हरि चरणों में समर्पण करना सौ भार कंचन और उसके चतुर्गुण रजत दान के फल से भी अधिक फल है। मनवांछित कामना पूर्ण होती है। तुलसी पूजन से यम का भय नहीं रहता। और जिस प्रकार तूल के ढेर को अग्नि क्षण मात्र में नाश कर देती है, तैसे ही पाप समूह तुलसी पूजन से नाश हो जाते हैं। तुलसी में पुष्कर, गंगादि तीर्थ निवास करते हैं। मृत्यु समय जिसके मुख में तुलसी पत्र होता है उसके निकट यमदूत नहीं आय सकते और तुलसी वृक्ष की छाया में पित्रों को पिण्ड देने से अक्षय फल प्राप्त होता है। तुलसी पूजन माहात्म्य शेष महेश और ब्रह्मा भी नहीं वर्णन कर सकते। इसलिये विधि पूर्वक तुलसी पूजन किया करो, निस्संदेह प्राणप्यारे कृष्ण से मिलोगी।

यह सुनि राधाजी ने वृन्दावन में रत्न जड़ित सुवर्ण सिंहासन पर चार तुलसी थाले आरोपण करि वृन्दा को स्थापित किया और गर्ग मुनि को बुलाय प्रति मास विधिवत एक वर्ष पर्यंत तुलसी पूजन किया। और मधु मास में उद्यापन करि ब्राह्मणों सहित गर्ग मुनि को बहुत सी धेनु, कंचन, मुक्ता, मणि विपुल दान दिया। तब देवतों के संग तुलसी देवी प्रकट हुई और प्रसन्न हो मनोर्थ पूर्ण होने का वर राधाजी को दिया। तब तुलसी सेवन के फल से युवती वेष बनाय यथा योग्य आभरण वस्त्र पहरि कृष्ण बरसाने में आये। और वृषभानु द्वार पर जाय देखा कि कंचन के कपाट लगे हैं, हय गज डोल रहे हैं, सुरभी गणों से पुर की शोभा हो रही है और द्वारपाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नर नारि वीणा मृदंग लिये श्रीराधा का गुण गान कर रहे हैं। फिर भीतर जाय देखा कि स्वच्छ सरोवर भरे हैं, जिनमें कमल फूले भये हैं, उन पर भौंरा गुंजार कर रहे हैं। वृक्षों पर नाना भाँति के पक्षी बोल रहे हैं, मयूर नाच रहे हैं, कोटिन सखी समूह नाना प्रकार के भूषण वस्त्र से सुसज्जित वृषभानु दुलारी की सेवा में लग रहे हैं। तिनके मध्य में वृषभानुलली राधा हरि पद के ध्यान में अनन्य भाव से लगी भई बैठी हैं। तब युवती रूप कृष्ण को अति सुन्दर नवल नारि देखि राधाजी ने प्रीति सहित आदर करि आसन पर बैठारि पूछा कि तुम कहाँ की रहनहारी हो और क्या नाम है। मैंने तो आज तक तुम को बरसाने में नहीं देखा और न ऐसी सुन्दर स्वरूपवती नारि कभी देखी। जिस ग्राम में तुम रहती हो सो ग्राम धन्य है। यहाँ अपने आगमन का कारण कहो। तुम्हारा जो कार्य हो सो हम सब करने को उद्यत हैं। तुम्हारा स्वरूप कृष्णप्यारे के अनुहार है। इस कारण तुम नित्य मेरे ढिग आया करो तो कृष्ण वियोग कुछ शिथिल रहैगा। यह सुनि नवल नारि बोली मेरा धाम नन्द ग्राम है, और प्रेमा गोपी मेरा नाम है। ललिता मुख तुम्हारे स्वरूप गुण की प्रशंसा सुनि हम से न रहा गया और देखने को चली आई। तुम को देखि अति हर्षित हौं किन्तु अब अबेर होती है, गृह दूर है, सो जाती हौं। काल्ह फिर मिलौंगी।

यह सुनते ही राधा मूर्छित हो गिर पड़ी। तब सखियों ने बहुत उपाय से मूर्च्छा निवारि सचेत किया। तब प्रेमा गोपी बोली कि गो-गोरस की सौगन्ध खाती हूँ काल्ह अवश्य आऊँगी।

यह कहि वेषधारी कृष्ण नन्द ग्राम को चले आये और दूसरे दिन फिर नारि रूप धरि राधाधाम में गये। तब राधा ने बहुत सत्कार करि अपने निकट बैठारा और बोली कि तुमको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखि मेरी सब बाधा छूट जाती है। तुम्हारे न देखने से चित्त खिन्न रहता है। मेरा दुख सुख तुम्हारे ही आधीन है। यह सुनि प्रेमा गोपी चुप और उदास हो कुछ न बोली। तब राधा ने पूछा कि तुम्हारा वदन आज उदास क्यों है? मातु पिता वा भर्त्ता ने कुछ कटु वचन कहे हैं क्या? वा किसी सवत के कारण दुखित हो, वा धन की चिन्ता है, वा दूर से आने के श्रम से कष्ट हुआ है सो खोलकर कहो। और जो मणि माणिक धन चाहिये होय सो लेउ। क्योंकि साँचे मित्र को मित्र की रक्षा सर्व प्रकार से करना उचित है। यह सुनि प्रेमा गोपी बोली कि आज मैं सांकरी खोरि से आती थी तब नन्द के ढोटा ने दान माँगा और मेरे न देने पर साँटी मारि मेरी मटु की फोर डारी और सब गोरस छीनि आप खाया और सखान को खवाया और बहुत सी गारी दई। सो नन्द-नन्दन बड़ा उत्पाती है और कारी गात, कारे विषधर समान अवगुणों से भरा है। ऐसे निर्लज्ज, कपटी उत्पाती और कठोर चित्त वाले से भूलकर प्रीति न करना चाहिये।

यह वचन सुनि राधा क्रोधित हो बोली कि जिन का शिव शेष और ब्रह्मा अहर्निश ध्यान धरते हैं और जिनके हेतु दत्तात्रेय, कपिल, शुक, अङ्गिरा, गर्ग, व्यास और योगीजन तप करते हैं और जो कृष्ण अज अनादि परम पुरुष गोप वेष धारि लीला करि निज भक्तों को सुख देते हैं और जिन गोपाल की गोगति, गोमति, गो रति गोरस और गो नाम सर्वस्व है। जिन के ध्यान में उन्मत्त कपालीशंकर भस्म रमाये फिरते हैं और शंभु ने कराठ में मानो हरि रूप जानि नीलकंठ नाम से कृष्ण को बैठार राखा है। और जिन कृष्ण ने तृणावर्त्त, बकासुर, वत्सासुर, यमलार्जुन इत्यादि का उद्धार किया है और जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्ण रमानायक भुक्ति-मुक्ति दाता हैं, तिनको तुम्हारे मुख से ऐसे कठोर और अपशब्द कहना अयोग्य हैं। तब प्रेमा गोपी बोली कि यदि कृष्ण में यह सब गुण हैं तो यहाँ प्रकट हो जावैं। नहीं तो वे मुकुन्द कुन्द वृक्ष समान जड़ ही हैं। तब राधाजी बोलीं कि हमारे तुम्हारे हौड़ (क़रार) हो जाय कि यदि यहाँ कृष्ण प्रकट हो जावैं वा प्रकट न हों तो जो हारै सो अपना सर्वस्व दै देय।

यह हौड़ बदि राधाजी कृष्ण ध्यान में नेत्रों को मूँदि बैठ गईं और प्रेम जल की धारा नेत्रों से वहि चली। तब कृष्ण नारिरूप तजि और पुरुष रूप कृष्ण हो राधा के अश्रु पोंछने लगे और बोले हे मदन मद हारिणी राधे! तुम्हारे पुकारने से मैं बड़ी दूर से आया हूँ। सकल सुरभी ग्वाल वालों को तजि वंशी वट से आया हूँ। वह नारि जिससे हौड़ बदी थी कहाँ है? तब राधा ने नेत्र खोलि, कृष्ण को देखि अगाध प्रेम से प्रमुदित हो और कृष्ण को भेंटि पद वन्दना करी। नारदजी कहते हैं कि जो इस राधा माधव चरित्र को पढ़ता, सुनता और इसका ध्यान करता है सो कृष्ण की सामीप्य मुक्ति पाता है।

इसके उपरान्त कृष्ण ने यमुना कूल उपवन में माधव मास की पूर्णिमा रात्रि में श्रीराधा के संग वृन्दा एवं ललितादि सखियों की सहायता से रास का प्रारंभ किया। तहाँ वृन्दावन की भूमि रत्नमय दिव्य हो गई। तिस पर स्वच्छ बिछौने बिछ गये। जरी का चंदोवा जिसमें मुक्तान की झालर लग रही थी रत्न जड़ित खंभान सहित लग गया और प्रफुल्लित कमल युक्त स्वच्छ सरोवर सीतल जल से पूरित हो गये। कदम्ब रसालादि कोटिन वृक्ष सुवासित पुष्पों से फूल उठे। लताएँ मंद-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंद सुगंधित समीर से झूमने लगीं। मोर चकोर कोकिलादि पक्षी मधुर स्वर से बोलने लगे। गिरराज धातु मय और झरनों से शोभा देने लगा और सघन वन बेलियों के नवल निकुंजों में छोटे-छोटे पक्षी कलरव करने लगे। फिर कृष्ण ने अपनी मधुर ध्वनि वंशी से व्रजांगनाओं को बुलाना प्रारंभ किया। तब सकल व्रजबाला मन्द-मन्द मराल गति से आने लगीं। नीलवर्ण यमुना का यूथ, श्वेतवर्ण गंगा का यूथ, रमा का यूथ, सुमन श्रृङ्गार किये हुए, मधु माधवी का यूथ, ललिता आदि मुख्य अष्ठ सखियों के यूथ और अनेकन व्रज बालाओं के षोड़श सहस्र यूथ आय एकत्रित भये। तब श्रीकृष्णने निज हाथ से राधाजी का श्रृङ्गार किया और श्रीराधाजी ने प्यारे कृष्ण का श्रृङ्गार किया। तहाँ शीश पर मोर चन्द्रिका का मुकुट, श्रवण में मणि जटित कुण्डल जिनकी आभा लोल कपोलों पर पड़ रही है, नासिका में मुक्ताहल, गरे में कौस्तुभ मणि हारावाली और वैजयन्ती माल तिस पर फूलों की वनमाल, कटि में किंकिणी, बाहु में भुजबन्द, हाथों में हीरों के कड़े, चरणों में नूपुर, पीताम्बर और कटि पर फेंटा कसे हुए अद्भुत श्रृङ्गार से सुशोभित हुये और राधिका का कर कमल पकड़ निकुंजों में रमण करने लगे। कभी प्रियाजी हाथ छुड़ाय भागती हैं और प्रीतम तिनके पकड़ने को दौड़ते हैं, कभी प्रीतम भागते हैं और प्रिया पकड़ने दौड़ती हैं। इस भाँति अनेक प्रकार के विहार, जिनका पार नहीं, प्रिया प्रीतम ने किये। जिनको देखि रतिनायक कामदेव भी लज्जित हो गया। कभी वेणु मृदंगादि विविध भाँति के साज पर अनेक भाँति के नृत्य करते थे और परस्पर अनेक गति और भावों की प्रशंसा करते थे। तदन्तर यमुना में अनेक प्रकार की जल क्रीड़ा करीं। फिर सखियों ने प्रिया प्रीतम को रत्न खचित सिंहासन पर पधराया और सब ने एक-एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आभूषण और वस्त्र भेंट किये। यमुना ने नूपुर, गंगा ने पायल, रंभा ने किंकिणी, मधुमाधवी ने हारावली, विरजा ने चन्द्रहार, ललिता ने कंचुकी, विशाखा ने कण्ठश्री, एकादशी ने कंकण, मायावती ने मुँदरी, चन्द्रावली ने वेना, पद्मावती ने शीशफूल, अन्य गोपियों ने एक-एक वस्त्र और वृन्दा ने शेष भूषण भेंट में दिये। चन्द्रमा ने कमल पुष्प और शशिकान्तामणि प्रिया प्रीतम को भेंट दे दण्डवत करी। फिर प्रिया प्रीतम ने बहुलावन में विहार किया। तब सखियाँ अतिश्रम से प्यासी भई और जल की अभिलाषा करी। तब कृष्ण की दृष्टि से भूमि फोड़ि वेत्रनाम गंगा प्रकट भई और सबने जल पान किया। जिन गंगा के दर्शन और स्पर्श्य से सब पाप छूट जाते हैं। तदन्तर कुमुद वन में आये, तहाँ सखियों ने प्रिया प्रीतम का पुष्प शृङ्गार किया, विविध भांति के फूलों से वस्त्राभूषण बनाय लाड़िलीलाल को पहराये। तहाँ सप्त स्वर और तीन ग्राम से षटराग आलापि नृत्य करि गोपियों ने प्रिया प्रीतम को रिझाया। और लाड़िलीलाल के संग अनेक विहार किये फिर कामबन में आय कृष्ण ने वंशीनाद किया जिसको सुनि सब ब्रजबाला मोहित हो गई। जड़ जंगम सब सुस्थिर हो गये और तहाँ पर कृष्ण चरण कमल के चिन्ह का दर्शन करि मनुष्य परम गति को प्राप्त होता है। फिर नन्दीश्वर में आय विहार किया तहाँ हरि के अन्तर्ध्यान होने पर राधा ने बहुत विलाप किया और सखियों सहित खोजती फिरीं।

यह सुनि राजा विदेह पूँछने लगे कि कृष्ण क्यों अन्तर्ध्यान हो गये और फिर कैसे मिले।

तब नारदजी बोले कि संकेतवट में जाय कृष्ण ने राधा का और राधा ने कृष्ण का पुष्प शृङ्गार किया और खिदरवन एवं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बेलवन से कोकिला वन में पहुँचे और अन्य गोपियाँ प्रिया प्रीतम को खोजती भई पीछे-पीछे चलीं। तब मार्ग में प्रिया प्रीतम के चरण चिन्ह देखे। तहाँ कृष्ण के चरण चिन्ह में यव, ध्वजा, चक्र, छत्र, वट, तिल अंकुश, इन्दु, पद्म, वज्र, मीन, अष्टकोण, त्रिकोण, गोखुर, शंख, और ऊर्ध्व रेखा यह षोड़श चिन्ह देखे, तिन की रज मस्तक पर धारण करी। फिर प्यारी के कमलपद चिन्ह में केतु, कमल, पर्वत, शक्ति, शंख, रथ, ऊर्ध्वधारा, चक्र, अर्द्ध चन्द्र, अंकुश, गदा, लवंगलता, सिंहासन, छत्र और द्वै विन्दु देखि प्यारी के चरण पहिचाने। फिर चलते-चलते जब कोकिलावन में आये तब प्यारे ने प्यारी से कहा कि सखियाँ आय पहुंची हैं। सो शीघ्र गमन करो। तब प्यारी बोलीं कि अब बिना वाहन हम से नहीं चला जायगा। तब कृष्ण प्यारी को गर्वित देखि बोले मेरे कंधा पर चढ़ि लेउ। प्यारी ने जैसे कन्धा पर चढ़ने को चरण उठाया तैसे ही कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये। तब राधा कृष्ण के वियोग में मूर्छित हो गिर पड़ीं और कुछ देर पीछे सचेत हो हा कृष्ण, हा कृष्ण, पुकारि चारों ओर खोजने लगीं। इसी अन्तर में अन्य गोपियों ने आय और प्यारी की दशा देखि सब वृत्तान्त जाना और प्यारी सहित कृष्ण को खोजने लगीं। फिर विकल हो कृष्ण की स्तुति वंदना एवं बाल चरित्र का अनुकरण करने लगीं। एक गोपी पूतना बनी दूसरी कृष्ण बनि उसके स्तन पान करने लगी। फिर तृणावर्त्त वध किया, फिर एक गोपी ने कृष्ण बनि और कपड़ों का गोवर्द्धन बनाय अँगुरी पर धारण किया और अन्य गोपियों ने लकुटी से सहारा लगाया। तब एक गोपी इन्द्र बनि चरण में पड़ी और अन्य गोपी ने कामधेनु तथा ऐरावत गज बनि कृष्ण को भेंट दई। इसी प्रकार कृष्णलीला में तनमय हो गई। और द्रुमलता, तुलसी, पर्वत यमुना आदि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से "तुमने देखा है कृष्ण कौन ओर को गये हैं" ऐसा पूछती डोलने लगीं। तब कृष्ण गोपियों का प्रगाढ़ प्रेम देखि प्रकट हो गये। सब गोपी दौड़ि-दौड़ि जैसे वृक्ष में लता लिपट जाती है इस प्रकार प्राण प्यारे कृष्ण को लिपट गईं। कृष्ण बोले कि क्षीर सागर के तट पर हंसमुनि मेरे लिये घोर तप कर रहे थे और छै मन्वन्तर बीत गये थे। तिनको एक बड़ा मत्स्य लील गया फिर उस मत्स्य को भी एक उससे बड़ा मत्स्य निगल गया। तब मैंने उसको मारि मुनि की रक्षा करी और फिर श्वेतद्वीप में जाय क्षीर सागर में शेषनाग को प्रयंक बनाय शयन करने लगा और लक्ष्मी चरण-सेवा करने लगीं। जब निद्रा खुली तब तुम सबको विलाप करते देखि यहाँ आय गया। यह सुनि गोपियों ने कहा कि हमको भी तो दिखाओ। तब कृष्ण ने क्षीर सागर प्रकट करि शेष शय्या पर शयन करते और लक्ष्मी से चरण सेवा कराते हुये सबको अपना सायी रूप दिखाया। तब से शेषसायी तीर्थ तहाँ प्रसिद्ध है। तदुप्रान्त कृष्ण ने गोपियों को लै रास मंडल रचा और द्वै-द्वै गोपियों बीच एक-एक कृष्ण रूप धारि मध्य में प्रिया प्रीतम सहित रास प्रारंभ किया। तहाँ छः राग रागिनियों सहित रूप धारण करि आये और सप्त स्वर तीन ग्राम से मनमोहन ने वंशी बजाय रास किया और पूर्व प्रतिज्ञानुसार सब के मनोर्थ पूर्ण किये। तदन्तर जब गोपियों के साथ वन-विहार करते थे उसी समय शंख चूड़ नाम कुवेर का एक सखा आया जो अति बली और शिवजी से वरदान पाये हुये था। सो मुझसे (नारदजी से) पूछने लगा कि पृथ्वी पर मुझसे युद्ध करने योग्य कौन है तब हमने कंस को बताय दिया। तब कंस के निकट जाय बोला कि मुझसे गदा युद्ध करौ और यह प्रण किया कि जो हारै सो दासत्व स्वीकार करै। तब दोनों में घोर गदा युद्ध हुआ फिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्त दिवस मल्ल युद्ध हुआ किन्तु दोनों वरदानी होने के कारण पराजित न हुये। तब गर्ग मुनि ने दोनों को समझाय परस्पर मित्रता कराय दी। सोई शंख चूड़ वन में राग रंग सुनि तहाँ से एक विधुवदना नाम गोपी को हरि लै चला। तब अन्य गोपियों ने श्याम रंग व्याघ्र वदन, चौदह ताल ऊँचा राक्षस देखि भय युत कृष्ण को पुकारा। तब कृष्ण विकाल स्वरूप धारण करि उसके पीछे ललकार कर दौड़े और घोर युद्ध करि शंख चूड़ को भूमि पर इतने जोर से पटका कि उसके प्राण निकसि गये और उसकी योति श्रीदामा के अंग में प्रवेश कर गई और उसके मस्तक की प्रदीप चूड़ामणि श्रीकृष्ण ने निकार लई और विधुवदना नाम गोपी को छुड़ाय लाये। फिर तहाँ से वृन्दावन में आये तहाँ समस्त लता द्रुम पशु पक्षी ने स्त्री रूप होकर राधकृष्ण के साथ विहार किया और कृष्ण ने सब गोपियों के संग जार भाव से विहार करि सब को मन भाया सुख दिया। तहाँ कोई कृष्ण को हार पहराती थी, कोई गेंद खेलती, कोई अधरामृत पान करती, कोई आलिङ्गन करती, कोई कृष्ण का हाथ पकड़ि नृत्य करती, कोई मधुर स्वर से गान करती, कोई कृष्ण के कण्ठ से लग जाती, कोई अपनी वेसर से अरुझी हुई कृष्ण की लट सुरझाती, कोई कृष्ण का उगार पान करती, कोई कृष्ण के कपोल छूती, कोई कृष्ण की ओर टकटकी बाँधि रूप माधुर्य का रस पान करती और कोई कृष्ण के गरे में हाथ डारि श्रीमुखचन्द्र की शोभा निहारती। इस प्रकार जो-जो सुख व्रज गोपियों को कृष्ण ने दिये सो योगीजन अनेक जन्म तप करने से भी नहीं पाते।

फिर नारदजी बोले कि एक आसुरी नाम महामुनि नारद गिरि पर तप करते थे और सदा प्रति क्षण श्रीहरि ध्यान में रहकर हरि लीला देखने के उत्सुक रहते थे। एक दिन जब श्रीहरि ध्यान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में न आये तब बद्रिकाश्रम को गये। तहाँ श्रीहरि को न देखा तब क्षीरसागर को गये। तहाँ भी श्रीहरि को न पाया। द्वारपालों से पूछने पर भी कुछ खोज न मिली। तब मुनिवर गोलोक के कुंजों में खोजने लगे। तहाँ भी न पाया। तब गोलोक निवासियों ने पूछने पर बताया कि श्रीवामन विवर में जो ब्रह्माण्ड है तहाँ अवतार लिया है। फिर मुनिवर कैलाश पर आये तहाँ ध्यान स्थित शिवजी से पूछा। तब शिवजी बोले हे मुनिवर, तुम धन्य हो जो श्रीकृष्ण के दर्शन हेतु इतने आतुर हो रहे हो। आजकल श्रीकृष्ण कालिन्दी तट वृन्दावन में छः मास की रात्रि करि गोपियों के साथ नटवर वेष धरे विहार कर रहे हैं सो हम भी तुम्हारे साथ चलकर नृत्य और विहार देखेंगे। तब दोनों श्रीवृन्दावन में आये। तहाँ द्वारपालों ने कहा कि यहाँ कोई पुरुष प्रवेश नहीं करने पाता। तुम दोनों प्रथम मानसरोवर में स्नान करि स्त्री रूप धारण करो तब रास विलास देख सकते हो। यह सुनि दोनों ने स्नान करि और स्त्री रूप पाय रास मण्डल में प्रवेश किया तहाँ देखा कि यमुना तट वन्शीवट पर मणियों की भूमि है, जिस पर स्वच्छ निर्मल विछौना विछ रहा है। जरकसी का चँदोवा, मुक्तों की झालर सहित लग रहा है, पूर्ण चन्द्र की उजयारी रात्रि में कोटि गोपियों संग प्रिया प्रीतम रास कर रहे हैं। जहाँ छः राग निज-निज रागिनियों सहित युवती वेष धरे अलाप रहे हैं। विविध भाँति के बाजन बजाय युवतीगण प्रिया प्रीतम को मध्य में करि नृत्य कर रही हैं। श्रीकृष्ण की मोहनी वन्शी सप्त स्वरों में बज रही है। जिसको श्रवण करि कामदेव भी मोहित हो रहा है और वन के समस्त खग मृग सुध रहित हो रहे हैं। यह देखि शिवजी और आसुरि मुनि दोनों ने करजोड़ि प्रिया प्रीतम की बहुत स्तुति करी। तब श्रीकृष्ण ने दोनों को उनकी अभिलाषानुसार भक्ति और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीवृन्दावन वास का वर दे बिदा किया और प्रात होने पर जल-क्रीड़ा करि प्रिया प्रीतम एवं समस्त गोपिका निज-निज भवन गईं। नारदजी कहते हैं कि जो मनुष्य इस रास चरित्र का नित्य ध्यान करता है सो चार फल सहित कृष्ण की अचल भक्ति पाता है। फिर राजा बहुलाश्व ने पूछा कि शंखचूड़ और श्रीदामा जिसके मुख में शंखचूड़ की ज्योति लीन होना वर्णन किया है सो दोनों कौन थे और कारण क्या था? तब नारदजी बोले कि उनकी पूर्व कथा जिस प्रकार मैंने श्रीविष्णु के मुख से सुनी है सो कहता हों सुनो। श्रीहरि की चार पत्नियों अर्थात् राधा, भू, विरजा और श्री में, श्रीराधा कृष्ण की अति प्रिय हैं, एक समय विरजा के धाम में श्रीकृष्ण विहार कर रहे थे, श्रीराधाजी यह खबर पाय सवत पर रिस करि एक अद्भुत रत्न जड़ित शिविका पर चढ़ि कोटिन सहचरियों सहित विरजा के भवन में आईं। तहाँ द्वार पर श्रीदामा की चौकी थी। उसने भीतर जाने से रोका। यह कुलाहल सुनि कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये और विरजा एक बड़ी नदी रूप में हो गईं। जब श्रीराधा भीतर गईं तब कृष्ण और विरजा को न पाय अनुमान किया कि मेरे भय से यह नदी हो गई है और सखियों सहित निज भवन को लौट आईं। फिर श्रीकृष्ण प्रकट हो गये और विरजा भी निज स्वरूप धारण करि आय गईं और दोनों रमण करने लगे। तब विरजा के सात पुत्र उत्पन्न हुये एक दिन सातों पुत्र परस्पर लड़ने लगे और छोटे ने माता पर पुकार करी। तब कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये। यह देखि और दुखित हो विरजा ने सातों को शाप दिया कि तुम्हारे कलह से हरि वियोग हो गया। इससे वामन विवर के अण्ड में जाय तुम सातों समुद्र होउ और इस छोटे का जल कोई पान न करेगा और सब विलग रहोगे, प्रलयकाल में मिलोगे। सोई सातों राजा प्रियव्रत द्वारा सात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सागर एक-एक द्वीप में विख्यात हैं और उनके नाम यह हैं— लवणसिंधु, इक्षुसिंधु, मदिरासिंधु, घृतसिंधु, दधिसिंधु, पय-सिंधु और जलसिंधु और एक से दूसरा एक लक्ष योजन विस्तार में अधिक हुआ। श्रीकृष्ण ने विरजा से कहा कि तुम को मेरा वियोग न होयगा। तुम सातों की रक्षा करो। फिर एक दिन श्रीदामा को साथ ले श्रीकृष्ण राधिका के भवन में गये। तब श्रीराधिका ने रिस करि कहा कि यहाँ तुम्हारा काम नहीं, तुम उसी के भवन में जाओ जो तुम्हारे हृदय में बसी है और वह नदी रूप हो गई है, तो तुम सागर रूप हो जाउ। तब श्रीदामा बोले कि जो कृष्ण सकल अण्ड पति हैं उनको तुम ने ऐसा घोर शाप दिया यह बहुत अनुचित किया। इस कारण तुमको कृष्ण का एक शत वर्ष पर्यंत वियोग रहैगा। यह सुनि राधाजी ने क्रोधित हो श्रीदामा को शाप दिया कि रे पापी! मातु अहित करने के कारण तू यक्ष होगा। तब कृष्ण बोले कि हे श्रीराधे, मेरे जन का शाप मिथ्या नहीं हो सकता इसलिये तुमको वियोग तो अवश्य होगा किन्तु एक शत वर्ष पर्यंत प्रति मास मैं तुम से मिलौंगा और कोल कल्प में जब श्रीदामा पृथ्वी पर अवतरैगा तब तहाँ यक्ष रूप होगा और मेरी अवहेलना करने से देहि त्यागि निज स्वरूप को प्राप्त होगा। सोई भूमि पर शंखचूड़ नाम यक्ष हुआ और कंस से मित्रता करी और कृष्ण से वध होने पर उसकी योति श्रीदामा में प्रवेश कर गई।

इतनी कथा कह श्रीगर्गाचार्य शौनकजी से और नारदजी राजा बहुलाश्व से बोले कि इस श्रीवृन्दावन खण्ड को जो पढ़ैगा वा श्रवण करैगा उसके समस्त पातक नाश होकर श्रीराधा कृष्ण में अविरल भक्ति होयगी।

इति श्रीगर्गसंहिता अन्तर्गत, बाँकेपिया अनुवादित
श्रीवृन्दावन खण्ड समाप्तं शुभ मस्तु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्रीगिरिराज खण्ड प्रारम्भः

दोहा—धरयो वाम कर पुष्पवत, जो गिरिराज प्रचंड ।
तेहि पद वन्दन करि लिखौं, यह गोवर्द्धन खण्ड ॥

नृप बहुलाश्व ने नारदजी से पूछा कि श्रीकृष्ण ने जिस प्रकार गोवर्द्धन पर्वत वाम हस्त पर धारण किया सो चरित्र वर्णन करिये ।

नारदजी बोले कि ब्रज के गोप गोपी कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को सुरपति इन्द्र का पूजन सदा की भाँति करने की तयारी करने लगे । तब कृष्ण ने नन्द बाबा से पूछा कि आज किसकी पूजा हेतु नाना भाँति के पक्वान्न और सामिग्री तयार हो रही है ? तब नन्दजी बोले कि आज इन्द्र की पूजा होयगी, जिससे इन्द्र वर्षा करैंगे, वर्षा होने से अन्न उपजैगा, गोधन की वृद्धि होयगी और अंत में मोक्ष होयगी । तब कृष्ण ने हँसकर कहा कि आप यह कैसी बात कहते हैं ? इन्द्रादिक देवता सब सुकर्म के फल से निज-निज पदवी पाते हैं और फल नष्ट होने से पदवी से गिराय दिये जाते हैं और यज्ञ कर्म करने से अग्नि द्वारा जल का शोषण होकर मेघ बनते हैं, उन मेघों से वर्षा होती है और वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है । अन्न के खाने से वीर्ज बनता है, वीर्य से मनुष्य उत्पन्न होता है और मनुष्य फिर यज्ञ कर्म करके वर्षा का हेतु होता है । इसी क्रम से सृष्टि की उत्पत्ति है और मोक्ष दाता केवल श्रीहरि हैं, अतएव उन्हीं भगवान् हरि की पूजा करना कल्याणदायक है । सो हम सब को गिरिगोवर्द्धन का पूजन करना उचित है । जो गिरि भगवान् हरि का स्वरूप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं और जिनको ब्रह्म पुत्र पुलस्त्यजी गोलोक से लाये हैं। ऐसे श्रीहरि स्वरूप गोवर्द्धन को छोड़ि वृथा अन्यत्र भटक रहे हो। यह सुनि सनन्दजी ने पूछा कि यह तो हम ने भी सुना है सो सत्य ही है किन्तु पूजन विधि क्या है सो कहो। तब कृष्ण बोले कि प्रथम गिरि की भूमि गोबर से लेपन करै पुनि गिरि को कपिला गो के दुग्ध से बने भये पंचामृत से, तिस पीछे गंगा यमुना जल से स्नान कराय चन्दन, पुष्प, धूप दीपादि से पूजन करै। फिर भूषण, वस्त्र, माला, सुगंधि चढ़ावै और प्रदक्षिणा करि यह वन्दना करै कि हे वृन्दावन में गोलोक के मुकुट मणि कृष्ण छत्र गोवर्द्धन तुम्हारी सदा जय होय, हे कोटि चन्द्र समान कांति वारे समस्त गिरि पति तुम्हारी सदा जय होय फिर घंटा शंख मृदंग बजाय आरति करै गिरि के ऊपर गऊ खिलावै, तिस पीछे भाँति-भाँति की सामिग्री सम्हारि कूट बनावै और ६४ कमोरा गिनकर धरै और पाँच पंक्तियों में भात धरै और थोड़े-थोड़े व्यंजन गऊ और ब्राह्मण को देय और अग्नि में समर्पण करै फिर भोग धराय सब को प्रसाद बाँटि आप पावै। जहाँ गोवर्द्धन पर्वत न होय उस देश में गोबर और सींकों से गोवर्द्धन का आकार निर्माण करि तिस पर वृक्षों की छोटी-छोटी डारि लगावै, पताका आरोपै और पूजन करि प्रणाम करै। गोवर्द्धन की शिला व्रज से अन्यत्र कहीं न लै जावै अन्यथा रौरव नरक में पड़ेगा और उतना ही सुवर्ण दान देने से प्रायश्चित्त होता है क्योंकि गोवर्द्धन शिला शालग्राम समान होती है। यह विधान सुनि नन्द, उपनन्द वृषभानु सकल गोपियों और व्रजवासियों ने कृष्ण की शिक्षा अनुसार गोवर्द्धन पर्वत का पूजन किया। तहाँ शिवा सहित शंकरजी डमरू बजाते भये अये और इन्द्र को छोड़ि सकल देवता निज-निज स्त्रियों सहित आये। अप्सराओं ने आय नृत्य किया,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऋषि मुनियों ने आय तथा रूप धारण किये, सकल पर्वतों और तीर्थों ने आय-आय गोवर्द्धन का पूजन किया और समस्त व्रजवासी हर्षित हो नृत्य करने लगे। तब कृष्ण ने अपने दो स्वरूप धारण किये, एक स्वरूप से व्रजवासियों के बीच पूजा करने लगे और दूसरा स्वरूप हजार भुजान सहित गिरिराज में धारण किया और अन्नकूट के पकवान को हजार भुजान से खाने और हँसि-हँसि स्वाद बताने लगे और प्रेम से सबके सम्मुख माँगि-माँगि भोजन किया फिर अन्तर्ध्यान हो गये। इस प्रकार पूजन वन्दना करि सब ऋषि, पर्वत, सुरगण, द्विजगण और व्रजवासी निज-निज धाम को गये।

नारदजी कहते हैं कि इस विधान से जो पूजन करता है तिसको श्री गिरिराज हरि सर्व सुख सहित अपनी भक्ति देते हैं और वह अन्त समय कृष्ण धाम को जाता है।

इधर इन्द्र अपनी पूजा न पाय अकुलाया और खबर लेने को अपने अनुचर पठाये। उन्होंने गोवर्द्धन पूजन का समस्त वृत्तान्त कहि सुनाया। तब इन्द्र ने अति क्रोध से कुपित हो संवर्तकगण को बुलाय आज्ञा दई कि तुरन्त जाय सम्पूर्ण व्रज को बहाय देउ। यह आज्ञा पाय प्रलयकाल के मेघों ने व्रज को चारों दिशा से घेर लिया और मूशलधार जल बरसाने लगे और कड़कड़ाय-कड़कड़ाय भयंकर शब्द करि व्रज बोरने लगे। तब सब व्रजवासी भयभीत हो कृष्ण की शरण गये और बोले कि हे कृष्ण तुम्हारे कहने से हम ने इन्द्र को त्यागि गिरि गोवर्द्धन की पूजा करी, अब इन्द्र के कोप से रक्षा करो। हम को कोई अन्य ठौर नहीं जहाँ भाग कर जायँ। यह सुनि शरणागत प्रतपालक, दीनवत्सल भगवान् कृष्ण बोले कि हे व्रजवासियों, डरो मत। तुम सब गोवर्द्धन के निकट अपने अपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाल गोपाल, स्त्रियों और पशुओं सहित एकत्रित होउ। जिन गोवर्द्धनराय ने तुम्हारा पकान्न खाया है और पूजा लई है वह अवश्य रक्षा करेंगे। तब सब व्रजवासी दौड़ि-दौड़ि गिरि गोवर्द्धन के समीप आये और कृष्ण ने गोवर्द्धन को उखारि बाम हस्त पर उठाय लिया और सबको उसके नीचे कर लिया। तब सब व्रजवासी कृष्ण की जयजयकार करने लगे और जब जल बहि-बहि कर बगल से आने लगा तब कृष्ण की आज्ञा से शेष ने आय गिरि के चारों ओर से जल आने का मार्ग रोक दिया और चक्र सुदर्शन ने ऊपर के जल का शोषण कर लिया। इस प्रकार सप्त रात्रि दिवस मूशल जल बरसा और एक बूँद भी किसी व्रजवासी पर न पड़ी। फिर इन्द्र ने कुपित हो अपना वज्र उठाया सो वज्र बाहु सहित अचल रह गया। तब लज्जित हो इन्द्र भाग गया। इधर धूप से सब पंक सूख गई और आकाश निर्मल हो गया, सब व्रजवासी मुदित हो निज-निज कार्य करने लगे। कृष्ण ने गोवर्द्धन को उसी ठौर धर दिया और उसी दिन से गिरधर नाम प्रसिद्ध हुआ और समस्त व्रजवासियों ने पुनि गिरिराज की प्रेम सहित पूजा करी और सुर गणों ने पुष्प वर्षा करी, अपसराओं ने नृत्य किया और कामधेनु सुरभी और ऐरावत को साथ लै नीची ग्रीवा किये इन्द्र आया और कृष्ण के चरणों में पड़ि स्तुति करने लगा। इन्द्र बोला—हे कृष्ण! आप पूर्ण पुरुषोत्तम और कृपालु हो, हे अरिखण्डन गिरिराजधरण! प्रकृति से परे परमेश्वर तुम्हारी सदा जय होय। हे परिपूर्णतम कृष्ण, आप पृथ्वी के भार हरने को, निज भक्तों के सुख देने को दश अवतार ही नहीं वरन् अगणित अवतार धारण करते हो। आप विश्व विमोहन कामदेव के मन के भी हरने हारे हो। वेणुधारी श्री राधापति विपिन बिहारी, आपकी सदा जय होय। हे दीनदयालु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपकी माया वश होकर मैंने आपको नहीं जाना और ऐसा दुष्कर्म किया। सो इस मतमन्द दीन का अपराध क्षमा करि रक्षा करिये। इस प्रकार स्तुति करि नभ गंगा से ऐरावत ने जल उलीचि स्नान कराया और सुरभी के पय से अभिशेष किया जिससे गिरि की समस्त बूटियाँ हरित हो गईं और हरि के हस्त पर धारण करने से जो चिन्ह हुआ एवं चरण चिन्ह यह दोनों पाप समूह भस्म करने हारे दो तीर्थ हुए और तहाँ ऐरावत और सुरभी के चरण चिन्ह भी पातक नाश करने हारे हैं और जिस गंगा जल से स्नान कराया था वही मानसी गंगा नाम से प्रसिद्ध है और गोविन्द को स्नान कराने से गोविन्द कुण्ड हुआ। नारदजी बोले कि जो मनुष्य इस गोविन्द अभिषेक को पढ़ता वा सुनता है वह दश अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है।

फिर नारदजी बोले कि इसके उपरान्त सब गोपगणों ने पंचायत करके नन्द से कहा कि इस ग्राकमी बालक ने एक अँगुली पर गोवर्द्धन को उठाय लिया और बहुत से आश्चर्य युत कर्म किये। सो हे नन्द, यह तुम्हारा बालक नहीं जान पड़ता, क्योंकि तुम्हारे पुरुषा तो एक भारी शिला भी नहीं उठाय सके थे और न तुम में ही इतना बल है। इससे सत्य-सत्य कहो कि यह बालक तुमको कहाँ से प्राप्त हुआ? तुम स्त्री पुरुष तो गौर वर्ण हो यह कृष्ण श्याम वर्ण तुम्हारे गोत्र में नहीं मिलता। यदि सत्य न कहोगे तो तुम को जाति से च्युत कर देंगे। यह सुनि यशोदा बहुत घबड़ाई। तब नन्दजी बोले कि गर्गाचार्य जब इसका नाम करण करने आये थे तब उन्होंने जो कुछ हम से कहा था सो सत्य ही सत्य हम तुम से कहते हैं सुनो, जिससे तुम्हारा संशय निवृत्त हो जायगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गर्ग मुनि ने कहा था कि इस बालक में कमलापति, रघुपति, श्वेतद्वीपपति, नरहरि, यज्ञपति और नरनारायण यह छः पूर्णतः लीन रहते हैं। इस कारण यह बालक पूर्णतम है और यह युग-युग में श्वेत, लाल, कृष्ण वर्ण धारण करता है और कलियुग में पीतवर्ण से प्रकट होता है। यह बालक सब में निवास करता है और इसमें सब स्थावर जंगम वास करते हैं। इस कारण इसका नाम वासुदेव है और वृषभानु की कन्या राधिका इसकी आह्लादिनी शक्ति रूप प्रिय भार्या हैं। यह बालक अगणित अण्डपति दीनदयालु है। पृथ्वी का भार उतारने को कंस का काल यह कृष्ण प्रकट हुआ है। ऐसा गर्ग मुनि ने इसकी जन्म कुण्डली खींचकर बताया है। सो तुम लोग संदेह त्याग सत्य मानो। तब गोप लोग बोले कि तुम ने नाम करण समय हम सब को क्यों नहीं बुलाया? यह कहि सब गोप रिस खाय उठकर वृषभानुजी के घर आये और उनसे कहा कि नंदजी को जाति बाहर करो, यह बड़े छली जान पड़ते हैं। हमने सुना है कि तुम उनसे सम्बंध करना चाहते हो सो भूल-कर भी उनसे सम्बन्ध न करना, नहीं तो हम लोग तुम को भी जातिच्युत कर देवेंगे। क्योंकि कृष्ण समान नंद में प्राक्रम नहीं हैं, न वर्ण मिलता है। यह सुनि वृषभानुजी कोप करके बोले कि मेरे मित्र नंदजी में कोई दोष नहीं है, तुम नहीं जानते। मैं तुम को बताता हूँ। यह कृष्ण गोलोक पति परिपूर्णतम हैं, पृथ्वी का भार उतारने को और कंस के मारने को व्रज में प्रकट हुये हैं और इनकी प्रिय भार्या मेरे घर राधिका नाम से प्रकट भई है इन दोनों का विवाह भांडीर वन में ब्रह्माजी आय कर करेंगे ऐसा गर्गाचार्यजी ने हम से कहा था। और हम तुम सब गोलोक निवासी हैं, कृष्ण की आज्ञा से व्रज में उनकी लीला में सहायता करने को प्रकट हुये हैं। यह सब गर्ग मुनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के वचन सत्य ही हैं। यह सुनि सब गोपन का संदेह निवृत्त हो गया और बोले कि ठीक है। जब से यह राधिका कन्या तुम्हारे घर प्रकट हुई है तब से तुम्हारा विभव बहुत बढ़ा है और दिन-दिन बढ़ता ही जाता है। किन्तु नन्दराय के घर इतना विभव नहीं है, यदि कृष्ण पूर्णतम गोलोक पति होते तो तुम से बढ़कर नन्दजी के घर सम्पदा होती। इसकी परीक्षा होनी चाहिये यह सुनि वृषभानुजी ने बहुत से मुक्ता शकटों में भराय अपनी बेटी की कृष्ण के साथ सगाई का टीका भेजा। सो देखि नन्दजी विस्मित और उदास हो यशोदा से कहने लगे कि हमारे पास इतने मुक्ता कहाँ हैं जो वृषभानु के घर व्यवहार में भेजें। जो अधिक न होयँ तो इनके बराबर तो अवश्य पठाना चाहिये। अब बात रहना कठिन दीख पड़ती है। हँसाई होयगी मैं कैसे मुख दिखाऊँगा। यह सगाई भी एक व्याधि हो गई तब कृष्ण ने मातु पिता को चिंतित जानि उन आये भये मुक्ता में से शतमाला निकार लई और खेत पर जाय सब मुक्ता खेत में बिखेर दिये और जल से सिंचन करने लगे। थोड़े समय में वृक्ष निकलकर उन वृक्षों में मुक्ता के गुच्छा लटकने लगे। इधर नन्दजी ने जब सुना कि कृष्ण ने इनमें से कुछ माला निकार लई हैं। तब अधिक दुखित भये। इसी अन्तर में कृष्ण ने आय नंद बाबा से कहा कि खेत पर मुक्तों के वृक्ष लगे हैं, सो जितने आवश्यक होयँ तोड़ लाओ। यह सुनि नंदजी तहाँ गये और मुक्तों को तुड़वाय एक कोटि भार बहिंगी और शकटों में भराय दुगुना मुक्ता वृषभानुजी के घर बहू के हेतु पठाय दिये। तब वृषभानुजी एवं सकल गोप अपने दूतों से यह वृत्तांत सुनि अचंभित भये और सब संदेह छोड़कर सब ने कृष्ण को परिपूर्णतम निश्चय किया और राधा कृष्ण को एक रूप पहिचाना और जहाँ मुक्ता बोये थे तहाँ मोतीकुंड तीर्थ हो गया। तहाँ पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गर्ग मुनि ने कहा था कि इस बालक में कमलापति, रघुपति, श्वेतद्वीपपति, नरहरि, यज्ञपति और नरनारायण यह छः पूर्णतः लीन रहते हैं। इस कारण यह बालक पूर्णतम है और यह युग-युग में श्वेत, लाल, कृष्ण वर्ण धारण करता है और कलियुग में पीतवर्ण से प्रकट होता है। यह बालक सब में निवास करता है और इसमें सब स्थावर जंगम वास करते हैं। इस कारण इसका नाम वासुदेव है और वृषभानु की कन्या राधिका इसकी आह्लादिनी शक्ति रूप प्रिय भार्या हैं। यह बालक अगणित अराडपति दीनदयालु है। पृथ्वी का भार उतारने को कंस का काल यह कृष्ण प्रकट हुआ है। ऐसा गर्ग मुनि ने इसकी जन्म कुराडली खींचकर बताया है। सो तुम लोग संदेह त्याग सत्य मानो। तब गोप लोग बोले कि तुम ने नाम करण समय हम सब को क्यों नहीं बुलाया ? यह कहि सब गोप रिस खाय उठकर वृषभानुजी के घर आये और उनसे कहा कि नंदजी को जाति बाहर करो, यह बड़े छली जान पड़ते हैं। हमने सुना है कि तुम उनसे सम्बंध करना चाहते हो सो भूल-कर भी उनसे सम्बन्ध न करना, नहीं तो हम लोग तुम को भी जातिच्युत कर देवेंगे। क्योंकि कृष्ण समान नंद में प्राकर्म नहीं हैं, न वर्ण मिलता है। यह सुनि वृषभानुजी कोप करके बोले कि मेरे मित्र नंदजी में कोई दोष नहीं है, तुम नहीं जानते। मैं तुम को बताता हूँ। यह कृष्ण गोलोक पति परिपूर्णतम हैं, पृथ्वी का भार उतारने को और कंस के मारने को व्रज में प्रकट हुये हैं और इनकी प्रिय भार्या मेरे घर राधिका नाम से प्रकट भई है इन दोनों का विवाह भांडीर वन में ब्रह्माजी आय-कर करेंगे ऐसा गर्गाचार्यजी ने हम से कहा था। और हम तुम सब गोलोक निवासी हैं, कृष्ण की आज्ञा से व्रज में उनकी लीला में सहायता करने को प्रकट हुये हैं। यह सब गर्ग मुनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के वचन सत्य ही हैं। यह सुनि सब गोपन का संदेह निवृत्त हो गया और बोले कि ठीक है। जब से यह राधिका कन्या तुम्हारे घर प्रकट हुई है तब से तुम्हारा विभव बहुत बढ़ा है और दिन-दिन बढ़ता ही जाता है। किन्तु नन्दराय के घर इतना विभव नहीं है, यदि कृष्ण पूर्णतम गोलोक पति होते तो तुम से बढ़कर नन्दजी के घर सम्पदा होती। इसकी परीक्षा होनी चाहिये यह सुनि वृषभानुजी ने बहुत से मुक्ता शकटों में भराय अपनी बेटी की कृष्ण के साथ सगाई का टीका भेजा। सो देखि नन्दजी विस्मित और उदास हो यशोदा से कहने लगे कि हमारे पास इतने मुक्ता कहाँ हैं जो वृषभानु के घर व्यवहार में भेजें। जो अधिक न होयँ तो इनके बराबर तो अवश्य पठाना चाहिये। अब बात रहना कठिन दीख पड़ती है। हँसाई होयगी मैं कैसे मुख दिखाऊँगा। यह सगाई भी एक व्याधि हो गई तब कृष्ण ने मातु पिता को चिंतित जानि उन आये भये मुक्ता में से शतमाला निकार लई और खेत पर जाय सब मुक्ता खेत में बिखेर दिये और जल से सिंचन करने लगे। थोड़े समय में वृक्ष निकलकर उन वृक्षों में मुक्ता के गुच्छा लटकने लगे। इधर नन्दजी ने जब सुना कि कृष्ण ने इनमें से कुछ माला निकार लई हैं। तब अधिक दुखित भये। इसी अन्तर में कृष्ण ने आय नंद बाबा से कहा कि खेत पर मुक्तों के वृक्ष लगे हैं, सो जितने आवश्यक होयँ तोड़ लाओ। यह सुनि नंदजी तहाँ गये और मुक्तों को तुड़वाय एक कोटि भार बहिंगी और शकटों में भराय दुगुण मुक्ता वृषभानुजी के घर वहू के हेतु पठाय दिये। तब वृषभानुजी एवं सकल गोप अपने दूतों से यह वृत्तांत सुनि अचंभित भये और सब संदेह छोड़कर सब ने कृष्ण को परिपूर्णतम निश्चय किया और राधा कृष्ण को एक रूप पहिचाना और जहाँ मुक्ता बोये थे तहाँ मोतीकुंड तीर्थ हो गया। तहाँ पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो मनुष्य एक मोती भी दान करता है उसको लक्ष गुणा फल प्राप्त होता है।

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि गोबर्द्धन में जितने तीर्थ होयँ उनको जानना चाहता हूँ कृपा करि वर्णन करिये।

तब नारदजी बोले कि गोलोक सम वृन्दावन में गोवर्द्धन एक महान् तीर्थ है जिसको कृष्ण ने निज हस्त कमल पर उठाया और तहाँ गोप बालकों के साथ नाना भाँति की क्रीड़ा करीं। फिर तहाँ मानसी गंगा पर श्यामसुन्दर ने विहार किया और गोविन्द कुण्ड, चन्द्र सरोवर, राधा कुण्ड, कृष्ण कुण्ड, कुसुम सरोवर, गोपाल कुण्ड तीर्थ हैं। जहाँ कृष्ण हेतु मुकुट दान देने से देवतों की पदवी मिलती है। फिर जहाँ कृष्ण ने चित्र लिखे सो चित्र शिला है, फिर वादिनी शिला है और जहाँ कृष्ण ने कंदुक बनाय खेले सो कंदुक तीर्थ है; फिर जहाँ व्रजवासियों को स्वर्ग दिखाया तहाँ लोटने से श्री हरि धाम मिलता है और जहाँ गोपियों के वस्त्र चुराये सो वसन तीर्थ है। फिर एक समय जहाँ गोपियों से दान हेतु झगड़ा किया और मटुकी फोड़ि दधि खाय वृक्ष पर चढ़ गये तिस वृक्ष में दोना समान पत्र निकलते हैं; सो द्रोण तीर्थ कहलाता है, तहाँ दधि दान देने से गोलोक प्राप्त होता है। फिर जहाँ कृष्ण ने आँख मिचौली खेली थी सो कौकिक तीर्थ है। फिर तहाँ कदम्ब खंडी है, फिर जहाँ कृष्ण ने प्रियाजी का श्रृङ्गार किया था सो श्रृङ्गार मंडल कहाता है फिर जहाँ पर कृष्ण ने गोबर्द्धन में अपना रूप दर्शाया था सो तीर्थ तहाँ गुप्त तीर्थ है। कलियुग के बत्तीस हजार वर्ष बीतने पर जब गोबर्द्धन पर्वत पृथ्वी में विलीन हो जायगा, तब तहाँ से श्रीनाथजी प्रकट होयँगे तब चार नाथ अर्थात् बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, रंगनाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और जगन्नाथ के बीच में श्रीनाथ विराज कर हरि जनों को परम सुख देवेंगे। फिर तहाँ ऐरावत पद तीर्थ है फिर जहाँ हरि के चरण चिन्ह हैं तिसको देखि श्रीहरि धाम प्राप्त होता है। यही सब तीर्थ गोवर्द्धन में हैं जिनके दर्शन से परमगति मिलती है।

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि गोवर्द्धन के अंग कौन-कौन है?

तब नारदजी बोले कि ब्रह्म सदृश्य गिरि के अंग भी जानो। शृङ्गार मंडल गिरि का मुख है जहाँ पर अन्नकूट किया गया था और नेत्र मानसी गंगा हैं। चन्द्र सरोवर नासिका है, कृष्ण कुण्ड चिबुक है, गोविन्द कुण्ड अधर हैं, राधा कुण्ड रसना है, ललिता कुण्ड कपोल हैं, कुसुम सरोवर गंडस्थल हैं, गोपाल कुण्ड श्रवण हैं, मुकुट चिन्ह ही मुकुट है, वादिनी शिला ग्रीवा है, चित्र शिला शीश है, कंदुक तीर्थ कोष है, वसन तीर्थ कटि है द्रोण तीर्थ पृष्ठ है, कौकिक तीर्थ उदर है कदम्ब खंडी उर है, चरण चिन्ह मन है और हरि के चरण ही सुबुद्धि है। गज-पद पद हैं, वत्स कुंड बल है, शक्र सरोवर काम है, रुद्र कुण्ड क्रोध है, कुवेर तीर्थ कांति है, यम तीर्थ अहंकार है, ब्रह्म तीर्थ प्रसन्नता है, गिरि के सर्वाङ्ग अघ नाशक हैं। जो गिरि विभूति श्रवण करता है उसका संपूर्ण कल्याण होता है। क्योंकि श्रीहरि के हृदय से गोवर्द्धन प्रकट हुआ है।

राजा ने पूछा कि गोवर्द्धन श्रीहरि के हृदय से कैसे प्रकट हुआ था?

तब नारदजी बोले कि परिपूर्ण अनादि श्याम स्वरूप कृष्ण जो प्रकृति से परे हैं, जिनको वेदों ने स्वयं ज्योति, निरन्तर काल के परिचालक, माया के गुणों से रहित कहि कर गाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। तिन कृष्ण ने जब लीला करने की इच्छा की तब प्रथम शेषावतार धारण किया तिन ही के संग गोलोक प्रकट हुआ। फिर अगणित अंडों की रचना हुई, दक्षिण पग से गंगा और वाम चरण से यमुना प्रकट भई, दोनों गुल्फों से दिव्य रास मंडल प्रकट हुआ, जंघा से नव निकुंज हुआ और जानु से सर्व वन शिरमौर वृन्दावन हुआ और तिस से लीला सर हुआ, कटि से भूमि और रोम से सब लता वेली प्रकट हुई, नाभि से कमल उत्पन्न हुआ, स्वास से मथुरा, जंघा से द्वारावती, हस्त से श्रीदामा आदि ग्वाल प्रकट हुये, मणिबंध से नन्द और करतल से उपनन्द, स्कन्ध से षट वृषभानु और मन से गो उत्पन्न भई। बुद्धि से वृन्दावन की सम्पत्ति और वाम अंग से श्री, भू, बिरजा और लीला यह चार स्त्री प्रकट भई। सो लीला ही श्रीहरि की प्रेयसी राधा हैं और श्रीराधा के हस्त कमल से ललिता आदि स्त्री प्रकट हुई और रोम से अन्य सकल युवति वृन्द उत्पन्न हुये। इस प्रकार गोलोक की रचना करि तहाँ श्रीकृष्ण क्रीड़ा करने लगे। जहाँ मन्द-मन्द सुगंधित वायु चल रही है, स्वच्छ जल से सरोवर भरे हैं, नव निकुंजों में नवलता झूम रही हैं, सुगंधित पुष्पों पर भौंरा मड़राय रहे हैं, तहाँ श्रीराधा माधव रास विलास करने लगे। एक दिन श्रीराधाजी ने प्रीतम को स्वाधीन पाय एक वर पाने की इच्छा प्रकट करी। तब श्रीकृष्ण बोले कि जो इच्छा होय सो माँगो। तब श्रीराधाजी बोलीं एक एकांत स्थान होय तो रास करने का आनन्द प्राप्त होय। यह सुनि श्रीकृष्ण ने निज हृदय से एक तेज प्रकट किया जो शत कोटि योजन बढ़ा और उतना ही ऊँचा हो गया, जिसका प्रकाश कोटि भानु सदृश्य था, सकल रत्नों और सुवर्ण से युक्त था तिस गोवर्द्धन की शत शिखर शोभा देने लगीं जब तेज रूप गोव-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

र्द्धन बढ़ने लगा तब कृष्ण ने निज कर कमल से थाप कर कहा कि कितना बढ़ैगा ? तब गिरि ठहर गया। सो कृष्ण रूप श्याम वर्ण देखि श्रीराधाजी अति प्रमुदित भई और तहाँ नित्य प्रीतम सहित रास विलास करने लगीं। और शाल्मली द्वीप में द्रोण पर्वत के समीप प्रकट होने से गोवर्द्धन द्रोणसुत कहलाया। तिस ही गोवर्द्धन को पुलस्त्य मुनि व्रज में ले आये थे, जैसा प्रथम वर्णन हो चुका है। अब आगे एक इतिहास कहते हैं जिसके श्रवण से समस्त पातक भस्म हो जाते हैं।

एक समय विप्र नाम एक द्विज किसी कार्य वश मथुरा में आया और गोवर्द्धन के दर्शन करके लौट रहा था, उसने गोवर्द्धन का एक पाषाण टूक सुन्दर देखि उठाय लिया। कुछ दूर जाय एक निशचर मिला जिसके षट भुजा, तीन चरण, एक हाथ लम्बी नासिका, सात हाथ, की जिह्वा थी। सो बड़े-बड़े दशन निकारे अति भयानक रूप से द्विज की ओर दौड़ा। तब द्विज ने उसी पाषाण टूक से प्रहार किया जिसके लगते ही वह निशचर अपना रूप छोड़ि एक दिव्य श्याम स्वरूप कीट मुकुट कुंडल धारण करे हो गया और पीत वस्त्र वनमाला पहिरे अति आनंद से गद-गद हो द्विजवर के चरणों पर शीश धरि बोला कि हे द्विज, आप धन्य हो जो मेरे ऐसे पातकी का आज उद्धार किया। यह निरखि और विस्मित हो द्विज ने पूछा कि तुम पूर्व जन्म में कौन थे और किस दुष्कर्म के फल से यह निशाचर देह पाई थी और अब किस पुण्य से इस परम गति को प्राप्त हुये हो सो हम से कहो। यह सुनि वह पुरुष बोला कि इस गिरिराज पर्वत के टूक के स्पर्श्य से मेरी यह परम गति हुई। क्योंकि गंधमादन पर्वत पर तप करने से जो फल होता है, तिसका शत लक्ष गुणा फल इस गिरिराज के दर्शन से होता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

है। जो फल केदार में तप करने से, सुमेर पर्वत पर सुवर्ण दान देने से और ऋषभ कूट गिरि, कोल गिरि पर सुवर्ण सींग मढ़ाय गोदान करने से होता है, सुर और पितरों के पूजन से, गोदान करने से, पुण्य क्षेत्रों में पुण्य करने से, सत्य शैल, ऋषिमूक, देवगिरि, व्यंकट गिरि, विन्ध्याचल पर विचरने अथवा तप करने से, विद्याधर सर में स्नान करने से अथवा तप और यज्ञ करने से, रामनवमी में चित्रकूट में स्नान से, गोदावरी में कुंभ समय स्नान से पुष्कर में पुष्य नक्षत्र में, फाल्गुण मास में नैमिषारण्य स्नान से, वाराह क्षेत्र में कार्तिक में, हरि बासर को स्नान करने से खाण्डव वन में द्वादशी को, मकर संक्रांत पर प्रयाग में स्नान, कार्तिक पूर्णमा को वट वटेश्वर पूजन, वैधृत योग में महिष्मती में, रामनवमी को सरजू में स्नान करने से और इन समस्त तीर्थों में स्नान, दान, यज्ञ और श्राद्ध करने से जो फल होता है सो केवल गिरिराज के दर्शन से प्राप्त होता है। हे द्विजवर, तुम ने तो गोविन्द कुंड में स्नान और गोवर्द्धन का दर्शन परिक्रमा करी है, तुम से वढ़-कर कौन पुण्यात्मा और उत्तम हो सकता है। अब मैं अपने पूर्व जन्म की दुष्कृति तुम से कहता हौं सुनो।

मैं एक धनी वैष्य का पुत्र था। द्यूत खेलने, सुरापान, वेश्यागमन में निरत रहता था। जब सब धन नष्ट होते देखि माता पिता शिक्षा देने लगे, तब उनको विष दै एवं स्त्री को मारि सब धन लै गणिका के साथ रहने लगा। तहाँ आवश्य-कता पूर्ण न होने से चोरी और डाका डालने लगा। एक दिन वेश्याओं ने इन दुष्कर्मों के परिणाम पर ध्यान दै लोभ वश मुझको मारकर कूप में डार दिया। और इसके अतिरिक्त मैंने अन्य घोर दुष्कर्म भी बहुत किये अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्री, वैष्य और शूद्रों तथा गायों को मारा। इन सब पातकों से यम दूतों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने बाँधकर कुंभी पाक नाम नर्क में डार दिया और बहुत यातना दई। फिर चौरासी लाख योनियों में डार दिया तहाँ प्रथम एक एक वर्ष सब निकृष्ट योनियों में रहा फिर दस बार कोल हुआ और सात वर्ष तक सिंह रहा फिर सहस्र वर्ष तक विषधर योनि में जन्म पाया। अब कठोर राक्षस योनि मिली सो एक शूद्र के शीश पर चढ़ि यहाँ आया और वृन्दावन जाना चाहता था किंतु तहाँ के पार्षदों ने मार भगाया, भीतर न जाने दिया। फिर तुम से भेंट भई तुम ने इस गोवर्द्धन के टूक से प्रहार किया जिसके स्पर्श से सब पापन से मुक्त होकर हरि पार्षदों के साथ गोलोक धाम को जाता हूँ। यह कहि वह गोलोक को चला गया। तदंतर वह ब्राह्मण फिर गोवर्द्धन पर आया और श्रद्धा युक्त स्नान पूजन और दान किया, जिसके प्रभाव से इस लोक में भोग विलास करि अंत समय श्रीहरि के धाम को गया।

हे नृप बहुलाश्व, यह गिरिराज आख्यान मैंने तुम से कहा जिसके पढ़ने और श्रवण करने से नंदजी की पदवी मिलती है और कृष्ण भक्ति पाय गोलोक धाम प्राप्त होता है।

इति श्रीगर्गसंहिता अंतर्गत बाँके पिया अनुवादित
गिरिराज खण्ड सम्पूर्ण शुभ मस्तु।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ माधुर्य्य खण्ड प्रारम्भः

दोहा—ऐश्वर्यंरु माधुर्य्य युत, रच्यो सकल ब्रह्मण्ड।
ताहि सुमिरि वर्णन करौं, सरस माधुरी खण्ड ॥

मिथुलेश नृप बहुलाश्व ने नारदजी से पूछा कि श्रुति रूपा और ऋषि रूपादि जे ब्रज बाला रहीं तिन का इतिहास कृपा करके वर्णन करिये।

तब नारदजी बोले कि श्रुति गण जब ब्रज में गोपांगना रूप धारि प्रकट भई जैसा पीछे गोलोक चरित्र में कह आये हैं तब वृन्दा देवी ने उनकी अभिलाषानुसार वरदान दिया कि तुम्हारे गृह भगवान् कृष्ण आवैंगे। सो एक दिन अर्ध रात्रि में कृष्ण उनके गृह गये, तब तिन सबन ने पूछा कि इतनी अबेर से आने का क्या कारण है? कृष्ण बोले कि यमुना पार मेरे श्रीगुरुदेव पधारे हैं तिन की सेवा में देर हो गई। यह सुनि विस्मित हो सब कहने लगीं कि आप परिपूर्णतम के भी गुरू हैं? तिन को देखने की हमको बड़ी उत्कण्ठा है। सो प्रात समय चले न जायँ, इस कारण हम इसी क्षण जायँगी, किंतु यमुना बीच में है, पार कैसे होयँगी सो उपाय बताइये? तब कृष्ण ने कहा कि तुम सब यमुना से कहना कि यदि कृष्ण बाल ब्रह्मचारी होयं तो मार्ग देउ। यह सुनि सब गोपबाला बहुत से थारन में सामिग्री लै वन को चलीं और यमुना के निकट आय कृष्ण के सिखाये भये बचन कहे। तब यमुना ने अपने बीच में मार्ग दै दिया और व्रजबालाएँ पार हो दुर्वासा के निकट पहुँचीं और विविध प्रकार पूजन करि भोजन करने का आग्रह किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब दुर्वासा बोले कि हम परमहंस हैं. अपने कर से कुछ नहीं खाते, यदि तुम्हारी इच्छा होय तो निज-निज कर से खवाय देउ। यह कहि मुख बाय दिया। तब ब्रजबालान ने प्रथम थोड़ा-थोड़ा खवाया फिर थार उठाय उठाय मुख में उँड़ेलने लगीं और गिरि कंदरा समान सब पकवान मुख द्वारा उदर में समाय गया। तब गोपियाँ बोलीं कि अब आज्ञा होय तो गृह जायँ, किन्तु यमुना से पार होने का कोई उपाय बताइये। यह सुनि दुर्वासा बोले कि यमुना से कहो कि यदि दुर्वासा दूर्वाहारी होयँ तो मार्ग देउ। तब ब्रजबालान ने दुर्वासा के सिखाये भये वचन यमुना से कहे और यमुना के मार्ग देने पर अपने गृह लौट आईं और आश्चर्यित हो कृष्ण से पूँछा कि आप इतनी स्त्रियों के साथ रमण करने पर बाल ब्रह्मचारी और दुर्वासा कुम्भकरण समान हमारा सब पकवान गटक जाने पर भी दूर्वाहारी कैसे भये? यह हमारी शंका निवृत्त करिये। तब कृष्ण बोले हे गोपियों! मुझको अहंकारादि गुणों से रहित निरुपाधि, निष्कलंक और अच्युत भगवान् जानो तैसेई मेरे भक्त साधु गण इन्द्रियजित, रागद्वेष रहित और प्रपंच से उदासीन रहते हैं। उन्हें कर्म लिप्त नहीं कर सकते। जैसे घृत के घट में जल बिंदु छोड़ने से जल अलग रहता है, इसी प्रकार मेरे निरभिमानी भक्त इच्छा रहित कर्म करते भये निष्क्रिय रहते हैं। दुर्वासा क्षुधा से पीड़ित नहीं होते, उनको यदि कोई निज कर से खवाय देता है तो पाय लेते हैं अन्यथा बिना खाये भये भी मेरे ध्यान में मग्न रहते हैं। यह सुनि गोपियों का सब संदेह छूट गया।

नारदजी बोले यह इतिहास श्रुति रूपा गोपियों का वर्णन किया। अब ऋषि रूपा गोपियों का इतिहास सुनो। बंग देश में एक मंगल नाम गोप था, जिसके गृह में नव लक्ष गायें थीं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुख से रहता था काल की गति से कुछ समय में सब धन नष्ट हो गया, कुछ राजा ने छीन लिया और कुछ चोरों ने लिया। उस गोप की पाँच सहस्र स्त्रियों में लाखों कन्या उत्पन्न भईं तिनको देखि मंगल गोप दुखित हो सोचने लगा कि इन कन्याओं को कहाँ और किस को विवाहों। इसी अन्तर में एक जय नाम गोप मथुरा वासी तहाँ आया। उससे अपनी चिन्ता कहने पर जयगोप बोला कि व्रज में नंदराय से बड़ा अन्य गोप नहीं है। यह सुनि मंगल गोप कन्याओं को साथ लै मथुरा में आया और अपनी सब कन्यायें नन्दराय को सौंप दीं और कहा कि जहाँ इच्छा हो इनको विवाहो। सोई कन्यायें तहाँ रहकर कृष्ण हमारे पति होयँ इस अभिलाषा से यमुना की सेवा करने लगीं। तब यमुना ने प्रसन्न हो वरदान दिया कि तुमको कृष्ण मुरारी मिलेंगे। यही सब कन्याएँ उन ऋषियों का अवतार थीं जिन्हों ने कृष्ण पाने के हेतु कठिन तप किया था। अब आगे मैथिल गोपियों की कथा सुनो जो दश अश्वमेध यज्ञ के फल की देने हारी है।

मिथुला देश की कन्याएँ जो श्रीरामचन्द्र के रूप को निरखि मोहित भई थीं सो सब नव नन्द के भवनों में जन्मीं और तिन सबने मार्गशीर्ष मास में कृष्ण पति होने की अभिलाषा से कात्याइनी देवी का व्रत पूजन किया। प्रातकाल में उठि यमुना स्नान करि बालुका की मूर्ति बनाय पूजने लगीं। एक दिन कृष्ण ने आय उनके वस्त्र चुराय लिये और कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ कर बैठ रहे। जब कुमारियाँ जो नग्न ही जल में स्नान कर रही थीं न्हाय-न्हाय बाहर निकसीं और वस्त्र न पाये। तब खोजने लगीं और कृष्ण को वस्त्र लिये वृक्ष पर देखा। तब फिर जल में जाय हाहा खाय वस्त्र माँगने लगीं। शीत से जल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीतर कम्पित कुमारियों से कृष्ण बोले कि यदि वस्त्र लेना है तो जल से निकसि वृक्ष के नीचे आय दोनों हाथ जोरि सूर्य्य को प्रणाम करो अन्यथा वस्त्र नहीं मिल सकते। तब गोप कुमारियों ने हार मानि जैसा कृष्ण ने कहा था तैसा ही किया। तब कृष्ण ने उनका जल में नग्न स्नान दोष जो वरुण देवता प्रति अपराध भया था छुड़ाय वस्त्र दे दिये और बोले कि जिस मनोरथ से तुम सबन ने कात्याइनी पूजन किया है सो पूर्ण हुआ। इसका फल तुमको शीघ्र ही मिलैगा और कुछ दिन पीछे मैं धीर समीर पर रास करि सब के मनोरथ पूर्ण करूँगा। यह कहि कृष्ण अपने भवन को गये और व्रज सुंदरियाँ निज-निज गृह में चली आईं।

कौशलपुर की स्त्रियाँ जो अपने पति होते हुये भी श्रीराम रूप पर मोहित भई थीं सो सब व्रज में जन्म लै गोपगणों को विवाही गईं। सो अपने-अपने पति से स्नेह त्यागि जार बुद्धि से अष्ट भावों से भावित हो कृष्ण को भजने और प्रेम करने लगीं। तिनसे उसी भाव से कृष्ण भी मिलने लगे और वह स्त्रियाँ कृष्ण रूप में ऐसी तत्पर हो गई कि अपने देह गेह की सुधि बिसराय सर्वत्र कृष्ण ही देखने लगीं और परम हंस समान जड़ चैतन्य की खबर न रही। प्रत्येक स्थावर जंगम से कृष्ण को पूछने लगीं। कृष्ण छोड़ि मुख से अन्य वार्ता नहीं निकलती थी। जब कृष्ण मार्ग में मिल जाते तब उनका प्रेम वश लिपट जातीं और मुख चुम्बन करतीं। कृष्ण ही रूप में तत्पर, बिना कृष्ण दरश के अन्य कोई कार्य्य ही न था। तिन गोपियों के प्रगाढ़ प्रेम की समानता योगी और सांख्य में कुशल जन कोई नहीं कर सकता। जिन भगवान् से मिलने के लिये शिव ब्रह्मा आदि कोटिन वर्ष घोर तप करते हैं उन भगवान् मुकुन्द को प्रेमा भक्ति से वश में करि यह गोपीजन थोड़े-थोड़े

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दधि माखन के लिये नाच नचाती थीं। अब अवध निवासिनी नारियों का चरित्र श्रवण करौ।

सिंधु देश में जो चंपापुरी नाम नगरी है तहाँ के विष्णु भक्त विमल नाम राजा की षट सहस्र भार्य्या थीं किंतु संतान एक से भी न भई। एक दिन याज्ञवल्क्य मुनि का आगमन हुआ। तब राजा ने षोड्श विधि से पूजन करि सिंहासन पर पधराया और मुनि के कुशल पूछने पर अपनी संतान न होने की अंतर व्यथा कह सुनाई। याज्ञवल्क्य मुनि ने ध्यान करि विचारा और राजा विमल से कहा कि तुम्हारे भाग्य में एक भी पुत्र नहीं है किंतु काल पाय सत लक्ष कन्या होवैंगी। तिनको यदुकुल के शूरसेन वंश में परिपूर्णतम कृष्ण जो मथुरा में वसुदेव गृह में ११५ वर्ष पीछे भाद्र कृष्ण अष्टमी को अवतार धारण करेंगे और जिनका श्याम स्वरूप होगा, जिनके वक्ष-स्थल पर श्रीवत्स्य का चिन्ह होगा, पीत वसन, मुकुट कुण्ड-लादि से विभूषित होंगे तिन भगवान् को अपनी कन्यायें देना, उन्हीं से तुम्हारा गोत्र चलकर जल दान पाने के भागी होउगे। यह सुनि नृप विमल प्रसन्न हुआ और मुनि निज स्थान को चले गये।

कुछ काल पीछे वह कन्यायें उत्पन्न हुईं और विवाह योग्य होने पर राजा ने अपने दूत मथुरा को भेजे। दूतों ने मथुरा में जाय तहाँ की प्रजा से अनुसंधान करना आरंभ किया। तब प्रजा ने एकांत में ले जाय कहा कि वसुदेव के छः पुत्र कंस ने संहार कर दिये और एक कन्या उसके हाथ से छूटकर आकाश को चली गई। यह समाचार पाय दूतों ने राजा विमल को आय सुनाया। तब राजा बहुत दुखी हुआ और कहने लगा कि क्या ऋषि लोग भी मिथ्या बोलने लगे। इसी अन्तर में कौरव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजय हेतु उस नगर में पहुँचे। तब राजा विमल ने भीष्म पितामह को बुलाय उनका पूजन सत्कार करि विनय पूर्वक पूँछा कि मुनि याज्ञवल्क्य ने कृष्णावतार के विषय में जो कुछ कहा था उसका अनुसंधान करने से ठीक पता नहीं चलता। आप वृद्ध, सर्व शास्त्रन के ज्ञाता और वसुदेव के अवतार हैं यह हमने सुना है सो यदि आप जानते हों तो ठीक पता बताइये। भीष्मजी ने उत्तर दिया कि हमने निज भ्राता व्यासदेव जी से सुना है कि यदुकुल के शूरसेन वंश में मथुरा नगर में परिपूर्णतम श्रीकृष्ण वसुदेव से देवकी में प्रकट हुये हैं और वसुदेवजी कंस के भय से नंदराय के घर गोकुल में पहुँचाय आये हैं। और योगमाया रूपी एक कन्या को जो नंदराय के भवन में उत्पन्न हुई थी लाय कर कंस को दी थी। जिसको कंस ने शिला पर पटक दिया सो छूटकर आकाश को चली गई और वह बालक रूप कृष्ण वृन्दावन में गोप बालकों में खेलतेहैं। ग्यारह वर्ष की अवस्था में कंस को मार कर उग्रसेन को राज्य देयँगे और अपने को प्रकट करेंगे। अभी गुप्त रूप से गोप वंश में विचर रहे हैं और तुम्हारी ये कन्यायें अवधपुर निवासिनी हैं, सो वर पाय तुम्हारे गृह में उत्पन्न भई हैं। यह सुनि राजा विमल ने दूतों को समुझाय वृन्दावन में भेजा। सो दूत श्रीकृष्ण को एकांत में पाय चरणों पर गिरे और स्तुति करि अपना मनोरथ प्रकट किया कि सिंधु देश में चम्पापुरी का राजा विमल सदा आप का स्मरण रखकर यज्ञ, जप, दान करता है और आप का अनन्य भक्त है, तिस की लाखों कन्यायें हैं, तिनको आप के अर्पण करने का दृढ़ विचार रखता है। सो हे प्रभु, उसको दर्शन दै उसका मनोरथ पूर्ण करिये। तब श्रीकृष्ण ने दूतों को विदा करि कहा कि हम शीघ्र ही आवैंगे। फिर एक दिन अद्भुत वेष किये कृष्ण आकाश मार्ग से चलकर चम्पा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरी में राजा विमल की यज्ञशाला में प्रकट भये। तब राजा ने षोड़श प्रकार से पूजन करि अपनी सब कन्यायें कृष्ण को दे दीं और कन्यायें भी झरोखों से कृष्ण का मोहनी रूप देखि मोहित हो गईं। फिर सब कन्याओं को ले विमान द्वारा कृष्ण काम वन में आये और प्रत्येक के लिये एक-एक मंदिर विश्व-कर्म्मा को आज्ञा दे बनवाया। उनमें सब रहने लगीं और कृष्ण उतने ही रूप धारण करि प्रत्येक के साथ क्रीड़ा करने लगे और तिन के संग रास करने से जो श्रम जल (पसीना) गिरा उसी का विमल कुंड नाम तीर्थ हो गया। तिसके स्नान से गोलोक वास मिलता है।

एक समय दक्षिण देश में उशीर नगर जब अति वर्षा से जल मग्न हो गया, तब तहाँ के गोप देश त्यागि नन्दराय की आज्ञा से गोकुल में जाय बसे। तिनके गृह सीता यज्ञ में श्रीराम-चन्द्र से वर पाई भई युवती प्रकट भई। और तिन सब ने श्रीराधाजी का सेवन करि कृष्ण मिलने का उपाय पूछा। श्रीराधाजी बोलीं कि हरि बासर एकादशी के व्रत से तुमको कृष्ण मिलेंगे। तब उन गोपियों ने व्रत का नाम, विधान और फल पूँछा। श्रीराधाजी बोलीं कि एक वर्ष की २४ और मल-मास की दो ; सब २६ एकादशी होती हैं। तिनके नाम-सुनो उत्पन्ना, मोक्षा, सफला, पुत्रदा, षटतिला, जया, विजया, आमलकी, पापमोचनी, कामदा, वरूथिनी, मोहनी, अपरा, भीमसेनी, (निर्जला,) योगिनी, देवशयनी, कामिका, पवित्रा आरोपणी, अजा, पद्मा, इन्दिरा, पापांकुशा, रमा, प्रबोधिनी, कमला और हरिवल्लभा। अब व्रत का विधान सुनो ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर व्रत का नियम करै पुनि नदी में स्नान करै, उत्तम नदी, मध्यम तड़ाग और अधम कूप स्नान है। फिर क्रोध लोभ तजि श्वेत वस्त्र पहिर तिलक कर, षोड़षोपचार से श्रीहरि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का पूजन प्रेम सहित करै। हरि कथा पढ़ै वा सुनै, रात्रि में संकीर्त्तन और जागरण करै, द्विज निन्दा, पाखंड, मिथ्या वचन त्यागै, परनारि रति लोलुप और पर धन हारी से संभाषण न करैं, कांस पात्र में भोजन, मांस कोदों, चना, शाक, अन्न, मसूर, मधु, मैथुन, दुसरे वेर भोजन, दातून, द्यूत, निद्रा, हिंसा, पान, तेल और व्यायाम यह सब त्याग दे। इस विधान से व्रत करने से मुकुन्द श्रीकृष्ण को पावै। पचपन घटिका से एक पल अधिक हो तो वह एकादशी छोड़ कर दुसरे दिन द्वादशी में व्रत करै अन्यथा पाप होता है। एकादशी कथा श्रवण से वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है हरि वासर व्रत में तुलसी से श्रीहरि पूजन, जागरण और कीर्त्तन से श्रीहरि लोक में निवास मिलता है। एकादशी व्रत फल के समान शत्त राजसूय और सहस्र अश्वमेध यज्ञों का फल भी नहीं है। एकादशी व्रत सेवी दश पीढ़ी पिता, दश माता और दश स्त्री का उद्धार करता है और सब तीर्थ स्नान, सर्व दान और भी अनेक सुकृति हरिवासर व्रत के फल की समानता नहीं कर सकती। गोपियों ने पूछा कि हे श्रीराधे ! जिस जिसने इस व्रत को करि जौन-जौन फल पाया है सो भी कृपा करि वर्णन करो।

तब श्रीराधाजी बोलीं कि राजा वैखानस ने व्रत करि पिता को स्वर्ग पठाया, लुम्पक ने राज्य पाया, नृप केतुमान ने पुत्र पाने से पित्रों को स्वर्ग पठाया, मालवन्त और पुष्पवती का शापोद्धार हुआ, श्रीरामचन्द्र ने व्रत करि रावण को मारि विजय प्राप्त की, ब्रह्मा ने सुरगण सहित परमपद पाया, मेधावी शाप से छूटा, धुंधमार, अपसरा, नृप मांधाता, मुचकुन्द, धृष्टबुद्धि अति पापी एक वैश्य, रुक्मांगद अम्बरीष, हरिश्चन्द्र, भीमसेन, नृप महिजित, मुचकुन्द की पुत्री चन्द्रभागा इत्यादि सब व्रत के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रताप से श्रीहरि धाम को गये। श्रीराधाजी के यह वचन सुनि गोपियों ने प्रसन्नता पूर्वक एकादशी व्रत धारण किया। जिसके प्रभाव से श्रीकृष्ण के संग शरद पूर्णिमा में रास में सम्मिलित हो परम सुख पाया। अब पुलिन्द कुमारियों का चरित्र सुनो।

विन्ध्याचल के राजा और भील जाति के पुलिन्दों से झगड़ा हुआ। राजा ने एक अक्षौहिणी सेना भेजकर पुलिंदों को परास्त किया। तब पुलिंद नृपति कंस की शरण गये। कंस विन्ध्याचल के राजा पर चढ़ दौड़ा और कौरव सेना ले राजा के पक्ष में आये और कंस से पराजित हुए। पुलिन्द भी कंस के चाकर हो गये। तिन पुलिन्दों के गृह श्रीरघुनाथजी के पूर्व वरदान से पुलिन्दका कन्यायें प्रकट भईं। तिन कन्याओं ने कृष्ण से अनुराग किया, सो भी कृष्ण के रचे भये रास में सम्मिलित भईं, सो धन्य हैं जिनको कृष्ण पदार्विंद का सेवन प्राप्त हुआ। जिन पद कमल की रज को शिव और ब्रह्मादिक भी तरसते हैं, जो भगवत् चरणों का भक्ति पूर्वक सेवन करता है उसी को परम पद की प्राप्ति होती है। तहाँ उच्च और नीच कुल नहीं है। अब आगे ऊर्द्ध लोक की स्त्रियों का चरित्र सुनो।

श्वेतद्वीप की स्त्रियाँ वरदान पाय घट वृषभानु के भवन में उत्पन्न हुईं। तिन लोकाचल और अजितपद निवासिनी स्त्रियों ने कठिन माघ व्रत करि हरि का पूजन किया। तिनकी परीक्षा हेतु कृष्ण योगी का वेष धरि बरसाने में आये। तब युवतियों के नाम धाम पूछने पर कृष्ण बोले कि मेरा नाम स्वयं प्रकाश और धाम मानसरोवर है और हम भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल की बातें जानते हैं। मारण, मोहन, उच्चाटन और वशीकरण विद्या में दक्ष हैं। गुप्त पदार्थ को प्रकट दिखराय देते हैं। तब युवतियाँ बोलीं कि हे योगीराज, हमें कृष्ण से भेंट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करांय देउ, हम सब की यही अभिलाषा है। यह सुनि योगी वेषधारी कृष्ण ने सब को दृग मूँदने की आज्ञा दी। जब सब ने दृग मूँद लिये, तब कृष्ण ने मोर मुकुट धारण किये वन्शी बजाते हुये अपना रूप प्रकट किया। सो देखि सब परम हर्ष को प्राप्त हुईं। फिर माघ मास के रास में सब को इच्छित सुख दिया। अब आगे उपनन्द गृह जो कन्यायें प्रकट भई थीं उनका चरित्र सुनो।

वीत होत्र, श्रुत, अग्निभुक, गोपति, श्रीकर, शान्त, पावन, शाम्ब और व्रजेश ये नव उपनन्द थे। तिनकी सब कन्यायें राधिकाजी की सखी भईं और जब राधा ने कृष्ण से मान किया तब तिनके ढिग आय बोलीं कि यह फाल्गुण मास है, इस गोविन्द मास में मान करना उचित नहीं है, इसलिये गुलाल, कुम्कुमा, बूका, चोवा और रंग लै व्रजराज कुँवर से होरी खेलने चलो। देखो प्यारे कैसे विचित्र शृंगार किये ग्वाल बालों सहित होरी की सब सामिग्री लिये इधर आये हैं। यह सुनि राधाजी सखियों सहित शृङ्गार करि होरी का सब साज लै चलीं। और आय-आय व्रजकिशोर को चारों ओर से घेर लिया और कृष्ण के साथ मन मानी होरी खेली और विविध विलास किया। फिर कृष्ण पीत वसन इत्यादि फगुआ दै प्रमुदित निज धाम को लौट गये। अब अन्य स्त्रियों का चरित्र सुनो।

मालव देश का दिवसपति नाम एक नन्द गोप था, सो एक सहस्र स्त्रियों सहित तीर्थ करते हुये गोकुल में आया और नन्दराय से मिलि द्वै योजन में स्थान बनवाय रहने लगा। तिसके गृह बहुत सी कन्यायें उत्पन्न भईं ते सब माघ स्नान करि, भक्ति पूर्वक श्रीहरि का पूजन करने लगीं। तब कृष्ण ने प्रकट हो वर माँगने का आदेश दिया। वे कन्यायें बोलीं कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो योगियों को भी दुर्लभ है और कोटि कोटि अण्डों का पति है सो हमारे दृगन से कभी ओट न होय। यह सुनि कृष्ण नें एवमस्तु कहा और फिर उनके साथ रास विलास करि सब को परम सुख दिया। अब जालंधरी का चरित्र सुनो।

रंग पुर नगर का एक गोप रंगजित नाम प्रति वर्ष धृतराष्ट्र को कर दिया करता था। एक वर्ष कर न देने पर धृतराष्ट्र ने दो सहस्र सेना भेजी और घोर युद्ध हुआ। जब रंगजित ने अपनी हार देखी तब कंस की शरण गया। कंस भारी सेना ले महाबली योधाओं सहित सहायता करने आया और अपनी कराल गदा लै कौरव दल में घुसकर सेना वध करने लगा। कौरव सेना परास्त हो भागी। इस प्रकार रंगपुर जीतकर रंगजित को दे दिया और मथुरा लौट आया और कौरव लोग यदुवंशिन से परास्त हो मौन धारि बैठ रहे। तदंतर ग्वाल रंगजित व्रज के समीप वर्हिषद नगर में आय निवास करने लगा। तिसके गृह में सब जालंधरी कन्यायें गोपन को विवाही गई; सो सब कृष्ण को देखि मोहित हो गई और जार भाव से कृष्ण का सेवन करने लगीं। तब कृष्ण ने चैत्र मास में रास रचकर सब के मनोरथ पूर्ण किये। फिर व्रज में एक धनवान गोप की पाँच सहस्र युवतियों से बहुत कन्यायें प्रकट हुई। ते सब वर्हिषमती सुतल वासिनी पूर्व वर से नाग कन्यायें भई थीं। ते सब दुर्वासा से प्राप्त यमुना पंचांग धारण करि कृष्ण को प्राप्त हुई। एक दिन यमुना तटपर कृष्ण फूलडोल रचना करि श्यामा सहित झूलने लगे और उन कन्याओं को अपने विहार का सुख दिया। कुछ नाग कन्याओं ने जो मिथुलापुर निवासिनी थीं और लक्ष्मणजी के रूप पर मोहित हो गई थीं गोप कन्या होकर बलदेवजी के सङ्ग विहार किया। नृप बहुलाश्व ने पूँछा कि कृपा करि यमुना पंचाङ्ग भी वर्णन करिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब नारदजी बोले कि एक दिन अयोध्या के नृप मांधाता ने अपने जामात्र सौभरि ऋषि से पूछा कि आप सर्व शास्त्र के ज्ञाता हैं, जिस उपाय से श्रीहरि धाम प्राप्त होय सो वर्णन करिये। तब खग वन्शीय सौभरि ऋषि बोले कि श्रीयमुना पंचाङ्ग अर्थात् कवच, स्तव, पद्धति, पटल और सहस्र नाम यह पाँच यमुना पंचाङ्ग कहाते हैं। जिनके धारण करने और पाठः करने से जगत के सर्व मनोरथ प्राप्त होते हैं और अन्त में कृष्ण भक्ति हो हरि धाम गोलोक, जो मोक्ष होने पर भी नहीं मिलता फिर कठिन तप की कौन बात है, प्राप्त होता है। सो यमुनाः पंचाङ्ग इस विधि है सुनो।

यमुना पंचांग

मांधातोवाच—यमुनायाः कृष्णराङ्याः कवचं सर्वतो-ऽमलम्। देहि मह्यं महा भाग धारयिष्याम्यहं सदा ॥ १ ॥

सौभरिरुवाच—यमुनायाश्च कवचं सर्व रक्षा करं नृणाम्। चतुष्पदार्थ दं साक्षाच्छृणु राजन् महामते ॥ २ ॥ कृष्णां चतुर्भुजां श्यामां पुंडरीक दलेक्षणाम्। रथस्थां सुन्दरीं ध्यात्वा धारयेत्कवचंततः ॥ ३ ॥ स्नातः पूर्वमुखो मौनीकृतसंध्यः कुशा-सने। कुशैर्वद्ध शिखो विप्रः पठेद्वैस्वस्तिकासनः ॥ ४ ॥ यमुना मे शिरः पातु कृष्णा नेत्रद्वयं सदा। श्यामा भ्रूभंगदेशंच नासिकां नाक वासिनी ॥ ५ ॥ कपोलौ पातु मे साक्षात्परमानन्द रूपिणी। कृष्ण वामांस संभूता पातु कर्णद्वयं मम ॥ ६ ॥ अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका। यमस्व साकन्धरां च हृदयं मे महा नदी ॥ ७ ॥ कृष्ण प्रिया पातु पृष्ठं तटिनीमे भुजद्वयम्। श्रोणी तटं च सुश्रोणी कटिंमे चारुदर्शना ॥ ८ ॥ ऊरुद्वयंतु रंभो-रूर्जानु नीत्वंघ्रि भेदिनी। गुल्फौरासेश्वरी पातु पादौ पापाप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हारिणी ॥ ९ ॥ अंतर्बहिरधश्चोर्ध्वं दिशासु विदिशासु च । समंतात्पातु जगतः परिपूर्णतम प्रिया ॥ १० ॥ इदं श्रीयमुनायाश्च कवचं परमाद्भुतम् । दशवारं पठेद्भक्त्या निर्धनो धनवान्भवेत् ॥ ११ ॥ त्रिभिर्मासैः पठेद्धीमांब्रह्मचारी मिताशनः । सर्व राज्याधिपत्यत्वं प्राप्यते नात्र संशयः ॥ १२ ॥ दशोत्तर शतंनित्यं त्रिमासा वधि भक्तितः । यः पठेत्प्रयतो भूत्वा तस्य किं किं न जायते ॥ १३ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्व तीर्थ फलं लभेत् । अंते व्रजेत्परंधाम गोलोकं योगि दुर्लभम् ॥ १४ ॥

इति श्रीगर्गसंहिता यां श्रीमाधुर्य खण्डे श्रीसौभरि मांधातृ संवादे श्रीयमुना कवच समाप्तं ।

मांधातोवाच—यमुना याः स्तवं दिव्यं सर्वसिद्धिकरं परम् । सौभरे मुनि शार्दूल वदमांकृपयात्वरम् ॥ १ ॥

श्रीसौभरिरुवाच—मार्तंड कन्यकायास्तु स्तवंश्रृणु महामते । सर्व सिद्धि करं भूमौ चातुर्वर्ग्यफलप्रदम् ॥ २ ॥ कृष्णा वामांस भूतायै कृष्णायैसततंनमः । नमः श्रीकृष्णारूपिण्यै कृष्णेतुभ्यं नमोनमः ॥ ३ ॥ यः पाप पंकांबु कलंक कुत्सितः कामी कुधीः सत्सुकलिंकरोतिहि । वृन्दावनं धाम ददाति तस्मैनदन्मिलिन्दादि कलिन्द नन्दनी ॥ ४ ॥ कृष्णे साक्षात्कृष्ण रूपात्वमेव वेगा वर्तते मत्स्य रूपी । ऊर्मावूर्मौकूर्मरूपी सदाते बिन्दौ बिंदौ भाति गोविंद देवः ॥ ५ ॥ वन्दे लीलावतीं त्वां सघन घन निभां कृष्ण वामांस भूतां । वेगं वै वैरजाख्यं सकल जल चयं खण्डयं तीं वलात्स्वात् ॥ छित्वा ब्रह्मांड मारात्सुर नगरनगानांडशैलादि । दुर्गान्भित्वा भूखंड मध्ये तटिनि धृतवती सूर्मिमालां प्रयांतीम् ॥ ६ ॥ दिव्यं क्वौ नामधेयं श्रुति मथ यमुने दंड यत्यद्रितुल्यं पाप व्यूहं त्वखंडं वसतु मम गिरा मंडले तुक्ष्यां तत् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दंडचांश्चा कार्य दंडयां सकृदपि वचसा खंडि तं यद् गृहीतंभ्रातुर्मार्तिंड सूनो रटति पुरि दृढस्ते प्रचण्डेति दंडः ॥ ७ ॥ रज्जुर्वा विषयांधकूप तरणे पापाखुदर्वी करीवेरायुष्णि कु च विराज मूर्ति शिरसो मालास्तिवासुन्दरी। धन्यं भाग्यमतः परंभुवि-नृणां यत्रादि कृद्वल्लभागोलोकेप्यति दुर्लभाति सुभगाभात्य द्वितीया नदी ॥ ८ ॥ गोपी गोकुल गोप केलि कलिते कालिंदि कृष्ण प्रभे त्वत्कूले जल लोल गोल विचलत्कल्लोल कोलाहलः। त्वत्कांतार कुतूहलालि कुल कृज्झंकार के काकुलः कूजत्कोकिलसंकुलो व्रजलता लंकार भृत्पातुमाम् ॥ ९ ॥ भवंति जिह्वा-स्तनु राम तुल्या गिरो यदा भूसिकताइवाशु ॥ तदप्यलं याति न ते गुणां तं संतो महांतः किलशेष तुल्याः ॥ १० ॥ कलिन्द गिरि नन्दिनी स्तव उपस्ययं वा परः श्रुतश्च यदि पाठितो भुवि तनोति सन्मंगलम्। जनोपि यदि धारयेत्किलपठेच्चयो नित्यशः सयाति परमं पदं निजनिकुंज लीला वृतम् ॥ ११ ॥

इति श्रीयमुना स्तव समाप्तं ॥

मांधातोवाच —कृष्णा याः पटलं पुण्यं कामदं पद्धतिं यथा। वदमां मुनि शार्दूल त्वं साक्षाज्ज्ञानशेवधिः ॥ १ ॥

सौभरिरुवाच—पटलं पद्धतिं वक्ष्ये यमुना या महामते। कृत्वा श्रुत्वाथजप्त्वा वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ २ ॥ प्रणवं पूर्व मुद्धृत्य मायावीजं ततः परम्। रमा वीजंततः कृत्वा काम वीजं विधानतः ॥ ३ ॥ कालिन्दीति चतुर्थ्यं ते देवी पद मतः परम्। नमः पश्चात्संविधार्यजपेन मंत्र मिमंनरः ॥ ४ ॥ जप्त्वैकादश लक्षाणि मंत्र सिद्धिर्भवेद्भुवि। जनैः प्रार्थ्याश्चये कामाः सर्वे प्राप्याः स्वतश्चते ५ ॥ विधाय षोडशदलं पद्मं सिंहासने शुभे। कर्णिकायां च कालिंदीं न्यसेच्छ्री कृष्ण संयुताम् ॥ ६ ॥ जाह्नवीं विरजां कृष्णां चन्द्रभागां सरस्वतीम्। गोमतीं कौशिकीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
पुस्तकालय, करौंदी

वेणीं सिंधुं गोदावरीं तथा ॥७॥ वेद स्मृतिं वेत्र वतीं शतद्रुं सरयूं तथा। पूजयेन्मानवश्रेष्ठ ऋषि कुल्यांक कुभिनीम् ॥ ८ ॥ प्रथ-कपृथक्कलेषु नासोग्न्यार्घ्य विधानतः। वृन्दावनं गोवर्द्धनं वृन्दां च तुलसीं तथा ॥ चतुर्दिक्ष विभाग्या शुपूजयेन्नामभि पृथक् ॥९॥ ॐ नमो भगवत्यै कलिंदनंदिन्यैसूर्य कन्यकायै यम भगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथी भूतायै स्वाहा॥ अनेन मंत्रेणावाहनादि षोडशोपचारांस माहित उपाहरेत् ॥ १० ॥ इत्येवं पटलं विद्धि तुभ्यं वक्ष्यामि पद्धतिम्। यावत्संपूर्णतां याति पुरश्चरण मे वहि ॥ ११ ॥ तावद्भवेद् ब्रह्मचारी जपेमौन प्रतोद्विजः। यव भोजी भूमिशायी पत्र भुग्जित मानसः ॥ १२ ॥ कामं क्रोधं तथा लोभं मोहं द्वेषं विसृज्यसः। भक्त्या परमया राजंवर्त्त मानस्तु-देशिकः ॥ १३ ॥ ब्राह्मेमुहूर्ते उत्थाय ध्यात्वा देवीं कलिंदजाम्। अरुणोदय वेलायां नद्यांस्नानं समाचरेत् ॥ १४ ॥ मध्याह्ने चापि संध्यायां संध्यावंदन तत्परः। समाप्तेनियमे राजन्कालिंदी तीर मास्थितः ॥ १५ ॥ दशलक्षं ब्राह्मणानां सपुत्राणां महात्मनाम्। पूजयित्वा गंध पुष्पैर्दत्वा तेभ्यः सुभोजनम् ॥ १६ ॥ वस्त्रभूषण सौवर्ण पात्राणि प्रस्फुरंति च। दक्षिणाश्च शुभादद्यात्ततः सिद्धिर्भवेत्खलु ॥ १७ ॥ इति ते पद्धतिः प्रोक्ता मया राजन्-महामते। कुरुत्वं नियमं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ १८ ॥

इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्य खंडे पटल पद्धति समाप्तं।

मांधातोवाच—नाम्नां सहस्रं कृष्णा याः सर्व सिद्धि करं परम्। वद मां मुनि शार्दूल त्वं सर्वज्ञो निरामयः ॥ १ ॥

सौभरिरुवाच—नाम्नाम सहस्रं कालिंद्या मांधातस्ते वदाम्यहम्। सर्व सिद्धिकरंदिव्यं श्रीकृष्ण वश कारनम् ॥ २ ॥ ओं अस्यश्री कालिन्दी सहस्र नामस्तोत्र मंत्रस्य। सौभरिऋषिः॥ श्री यमुना देवता ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ माया वीजमितिकीलकम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रमा बीज मिति शक्तिः ॥ श्रीकलिन्दनन्दिनीप्रसाद सिद्धयर्थ जपे विनियोगः ॥ अथध्यानम् ॥ श्यामामंभोजनेत्रां सघन घन रुचिं रत्न मंजीर कूज त्कांची केयूर युक्तां कनक मणि मये विभ्रतीं कुंडलद्वे । भ्राजच्छ्रीनीलवस्त्रस्फुरदि भजचलद्धार भारां-मनोज्ञां ध्याये मार्तंड पुत्री तनु किरणचयोद्दीप्त दीपाभिरा-माम् ॥ ३ ॥ इतिध्यानम् ॥ ओंकालिन्दी यमुना कृष्णाकृष्ण रूपा सनातनी । कृष्ण वामांस संभूता परमानन्दरू पिणी ॥ ४ ॥ गोलोक वासिनी श्यामा वृन्दावन विनोदिनी । राधा सखी रासलीला रासमंडल मंडिनी ॥ ५ ॥ निकुंजवासिनीऽवल्ली रंग वल्ली मनोहरा । श्री रासमंडलीभूता यूथीभूता हरिप्रिया ॥ ६ ॥ गोलोक तटिनी दिव्या निकुंजतल्ल वासिनी । दीर्घोर्मि वेग गंभीरा पुष्प पल्लव वाहिनी ॥ ७ ॥ घनश्यामा मेघ माला वलाका पद्म मालिनी । परिपूर्ण तमा पूर्णा पूर्णब्रह्मप्रिया परा ॥ ८ ॥ महावेगवती साक्षान्निकुंजद्वार निर्गता । महानदी मंद गतिर्विरजा वेग भेदिनी ॥ ९ ॥ अनेक ब्रह्मांड गता ब्रह्म द्रव समाकुला । गंगा मिश्रा निर्जलाभा, निर्मला सरितांवरा॥१०॥ रत्न वद्धो भयतटी हंस पद्मादि संकुला । नदी निर्मल पानीया सर्व ब्रह्मांड पावनी ॥ ११ ॥ वैकुंठ परिखी भूता परिखा पाप हारिणी । ब्रह्मलोक गता ब्राह्मी स्वर्गा स्वर्ग निवासिनी ॥ १२ ॥ उल्लसन्ती प्रोत् पतंती मेरु माला महोज्ज्वला । श्रीगंगाभः शिखरिणी गंड शैल विभेदिनी ॥ १३ ॥ देशान्युनन्ती गच्छन्ती वहंती भूमि मध्यगा । मार्तण्ड तनुजा पुण्या कलिन्द गिरि नन्दिनी ॥ १४ ॥ यमस्वसा मन्द हासा सुद्विजा रचिताम्वरा । नीलाम्बरा पद्ममुखी चरंती चारु दर्शना ॥ १५ ॥ रंभोरूः पद्म नयना माधवी प्रमदोत्तमा । तपश्चरंती सुश्रोणी कूजन्नपुर मेखला ॥ १६ ॥ जलस्थिता श्यामलांगी खांडवा भाविहारिणी । गांडी विभाषिणी वन्या श्रीकृष्णं वर मिच्छती ॥ १७ ॥ द्वारिका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-मग्ना राज्ञी पट्टराज्ञी परंगता । महाराज्ञी रत्नभूषा गोमती तीर चारिणी ॥ १८ ॥ स्वकीया च लुब्धा स्वार्थी स्वभक्त कार्य साधिनी । नवलांगा बला मुग्धा वरांगा वाम लोचना ॥ १९ ॥ अज्ञात यौवना दीना प्रभाकान्तिर्द्युतिश्छविः । सुशोभा परमा कीर्तिः कुशला ज्ञात यौवना ॥ २० ॥ नवोढा मध्यगा मध्या प्रौढिः प्रौढाप्रगल्भका । धीराऽधीरा धैर्य्य धरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कुलांगना ॥ २१ ॥ क्षण प्रभा चंचलार्चा विद्युत्सौदामिनी तडित् । स्वाधीन पतिका लक्ष्मीः पुष्टा स्वाधीनभर्तृका ॥ २२ ॥ कलहांतरिता भीरु रिच्छा प्रोत्कंठिता कुज्ञा । कशिपुस्था दिव्य शय्या गोविन्द हृत मानसा ॥ २३ ॥ खंडिता खण्ड शोभाढ्या विप्रलब्धाभि सारिका । विरहार्ता विरहिणी नारी प्रोषित भर्तृका ॥ २४ ॥ मानिनी मानदा प्राज्ञा मन्दार वन वासिनी । झंकारिणी झणत्कारी रणन्मंजीर नूपुरा ॥ २५ ॥ मेखला मेखला कांची काँचनी कंचनामयी । कंचुकी कंचुकमणिः श्रीकण्ठाढ्या महामणिः ॥ २६ ॥ श्रीहारिणी पद्महारा मुक्ता मुक्तफलार्चिता । रत्न कंकण केयूरा स्फुरदंगुलि भूषणा ॥ २७ ॥ दर्पणादर्पणी भूता दुष्टदर्पविनाशिनी कंबु ग्रीवा कंबुधरा ग्रैवेय कवि राजिता ॥ २८ ॥ ताटंकिनी दंतधरा हेम कुंडल मण्डिता । शिखा भूषा भाल पुष्पा नासा मौक्तिक शोभिता ॥ २९ ॥ मणि भूमि गतादेवी रैवताद्रिविहारिणी । वृन्दावनगता वृन्दा वृन्दारण्यनिवासिनी ॥ ३० ॥ वृन्दावनलतामाध्वी वृन्दारण्य विभूषणा । सौंदर्य लहरी लक्ष्मीर्मथुरा तीर्थवासिनी ॥ ३१ ॥ विश्रांतवासिनी काम्या रम्या गोकुलवासिनी । रमणस्थलशोभाढ्या महावन महानदी ॥ ३२ ॥ प्रणता प्रोन्नता पुष्टा भारती भरतार्चिता । तीर्थराज गतिर्गोत्रा गंगासागर संगमा ॥ ३३ ॥ सप्ताब्धिभेदिनी लोला सप्तद्वीप गता बलात् । लुठंती शैल भिद्यंती स्फुरंती वेग वत्तरा ॥ ३४ ॥ कांचनी कांचनीभूमिः कांचनी भूमि भाविता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोक दृष्टिर्लोक लीला लोका लोकाचलार्चिता ॥ ३५ ॥ शैलो-द्गता स्वर्गगता स्वर्गार्चास्वर्ग पूजिता। वृन्दावनी वनाध्यक्षा रक्षा कक्षा तटी पटी ॥ ३६ ॥ असिकुण्ड गता कच्छा स्वच्छंदो च्छलिता दिजा। कुहरस्था रथ प्रस्था प्रस्था शांतितरातुरा॥३७॥ अंबुच्छटा सीकरा भादर्दुरा दार्दुरी धरा। पापांकुशा पापसिंही पापद्रुम कुठारिणी ॥ ३८ ॥ पुण्य संघा पुण्य कीर्तिः पुण्यदा पुण्य वर्द्धिनी। मधोर्वननदी मुख्या तुला ताल वनस्थिता ॥३९॥ कुमुद्वन नदी कुब्जा कुमुदां भोज वर्द्धिनी। प्लवरूपा वेगवती सिंह सर्पादिवाहिनी ॥ ४० ॥ वहुली वहुदा वह्नी वहुला वन वन्दितां। राधाकुण्ड कलां राध्या कृष्णाकुण्ड जलाश्रिता ॥४१॥ ललिता कुंडगा घंटा विशाखा कुण्ड मंडिता। गोविन्द कुण्ड निलया गोप कुंडतरंगिणी ॥ ४२ ॥ श्रीगंगा मानसी गंगा कुसुमांवर भाविनी गोवर्धिनी गोधनाढ्या मयूरीवरवर्णिनी ॥ ४३ ॥ सारसी नीलकण्ठा भा कूजत्कोकिल पोतकी। गिरिराज प्रसूर्भूरि रात पत्रा तपत्रिणी ॥ ४४ ॥ गोवर्द्धनांका गोदन्ती दिव्यौषधि निधिस्तुतिः। पारदी पारदमयी नारदी शारदी भृतिः ॥ ४५ ॥ श्रीकृष्ण चरणांकस्थाकामा कामवनांचिता। कामाटवी नन्दिनी च नन्दग्राम महीधरा ॥ ४६ ॥ वृहत्सानुद्युतिः प्रोता नन्दीश्वरसमन्विता। काकली कोकिलमयी भांडीर कुश कौशला ॥ ४७ ॥ लोहार्गल प्रदाकारा काश्मीर वसनावृता। वर्हिषदी शोणपुरी शूरक्षेत्र पुराधिका ॥४८॥ नानाभरण शोभाढ्या नानावर्ण समन्विता। नानानारी कदंवाढ्या रंगरंग महीरुहा ॥४९॥ नाना लोक गतावर्चिर्नाना जलसमन्विता। स्त्री रत्नं रत्न निलया ललना रत्नं रंजिनी ॥ ५० ॥ रंगिणी रंग भूमाढ्या रंगा रंगमही रुहा। राजविद्या राजगुह्याजगत्कीर्तिर्घनाघना ॥ ५१ ॥ विलोल घंटा कृष्णांगा कृष्णा देह समुद्भवा। नील पंकज वर्णा भा नील पंकजहारिणी ॥ ५२ ॥ नीलाभा नील पद्माढ्या नीलां-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओरुह वासिनी । नागवल्ली नागपुरी नागवल्ली दलार्चिता ॥ ५३ ॥ ताम्बूल चर्चिता चर्चा मकरंद मनोहरा । सकेसराकेसरिणी केशपाशाभि शोभिता ॥ ५४ ॥ कज्जलाभा कज्जलाक्ता कज्जली कलितांजना । अलक्त चरणा ताम्रा लाला ताम्रीकृतांबरा ॥ ५५ ॥ सिंदूरिता लिप्त वाणी सु श्रीः श्रीखंड मंडिता । पाटीर पंक वसना जटा मांसीरुगम्बरा ॥ ५६ ॥ आगर्व्य गुरु गंधाक्ता तगराश्रित मारुता । सुगंधि तैल रुचिरा कुंतलालिः सकुंतला ॥ ५७ ॥ शकुंतलाऽपांसुला च पातिव्रत्य परायणा । सूर्य्यप्रभा सूर्यकन्या सूर्य देह समुद्भवा ॥ ५८ ॥ कोटि सूर्य्य प्रतीकाशा सूर्यजा सूर्य नंदिनी । संज्ञासंज्ञा सुता स्वेच्छा संज्ञा मोद प्रदायिनी ॥ ५९ ॥ संज्ञा पुत्री स्फुरच्छाया तपती तापकारिणी । सावर्ण्यानुभवा वेदी वडवा सौख्य दायिनी ॥ ६० ॥ शनैश्चरानुजा कीला चंद्र वंश विवर्द्धिनी । चंद्रवंश वधूश्चंद्रा चंद्रावलि सहायिनी ॥ ६१ ॥ चंद्रावती चंद्रलेखा चंद्रकांतानुगांशुका । भैरवी पिंगलाशंकी लीला वत्यागरी मयी । ६२ ॥ धन श्रीदेव गांधारी स्वर्मणिर्गुण वर्द्धिनी । व्रज मल्लार्अंधकारी विचित्रा जय कारिणी ॥ ६३ ॥ गंधारी मंजरी टोडी गर्ज्जर्य्या शावरी जया । कर्णाटी रागिणी गौरी वैराटी गौर वाटिका ॥ ६४ ॥ चतुश्चंद्रा कला हेरी तैलंगी विजयावती । ताली तलस्व रागाना क्रिया मात्र प्रकाशिनी ।६५॥ वैशाखीचाचला चारुमाचारी घूघटी घटा । वै रागरी सोरटी शाकेदारी जल धारिका ॥ ६६ ॥ कामा कर श्रीकल्याणी गौर कल्याण मिश्रिता । राम संजीविनी हेला मंदारी काम रूपिणी ॥ ६७ ॥ सारंगी मारुती होढा सागरी काम वादिनी । वैभासी मंगलाचांद्री रास मंडल मंडना ॥ ६८ ॥ कामधेनुः कामलता कामदाकमनीयका । कल्पवृक्ष स्थली स्थूला सुधा सौधनि वासिनी ॥ ६९ ॥ गोलोक वासिनी सुभ्रूर्यष्टि भृङ्गारपालिका । शृंगार प्रकरा शृङ्गास्वच्छा शय्योपकारिका ॥ ७० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पार्षदा सुसखी सेव्या श्रीवृन्दावन पालिका। निकुंजभृत्कुंज पुंजा गुंजा भरण भूषिता ॥ ७१ ॥ निकुंज वासिनी प्रोष्या गोवर्द्धन तटी भवा। विशाखा ललिता रामा नीरुजा मधुमाधवी ॥ ७२ ॥ एकानैक सखी शुक्ला सखी मध्या महामना:। श्रुति रूपा ऋषि रूपा मैथिला: कौशला: स्त्रियः ॥ ७३ ॥ अयोध्यापुर वासिन्यां यज्ञ सीता: पुलिंदका:। रमा वैकुण्ठ वासिन्य: श्वेतद्वीप सखी जना: ॥ ७४ ॥ ऊर्ध्व वैकुण्ठ वासिन्यां दिव्याजित पदाश्रिता:।श्रीलोकाचल वासिन्य: श्रीसख्य: सागरोद्भवा: ॥७५॥ दिव्या अदिव्या दिव्यांगा व्याप्तास्त्रिगुण वृत्तय:। भूमे गोप्यो देवनार्योलता औषधि वीरुध: ॥७६॥ जालंधर्य्य: सिंधु सुता: पृथुबर्हिष्मती भवा:। दिव्यांवरा अप्सरस: सौतलानागकन्यका: ॥७७॥ परंधाम परंब्रह्म पौरुषा प्रकृति: परा। तटस्था गुणभूर्गीता गुणा गुणमयीगुणा ॥ ७८ ॥ चिद्धना सदसन्मालाद्दष्टिर्दृश्या गुणाकरी। महत्तत्त्व महं कारो मनो बुद्धि: प्रचेनना ॥७९। चेतोवृत्ति: स्वांतरात्मा चतुर्थी चतुरक्षरा। चतुर्व्यूहा चतुर्मूर्तिर्व्योम वायु रदो जलम् ॥ ८० ॥ महीशब्दो रसो गन्ध: स्पर्शो रूप मनेकधा। कर्मेंद्रियं कर्ममयी ज्ञानंज्ञानेंद्रियं द्विधा ॥ ८१ ॥ त्रिधाधि भूत मध्यात्म मधिदैव मधिस्थितम्। ज्ञान शक्ति: क्रिया शक्ति: सर्वे देवाधिदेवता ॥ ८२ ॥ तत्त्वसंधा विरारामूर्तिर्धारणा धारणा मयी। श्रुति: स्मृतिर्वेद मूर्ति: संहिता गर्गसंहिता ॥ ८३ ॥ पराशरी सैव सृष्टि: पारहंसी विधातृका। याज्ञवल्की भागवता श्रीमद्भागवतार्चिता ॥ ८४ ॥ रामायण मयी रम्या पुराण पुरुषप्रिया। पुराण मूर्त्ति: पुराणांगा शास्त्र मूर्तिर्महोन्नता ॥ ८५ ॥ मनीषाधिषणा बुद्धिर्वाणी धी: शेमुषीमति:। गायत्री वेद सावित्री ब्राह्मणी ब्रह्म लक्षणा ॥ ८६ ॥ दुर्गा पूर्णा सती सत्या पार्वतीचंडिकांबिका। आर्या दाक्षायणी दात्री दक्ष यज्ञ विघातिनी ॥ ८७ ॥ पुलोमजाशचीन्द्राणी वेदीदेव वरार्पिता। वयुना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धारिणी धन्या वायवी वायुवेगगा ॥ ८८ ॥ यमानुजा संयमनी संज्ञाच्छाया स्फुरद्द्युतिः। रत्नदेवी रत्नवृन्दा तारा तरणि मण्डला ॥ ८९ ॥ रुचिः शांतिः क्षमा शोभा दया दक्षा द्युतिस्त्रपा। सलतुष्टिर्विभा पुष्टिः सन्तुष्टिः पुष्टभावना ॥ ९० ॥ चतुर्भुजा चारुनेत्राद्विभुजाष्टभुजा वला। शंख हस्ता पद्म हस्ता चक्र हस्ता गदाधरा ॥ ९१ ॥ निषंग धारिणी चर्म खड्ग पाणिर्धनुर्द्धरा। धनुष्टंकारिणी योद्धी दैत्योद्भट विनाशिनी ॥ ९२ ॥ रथस्था गरुडारूढा श्रीकृष्ण हृदयस्थिता। वंशीधरा कृष्णवेषा स्रग्विणी वनमालिनी ॥ ९३ ॥ किरीट धारिणी याना मन्द मन्द गतिर्गतिः। चन्द्रकोटि प्रतीकाशा तन्वी कोमल विग्रहा ॥ ९४ ॥ भैष्मी भीष्म सुता भीमा रुक्मिणी रुक्म रूपिणी। सत्यभामा जांववती सत्या भद्रा सुदक्षिणा ॥ ९५ ॥ मित्र वृन्दा सखी वृन्दा वृन्दारण्य ध्वजोर्ध्वगा। शृंगार कारिणी शृंगा शृंगभूः शृंगदा खगा ॥९६॥ तितिक्षे च्छास्मृतिः स्पर्धा स्पृहा श्रद्धास्व निर्वृतिः। ईशा तृष्णाभिदाप्रीतिर्हिंसायाञ्चा क्लमाकृषिः ॥ ९७ ॥ आशा निद्रा योग निद्रा योगिनी योगदा युगा। निष्ठा प्रतिष्ठा शमितिः सत्व प्रकृति रुत्तमा ॥ ९८ ॥ तमः प्रकृति दुर्मर्षी रजः प्रकृति रानतिः। क्रियाऽक्रिया कृतिर्ग्लानिः सात्विक्याध्यात्मिकी वृषा ॥ ९९ ॥ सेवा शिखा मणिर्वृद्धि राहूतिः पिंगलाद्भवा। वाग भाषा नाग भूषा नागरी नगरी नगा ॥ १०० ॥ नौर् नौका भवनौर्भाव्या भवसागर सेतुका। मनो मयी दारु मयी सैकती सिकता मयी ॥ १०१ ॥ लेख्या लेप्या मणिमयी प्रतिहेम विनिर्मिता। शैली शैलभवा शीला शीकराभा चला चला ॥ १०२ ॥ अस्थिता स्वस्थिता तूली वैदिकी तांत्रिकी विधिः। संध्या संध्या भ्रवसना वेद संधिः सुधामयी ॥ १०३ ॥ सायंतनी शिखा वेध्या सूक्ष्मा जीव कलाकृतिः। आत्म भूता भाविताऽरावी प्रह्वो कमल कर्णिका ॥ १०४ ॥ नीराजनी महा विद्या

Dr: Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कंदली कार्य साधनी। पूजा प्रतिष्ठा विपुला पुनंती पार लौकिकी ॥ १०५ ॥ शुक्ल शुक्तिर्मौक्तिका च प्रतीतिः परमेश्वरी। विराजोष्णिक् विराड् वेणी वेणुका वेणु नादिनी ॥ १०६ ॥ आवर्त्तिनी वार्तिकदावार्त्ता वृत्तिर्विमानगा। रासाढ्या रासिनी रासी रास मंडल वर्तिनी ॥ १०७ ॥ गोप गोपेश्वरी गोपी गोपी गोपाल वंदिता। गोचारिणी गोपनदी गोपानंद प्रदायिनी ॥१०८॥ पशव्यदा गोपसेव्या कोटिशोगोगणावृता। गोपानुगा गोपवती गोविंद पद पादुका ॥ १०९ ॥ वृषभानु सुता राधा श्रीकृष्ण वश कारिणी। कृष्णप्राणाधिका शश्वद्रसिका रसिकेश्वरी ॥ ११० ॥ अवटोदा ताम्र पर्णीकृत माला विहायसी। कृष्णा वेणी भीमरथी तापी रेवा महा पगा ॥ १११ ॥ वैयासकी च कावेरी तुंगभद्रा सरस्वती। चंद्रभागा वेत्रवती ऋषिकुल्या ककुद्मिनी ॥ ११२ ॥ गौतमी कौशिकी सिंधुर्बाणगंगाति सिद्धिदा। गोदावरी रत्न माला गंगा मंदाकिनी बला ॥ ११३ ॥ स्वर्णदी जाह्नवी वेला वैष्णवी मंगलालया। बाला विष्णुपदी प्रोक्ता सिंधुसागर संगता ॥ ११४ ॥ गंगासागर शोभाढ्या सामुद्री रत्न दाधुनी। भागीरथी स्वर्धुनी भूः श्रीवामन पदच्युता ॥ ११५ ॥ लक्ष्मीरमा रामणीया भार्गवी विष्णु वल्लभा। सीतार्चिर्जानकी माता कलंकरहिता कला ॥ ११६ ॥ कृष्ण पादाब्ज संभूता सर्वात्रि पथ गामिनी। धरा विश्वंभरानंता भूमिर्धात्री क्षमामयी ॥ ११७ ॥ स्थिराधरित्री धरणी उर्वीशेष फणास्थिता। अयोध्याराघवपुरी कौशिकी रघुवंशजा ॥ ११८ ॥ मथुरा माथुरी पंथा यादवी ध्रुव पूजिता। मया युर्विल्वनीलाद्वागङ्गाद्वार विनिर्गता ॥ ११९ ॥ कुशावर्त मयी ध्रौव्या ध्रुव मंडल मध्यगा। काशी शिवपुरी शेषा विंध्या वाराणसी शिवा ॥ १२० ॥ अवंतिका देवपुरी प्रोज्ज्वलोज्जयिनी जिता। द्वारावती द्वारकामा कुश भूता कुशस्थली ॥ १२१ ॥ महापुरी सप्तपुरी नन्दिग्रामस्थलस्थिता। शाल-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्राम शिलादित्या शंभलग्राम मध्यगा ॥ १२२ ॥ वंश गोपालिनी क्षिप्रा हरिमंदिर वर्तिनी । बर्हिष्मती हस्तिपुरी शक्रप्रस्थ निवासिनी ॥१२३॥ दाडिमी सैंधवी जंबूः पौष्करी पुष्कर प्रसूः । उत्पलावर्त गमना नैमिष्य निमिषावृता ॥ १२४ ॥ कुरु जाङ्गलभूः काली हैम वत्यार्बुदी बुधा । शूकरक्षेत्र विदिता श्वेतवाराह धारिता ॥१२५॥ सर्व तीर्थमयी तीर्था तीर्थानां तीर्थ कारिणी । हारिणी सर्व दोषाणां दायिनी सर्व सम्पदाम् ॥ १२६ ॥ वर्द्धिनी तेजसां साक्षाद्गर्भ वासनि कृंतिनी । गोलोकधाम धनिनी निकुंज निज मंजरी ॥ १२७ ॥ सर्वोत्तमासर्वपुण्या सर्व सौंदर्य्य श्रृंखला । सर्वतीर्थो परिगता सर्व तीर्थाधिदेवता ॥ १२८ ॥ नाम्नांसहस्रं कालिन्द्या: कीर्तिदं कामदं परम् । महापाप हरम्पुण्य मायुर्वर्द्धन मुत्तमम् ॥ १२९ ॥ एक वारं पठेद्रात्रौ चौरेभ्यो न भयं भवेत् । द्विवारं प्रपठेन्मार्गे दस्युभ्यो नभ यं क्वचित् ॥ १३० ॥ द्वितीयांतु समारभ्य पठेत्पूर्णावधिं द्विजः । दशवार मिदं भक्त्या ध्यात्वा देवीं कलिंदजाम् ॥ १३१ ॥ रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बंधनात् । गुर्विणीजनयेत्पुत्रं विद्यार्थी पंडितो भवेत् ॥ १३२ ॥ मोहनंस्तंभनं शश्वद्वशीकरण मेव च । उच्चाटनं घातनं च शोषणं दीपनं तथा ॥ १३३ ॥ उन्मादनं तापनं च निधि दर्शन मेव च । यद्यद्वाञ्छति चित्तेन तत्तत्प्रोति मानवः ॥ १३४ ॥ ब्राह्मणो ब्रह्म वर्चस्वी राजन्यो जगती पतिः । वैश्यो निधिपतिर्भूयाच्छूद्रः श्रुत्वातु निर्मलः ॥१३५। पूजाकालेतुयोनित्यं पठते भक्ति भावतः । लिप्यते न स पापेन पद्म पत्र मिवांभसा ॥ १३६ ॥ शतवारं पठन्नित्यं वर्षावधिमतः परम् । पटलं पद्धतिं कृत्वास्तवं च कवचं तथा ॥ १३७ ॥ सप्तद्वीप मही राज्यं प्राप्नुयान्नात्रसंशयः ॥१३८॥ निष्कारणं पठेद्यस्तु यमुना भक्तिसंयुतः । त्रैवर्ग्य मेत्य सुकृती जीवन्मुक्तो भवेदिह ॥ १३९ ॥ निकुंजलीला ललितं मनोहरं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलिन्दजा कूललता कदम्बकम्। वृन्दावनोन्मत्त मिलिन्द शब्दितं व्रजेत्सगोलोक मिदं पठेच्चयः॥ १४०॥

इति श्रीमद्गर्ग संहितायां श्रीमाधुर्य खंडे श्रीसौभरि मान्धातृ संवादे यमुना सहस्र नाम सम्पूर्णं॥

नारदजी बोले कि इस पंचाङ्ग को धारण करि राजा मांधाता श्रीहरि धाम को गया। अब आगे कृष्ण के अन्य चरित्र सुनो।

एक दिन भांडीर वन में कृष्ण बलदेव ग्वाल वालों सहित चड्ढी का खेल, खेल रहे थे। तहाँ कंस का पठाया हुआ प्रलम्बासुर एक ग्वाल वेष धरि इन सब के साथ खेलने लगा और बलदेवजी को कंधा पर चढ़ाय लै चला। तब बलदेवजी ने उसका छल जानि एक कठिन मुक्का मारि उस असुर को प्राणहीन कर दिया। उसकी ज्योति निकसि बलदेवजी में समाय गई और सुरगणों ने आकाश से पुष्प-वर्षा करी।

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि वह प्रलम्बासुर पूर्व जन्म में कौन था, जिसने बलदेवजी के हाथ से मरने पर मुक्ति पाई।

तब नारदजी बोले कि कुवेर ने फल फूलों से सुशोभित श्रीहरि पूजा निमित्त एक उपवन बनवाया था और कहा था कि जो इसके फूल फल हरि-पूजन के अतिरिक्त तोड़ेगा सो निश्चय असुर हो जायगा। एक दिन हूहू का पुत्र विजय नाम गंधर्व हरिभक्त तहाँ आया और अनजाने उसके फूल तोड़ लिये। सो शाप-वश तुरन्त असुर हो गया। पीछे शाप का कारण सुनि शोकातुर कुवेर की शरण गया और शाप मोक्ष का उपाय पूँछा। तब कुवेर हँसकर बोले कि तुम हरिदास हो,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस कारण द्वापर में जब श्रीहरि असुरों के संहार हेतु बलदेव रूप धारण करेंगे तब उनके हाथ तुम्हारी मोक्ष होयगी। सोई गंधर्व प्रलम्बासुर नाम असुर हुआ और बलदेवजी ने उसका शापोद्धार किया।

फिर एक दिन ग्वाल बालों सहित श्रीकृष्ण एक सघन वन में गये, तहाँ बड़ी भयानक दावाग्नि लगी और वन को चारों ओर से घेर लिया। सब ग्वाल बाल अति व्याकुल हो कृष्ण की शरण गये। कृष्ण ने सब को नयन मूँदने की आज्ञा दी और उनके नयन मूँदने पर कृष्ण ने उस अग्नि को जैसे बालक शीतल दुग्ध पान कर जाता है पान कर लिया और ग्वाल बालों की रक्षा करि उनको साथ लिये यमुना तट पर आये। तहाँ सब क्षुधा से विकल हो गये। तब कृष्ण ने कहा कि यहाँ से समीप ही मथुरा में द्विजगण अंगिरस यज्ञ कर रहे हैं उनसे भोजन माँग लाओ। यह सुनि ग्वाल बालों ने तहाँ जाय द्विजों से कहा कि कृष्ण बलदेव यहाँ आये हैं और क्षुधा से पीड़ित हो कुछ भोजन लाने को हमें पठाया है। किन्तु द्विजगणों ने उनकी याचना पर कुछ ध्यान न दिया और सब ग्वाल रीते ही लौटि आये। तब कृष्ण ने फिर सबको द्विज पत्नियों के पास भोजन की याचना हेतु पठाया, तिनके पास जाय सबने भोजन की याचना करी। तब उन यज्ञ पत्नियों ने आनन्दपूर्वक अपने पतियों की कान न करि सब सामिग्री थारों में भरि उनके साथ कृष्ण भगवान् के ढिग आय प्रेम सहित सब थाल आगे धर दिये और कृष्ण को घेरि सब दर्शन करने लगी। ग्वालों सहित कृष्ण बलदेव ने भोजन करि उन स्त्रियों से कहा कि अब निस्संदेह लौट जाओ तुम्हारे पति तुम से कुछ न कहेंगे। और तुम्हारी भक्ति के प्रभाव से वे भी स्वर्ग को जायँगे। यह सुनि सब स्त्रियाँ लौट गईं। तब उनके पति चौबों की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञान दृष्टि खुल गई और अपने को धिक्कारने लगे कि जिन भगवान् को प्रसन्न करने के लिये हम यज्ञ कर रहे हैं, उन्हीं भगवान् कृष्ण को हमने अज्ञान वश न पहिचाना। ऐसा शोक करते हुये अपनी पत्नियों की प्रशंसा करने लगे। इधर कृष्ण सब ग्वाल बालों सहित अपने भवन को लौटि आये। फिर एक दिन नंदराय एकादशी व्रत करि द्वादशी किंचित होने से कुछ रात्रि रहे यमुना स्नान करने गये। तहाँ जल में पैठते ही वरुण के दूत उनको पकड़ि लै गये और वरुण को दे दिया इधर नंदराय यमुना में बूड़ गये ऐसा कोलाहल मच गया। तव कृष्ण सब को शांत्वना दै यमुना में कूद पड़े. जिनके तेज से जल में अग्नि सी लग गई और कृष्ण वरुणलोक में पहुँचे। तब वरुण ने षोड़श प्रकार पूजन करि स्तुति करी कि हे परिपूर्ण स्वामी! आप सकल ब्रह्मांडों के पति हैं। चार व्यूह आप के आधीन है। शिव विरञ्च से वंदित आप को वारम्वार दण्डवत् है। मेरे दूत अज्ञान वश आप के पिता को लै आये सो अपराध क्षमा करिये। इसी हेतु आप के दर्शन भये सो योग्य ही हुआ। इस भाँति स्तुति करि, नंदराय का पूजन करि, कृष्ण सहित विदा किया। तव नंदराय को लिये कृष्ण अपने भवन को आये।

फिर एक दिन सब ग्वाल बाल बोले कि हे कृष्ण! आप के वैकुण्ठ लोक देखने की हमारी इच्छा है। तब कृष्ण ने सब को दृग मूँदने की आज्ञा दी और सब ने नयन मूँद लिये। देखा कि वैकुंठ में चार भुजा धारण किये कृष्ण रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजमान हैं और शिव विरञ्च सहित देवगण ठाढ़े स्तुति कर रहे हैं। चौकीदार बोले कि यह सब कहाँ के मूढ़ गँवार हैं जो प्रणाम तक नहीं करते और सब से प्रणाम करने को कहा। तब सब ने कष्ट से जैसे पींजरा में पक्षी बन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो और आज्ञानुसार कार्य्य करै, तैसे प्रणाम किया और मन में कहने लगे कि हम यहाँ कहाँ आय फँसे। यहाँ तो न हमारे कृष्ण दीखैं न यमुना न गोवर्द्धन न वृन्दावन हम को यह वैकुंठ नहीं सुहाता। तब व्याकुल हो नयन खोल दिये और कृष्ण को अपने समीप देखि हर्षित भये।

फिर एक दिन नंदराय सब ब्रज वासियों सहित अम्बिका वन में गये जहाँ भद्रकाली और पशुपति का पूजन हुआ। रात्रि में एक सर्प ने आय नंदराय का चरण पकड़ लिया। नंदराय व्याकुल हो कृष्ण-कृष्ण पुकारने लगे। तब दीपक ले देखा कि एक सर्प नन्दजी के पग में लपटा हुआ है। यह देखि कृष्ण ने चरण प्रहार किया। सो सर्प नन्दजी का चरण छोड़ि एक दिव्य विद्याधर का रूप धारण करि स्तुति प्रणाम करि बोला कि मैं एक समय अष्टावक्र के टेढ़े अङ्गों को देखि हँसा था, जिनके शाप से सर्प योनि पाई। अब आप के चरण स्पर्श्य से इस शाप से मुक्त हो विष्णुलोक को जाता हूँ। यह कहि विष्णुलोक चला गया। और नन्दजी सब को लै अपने धाम को आये।

फिर एक दिन कृष्ण बलदेव सहित आँख मिचौली खेल खेलने लगे। तहाँ कंस से प्रेरित व्योमासुर बालक रूप धरि साथ खेलने लगा और एक-एक बालक करि के बहुत से बालकन को पर्वत की कन्दरा में धरि आया और गुफा के मुख पर पत्थर धर दिया। तब बालकन को कम होते देखि उसको असुर जानि कृष्ण ने उस बालक रूप व्योमासुर को उठाय भूमि पर पटक दिया। सो असुर प्राणहीन हो गया और उसके अंग से एक ज्योति निकसि कृष्ण में समाय गई। फिर कृष्ण ने सब बालकों को गुफा से बाहर निकासा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा बहुलाश्व के व्योमासुर के पूर्व जन्म और मुक्त होने का वृत्तान्त पूछने पर नारदजी बोले कि काशी के राजा भीमरथ जो बड़ा धर्मात्मा था और जिसने बहुत यज्ञ दान किये थे अपने पुत्र को राज्य-कार्य सौंपि मलयाचल पर जाय घोर तप करने लगा। एक समय तहाँ शिष्यों सहित पुलस्त्य मुनि का आगमन हुआ। राजा ने तप के मद में उनको प्रणाम नहीं किया। तब मुनि ने क्रोधित हो शाप दिया कि दैत्य हो जाउ। पुनि राजा के विनती करने पर मुनि बोले कि त्रेतायुग में जब श्रीहरि अवतार धारण करैंगे तब तुमको मोक्ष देंगे। सोई राजा व्योमासुर दैत्य हो कृष्ण से मारे जाने पर मुक्त हुआ।

फिर एक दिन व्रज में वृषभ रूप धरि अरिष्ट नाम बलवान् दैत्य आया और चरणों से भूमि खोदने लगा। जिससे बड़ी धूलि उठी फिर गरजने लगा। तब कृष्ण ने उसके सींग पकड़ि पीछे ढकेला और पूँछ पकड़ि भूमि पर पटक दिया और घोर युद्ध होने पीछे कृष्ण ने उसका बध किया। तब वृषभासुर विप्र रूप हो कृष्ण की वंदना करने लगा और बोला कि हे भगवन्! मैं बृहस्पति का शिष्य हूँ। एक दिन गुरू के सामने पाउँ फैलाय बैठ गया। तब गुरुदेव ने शाप दिया कि बैल समान बुद्धि हीन तू बैल होजा। सो मैं तुरन्त वृषभ हो गया और असुरों के संग-प्रभाव से असुर हो गया। अब आपकी कृपा से मुक्ति पाई। यह कहि और वन्दना करि हरि धाम को चला गया।

इति श्रीगर्गसंहिता अन्तर्गत बाँके पिया अनुवादित
श्रीमाधुर्य्य खण्ड संपूर्ण शुभ मस्तु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्रीमथुरा खण्ड प्रारम्भः

दोहा—सुमिरण करि देवकी सुत, वासुदेव भगवन्त ॥
वर्णों मथुरा खण्ड यह, हरि गुण चरित अनन्त ॥

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि कृष्ण भगवान् ने मथुरा में कौन-कौन चरित्र किये, सो कृपा करि वर्णन करिये।

तब नारदजी बोले कि हरि प्रेरणा से हम एक दिन कंस की सभा में गये, तहाँ कंस इन्द्र समान सिंहासन पर बैठा था और संपूर्ण विभव से सभा पूर्ण थी। हमको देखि कंस ने आदर सहित पूजन करि सिंहासन पर बैठारि समाचार पूछा। तब मैंने कहा कि हे कंस! तुम किस स्वप्नावस्था में बैठे हो? तुम्हारे काल कृष्ण बलदेव, जिनको प्रकट होने पर वसुदेव तुम्हारे भय से रक्षा हेतु नन्दराय को सौंप आये हैं। सो दिन-दिन बढ़ रहे हैं और तुम्हारे पठाये भये दैत्यों का नाश कर रहे हैं। कंस यह सुनि और खड्ग ले वसुदेव देवकी के वध करने को उठा। तब हम ने फिर समुझाया कि इनके वध से कोई प्रयोजन सिद्ध न होगा। वरन् लोक में अपकीर्ति होगी, काल के निवारण का उपाय करो। यह कहि हम तहाँ से चले आये। तब कंस ने प्रथम देवकी वसुदेव को कठिन कारागार में भेज दिया फिर मंत्रियों से निश्चय करि शल, तोशल, कूट, मुष्टक और चाँडूर को बुलवाय आज्ञा दी कि चतुर्दशी को धनुषयज्ञ और अमावस्या को मल्लयुद्ध होगा। सो अखाड़े के द्वार पर कुवलया पीड़ हस्ती को खड़ा करना जो कृष्ण बलदेव के आने पर उनका वध कर दे और यदि तहाँ से किसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारण वच जावैं तव तुम लोग उनका वध करना। यह समुझाय विदा किया। फिर मंत्री अक्रूर को वुलाय कहा हमारे हित के अर्थ तुम गोकुल में जाय जिस भाँति हो नन्द और उपनन्द, कृष्ण वलदेव सहित सब गोपन को धनुषयज्ञ देखने के हेतु रंगभूमि में लिवाय लाओ। यह कार्य्य तुम ही पर निर्भर है, तुम मेरे विश्वासपात्र हो और सव मंत्रियों में बुद्धिमान भी हो। यहाँ आने पर नन्द उपनन्द आदि गोप गणों का कृष्ण वलदेव सहित संहार करवाय देऊँगा। फिर शूर वंश के यादवों और उग्रसेन पिता का भी नाश करि निष्कंटक राज्य करूँगा। क्योंकि जरासंध, कालयवन वाणासुर, नरकासुर आदि सब हमारे बाँधव और मित्र ही हैं। फिर कुवेर को एक कन्दरा में वंद करि उसका सब धन लै अटल राज्य करूँगा। अक्रूरजी बोले कि हे नृप कंस! यह सब तुम्हारा ज्ञान और निश्चय विचार मिथ्या है। श्रीहरि जैसा चाहैंगे तैसा ही होगा। तव कंस ने क्रोधित हो कहा कि तुम आलसी हो, यह तुम्हारे वाक्य रोगी, आलसी और निर्वल मनुष्यों के से हैं। तुम मेरी आज्ञा का तुरन्त पालन करो। यह कहि कंस भवन में चला गया और केशी दैत्य को बुलवाय और समुझाय कृष्ण के वध हेतु वृन्दावन में पठाया। सो एक अति भयानक अश्व रूप में जहाँ ग्वाल वालों सहित वृन्दावन में कृष्ण वलदेव खेल रहे थे आया और खुरों से पृथ्वी खोदि बड़ा भयंकर शब्द करने लगा और आगे के दोनों पाँव उठाय कृष्ण की ओर दौड़ा। तब कृष्ण ने उसके पाँव पकड़ि पटक दिया वह फिर उठकर कृष्ण से लड़ने लगा। महा युद्ध होने पीछे जब केशी मुख बाय दौड़ा तव कृष्ण ने उसके मुख में हाथ चलाय उसकी जिह्वा पकड़ि अपना हाथ इतना विस्तार किया कि उसकी स्वाँस का निरोध होकर प्राण निकसि गये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब उसे कृष्ण ने धरती पर पटक दिया, वह एक दिव्य स्वरूप हो कृष्ण की स्तुति करि बोला कि मैं इन्द्र का कुमुद नाम अनुचर था। एक समय इन्द्र ने जब वृत्रासुर वध करने पर हत्या दोष निवारणार्थ अश्वमेध यज्ञ किया तब मैंने ईर्षा वश उसका यज्ञ-अश्व चुराय लिया और अतल लोक में चला गया। तब इन्द्र ने मरुत गणों द्वारा अश्व सहित मुझको पकड़वाय मँगाया और मेरे उस कार्य के लिये शाप दिया कि तू दैत्य हो अश्व रूप से मृत्यु लोक में विचर। मेरे प्रार्थना करने पर कहा कि छै मन्वन्तर पीछे त्रेतायुग में कृष्ण भगवान् जब अवतार धारण करैंगे तब उनके हाथ तेरी मोक्ष होगी। सो आपने कृपा करि मेरा उद्धार किया। अब मैं विष्णु लोक जाता हूँ। यह कहि वह चला गया। कंस की आज्ञा से अक्रूरजी रथ साजि व्रज को चले और मार्ग में विचारने लगे कि मेरी कौन सुकृति का फल उदय हुआ है जो आज कृष्ण बलदेव के दर्शन होयँगे जिसके लिये योगीजन वर्षों तप करते हैं। आज मेरा बड़ा भाग्य है कि कृष्ण बलदेव के उन चरणों को देखूंगा जिनको मुनिजन समाधि द्वारा यत्न से हृदय में धारण करते हैं। कृष्ण बलदेव जब चाचाजी कहि पुकारैंगे और प्रेम सहित उनका आलिङ्गन होयगा तब ब्रह्मानन्द का सुख भी तुच्छ जान पड़ैगा। जिस व्रज भूमि की रज के लिये ब्रह्मादिक तरसते हैं उस गउओं की खुरों से उड़ी भई रज को आज मेरा अंग स्पर्श्य करैगा। यह सब विचार करते हुये प्रेम में विह्वल अक्रूर व्रज गोकुल में पहुँचे। तब अन्त-र्यामी कृष्ण बलदेव उनको देखि प्रीति सहित उनके चरणों में लिपट गये और बड़े आदर से नन्द बाबा के ढिग लै गये। नंदजी ने उठकर आदर सन्मान से आतिथ्य पूजन करि मधुपर्क और भोजन कराया और फिर मित्र वसुदेवादि की कुशल पूछि आगमन का कारण पूछा। तब अक्रूरजी ने सब का समाचार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहि बसुदेव देवकी का कष्ट और कंस की क्रूर्ता एवं उत्पात का वर्णन करि रङ्ग भूमि और धनुष यज्ञ में सम्मिलित होने की कंस की आज्ञा कहि सुनाई। तब नन्दराय ने समस्त व्रज-वासियों, उपनन्द और षट वृषभानु आदि को बुलाय भेंट लै-लै यज्ञशाला में चलने को कहा और शकटों में दधि गोरस के माट धरि चलने की तयारी की। यह समाचार पाय राधिका मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ीं और समस्त गोपियाँ दामिनी गिरने से सूखे वृक्ष के समान मुर्झाय गईं और शोक से कातर हो गृह कार्य्य बिसराय रुदन करती हुई कृष्ण-कृष्ण पुकार-पुकार परस्पर कहने लगीं हा! दैव की विपरीत गति है। हम अपने जीवन प्राण कृष्ण बिना कैसेजीवित रहैंगी? हे विधना यदि तुझ को ऐसा ही दारुण दुख देना था तो हम को प्रथम ही क्यों उत्पन्न किया? अब प्राणनाथ का वियोग कैसे सहन करैंगी। हाय, अक्रूर कैसा क्रूर है जिस निर्दई को हम अबलान पर नेकु दया नहीं आती। हे वीर, अब हम सब का जीवन बिना प्राण प्यारे कृष्ण के दुर्लभ है। चलो यमुना में कुदि-कूदि अपने प्राण प्रीतमप्यारे पर निछावर कर दें। इस प्रकार अति विलाप करने लगीं। तब रात्रि में कृष्ण ने जाय राधा सहित सब को समु-झाया कि! हे प्यारी हम तुम एक प्राण द्वै देह हैं। हम दोनों में जो अन्तर मानता है सो मूर्ख यमपुर देखता है। न हम को तुम्हारे बिना चैन है और न तुम को हमारे बिना सुख। हे गोपियों, जिस प्रकार देह से छाई और सूर्य से धूप बिलग नहीं। इसी प्रकार हम तुम से न्यारे नहीं हैं। जैसे व्रज में हमने रास करि तुम्हारे मनोरथ पूर्ण किये हैं वह सब तैसा ही होता रहेगा। तुम सत्य करि जानो कि हम व्रज छोड़ि एक क्षण मात्र भी अन्त नहीं जाते। यह वियोग जो देख रही हो सो सब मन की गति है। इसकी चिन्ता छोड़ि मेरे में मन लगाये रहो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस प्रकार समुझाय कृष्ण नन्द भवन में लौट आये और प्रात होते ही कृष्ण बलदेव को रथ पर चढ़ाय और नन्दादि को साथ ले अक्रूर मथुरा को चले। मार्ग में फिर भगवत् माया से मोहित हो विचारने लगे कि हा! ऐसे कोमलाङ्ग सुकुमार बालकन को मैं वृथा लेने आया। इनको कंस बहुत कष्ट देगा। विधना ने मेरे भाग्य में यही कलंक लिखा था। यह कैसे उन सूर वीर मल्लों से लड़ सकते हैं। यह सोचते हुये कुछ दूर जाने पर यमुनातट एक उपवन में रथ ठहराय यमुना स्नान करने गये। जैसे ही यमुना में धमकर डुबकी लगाई तो कृष्ण बलदेव को यमुना भीतर देखि घबराय कर जब बाहर आये, तब कृष्ण बलदेव रथ पर बैठे दिखाई दिये। फिर डुबकी ली, फिर जल भीतर देखा, फिर बाहर आय रथ पर देखा। ऐसे कई बेर करने पर एक बेर कृष्ण बलदेव को जल भीतर देखा कि चार भुजा धारण किये शेष शय्या पर विराजमान हैं और देवताओं सहित ब्रह्मा, शिव संकादि स्तुति कर रहे हैं। फिर देखा कि गोवर्द्धन पर गोप बालकन साथ खेल रहे हैं, फिर देखा कि वृन्दावन में राधा सहित कोटि-कोटि गोपियों के मध्य रासकर रहे हैं। तब अक्रूर का सब भ्रम नाश हुआ और कृष्ण को परिपूर्णतम निश्चय किया और बाहर आय हाथ जोड़ि स्तुति करने लगे कि हे सकल अखण्डपति, परिपूर्णतम राधा पति कृष्ण! आप की लीला अलौकिक है। आप सदा व्रज-वृन्दावन में श्रीराधा सहित विहार करते हैं। हे त्रिभुवननाथ! सकल लोकपति मुझ अपने दास पर कृपा करिये। मैंने आप की महिमा अज्ञान वश नहीं जानी। मुझको दास जानि निज चरणों की भक्ति दीजिये और मेरे सर्व अङ्ग आप की सेवा में लगे रहैं। मेरी रसना पलछण आप के पावन नाम गोविंद कृष्ण इत्यादि रटती रहै। इस भाँति स्तुति करि रथ पर बैठि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मथुरा को चले। कुछ काल में जब एक मथुरा के उपवन में पहुँचे तब कृष्ण वलदेव बोले कि काकाजी! अब आप जाय खबर करैं हम समय पर सब के सहित रङ्ग भूमि में आवैंगे। अक्रूर बोले हे कृपानाथ! सब के सहित मेरे गृह को पवित्र करिये। तब कृष्ण हँसकर बोले कि कंस को ठिकाने करि, तुम्हारे गृह आवैंगे। अक्रूर ने जाय कंस को सब के आगमन का समाचार दिया और कंस से सत्कार पाय अपने भवन को गये। इधर नन्द बाबा से आज्ञा ले कृष्ण वलदेव ग्वाल बालों सहित नगर देखने चले। मथुरापुरी की शोभा अमरावती समान थी। यमुना की सोपान मणियों से जगमगाय रही थीं। बजार की प्रत्येक दुकान मोतियों की वन्दनमाल से सुसज्जित थी। द्वार-द्वार केला के खंभ गड़े थे। मणियों के चौक पूरि रहे थे। मार्ग में सुगंधित जल से छिड़काउ हो रहा था। घर-घर की स्त्रियों ने जब सुना कि कृष्ण वलदेव नगर बजार देखने आय रहे हैं तब आतुर हो अटारियों पर दौड़ीं। कोई भोजन छोड़ि चली, कोई गृह कार्य बिसारि दौड़ी, कोई जो शृंगार कर रही थी सो विना पूर्ण करे ही उठि दौड़ी, कोई बालक को पय पिवाये बिना ही दौड़ी, कोई-कोई मोखों झरोखों खिड़कियों अटारियों से देखने लगीं, कोई द्वारे पर आय देखने लगीं और कृष्ण वलदेव की माधुरी छवि अद्भुत शृङ्गार देखि मोहित हो परस्पर कहने लगीं कि धन्य हैं यशोदा और नन्द जिनकी कोख से कन्दर्प का दर्प नाश करनेहारे ऐसे पुत्र उत्पन्न भये और धन्य हैं व्रज की स्त्रियाँ जो अपने नेत्रों को इनके दर्शन से सफल करती हैं और धन्य हैं वे युवती जो इनके साथ रास विलास करि अपना जन्म सफल करतीं हैं। हे विधना, हम को व्रज में क्यों न उत्पन्न किया जो इनके साथ क्रीड़ा करतीं। इस प्रकार कृष्ण बलदेव ग्वाल बालों सहित बजार देख रहे थे और पुर की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्त्रियाँ मनोरथ कर रही थीं। इसी अन्तर में एक धोबी मिला जो कंस के कपड़े धोये धये लिये जाता था। कृष्ण बलदेव ने उससे कपड़े माँगे। तब वह क्रोधित हो बोला कि तुम्हारे पिता ने भी कभी ऐसे वस्त्र पहिरे थे जो तुम इनकी चाहना करते हो? यह वस्त्र राजा कंस के हैं, तुम गँवारों योग्य नहीं हैं। क्या तुम लोगों की मृत्यु आई है? कंस जो सुनेगा तो बिना प्राण लिये न रहेगा। यदि फिर ऐसी बात मुख से निकारोगे तो मार खाओगे। यह सुनि कृष्ण ने कोप करि उस धोबी का शीश काट डाला और ग्वाल बालों ने सब कपड़े लूट लिये। यह देखि धोबी के अनुचर भागे और ग्वाल बालों ने जो जिसके मन भाया वह कपड़ा निकारि-निकारि अंग से लपेट लिया। तहाँ पर एक दर्जी था जिसने सब के अंग के योग्य कपड़े सी-सी पहिराय दिये। कृष्ण को पीत रङ्ग के और बलदेव को नीले वस्त्र सी कर पहिराये। तब कृष्ण ने उसको धन लक्ष्मी से पूर्ण कर दिया और भक्ति भाव का वर दे विदा किया और आगे चल एक सुदामा नाम माली के भवन में गये। उसने भक्ति सहित सुन्दर सुगंधित माला बनाय सबन को पहिराई और पूजन किया। उसको भी भक्ति का वरदान दे आगे चले। तब एक कुबरी स्त्री मिली जो कंस के हेतु चन्दन लिये जाती थी, सो कृष्ण की छवि देखि मोहित हो गई और बड़े प्रेम से कृष्ण बलदेव सहित सब बालकों के अंग-अंग में चन्दन का लेपन किया और मनोहर तिलक लगाये। तब कृष्ण ने अपने चरण के अँगूठे से उसके चरण दबाय, द्वै अँगुरी चिबुक में लगाय और एक हाथ पीठ पर धरि एक ऐसा झिटका दिया जिससे उसका कूबर नष्ट होकर सूधे अंग वाली एक युवा परम सुन्दरी हो गई और कृष्ण का आँचल पकड़ि बोली कि अब कहाँ जाते हो?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे मन्दिर को पवित्र करो। यह देखि सब ग्वाल बाल ठट्ठा मारि हँस पड़े। तब कृष्ण बोले कि नगर देख कर और वहाँ का कार्य्य समाप्त कर के तेरे भवन में आवैंगे। यह कहि रंग भूमि पूछते भये धनुषयज्ञ में पहुँचे। तहाँ देखा कि एक विशाल शिवपिनाक जिसको परशुरामजी ने कंस को दिया था और जिसका पूजन वर्ष-वर्ष कंस किया करता था धरा है और पाँच सहस्र योद्धा उसकी रखवारी करते हैं। तब कृष्ण ने उसके समीप जाय उठाय लिया और श्रवण तक खींच कोदण्ड चढ़ाय द्वै टूक करि पृथ्वी पर डारि दिया। रक्षक लोग लड़ने को दौड़े। तिनको बलदेवजी ने अपने मूशल से वध करि डाला। जिससे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया। फिर तहाँ से कृष्ण बलदेव नन्द बाबा ढिग लौटि आये। दूसरे दिन सब पुरवासी और अनेक आये भये नृपति योधा और बाणासुर इत्यादि सूर वीर मल्ल युद्ध देखने को रंगभूमि में एकत्रित भये और यथा योग्य स्थान में मंचों पर बैठे। सब से ऊँचे मंच पर कंस एक रत्न सिंहासन पर बैठा और पुर की प्रतिष्ठित स्त्रियाँ परदे में मंचों पर बैठीं। नन्दरायजी, उपनन्द, पट वृषभानु और अन्य गोप सब अपने २ नियत मंचों पर जाय जाय बैठि गये। तिनके पीछे कृष्ण बलदेव भी अखाड़े के द्वार पर पहुँचे। तहाँ एक मस्त कुवलिया पीड़ नाम बड़े गज को देखि महावत से बोले कि कुंजर को हटाय मार्ग दे। तब महावत ने कंस की शिक्षानुसार गज को इन दोनों की ओर पेल दिया। उसके इस भाव को देखि कृष्ण ने गज की सूँड और बलदेव ने पूँछ पकड़ि अपनी-अपनी ओर खींचना आरंभ किया। गज के सप्त महावतों ने अंकुश से कुवलिया पीड़ को ताड़ना दी सो घोर शब्द करि अपने दन्त से प्रहार करने लगा। तब कृष्ण ने उसके दोनों दन्त उखाड़ लिये और सूँड़ पकड़ि घुमाय भूमि पर इतनी जोर से पटका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि प्राण निकसि गये और उसके प्राण कृष्ण चरणों में समाय गये। तदन्तर सातों महावतों को यमपुरी भेजि अखाड़े के भीतर आये। तहाँ मुष्टकादि मल्लों ने कहा कि हम से मल्ल युद्ध करो। तब कृष्ण बलदेव बोले कि हम बालक और तुम बड़े-बड़े मल्ल हमारा तुम्हारा युद्ध अनुचित और अनीति है। मल्लों ने उत्तर दिया कि तुम्हारा रजक और हस्ती का मारना पराकर्म पूर्ण है बालक का कार्य्य नहीं। हम से युद्ध करो। तब मुष्टक से कृष्ण और चाणूर से बलदेव युद्ध करने लगे। कृष्ण बलदेव रंग भूमि में बैठे भये स्त्री पुरुषों को यथा भाव दीख पड़ते थे। भूप लोगों को पृथ्वी पति दीखे, वीरों को महावीर, नन्दराय आदि गोप गणों को बालक रूप, बालकों को मित्र रूप, ऋषि मुनियों को सर्व विश्वाधार, स्त्रियों को कामदेव के भी मन के मथने हारे, ब्राह्मणों को ब्रह्म स्वरूप और कंस को काल दीखने लगे। कृष्ण बलदेव ने सब मल्लों से अनेक भाँति मल्ल युद्ध करि उनका संहार कर डाला। तब कंस अपने मंच से सब योद्धाओं को पुकार-पुकार कहने लगा कि इनको नगर से निकारो। नन्दादि को संहार करो। वसुदेव, देवकी और उग्रसेन का तुरन्त वध करो और सब शौर वंश का नाश कर देउ। तब कृष्ण एक छलांग मारि कंस के मंच पर पहुँचे और घोर युद्ध करि कंस को पटक दिया। सिंहासन का पाया टूटने से कंस नीचे आय गिरा और कृष्ण उसकी छाती पर कूद पड़े और बलदेव ने भी छाती पर चढ़ि दबाय लिया। जिससे कंस का प्राण पखेरू निकल गया और प्रति क्षण कृष्ण का वैर भाव से ध्यान रहने के कारण सायुज्य मुक्ति पाई। कृष्ण बलदेव ने कंस की चोटी पकड़ि उसको घसीटते भये यमुना तट पर लाय डार दिया। फिर कंस के सृष्टि, सुनामा, कंक, सुहु, राष्ट्रपाल, न्यग्रोध, शंकु और तुष्टि नाम वाले आठ भ्राताओं को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो लड़ने आये थे युद्ध करि मार डाला और कंस की रुदन करती भई स्त्रियों को शांत्वना दै कंस का क्रिया कर्म करवाय तिलाञ्जुली दी। कंस की मृत्यु सुनि सब देवगणों ने हर्षित हो पुष्प वर्षा करी और दुंदुभी बजाई फिर वंदीगृह में आय वसुदेव, देवकी और उग्रसेन के निगड़ कटवाय मुक्त किया। फिर उग्रसेन को राज्य तिलक दै कौरवों को अर्ध राज्य दिवाय दिया और कंस के भय से भागे भये यदुवंशियों एवं शौरवंशियों को बुलवाय मथुरा में फिर बसाया। नन्दराय आदि को प्रेम सहित समुझाय व्रज को विदा किया। तदन्तर एक दिन कुब्जा के भवन में गये। तब कुब्जा ने अति प्रेम से अपने रमणीक स्थान में पधराया। आठ दिवस तिसके गृह वास करि उसके मनोरथ पूर्ण किये।

यह सब अघ नाशन हारी मथुरा की लीला कहि नारदजी बोले कि अब क्या सुना चाहते हो? तब हाथ जोड़ि नृप बहुलाश्व ने कहा कि रजक इत्यादि के पूर्व जन्म की सुकृति श्रवण करने की इच्छा है।

नारदजी बोले कि त्रेतायुग के राम राज्य में यह एक रजक था। उसकी स्त्री एक दिन अपने पिता के घर सब रात्रि बिताय प्रात होने पर घर आई। तब उसके पति ने कहा कि मैं रामचन्द्रजी नहीं हूँ जिनने अपनी स्त्री सीता को रावण के घर रहने पर भी स्वीकार करि अपने भवन में रख लिया। यह कहि स्त्री को गृह से निकार दिया। यह समाचार पाय श्रीरामचन्द्र ने लक्ष्मण भ्राता द्वारा सीताजी को वन में पठाय परित्याग कर दिया। सोई धोबी यह रजक था जिसका कृष्ण ने उद्धार किया। क्योंकि उसने श्रीसीताजी को मिथ्या कलंक लगाया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिर नारदजी बोले कि मिथुलापुर में जब श्रीराम विवाहने गये थे तब इस दर्जी ने बागा इत्यादि वस्त्र सीकर दिये थे और अपने हाथ से चारों भाइयों को फिर वस्त्र पहिराने का मनोरथ किया था और उनको वस्त्र धारण किये देखि प्रेम में मग्न हो गया था तिस ही ने फिर कृष्ण बलदेव इत्यादि को वस्त्र सीकर पहिराये। इस कारण कृष्ण ने उसका मनोरथ पूर्ण करि भक्ति का वर दिया।

फिर राजा बहुलाश्व ने पूछा कि सुदामा माली ने कौन उत्तम कर्म किया था जिसके गृह कृष्ण ने जाय उसका उद्धार किया।

नारदजी बोले कि कुवेर के चैत्ररथ नाम बगीचे में एक हरि भक्त वटुकहेम नाम माली था जो प्रति दिन श्रीहरि की भक्ति हेतु शिवजी पर तीन सहस्र कमल पुष्प चढ़ाता था। एक दिन प्रसन्न हो शिवजी ने वर माँगने को कहा। तब उसने यह वर माँगा कि परिपूर्णतम श्रीहरि मेरे गृह पधारें और मैं उनका पूजन करूँ। तब श्रीशंभुजी ने उसको सोई वर प्रदान किया और इसी वर से सुदामा नाम माली मथुरा में उत्पन्न हुआ और कृष्ण के उसके गृह जाने पर उसने प्रेम से पूजन किया और कृष्ण ने उसको जन्म-जन्म की भक्ति का वर दिया।

फिर राजा ने पूछा कि कुब्जा कौन थी ?

नारदजी बोले कि त्रेता में जब श्रीराम लक्ष्मणजी बन को गये थे तब पंचवटी में रावण की भगनी सूर्पनषा ने श्रीराम रूप पर मोहित हो विवाह की याचना की थी और लक्ष्मणजी ने क्रोधित हो उसकी नाक काटि विरूप कर दिया था। तब सूर्प-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नषा ने रावण से आज्ञा ले पुष्कर में जाय श्रीहरि के लिये शिवजी का घोर तप किया था और दो सहस्र वर्ष जल सेवन करने पर श्रीशिवजी ने वर माँगने को कहा। तब सूर्पनषा बोली कि श्रीहरि के साथ विहार करौं। सोई आय त्रेता में कुब्जा हुई और कृष्ण ने उसका मनोरथ पूर्ण किया।

फिर राजा ने कुवलया पीड़ के पूर्व जन्म का चरित्र पूछा।

तब नारदजी बोले कि राजा बलि का पुत्र मन्दगति नाम जिसका बल एक लक्ष गज के समान था एक समय रंगनाथ की यात्रा को गया और अतिबेग से मनुष्यों को कुचलता हुआ जाता था। तहाँ त्रितु मुनि मार्ग में उसके वेग से धक्का खाय गिर पड़े। तब मुनि ने क्रोधित हो शाप दिया कि मत्तगज की चाल चलता है, रे शठ! इस मद के कारण तू गयंद होजा। तब वह गजरूप हो गया और कर जोड़ि सविनय बोला कि हे मुनि मैंने निज कर्म का फल पाया। आप दयालु हैं अनुग्रह करिये। त्रितु मुनि बोले मेरे वचन मिथ्या नहीं हो सकते किन्तु तुमको दुर्लभ वर तेरे पिता के भक्त होने से देता हूँ कि द्वापर युग में कृष्ण भगवान् के हाथ तेरी मोक्ष होगी। सोई विन्ध्याचल में कुवलया पीड़ नाम गज उत्पन्न हुआ तिसको जरासंध ने पकड़ि बाँधा और फिर कंस को दे दिया। तिसको कृष्ण ने निर्वाण पद दिया। फिर राजा ने पूछा कि चाँणूरादि मल्ल कौन थे?

तब नारदजी बोले कि पूर्व काल में एक ऊतथ्य नाम मुनि थे जिनके पाँच पुत्र हुये। सो वेद पठन त्यागि मल्ल युद्ध सीखने लगे और मुनि के समझाने पर जब वे न समझे तब कोप करि पिता ने शाप दिया कि तुम सब ने शम, दम, शौच, शांति और ज्ञानादि विप्र के सब कर्म त्याग दिये इस हेतु तुम सब मल्ल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होकर मारे जाओगे, तब तुम्हारी मुक्ति होयगी। सोई पाँचौ शल, तोशल, कूट, मुष्टक और चाँणूर मल्ल भये।

फिर राजा ने पूँछा कि कंस के आठ भ्राता कौन थे जिनको कृष्ण ने संहार करि मोक्ष दिया।

तब नारदजी बोले कि कुबेर अपनी अलकापुरी में नित्य शिव पूजन करता था, उसके आठ पुत्र जिनका नाम गण्ड, महागिरि, खण्ड, प्रचंड, देवकूट, दण्ड, पृथुखण्ड और चण्ड था तिनको कुबेर ने कमल पुष्प लाने को पठाया सो सब सहस्र कमल पुष्प शिव पूजन हेतु सूंघि सूंघि ले आये। तिस उच्छिष्ट पुष्प लाने के अपराध से कंकादि कंस के आठ भ्राता हुये और तीसरे जन्म में कृष्ण के हाथ मुक्ति पाई।

फिर राजा बोला कि हे मुनिवर कृपा करि पाँचजन्य शंख की कथा सुनाइये।

तब नारदजी बोले कि जब विष्णु भगवान् ने अपने तेज से पंचायुध अर्थात् सुदर्शन चक्र, शारङ्ग, कौमोदकी गदा, पाँचजन्य शंख और नन्दकी नाम खड्ग निर्माण किये तब एक दिन शंख ने गर्वित हो कहा कि मेरी समानता कौन कर सकता है। मैं भगवान् का अधर बिम्ब स्पर्श करता हूँ श्रीहरि मेरी ध्वनि से युद्ध और विजय की सूचना देते हैं। जब तीन कमल कुमुद और मृनाल सहित एक ठौर होते हैं तब मैं बोलता हूँ ऐसे गर्वित वचन सुनि लक्ष्मीजी ने शाप दिया कि तू दैत्य होजा। तब शंख पाँचजन्य नाम दैत्य हो गया। जिसको मारि और शाप से मुक्त करि श्रीहरि पुनः शंख को निज समीप में रखने लगे।

राजा ने फिर कहा कि कृष्ण ने जो अन्य चरित्र किये हों सो कृपा करि वर्णन करिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब नारदजी बोले कि एक दिन व्रज का स्मरण करि प्रेम वश कृष्ण के नयनों से अश्रुपात को देखि ऊधवजी कृष्ण से इसका कारण पूँछने लगे। तब कृष्ण बोले कि मेरे वियोग में सब व्रजवासी महा दुखित हैं—

पद

ऊधव व्रजवासी मम प्राण—टेक

मेरे विन तलफत सो निशदिन, धरत हृदय महँ मेरोइ ध्यान ॥
गोपीजन मन व्यथा सुमिर हिय, अरु तिन को कल्याण।
प्रेम नीर लोचन भरि बोले, प्रभु करुणा रस खान ॥
सुरति अवधि मो आवन राखत, तिन जीवन जलयान।
धीर धराय 'बाँकेपिय' आवहु कछु दै अपनो ज्ञान ॥

ऊधव बोले कि यह कौन बड़ा कार्य है मैं अभी सब को ज्ञानोपदेश करि सब का मोह नाश करे आता हूँ—

पद

ऊधव कही बात बनाय—टेक

दुखित हो कित नेकु प्रण हितु कृष्ण त्रिभुवन राय ॥
रहे गोपी ग्वाल व्रज के, मोह महँ अरुझाय।
हरौं मोह प्रबोधि तिनको, आत्म ज्ञान सुनाय ॥
कार्य्य इतनो सुलभता हितु, रहे कित अकुलाय।
'बाँकेपिय' हौं बेग आवहु, ज्ञान तत्व सिखाय ॥

कृष्ण ने अपना रथ प्रसादी मुकुट, वंशी, कौस्तुभमणि, लकुट, गुञ्जामाल और पीताम्बर ऊधव को पहिराय केसरीतिलक लगाय व्रज को पठाया और मातु पिता एवं राधिका तथा गोपियों के प्रति यूथेश्वरी के नाम पाती लिखकर ऊधव को दीनीं। सो लै ऊधव व्रज को चले और गोकुल में प्रवेश करि देखा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि श्वेत, लाल, श्याम, धौरी अनेक भाँति की गौयें जिनके गरे में घंटा पड़े हैं बछड़ों सहित चर रही हैं और हृष्ट पुष्ट दीर्घ सींगवाले वृषभ तिनके साथ डाल रहे हैं और प्रत्येक यूथ के संग गोप कुन्द श्रृङ्गार करे हाथन में लकुट लिये चराय रहे हैं। सो गोप रथ को देखि आश्चर्य से बोले "मानो कृष्ण को लै अक्रूर का रथ फिर आया है।" किंतु निकट जाय देखा तो श्याम स्वरूप कृष्ण की वानिक वनाये अन्य पुरुष पाया। तब ऊधव ने उनको चकित देखि कहा कि हम कृष्ण के मित्र हैं, कृष्ण ने तुम को संदेश पठाया है कि धैर्य धरैं। हम कुछ काल में गोकुल को आवेंगे। तब गोप बोले अरे कृष्ण तो बड़े निठुर हो गये, मथुरा का राज्य पाय अब यहाँ काहे को आवेंगे। यह कहि ऊधव को नन्दराय की पौली पर लै गये। कृष्ण के मित्र ऊधव का आगमन जानि नन्दरायजी ने अति आदर सन्मान करि उनको पास बैठाय कुशल पूछि भोजन कराया और जब ऊधव शय्या पर पौढ़े तब उनके ढिग बैठि कृष्ण की पाती बाँचि प्रेम से गद्-गद् हो बोले हे भैया, कृष्ण ने तो हमारा स्नेह त्याग दिया। अब मथुरा का राज्य पाय हमारी सुधि भी न होती होयगी। हमने कैसे-कैसे लाड़ लड़ाये क्या कभी उनका स्मरण करते हैं। इतने में यशोदा भी आय बैठ गई और नेत्रों में जल भरि पूछने लगी—मेरे प्राण प्यारे कृष्ण बलदेव कुशल से तो हैं। हा! प्रात समय उठि जब कृष्ण बलदेव माखन रोटी माँगते थे तब हम उनके तोतरे वचन सुनि प्रमुदित हो तुरत बिलोया भया माखन और मिश्री खवाती थीं और मुख धुवाय श्रृङ्गार करि धेनु संग वन को पठाती थीं। फिर सायंकाल वन से वगद आने पर मुख की रेणु आँचल से झारि आरति उतारि ब्यालू कराती थीं और प्रीति से वन के चरित्र पूछने पर अघा बका इत्यादि असुरों का वध वर्णन करने पर दैव को मनाय दान कराती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थीं। इन गोपिन के उलहना लाने पर और फिर गोरस की हानि करने पर एक दिन कृष्ण को ऊखिल से बाँधा। तब यमलार्जुन द्वै वृक्षन से द्वै देवता निकसि कृष्ण की स्तुति करि आकाश को चले गये। प्रथम ही एक पूतना नाम राक्षसी स्तनन में विष लगाय आई और कृष्ण को पय पिवाने लगी। तब दैव ने कृष्ण की रक्षा करी। फिर एक दिन वरुण के अनुचर इन नन्दराय को पकड़ि लै गये। तब कृष्ण इनको तहाँ से छुड़ाय लाये। फिर हम व्रजवासियन ने कृष्ण के कहने से इन्द्र की पूजा मेटि गिरि गोवर्द्धन की पूजा करी। तब इन्द्र के कोप करि मूशलधार वर्षा करने पर कृष्ण ने गोवर्द्धन हाथ पर उठाय लिया सो गोवर्द्धन की कृपा से कृष्ण सहित हम सब सकुशल रहे। फिर एक दिन कालीह्रद में कृष्ण के कूद पड़ने पर काली के विष से बचे और दैव ने रक्षा कीनी। हे भैया, कृष्ण के चरित्र कहाँ तक कहैं। हमारे कृष्ण की बाल्यावस्था में सदा ही दैव रक्षा करते रहे। अब जब नेकु बड़े भये तब मथुरा जाय हमको दुख दै गये। हे भैया, कृष्ण बलदेव कभी हमारी सुधि भी लेते हैं। इस प्रकार रात्रि भर नन्द और यशोदा कृष्ण चरित्र कहि-कहि प्रेम में रोते रहे और नेत्रों के जल से ऊधव की शय्या भिजोते रहे। फिर यशोदा बोली:—

पद

ऊधव पैयाँ पड़ौं, मेरे लाला को लावो लिवाय—टेक
निठुर कन्हैया छाँड़ी मैया, लखि मथुरा गये लुभाय ॥
भूखे ह्वै हैं कापै कहिहैं, गोरस नहिं पैहैं अघाय ॥
धूमर, धौरी, खोली कजरी, सब गैयाँ रहीं बिलखाय ॥
ऊखिल बाँध्यो साँटी लै त्रास्यो, यौं याही तें गये रिसाय ॥
'बाँके पिया' लावहु दोउ भैया, तेरी यशुदा बलि-बलि जाय ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब ऊधव ने कहा कि धैर्य धरो। कृष्ण बलदेव मथुरा का कार्य करि अवश्य आवैंगे। तुम धन्य हो जो कृष्ण प्रेम में ऐसे व्याकुल हो रहे हो। फिर प्रात होने पर ऊधव यमुना स्नान को गये और मार्ग में देखा कि गोपीगण कृष्ण चरित्र गाय-गाय गृह कार्य में निमग्न हैं। गोपियन ने नन्द द्वार पर ऊधव के रथ को देखि विस्मित हो पूछा कि क्या बहुरि क्रूर अक्रूर आया है। एक बेर तो हमारे प्राण प्यारे कृष्ण को ले गया। क्या अब हमारा क्रिया कर्म करने आया है। फिर समाचार पाय यमुना पर गई। तहाँ ऊधव को देखि परस्पर कहने लगीं कि यह तो कृष्ण रूप का स्वाँग भर कर आया है। हे वीर कृष्ण का सखा है। इस नाते इसका आदर करना योग्य ही है। यह कहि सबने ऊधव का सत्कार करि और भोजन कराय उनको एक कदली के उपवन में लिवाय लै गईं। तहाँ ऊधव ने देखा कि राधाजी कृष्ण के वियोग में महा दुखी सूखकर काँटा सदृश्य हो गई हैं और श्रृङ्गार विहीन अचेत पड़ी हैं। कभी-कभी सचेत होने पर हा कृष्ण! प्राणनाथ! हा कृष्ण प्राणनाथ! बोलि-बोलि रुदन करती हैं। तब कृष्ण की आदि शक्ति विचारि ऊधव ने कर जोड़ि स्तुति करी और कृष्ण का पत्र दिया। पत्र को बाँचि और छाती से लगाय, राधाजी बोलीं हे ऊधव, मनमोहन प्यारे कब आवैंगे? बिना उनके हमें एक-एक पल कल्प समान बीत रहा है। हे ऊधव, मनमोहन ब्रजचन्द्र के दर्शन बिना यह दृग चकोरी समान तलफ रहे हैं। जैसे श्रीराम की खबर हनुमान ने सीता को दीनी थी, तैसे ही मेरे प्राणधन की खबर तुम लेकर आये। सो तुमने बड़ा अनुग्रह किया। हे ऊधव, एक दिवस पीछे आने की आशा दे मोहन प्यारे ने इतने दिन बिताय दिये। जिनके बचन असत्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं उनका पत्र कब सत्य हो सकता है। यह कहि विकल हो रुदन करि बोलीं।

अष्टपदी श्रीराधा मुख

प्यारे नन्द सुअन, मेरे प्राणन के आधार।
चौबोला—तलफ रही हूँ बिना तेरे कृष्ण बनवारी।
दशा है मीन सी जैसे हो नीर से न्यारी॥
है काटती हमें नागिन सी रात उजियारी।
बसी है कारी सी अलकावली वो घुंघरारी॥
मो विरहिन दशा निहार॥ १॥
लिखा है चित्र तुम्हारा हृदय की पटरी पर।
वो मन्द हास्य, त्रिभंगी लटक, वो वेणु अधर॥
वो मोर पिच्छ है शिर पर विराजता सुन्दर।
वो मोहनी सी है छवि साँवरी, निराली सुघर॥
डारौं तन मन मैं तो पैं वारि॥ २॥
तुम्हारी योग की आज्ञा को शिर पः धरती हूँ।
सिंगार तजि के मैं अँग-अंग धूलि भरती हूँ॥
विरह की अग्नि में निशदिन तपा ही करती हूँ।
वहा के अश्रु का जल उसमें जा उतरती हूँ॥
किया करती हूँ योग प्रचार॥ ३॥
कभी पुकारती चातिक सी देखि श्याम घटा।
विकल है करती कोयलिया की श्याम रंग छटा॥
तिमिर निकुंज का रहता है नयन ही में सटा।
भ्रमर को देख के करती हूँ श्याम-श्याम रटा॥
कब आवोगे नन्दकुमार॥ ४॥
चरण कमल ने तुम्हारे बहाई इक गंगा।
यहाँ विकल है तुम्हारे वियोग में यमुना॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनाओ आके यहाँ तीर्थ राज का थाना।
नहाथें प्रेम के जल में करो जो तुम क्रीड़ा॥
वहै हिल मिल त्रिवेणी की धार॥ ५॥
करैगा कौन हमारा विचित्र पुष्प सिंगार।
हमें मनायेगा अब कौन पट को मुख से टारि॥
रचैगा कौन वो रस रास करि निकुंज विहार।
झुलायेगा हमें वृक्षों में कौन झूला डारि॥
बिना तेरे है जीवन भार॥ ६॥
है शून्य सान बिना आपके ये वृन्दावन।
पड़ा है छाती पः पत्थर धरे ये गोवर्द्धन॥
विरह में सूख के काँटा हुआ निकुंज सघन।
बहाती आँखों से जल भानु जा बिना दर्शन॥
करौ विरही जनों का विचार॥ ७॥
समाप्त करती हूँ पाती नहीं लिखा जाता।
मिटाये देते हैं ये नयन अश्रु 'बाँके पिया'॥
बहुत विरह की कहानी को थोड़े ही में लिखा।
बस इस वियोग का दुख अब नहीं सहा जाता॥
करो प्राणों की रक्षा सँम्हारि॥ ८॥

तब ऊधव बोले कि धैर्य धरो। मैं तुम्हारी शपथ खाय कहता हूँ कि कृष्ण को वेगि ही लै आऊँगा। मेरे वचन सत्य जानौ। तब राधाजी ने कुछ धैर्य धरि प्रीति से अपने शीश की प्रसादी चूड़ा एवं चन्द्रकान्तमणि और छत्र, सिंहासन और चमर जिनको कृष्ण ने अपने मन से प्रकट किये थे ऊधव को दिये और वैराग्य युक्त सगुण निर्गुण के भक्ति भाव का वरदान दिया। शशिवदना नाम गोपी ने शंखचूड़ की मणि दीनी। इसी प्रकार अन्य गोपियों ने जुदा-जुदा पाती पाने के उपहार में अन्य भूषण ऊधव को दिये और पूँछा कि मनमोहन प्यारे ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो तुम से सँदेशा कहा हो सो कहो तब ऊधव बोले कि हे व्रजबालाओं! जितने संसारी मनुष्य हैं सो सब त्रिगुणात्मक हैं। इस हेतु जो गुण को त्यागि निर्गुण हो जाय सो उत्तम ज्ञानी है और सर्वोपर अन्तर्यामी ब्रह्म का ध्यान लगाय निर्गुण भाव में लय होने से मन का सब विकार छूट कर निर्विकार भाव प्राप्त होता है। जैसे सूर्य की धूप के बीच मे किसी वस्तु के आय जाने से धूप छिप जाती है इसी प्रकार ब्रह्म और जीव के मध्य में माया के आवरण से ब्रह्म और जीव विलग-विलग जान पड़ते हैं; जिसका नाम वियोग है। अतएव सांख्य योग का आश्रय ले और योग साधन करि ममता और भ्रम को छोड़ो। कारण कि संसार रूपी रोग की एकमात्र योग ही औषधि है, मन में ही नित्य मेरा ध्यान करो यही कृष्ण ने कहि पठाया है। ऊधव की यह ज्ञान कथा सुनि निज निज भावानुसार पृथक्-पृथक् यूथवाली गोपीजन बोलीं—प्रथम गोलोक निवासिनी गोपी बोलीं हे ऊधव, मनमोहन प्यारे आप तो मथुरा में राज्य करैं, कुबरी साथ भोग करैं और हमको पाती में योग करने की शिक्षा देते हैं। इस पाती के बाँचने ही से छाती फटती है। तुम भी सूधे ही विचार से यह पाती हमारे ढिग लै आये अरे श्याम देखने ही को सूधे लगते हैं। जैसे बगुला सूधो बैठि मछरी पकरि-पकरि खाय जाता है, तैसे ही श्यामसुन्दर भीतर से महा कपटी हैं। यह सुनि गोलोक के द्वारपाल जो गोपी हो आये थे सो गोपी बोलीं—अरी वीर, श्याम तो जन्म के कपटी हैं। जैसे चन्द्र से प्रीति करि चकोर धोखे में अँगार खाय लेता और भ्रमर कमल पर लुभाय आपको बन्द कराय देता है। स्वाती-बूँद हेतु चातक घन की ओर देखता रहै और पतिङ्ग दीपक से स्नेह करि प्राण दै देइ, तैसे ही हम सब श्यामसुन्दर पर मोहित हो अपने प्राण दे रही हैं और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्याम निठुर हो मथुरा में राज्य करते हैं। फिर श्रृंगार करने वाली गोपिका बोलीं—हे आली, श्यामसुन्दर का इसमें कौन दोष है। जैसे चन्द्र स्थावर जंगम सबको अमृत और शीतलता समान रूप में देता है किन्तु चकोरी अंगारे ही खाती है और जैसे दीपक सबको एक सा प्रकाश देता है किन्तु पतिङ्ग अपने प्राण ही समर्पण कर देता है। इसी प्रकार श्यामसुन्दर जगत के सुखदाई हैं किन्तु हम उनके स्नेह पाश में बँधकर कष्ट सहन कर रही हैं। फिर जे गोपी हरि की शय्या सँभारने वाली थीं सो बोलीं—हे वीर उन निर्दई श्यामसुन्दर की बात कहा कही जाय, देखो ब्याधा जब जीवन का वध करता है सब गिन लेता है कि आज इतने जीवन को मारा है। किन्तु श्यामसुन्दर तो तीखी चितवन से नयनन के बाण छांड़ि हम कोटिन अबलान के प्राण हरि के गिन्ती भी नहीं करैं। कोऊ जीवौ वा मरौ उनकी बलाय से। वेणुनाद सुनाय हमको मोहित करि अध बीच ही में छोड़ दिया है। फिर जे गोलोक के पार्षद गोपी रूप थीं सो बोलीं—तुम सब वृथा ही श्याम-श्याम गुहार मचाय रही हो। श्यामसुन्दर जो योग सँदेशे की बोली बोलि ठिठोली करि रहे हैं। उनको हमारी व्यथा की क्या खबर है। जिसके पाँवन में बिवाँई ही नहीं है सो दूसरे की पीर कैसे जान सकता है। फिर जे गोपी वृन्दावन की चौकसी करने हारी थीं सो बोलीं—हे आली, श्यामसुन्दर की बात तो विचारो हमसे तो योग करने को कहते हैं और आप व्रजबालान से मुख मोड़ कंस की दासी कुरूप कूबरी पर रीझि कुल कान मेटि दीनी। इसमें उनका दोष नहीं वह कूबरी ही अति बड़भागा है।

पद

कर्म की गति न्यारी, हमें चेरी महा दुख दीन॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैसी कुरूप, कूबरी, दासी त्रिभुवन पति वशकर लीन ॥
नेकु से चन्दन पर हरि रीझे, ताहि परम सुन्दरी कीन ॥
वाही सौत आवन नहिं दीनो, करि राख्यो है निज आधीन ॥
'बाँकेपिया' नहिं दोष है वाको, हम हीं हैं भाग की हीन ॥

फिर गोवर्द्धन वासिनी जे गोपी थीं सो नयनों में अश्रु जल भरि बोलीं कि हे ऊधव, श्याम सुन्दर तो सदा के विषयी हैं। वह योग रीति क्या जानैं। काहू के मुख योग शब्द सुन लिया होयगा। जैसे कड़ुई लौकी नीम पर चढ़ै और भैंस बाजा सुनि चारौं पाइन से कूदती है। तैसेई मूर्ख श्याम सुन्दर कुब्जा से मिलि और योग का नाम मात्र सुनि कूदने लगे हैं। फिर निकुंज निवासिनी गोपी बोलीं—हे ऊधव, श्याम सुन्दर की वह छबि हगन से नहीं टरती जब भानुनन्दनी कालिंदी तट पर मराल गति मुरली बजाते और बलदेव के साथ शीश पर मुकुट धरे कछनी काछे पीत पिछौरी ओढ़े गइयन को लिये चलते थे। फिर यमुना के यूथ वारी गोपी बोलीं—हे सखी, विधना का अद्भुत खेल तो देखौ जिस मोहिनी मूर्त्ति को उघारे भये नेत्रन से देखती थीं सो माधुरी मूर्त्ति अब नयन मूँदि दिखाना चाहता है और मोहन भोग खवाय राख फकाना चाहता है। जिस रूप अनूप का माधुर्य्य हगन से पान करती रहीं उस ठौर पर ब्रह्म का ध्यान कैसे करैं! जीवित खसन भस्म कैसे रमाई जाय। फिर गङ्गा की यूथवारी गोपी बोलीं—हे वीर, कुबरी जो कुरूप थी सो रूपवती भई और उसके पीठ पर की गाँठ हू हरी होइ गई। अविनाशी श्याम ने उसकी सब उदासीनता हरि लई। अब वह पटरानी भई। कंस के वध होने से मजूरिनी रानी भई किन्तु ध्यान राखो कि सदा डारि हरी और फरी नहीं रहैगी। फिर रमा के यूथवारी गोपी बोलीं—हे वीर, आज काल्ह हमारी ऊर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशा आई है और कुबिजा का भाग्योदय हुआ है। जब हमारा दाउँ आवैगा, तब हम भी कुबरी सौत से बदला चुकाय लेयँगी। कागज़ की नउका कब तक चलैगी। सदा न चाँदनी रहै और न बसन्त ऋतु ही रहै। फिर मधु माधवी यूथ की गोपी बोलीं—हे बीर, जान पड़ता है कि कूबरी ने श्याम सुन्दर से कहा है कि ब्रज बालान को योग कहिवाय भेजौ। तब मेरे साथ भोग करौ। इसी से हम पर यह विपत्ति आय पड़ी है। सो अब कूबरी के दिन भले हैं मनमानी कर लेय। जब हमारे दिन सूधे आवैंगे, तब हम भी समुझ लेयँगी।

पद

कृष्ण मन मोहन सों, कहौ ऊधो यही समुझाय।
दासी पति है मथुरा बैठे, सब कुल मर्याद विहाय॥
हमको योग भोग आपुन हित, यह कौन सी नीति कहाय।
'बाँकेपिया' प्रीतम प्यारे को, अब लावहु बेगि लिवाय॥

फिर विरजा के यूथधारी गोपी नयनन में जल भरि बोलीं—हे ऊधव, आज कान्ह बनमाल धारी नन्दलाल कुबिजा दासी पति होय फूल रहे हैं और आप भोग करि हमको रोग बढ़ावन हारी योगरूप औषधि पठाई है। जैसे काहू के विवाह में काहू के गीत गाये जायँ परन्तु मेघ चातिक पर दया करि स्वाती बूँद ही देय है। सो हे ऊधव, नन्दलाल को समुझाय यह सब द्वन्द मिटाय देउ। फिर कृष्ण के वियोग से संतप्त हृदय ललिता के यूथधारी गोपी बोलीं—अरी बीर, या भूतनासी कूबरी के चरित तो सुनो, याने रामचन्द्र के राज्य में दशरथ के प्राण लीने, राम को बनवास कराया, रानी केकई को अपयश दीनो। अरी सखी यह सब कूबर ही का दोष है। याने कंस का वध कराया, ब्रजचन्द को फँसाया और कानन में मंत्र फूँकि हमको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योग पठवाया। फिर विशाखा के यूथवारी गोपी बोलीं—हे सखी, हम तो काहू को दोष नहीं देयँ, अपने कर्म ही को दोष है। हमारे तो नयनन में वही साँवरो नन्द की गाय चरावन हारो ग्वाल बालन सहित पीत पिछौरी ओढ़े कछनी काछे मोर पिच्छ को मुकुट दीने वंशी ध्वनि करतो मन्दगति से यमुनातट पर फिरन हारो बसि रह्यो है। फिर माया के यूथवारी गोपी बोलीं—हे ऊधव, हमको एक बेर श्याम सुन्दर ने गह्वर वन से आते भये सांकरी खोरि पर देखा तब मीठे-मीठे वचन बोलि कण्ठ से लगाय लिया सो बात तो हमारे चित्त से नहीं उतरती। मनमोहन प्यारे से जाय कहो कि एक बेर तो वह माधुरी छवि फिर दिखराय देयँ।

पद

ऊधव मनमोहन कब आवैंगे जीवन प्राण।
सर्वसु लीनो विरह दुख दीनो, रस बोरी मधुर बतरान॥
तल्फत निशदिन कलनहिं इक क्षण, जिय सुमिर मन्द मुसक्यान।
'बाँकेपिया' माधव को ऊधव, अब वेगि मिलावहु आनि॥

फिर मुख्य अष्ट सखी बोलीं—हे ऊधव, उन राजीव नयन प्यारे के गुण कहाँ तक कहैं। यदि रोम-रोम रसना बनजाय तब भी नहीं कहि सकैं। हमारा तो यही संदेशा है कि हमारे इस कठिन वियोग को शीघ्र नाश करैं। फिर श्रुति रूपा गोपी बोलीं—हे ऊधव, विश्व के रचन हारे, दुःख हरन हारे, एक ईश्वर सर्व व्यापक, घट-घट वासी, स्वयं प्रकाश करन हारे, कूट रूप मायाधिपति श्याम सुन्दर जो पर तत्त्व परब्रह्म कहाते हैं और प्राकृत इन्द्रिय, मन, वाणी से नहीं जाने जाते तिनने दयावश दासी से प्रीति जोड़ि हम को विसराय दिया। तिनसे कोटिशः हमारा प्रणाम कहना। फिर ऋषिरूपा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपी बोलीं—हे ऊधव, हमारी ओर से भी उन परब्रह्म, परतत्व, परम धाम, परमेश्वर कृष्ण से जिनकी दासी माया संसार को उत्पन्न करि विनाश, कर देती है कहना कि हम दासियों पर कृपा करि दर्शन देयँ, उनको प्रणाम है। फिर देवरूपा गोपी बोलीं—हे ऊधव, हमारा भी प्रणाम उन निर्मोही श्यामसुन्दर से कह देना जो अपने दासन पर कृपा करि अवतार धारण करते हैं और जिनका गुण चार मुख, पाँच मुख और सहस्र मुख वारे गान करते हैं, वेद नेति नेति कहि बखान करते हैं और जो परिपूर्णतम ग्वाल वेष में कृष्ण रूप हैं। फिर सीता यज्ञ वाली गोपी बोलीं—हे ऊधव उन निकुंज विहारी गुंजा मालधारी बनवारी से जिन ने जगत् हित के लिये कंस का वध किया है, कहना कि हम अबला दासियों पर कृपा करि दुख हरि वेगि दर्शन देयँ। फिर श्वेत-द्वीप वाली गोपी बोलीं—हे ऊधव, उन गिरधारी ने हमारे हेतु गिरिराज धारण किया। हमारे सब संकटों में रक्षा करी। हमारे साथ रास किया। वे तो अनाथन के नाथ कहाते हैं। तब हम आर्त्त दासियों पर कृपा क्यों नहीं करते और दर्शन दे हमारे विरह ताप से दग्ध हृदय को शीतल क्यों नहीं करते। फिर वैकुण्ठ वासिनी गोपी बोलीं—हे ऊधव, जिसके नयनन में श्यामसुन्दर स्वरूप वसि रहा है सो अद्वैत लै कहा करै और यहाँ तो वियोग है तुम योग की कह रहे हो। हमारे नयनन में तो मनमोहन प्यारे वसि रहे हैं। सो टरि नहीं सकैं। माल-पुआ खाने हारे को पकौर कैसे सुहाय। फिर अजितपद श्रुति रूपा गोपी बोलीं—हे ऊधव, जिसका मंत्र होय सोई उतार सकै। सर्प का विष सर्प ही पी सकै अथवा विष खाये भये को विष ही आरोग्य कर सकै। सो श्यामसुन्दर को समु-झाय देना कि मोह में फँसाई भई हम सबका मोह सोई आय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काटैं। आप तो ऊधवजी विज्ञान के रूप हैं, सो जानते ही हो कि प्रेम का नाता प्राण लेके ही छोड़ता है। फिर मिथुलापुरी वाली गोपी रूपा बोलीं—हे ऊधव, धन देके तन सँम्हारा जाय और तन देके मित्रता सँम्हारी जाय सोई हम सवने तन मन धन दे सब बाँधवन से नाता तोड़ि कृष्ण का सेवन किया सो ऊधव! दोनों ओर से प्रीति का निर्वाह होता है। प्रेम में छुटाई बड़ाई नहीं। यही श्यामसुन्दर से समुझाय कहि देना। फिर कौशलपुर वाली गोपी बोलीं—हे ऊधव, वियोग की कराल दशा जिस पर बीतती है सोई जानता है। देखो दीपक पर पतिङ्ग जरि मरै। पर दीपक की जान हाँसी है। इसी प्रकार श्याम-सुन्दर के लिये हम दुःख सहैं और वे दासी से प्रीति करि हमको भूल गये। तिस पर भी योग का संदेशा पठाय मानो जरे पर लोन छिड़क रहे हैं। फिर अवधपुर की नागरी रूपा गोपी बोलीं—हे ऊधव, देखो तो श्यामसुन्दर ने हमें आशा दै निराश करि दिया। जैसे कोऊ पार करने के लिये नौका पर चढ़ाय लेय और बीच जलधार में बोर देय। सो मनमोहन प्यारे से कहना कि अब हमारा धैर्य्य रूपी जहाज बूड़ रहा है आय के उबारैं। फिर पुलिन्दका नारि रूपी गोपी बोलीं—हे सखी, यही कृष्ण जब राम रूप भये थे तब विचारी सूर्पनषा ने पति करने हेतु विनती करी सो वाके नाक कान कटवाय लीने। भली करते हू वाकी ऐसी दशा कीनी। जिसका ऐसा सुभाव है सो न जानै हमारी तुम्हारी कौन दशा करते। सो लज्जा तो रह गई। फिर सुतल लोक निवासिनी गोपी रूपा बोलीं—हे सखी श्यामसुन्दर तो जन्म के कपटी, निर्दयी और छलिया हैं। वामन सो छोटो रूप बनाय राजा बलि से दान लीनो और वाही को बलिदान कीनो। तीन पग पृथ्वी माँगि द्वै पग में तीन लोक नाप लीने और एक पग के लिये वाको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सब धन धाम ले बाँध लीनो। सो यह ऐसे छली और मित्र द्रोही हैं। फिर जालंधरी रूपा गोपी बोलीं—हे सखी, कृष्ण तो बड़े दयासिंधु थे, हरणाकशिपु दैत्य ने जब प्रह्लाद को दुःख दीनो। तब खंभ से निकसि अपने दास की रक्षा कीनी। सोई कृष्ण अब हमारी बेर ऐसे कठोर क्यों हो गये कि हमारी दशा पर नेकहू दया नहीं करैं। फिर वहिष्मती की नारि गोपी रूपा बोलीं—हे सखी, श्यामसुन्दर ने तो वाराह रूप धारि पृथ्वी को बूड़ने से बचाया। पृथु रूप से सब वस्तु दुहि के निकारीं और जब-जब पाप की वृद्धि भई तब ही धर्म की रक्षा करी। सो न जानैं हम से कौन सी चूक बन पड़ी जो हमको बिसराय दिया। फिर लता गोपिका रूप बोलीं—हे सखी, मोहन प्यारे ने तो कच्छ, मच्छ वाराह, धन्वन्तर, मोहनी इत्यादि रूप धारि धर्म की रक्षा करी और ग्राह को मारि गज को बचाया ऐसे दीनदयालु होकर हम दीनन की सुधि क्यों नहीं लेयँ। फिर गोपीरूप नाग सुता बोलीं—हे आली, या कुबरी ने पूर्व जन्म में राम लक्ष्मण से प्रीति करि अपने भ्रात कुल का नाश कराया। अब कंस की दासी हो श्यामसुन्दर की पटरानी भई। हम तुम तो जो एक दिन मोहन प्यारे न आवैं तो मान गढ़ के बैठती हैं। श्यामसुन्दर तो भक्ति के वश हैं, यह सब हमारे ही दोष के कारण हैं। फिर गोपी रूप सिंधु कुमारी बोलीं—हे वीर, जो रमा चंचला और विश्वदानी कहाती है सो जिनके चरण त्यागि अन्यत्र नहीं जाती और जिन दीनबंधु कृपासिंधु ने एक दासी को कमला समान कर लिया, तो हम अहीरिनि कौन गिनती में हैं। यह तो अपना-अपना भाग्य है। लोहा पारस के स्पर्श्य से सोना हो जाता है। फिर गोपी रूप अपसरा बोलीं—हे ऊधव, जो-जो माधव ने कही, अंग में विभूत, मृगछाला, मुद्रा, अवधूत वेष सब कुछ करेंगी। पर जीवित पति मूड़ कैसे मुड़ावैंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह तो श्यामसुन्दर से पूँछि आवो। फिर सत्वगुण वृति वाली गोपी बोलीं—हे ऊधव, प्रह्लाद अम्बरीषादि भूपाल उन ब्रजनाथ का गुण गाय परम पद को प्राप्त भये और ब्रह्मा शिवादि उनका ध्यान धरि देवपति कहाये। सो ऐसे कृपानिधान धरणिधर होकर हमारे ओछे कर्मन पर दृष्टि न करैं। अपनी ओर निहारि हमको दर्शन देयँ। फिर रजोगुण सुभाव वाली गोपी बोलीं—हे ऊधव, प्राण प्यारे नन्दलाल से कहा कि हरिश्चन्द्र, रुक्मांगद और ध्रुवादि पर आपने करुणा करी है, साधु जन गुण ग्रहण करते हैं, अवगुण की ओर दृष्टि नहीं करते। सो हम मूर्ख स्त्रियों के अवगुण त्यागि और अपने नामन दिश निहारि दर्शन देयँ। फिर तमोगुण प्रकृति वाली गोपी बोलीं—हे ऊधव, जिन मुरली मनोहर ने तुलसी को छला, उनको एक दासी ने छल लिया। सो जैसी तीन ठौर से टेढ़ी कुब्जा, तैसेई त्रिभंगी कृष्ण। भला संयोग मिला है। इस प्रकार सब गोपिका अपनी-अपनी व्यथा कहि और हा कृष्ण प्यारे पुकारि ऊधव के समीप मूर्च्छित हो गिर पड़ीं। तव ऊधव बोले—हे परिपूर्णतम की परम प्रिया, हे निगूढ़ प्रेममयी, अब हमको लौट जाने की आज्ञा देउ। तब राधाजी कागद पर स्याही से पत्रोत्तर लिखने लगीं। जितने अक्षर लिखती थीं उतने अश्रु बुन्द दृगन से झड़ि कागद को भिजोय देते थे। यह दशा देखि ऊधव प्रेम से व्याकुल हो सबको प्रणाम करि रथ पर बैठि नन्द धाम में आये।

पद

भूले चतुर ऊधव ज्ञान।
निरखि ब्रज के गोप गोपी, प्रेम रस की खान॥
गये थे षट दिवस को षट मास बीते आनि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुनत प्रेम अगाध चर्चा, नष्ट भयो अभिमान॥
प्रेम वारिधि गोपिका, व्रजचन्द को दृढ़ ध्यान।
वढ़त बूड़यो 'बाँकेपिय' ऊधव सकल विज्ञान॥

जैसे तैसे रात्रि काटि नन्द यशोदा से विदा हो मथुरा को चले और मथुरा के उपवन में अक्षयवट के नीचे कृष्ण को देखि रथ से उतरि प्रणाम किया और ज्ञान को भुलाय गद्-गद् वाणी से कृष्ण प्रति बोले कि धन्य हैं सब व्रज की गोपिका और उनका प्रेम! मैंने आपको अपने साथ लिवाय लाने का उनको वचन दिया है सो कृपा करि पूर्ण करिये। हे भगवन्! जैसे आपने रुक्मांगद, प्रह्लाद, ध्रुव और अम्बरीषादि के वचन सत्य करे हैं। तैसे ही इस दास के वचन भी सत्य करिये।

पद

ऊधव के मुख बोल न आवत।
अँसुअन नीर झरत नयनन सों गद्-गद् कंठ कहत सकुचावत॥
पुनि कछु हृदय सुमिर, माधव पैं दीन वचन कर जोरि सुनावत।
सो प्रण राखि चलौ व्रज माहीं, तुम प्रभु दीनदयालु कहावत॥
व्रज युवतिन को वचन दीन्ह मैं, वेगहि श्याम साथ लै आवत।
सो प्रण पूर्ण करौ प्रभु मेरो, भक्त आर्त्त भंजन श्रुति गावत॥
भक्त प्रतिज्ञा राखि चले प्रभु, रथ चढ़ि ऊधव सों बतरावत।
ऐसे करुणामय 'बाँके पिया' पहुँचे व्रज महँ मोद बढ़ावत॥

यह ऊधव के वचन सुनि वलदेवजी को राज भार सौंपि श्रीकृष्ण रथ साजि ऊधव के साथ व्रज को चले। तिन दोनों को नन्दघोष रथ पर आते देखि सिगरी गउयें पूँछ उठाये परम हर्ष सहित स्तनों से क्षीर धार डारती कृष्ण की ओर दौड़ीं और कृष्ण उनको विविध भाँति पोंछि और आगे करि चले। सब ग्वालन बीच कृष्ण और ऊधव परम शोभा देते थे। इस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकार नन्द धाम पर आये। तब नन्द यशोदा और उपनन्दादि कृष्ण को देखि अति हर्षित भये और कृष्ण ने रथपर से कूदि सबको आलिङ्गन दिया और मधुर वाणी से सब का आदर करि कुशल मङ्गल पूँछा। फिर सब व्रजवासी और षट वृषभानु गोप गोपी मङ्गल सँवज साजि-साजि बधाई देने चलीं और विविध प्रकार बाजन वजाय बजाय अति कोलाहल किया। राधाजी ने कृष्णागमन सुनि सखियन सहित अपार उत्सव किया और प्रेम से गद्-गद् हो कृष्ण से मिलीं और कहने लगीं— हरि के सखा ऊधव धन्य हैं, जिनकी कृपा से प्रीतम प्यारे के दर्शन पाये।

पद

धनि ऊधव श्यामहिं लै आये।

कही सो करी धन्य धनि ऊधव, जिनकी कृपा श्याम हम पाये।
करि प्रण गये कियो सोइ पूरण, सत्य वचन करि आनि दिखाये॥
विरह अवधि बीती 'बाँकेपिया' प्रीतम प्यारे लाय मिलाये।

नारदजी बोले हे नृप बहुलाश्व, जो उत्सव कृष्ण के मिलने का व्रज में हुआ, सो शेष शार्दा भी वर्णन नहीं कर सकते।

तब राजा ने फिर पूछा कि इसके उपरांत श्रीकृष्ण ने जो चरित्र किये और किस भाँति फिर मथुरा को गये सो भी कृपा करि कहिये?

नारदजी बोले कि संध्या समय राधा के बुलाने पर कृष्ण कदली वन में आये, तहाँ शत यूथ गोपियों के आये और सब ने प्रेम सहित पूजन किया और प्रेम अश्रु से कृष्ण चरणों का अभिशेष किया। राधाजी बोलीं कि हे प्यारे! हमने तुम्हारे हेतु सीता और दमयन्ती समान कैसे-कैसे दुःख उठाये। हमारे किस कुटिला गुण से आपने हम सब को बिसराय दिया। यदि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम्हारे सखा ऊधव तुम को न लाते, तो तुम काहे को आते ? आपका कोमल हृदय कैसे कुलिश हो गया ? कृष्ण ने प्रेम से कण्ठ लगाय राधाजी का शृङ्गार अपने हाथ से किया। क्योंकि कृष्ण वियोग पीछे श्रीराधाजी ने सब प्रकार का शृङ्गार त्याग दिया था। कृष्ण बोले हे प्यारी राधा ! तुम यह मिथ्या शोच करती हो कि हम तुम्हारे हेतु यहाँ आये हैं। हम तुम तो दोनों एक हैं। कभी न्यारे नहीं हो सकते। जैसे पद्म की उज्ज्वलता और अग्नि की दाहक शक्ति उनसे विलग नहीं, इसी प्रकार हम तुमसे विलग नहीं। और जैसे पंचतत्त्व प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु में व्यापक हैं, इसी प्रकार हम तुम स्थावर जङ्गम में भीतर बाहर सब ओर व्यापक हैं। हम तुम से विभिन्न कोई वस्तु नहीं, यह विचारि सब दुःख परित्याग करो। जब तक दोष और भिन्न भाव जगत में है, तब तक जगत का बन्धन नहीं छूटता। जब गुणों के बंधन से जीव मुक्त हो जाता है तब ही मेरा भजन करता है। केवल मेरा प्रेम ही इसका अधिकारी है। सोई तुम सब करो। जब मन शुद्ध होता है तब ही मैं जीवों को दृष्टिगोचर होता हूँ, नहीं तो अंध समान जीव जगत के दुःखों से घिरा रहता है। इसलिये हे गोपियों, शोच को त्यागि मेरे में प्रेम करती रहो।

पद

राधा सों भाषत बनवारी।

कित प्रिया विरह व्यथा कहि गावन, सूर्यरश्मि रवि तें नहिं न्यारी॥
तुम्हरे अंश सकल व्रज वनिता, करी कला निज सोइ विस्तारी।
शक्तिमान नहिं विलग शक्ति सों, तब मम अंश सकल नर नारी॥
हम तुम एक प्राण द्वै देही, नेकु न अन्तर लेहु विचारी।
"बाँके पिय' अस राखि हृदय महँ, दुख संताप देहु सब टारी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदन्तर कृष्ण ने कार्तिक की पूर्णिमा में रास चौतरा पर रास रचा और प्रत्येक गोपी प्रति अपना कृष्ण रूप प्रकट करि नाना भाँति विहार और क्रीड़ा करी और गोपियों को मान भरी देखि राधा सहित कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये और तहाँ से बारह कोस पर रोहिताचल स्थान में आये और गंगा तट पर एक सघन वन की कुटी में एक ऋभु नाम मुनि को कठिन तप करते देखा, जो श्रीहरि के ध्यान में छियासठ सहस्र वर्षों से बिना अन्न जल तप कर रहे थे। कृष्ण ने राधा सहित मुनि के समीप जाय उनका नाम लै पुकारा किन्तु ध्यान में स्थिर चित्त मुनि ने कुछ उत्तर न दिया। कृष्ण ने मुनि के चित्त से निज स्वरूप हटाय लिया, तब मुनि ने आतुर हो नयन खोल दिये और राधा सहित कृष्ण को अपने निकट देखि परिक्रमा करि गद्-गद् कण्ठ से बहुत स्तुति करी कि हे पुरुषोत्तम! आप लीला करि सकल ब्रह्माण्ड को प्रभा युक्त करि रहे हैं। हे जगन्नाथ गरुड़ध्वज! आप परिपूर्ण अविनाशी, लीला धारी, भूमि-भार हरने को अवतार धारण करते हैं, आपकी जय हो। इस प्रकार वन्दना करि और चरणों पर शीश धरि शरीर त्याग दिया और एक सूर्य्य समान योति तिन के अंग से निकसि कृष्ण के चरणों में समाय गई। फिर एक दिव्य रूप हो कृष्ण के सन्मुख खड़ी हो गई। तब कृष्ण ने उसको कण्ठ से लगाय लिया। फिर सो मुनि गोलोक से आये भये विमान पर बैठि तिसपरमधाम को चलेगये। तब राधाजी ने यह देखि कहा—धन्य है यह हरि भक्त, इसका अन्तिम कर्म आपको करना योग्य है। यह कहते ही उस मुनि के मृतक शरीर से जल प्रवाहित हो एक सरिता रूप हो गया। तब राधाजी ने विस्मित हो इसका कारण पूछा। कृष्ण बोले कि मुनि के प्रेम ही से उनका शरीर जल हो गया है। प्रेम की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बड़ी महिमा है। पाषाण को भी जल बनाय बहाय देता है। जगत् में प्रेम समान अन्य वस्तु नहीं। हम भी पूर्व में प्रेम से जल रूप होगये थे। राधजी ने पूछा कि आप कब और कैसे जल हो गये थे? सो सुनि कृष्ण हँसकर बोले कि जब मैंने ब्रह्मा को प्रकट किया और उनसे नारद बीणा लिये उत्पन्न हुआ। तब पिता ने सृष्टि रचने की आज्ञा दी। नारद ने उत्तर दिया कि हम से यह कार्य न होयगा, इसमें मोह और दुःख है और आप भी इस विपद में न पड़िये। तब पिता ब्रह्माजी ने रुष्ट हो शाप दिया कि तू गंधर्व होजा। तब नारद एक कल्प तक अपबरहन नाम गंधर्व रहा। फिर एक समय स्त्रियों सहित ब्रह्मा की सभा में नृत्य गान करने में ताल भंग होने पर ब्रह्मा बोले कि तू गंधर्व योग्य नहीं। तब फिर मुनि हो गया और ब्रह्मा के सत्य संग के प्रभाव से ज्ञानवान हो विचरने लगा और हरिगुण गान करता इलावर्त्त खण्ड में जम्बू नद के तट पर वेद नाम नगर में पहुँचा। तहाँ देखा कि सब स्त्री पुरुष लूले, लँगड़े, कुबड़े और अंग विहीन हैं। उनसे कारण पूँछने पर वे बोले कि ब्रह्मा का पुत्र एक नारद नाम मुनि है जो अहर्निश वे ताल स्वर टर-टर किया करता है। उसी ने हम सब राग रागनियों के सब अंग छिन्न भिन्न कर डाले हैं। तब नारद ने लज्जित हो पूछा कि किस गुरु से यह विद्या प्राप्त हो? तब वे बोले कि श्रीहरि की स्त्रियों से यह विद्या प्राप्त होगी।

तब श्वेतद्वीप में आय तप करने लगा और निर्जल दिव्य शत वर्ष तप करने पर हंसारूढ़ वीणा लिये शारदा देवी प्रकट भई। नारद ने स्तुति करि माँगा कि मुझको अद्वैत गान विद्या दीजिये। तब नारद की उस जाड्या नामा स्तुति से प्रसन्न हो वाणी देवी ने सब राग, रागनी, तालभेद, मूर्छनाभेद सहित और तिनके काल समय एवं सब नृत्य भेद बताये और फिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैकुण्ठ चली गई। तब नारद शिष्य द्वारा प्रचार हेतु विचार करि गंधर्व लोक में आया। तहाँ तंबुरु नाम गंधर्व को निपुण पाय अपने साथ लै प्रथम इन्द्र लोक गया, तिनको राजकार्य में व्यग्र चित्त देखि सूर्य लोक गया, सूर्य को भी दौड़ते देखि शिवलोक गया, उनको भी समाधिस्थि देखि ब्रह्मलोक गया, तहाँ ब्रह्मा को भी सृष्टि कार्य में निमग्न देखि विवर भेदि वैकुण्ठ पहुँचा, तहाँ श्रीहरि को भी भक्तों की चिंता में देखि गोलोक में पहुँचा, तहाँ अनेक अण्ड देखे। तब विरजा नदी के तट पर वृन्दावन को देखि अति हर्षित हुआ और यमुना गोवर्द्धन देखता हुआ निकुञ्ज मंदिर के द्वार पर पहुँचा और द्वारपाल सखी से कहा कि हम दोनो भगवान् को नृत्य-गान सुनाने आये हैं। तब मेरी आज्ञा से सखी भीतर लिवाय लै गई और तहाँ तुम सहित मुझको देखि प्रणाम करि मेरी आज्ञा से दोनों गाने लगे और ऐसा सुन्दर और मनोहर गान सुनाया कि प्रेम से हम जलरूप हो गये और तिस ही के प्रवाह से ब्रह्म द्रव बन गया, जिसमें यह समस्त ब्रह्माण्ड लुढ़क रहे हैं। जब मैंने वामनरूप धारण किया मेरे चरण से अण्ड फूटि उसमें जल आया, सोई जल गङ्गा है जिसका नाम स्वर्ग में मन्दाकिनी, मृत्युलोक में भागीरथी और पाताल में भोगवती कहाता है। जिसके स्नान, दर्शन और जलपान से कोटि पातकों का नाश होता है। तैसे ही विरजा अपने पुत्रों सहित त्रिवेणी, हरहरि क्षेत्र, कृष्णा इत्यादि भई और ऋभु ऋषि के प्रेम से गण्डकी प्रवाहित भई। यह कहि व्रजनाथ राधिका सहित वृन्दावन लौटि आये और जब गोपांगना मान छोड़ि विरह से व्याकुल भई, तब कृष्ण उनके मध्य में प्रकट हो गये। तब सब गोपी प्रेम से राधा और कृष्ण से मिलीं। तदन्तर कृष्ण ने वेणु नाद किया, तिसको सुनि सब गोपी मुर्च्छित हो गई और देव-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गण, खग, मृग, पशु पक्षी सब ही मोहित हो गये। इस प्रकार रास में सब को सुख दे प्रात होते कृष्ण नन्द बाबा के भवन में चले गये और राधाजी बरसाने को चली गई एवं सब नारी निज-निज ग्रह में प्रवेश कर गई। तदन्तर नन्द यशोदा आदि से मिलि मथुरा चलने की तयारी करी। तब सब व्रजवासी रुदन करते बोले कि हे कृष्ण, तुम व्रज के जीवन प्राण हो। जैसे मृतक के लिये अमृत, शीतग्रसित को अग्नि, ताप तपे को नीर और रोग ग्रसित को औषधि सुखदायक है। तैसे ही हम व्रजवासियों को तुम ही प्राण धन हो, सो व्रज में कब आओगे? तब कृष्ण बोले तुम सब मेरे प्राण हो, मैं व्रजतजि कहीं नहीं जाता। प्राण यहाँ हैं और देह मथुरा में, सो इस देह से प्रतिमास व्रज में आया करूँगा। इस भाँति सब को प्रबोधि एक रथ पर आप और ऊधव, दुसरे रथ पर नन्द यशोदा और तीसरे रथ पर श्रीदामा आदि सखों को बैठारि मथुरा को चले और शेष व्रजवासियों को समुझाय व्रज को लौटाय दिया। मथुरा में आय वसुदेव देवकी से मिले तदन्तर वसुदेव ने कृष्ण बलदेव का यज्ञोपवीत कर्म कराय अवंतिकापुरी (उज्जैन) में सांदीपन गुरु के ढिग विद्योपार्जन निमित्त पठाया। तहाँ एक वर्ष में सर्वांग सहित वेद शास्त्र पढ़ि और गुरु दक्षिणा में समुद्र में बूड़े भये गुरु पुत्र को लाय गुरु पत्नी को दे मथुरा लौटि आये और देवकी माता की आज्ञा से अपने षट भ्राता जो देवगण प्रकट भये थे और जिनको कंस ने वध करि डारा था तिनको लाय और माता पिता को दिखाय एवं पितु मात को ज्ञान दे फिर लौटाय दिया।

राजा बहुलाश्व ने पूँछा कि मथुरा में बलदेव और कृष्ण ने जो अन्य चरित्र किये हों सो कृपा करि वर्णन करिये?

तब नारदजी बोले कि कृष्ण के व्रज जाने पर एक दिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बलदेवजी रथ पर चढ़ि मृगया को गये। तहाँ मार्ग में कौ-शाम्बीपुरी के वासी बलदेव से मिले और महादुःख से आर्त्त-नाद करि बोले कि हे बलदेवजी, कंस का सखा कोल नाम असुर हम को महादुःख देता है जिसके भय से हमारा नृपति आपके अर्थ तप करि रहा है और हम सब आपके शरण हैं। यह सुनि बलदेव कौशाम्बीपुरी को गये। तहाँ कोल असुर समाचार पाय युद्ध को आया और दश अक्षौहिणी दानव दल सङ्ग में लाया, एक बड़े मत्त गज पर बैठि युद्ध करने लगा और अनेक दानवी माया दिखाई। तब घोर युद्ध उपरांत बलदेवजी ने धातु मई शत योजन ऊँची गदा और विकाल मूशल से दानवों सहित उस वाराहरूप दैत्य का संहार करि मोक्ष दी। तब देव गणों ने पुष्प वर्षा करी, फिर बलदेवजी तहाँ के राजा को राज्य सौंपि गङ्गा स्नान हेतु गये और द्विजगण ने बलदेवजी का अभिषेष किया और विपुल धन और धेनु दान में पाई। जहाँ पर बलदेवजी का अभिषेष हुआ था सो अति पुनीत राम-तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। जहाँ कार्तिक पूर्णमा को स्नान दान करने से हरद्वार स्नान का फल मिलता है। यह तीर्थ कौशाम्बी नगरी से चार योजन और वाराह क्षेत्र से भी वायव्य दिशा में चार योजन पर है।

वङ्ग देश का दृढ़ाश्व नाम नृपति एक समय लोमश ऋषि को देखि हँसा। तब ऋषि ने कुपित हो शाप दिया कि कोल मुख दानव होहु। सोई बलदेवजी के हाथ से मुक्त हुआ। फिर तहाँ से बलदेवजी जन्हु तीर्थ में आये और तीन दिन निवास करि स्नान दान किया और तहाँ से पश्चिम भोज स्थान में जाय दान दै एक योजन पर मंडूक ऋषि को दर्शन दिये, जो एक पाउँ से खड़े हो बलदेवजी का ध्यान कर रहे थे। बलदेवजी के पुकारने पर ऋषि ने नेत्र खोले तो देखा कि गौर वर्ण,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नील वस्त्र, श्रवण में कुण्डल और हल मूशलायुध धारण करें श्रीवलदेवजी आगे खड़े हैं। तब साष्टाङ्ग दण्डवत् करी और स्तुति करने पर वलदेवजी ने प्रसन्न हो वर माँगने को कहा। तब मांडूक ऋषि वोले कि कृपा करि सर्व पाप नाश करने हारी श्रीशुकदेव कथित भागवत् दीजिये। वलदेवजी वोले कि श्रीभागवत् तुम को ऊधव से मिलैगी। इस समय ऊधव को कृष्ण ने अपने समान करि व्रज सुन्दरियों के प्रवोध हेतु व्रज में पठाया है और कृष्ण अपने अन्तर्ध्यान होने के समय ऊधव को श्रीभागवत् देयँगे और जब युधिष्ठिर का कष्ट हरने और अर्जुन को उपदेश करने पीछे कृष्ण के निज धाम जाने पर मथुरा में कृष्ण का प्रपौत्र वज्रनाभ और अर्जुन का पौत्र परीक्षित हस्तिनापुर में पृथ्वीपति होयँगे और परीक्षित श्रीशुकदेव मुख से श्रीभागवत् श्रवण करि देह त्यागि परम धाम जावैंगे और उन परीक्षित का पुत्र जन्मेजय यज्ञ करैगा, तहाँ ऊधव आचार्य हो और यज्ञ पूर्ण कराय जन्मेजय सहित वाराह-तीर्थ का दर्शन और दान करते भये तुम्हारे आश्रम पर आवैंगे, तब उनके मुख से तुम को श्रीमद्भागवत् प्राप्त होयगी। यह कहि वलदेवजी उत्तर दिशा में कंटक देश से एक कोश दक्षिण पुष्पवती को गये। तहाँ द्विजों को विपुल धन और धेनु दान में दीं और देव ऋषियों से पूजित हो उनको मन वांछित वर दे वोले कि इस तीर्थ का नाम संकर्षणतीर्थ होगा और जो यहाँ पर स्नान और श्रीहरि पूजन करैगा उसको मन इच्छित फल प्राप्त होगा। फिर सब के सहित मथुरा लौटि आये।

राजा वहुलाश्व ने पूँछा कि मथुरा में कौन-कौन तीर्थ हैं और कौन तप के फल से प्रकट भये हैं और कौन उनका पति है?

तव नारदजी वोले कि परिपूर्ण कृष्ण मधुपुरी के नाथ हैं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कपिल और बाराह यह दो मन्त्री हैं। बाराह को प्रथम रावण लंका में लै जाय पूजन करता था, बहुरि श्रीरामचन्द्र रावण का संहार करि अयोध्या में लाये पुनि शत्रुघ्न उनको लै जाय मथुरा में पूजने लगे। सोई आदि बाराह और कपिल तहाँ के मन्त्री हैं और भूतेश्वर तहाँ कोतवाल हैं और दुर्गा महाविद्या सिंहारूढ़ हो रक्षा करती हैं और मैं तहाँ का अधिकारी ऋषि हूँ। मध्य में मथुरा की देवी सब की अन्न पोषण करने हारी हैं और हरि पार्षद श्याम स्वरूप चार भुजा धारे रक्षा करते हैं एवं मुक्ति देन हारे हैं। मधुपुरी श्रीहरि के मन से प्रकट भई है तहाँ प्रथम ब्रह्मा ने श्रीकृष्ण का ध्यान करि तप किया। तब स्वायम्भुवमनु पुत्र पाया और भूतेश्वर ने शतवर्ष मुकुन्द के ध्यान में तप किया, तब मधुपुरी की कोतवाली मिली और हम घोर तप करने पर तहाँ के अधिकारी भये, दुर्गा तप करि रक्षिका भई, कुवेर तप करि तहाँ के भण्डारी भये। इसके उपरांत ध्रुव और अम्बरीष तप करि मुक्त हुये और शत्रुघ्न ने तप करि लवण नाम दैत्य का वध किया और मधु नाम दैत्य ने तहाँ तप करि हरि के साथ युद्ध करने पर मुक्ति पाई। सप्त ऋषियों ने तहाँ तप करि योग सिद्धि पाई और गोकर्ण वैश्य ने तप करि द्रव्य प्राप्त की। रावण ने तहाँ तप करि सब देवन को जीत लिया और शन्तनु नृप ने तप करि भीष्म समान पुत्र पाया।

यह सुनि राजा ने आगे भी मधुपुरी माहात्म्य श्रवण करने की प्रार्थना करी।

तब नारदजी बोले कि जब बाराह भगवान् पृथ्वी को लाये, तब उसके पूछने पर शूकर भगवान् ने मथुरा का माहात्म्य वर्णन किया। उसी के अनुसार मैं तुम से कहता हूँ कि कृष्ण नाम समान मथुरा भी है, जिसके गुण गान, श्रवण, स्मरण,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दर्शन, स्पर्श और जहाँ स्नान से गोत्र वध, द्विज, स्त्री वध इत्यादि घोर पातक नाश होकर गोलोक वास मिलता है। तेईस कोटि तीर्थ मथुरा में बसते हैं और सप्तपुरी में मधुपुरी शिरमौर है, जहाँ परिपूर्णतम श्रीकृष्ण भगवान् ने जन्म लिया। काशीपुरी तो मृतक को मुक्ति देती है किन्तु मधुपुरी जीवित और मृतक जीवों को भक्ति, भुक्ति और मुक्ति दायक है। जो इस मथुरा माहात्म्य को श्रवण करता है वह भी चारों फल पाता है।

इति श्रीगर्गसंहिता अन्तर्गत बाँके पिया अनुवादित
मथुरा खण्ड सम्पूर्ण शुभ मस्तु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ द्वारिका खण्ड प्रारंभः

दोहा—ध्यान राखि राधा रमण, श्रीगुरु पद शिर नाय।
लिखौं द्वारिका खंड की, हरि लीला सुखदाय ॥

राजा बहुलाश्व बोला कि कृष्ण बलदेव की अति पुनीत मथुरा लीला आपके मुख से श्रवण करी। अब आगे कृष्ण ने जो चरित्र द्वारिका में किये हों और उनके विवाह एवं वंश की कथा वर्णन करिये ?

यह सुनि नारदजी बोले कि राजा तू धन्य है जो श्रीहरि के चरित्र श्रवण करने से तृप्त नहीं होता। सो अब मैं द्वारिका में जैसे कृष्ण के विवाह भये और उनसे जो सन्तान भई एवं तहाँ कृष्ण बलदेव ने जो-जो लीला करीं सो सब तुम से कहता हूँ। ध्यान लगाय श्रवण करो।

नारदजी बोले कि कंस के मारे जाने के पीछे कंस की दो स्त्री अस्ति और प्राप्ति ने पति की मृत्यु से दुखित हो अपने पिता मगध देश के प्रतापी राजा जरासंध के पास जाय उससे सब दुःख व्यवस्था कहि सुनाई। तब जरासंध कुपित हो तेइस अक्षौहिणी सेना लै मथुरा पर चढ़ आया। यह समाचार पाय कृष्ण ने बलदेवजी से कहा कि हे भैया, जरासंध शूर वीर है, उसको छोड़ि सब सेना का निपात करिये। क्योंकि वह परास्त होने पर बेर-बेर बहुत सेना सहित अपने मित्रों को लावैगा। तब अन्य उत्पाती अधर्मी राजाओं का सहज ही में संहार हो जायगा। फिर कृष्ण बलदेव दश अक्षौहिणी दल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लै मथुरा से बाहर आय युद्ध करने लगे और बलदेवजी ने अपना हल मूशल सँम्हारि घोर युद्ध किया। जरासंध की ओर पाँच अक्षौहिणी सेना लै सुयोधन और तीन अक्षौहिणी सेना से वंगदेश का राजा एवं पाँच अक्षौहिणी सेना सहित विंध्याचल का नृपति सम्मिलित भये, तिनसे महा युद्ध हुआ। बलदेवजी ने घोर युद्ध करि सब सेना का संहार किया और सेना की यह दुर्गति देखि सब राजा परास्त हो भाग गये। फिर जरासंध को बलदेवजी ने पटकि चरण से मारना चाहा। तब कृष्ण ने आय छुड़ाय दिया। सो जरासंध अति लज्जित हो तप करने चला। तब उसके मंत्री गण समुझाय बुझाय घर लौटाय ले गये और कृष्ण बलदेव ने सब लूट का धन सम्पत्ति लै मथुरा में प्रवेश किया और यादवों ने दुंदुभी बजाय इस विजय का बड़ा आनन्द किया। सब धन उग्रसेन को दै दिया सो पाय अति प्रसन्न भये। कुछ दिन पीछे बहुरि जरासंध उतनी ही सेना लै युद्ध को आया और फिर परास्त हो भाग गया। इस प्रकार सत्रह बेर जरासंध परास्त हुआ और लूट का धन इतना यदुवंशियों को मिला कि मानो दूसरे कुवेर हो गये और इतना विभव बढ़ा कि अन्य नृपति भयभीत होने लगे। पुनि अट्ठारहवें बेर विपुल सेना लै और सिंधु देश के यवनराज कालयवन को जिसके सङ्ग एक कोटि लाल डाढ़ी वाले म्लेक्ष थे अपने साथ लाया। तब कृष्ण ने विश्वकर्मा को बुलाय समुद्र के मध्य में एक विशाल नगर रचने की आज्ञा दी और उसके अति शोभायमान नगर रचने पर रात ही रात समस्त मथुरा वासियों को तहाँ पहुँचाय दिया और बलदेवजी से विना कहे कृष्ण शस्त्र छोड़ि कालयवन के सामने से भागे। कालयवन ने कृष्ण को भागता हुआ देखि उनका पीछा किया। और एक हाथ के अन्तर से भागते-भागते एक पर्वत की गुफा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में कृष्ण ने प्रवेश किया। तहाँ नृप मान्धाता का पुत्र मुचकुन्द नाम राजा सोय रहा था, जिसने असुरों से षट मास अहर्निश युद्ध करि उनका विनाश किया था। और सुरगणों से यह वर पाया था कि वह इच्छानुसार निद्रा सुख लेय और इस अन्तर में जो निद्रा भङ्ग करै सो उसकी दृष्टि से भस्म हो जाय और फिर जागकर उठने पर उसको श्रीहरि के दर्शन होवैं। तब कृष्ण ने उस पर अपना पीताम्बर उढ़ाय दिया और स्वयं एक पास की गुफा में छिप रहे। पीछे कालयवन ने पीताम्बर ओढ़े पौढ़े भये मनुष्य को कृष्ण जानि चरण से एक प्रहार किया, तब मुचकुन्द उठ बैठा और उसकी दृष्टि पड़ने से कालयवन भस्म हो गया। तब कृष्ण ने चार भुजा से शंख चक्र गदा पद्म एवं पीताम्बर वनमाल और कुण्डल इत्यादि धारण करि उसको दर्शन दिये। और नृप मुचकुन्द के वन्दना और स्तुति करने पर कृष्ण प्रसन्न हो बोले कि बद्रिकाश्रम में जाय तप करो, पीछे ब्राह्मण तन पाय मेरी भक्ति सहित उत्तम मुक्ति पाओगे। यह सुनि चरणों में पड़ि राजा मुचकुन्द तप करने चला गया और कृष्ण ने पुनि मथुरा आय कालयवन की सेना का विनाश किया। इधर जरासंध ने ब्राह्मणों को बुलाय युद्ध हेतु शुभ मुहूर्त्त दिखराय उनको बहुत धन दान में दिया और उस धन को उन ब्राह्मणों के घर पठाय आज्ञा दी कि यदि मेरी विजय होयगी तो और भी बहुत धन देऊँगा अन्यथा सब का वध कर देऊँगा। यह कहि उन ब्राह्मणों को कारागृह में भेज दिया और सेना लै युद्ध करने लगा। तब कृष्ण बलदेव ब्राह्मणों का कष्ट विचारि रण छोड़ि भागे और मगधराज ने सेना सहित पीछा किया और प्रवर्षण पर्वत को देखि कृष्ण बलदेव उस गिरि पर चढ़ गये तब जरासंध ने उस गिरि के चारों ओर सेना से चौकसी कराय गिरि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में अग्नि लगवाय दी। राम कृष्ण तहाँ से अन्तर्धान हो सिंधु मध्य रचाई भई द्वारिका नगरी में पहुँचे और इधर मगधराज कृष्ण बलदेव को भस्म हुआ जानि और निज विजय मानि सहर्ष अपने देश को चला गया। और ब्राह्मणों को विपुल दान दै विदा किया।

अब आगे द्वारावती जाय प्रथम बलदेवजी का विवाह वर्णन करते हैं।

सिंधु मध्य अनर्त्त नाम राजा महा बलवान था, जिसके नाम से उस देश का आनर्त्त देश नाम पड़ा। उसका पुत्र रैवत था जिसकी कन्या रैवती के उत्तम पति की इच्छा करने पर एक दिन रथ पर बैठि सुता सहित रैवत नृप ब्रह्मलोक में ब्रह्माजी के ढिग गया और प्रणाम किया। तहाँ नृत्य गान होते देखि एक मुहूर्त्त बैठा रहा और सभा का कार्य समाप्त होने पर ब्रह्माजी ने आने का कारण पूछा। तब राजा हाथ जोड़ि बोला कि आप जगत् के ईश हैं। सब सृष्टि के उत्पन्न कर्ता हैं। आपका मुख श्रुति, हृदय धर्म, अंग देव, पद असुर, पृष्ठ अधर्म और बुद्धि मनु है। आप सर्वज्ञ हैं। सो कृपा करि इस मेरी कन्या के लिये योग्य, सुन्दर और सर्व गुण सम्पन्न वर बताइये? तब ब्रह्माजी हँसकर बोले कि हे राजन्! तुमको यहाँ आये भये सत्ताइस चौकड़ी युग व्यतीत हो गये, अब द्वापर युग का अन्त है सो यादव कुल में परिपूर्णतम कृष्ण ने निज शेषांश बलदेव सहित अवतार लिया है और समुद्र मध्य द्वारावती नगरी बसाय तहाँ रहते हैं। तुम अपनी कन्या उन बलदेव को विवाह देउ। यह सुनि राजा रैवत ने द्वारिका में आय और सब समाचार कहि बलदेवजी को अपनी रैवती नाम कन्या विपुल दायज सहित विवाह दी और आप बद्रिकाश्रम में तप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करने चला गया। इस प्रकार बलदेवजी का विवाह हुआ जिसके श्रवण से चारों पदार्थ प्राप्त होते हैं। अब आगे कृष्ण के विवाह सुनो।

विदर्भ देश के कुन्दनपुर नगर के राजा भीष्मक की रुक्मिणी नाम कन्या जब विवाह योग्य भई, तब एक दिन मैंने जाय श्रीकृष्ण के गुण और स्वरूप का वर्णन करि कहा कि तेरा विवाह श्रीकृष्ण के साथ होगा। सो सुनकर रुक्मिणी मन में कृष्ण को वरि बहुत हर्षित भई और भीष्मक ने स्त्री सहित विधि-वत मेरा पूजन सत्कार किया। फिर मंत्रियों का मंत्र ले कृष्ण के साथ विवाह होने की आज्ञा दी। तब उसका जेष्ठ पुत्र युवराज रुक्म बोला कि मैं अपनी भगनी कृष्ण को न देउँगा। वरन् चँदेरी के प्रतापी राजा शिशुपाल को देउँगा और कृष्ण की बहुत निन्दा करी। यह समाचार सुनि रुक्मिणी ने शोकातुर हो एक विप्र के हाथ कृष्ण को गुप्त पत्र लिखि द्वारिका पठाया और पत्र में विनम्र भाव से लिखा कि यह दासी अपना तन मन आपके अर्पण कर चुकी। अब मेरी लाज आपके हाथ है। सो कृपा करि वेगि आइये और जब देवी पूजने जाऊँ तब मेरा हरण करिये। यदि विलम्ब हुआ तो इस दासी को जीवित न पाइयेगा।

पद

मुझे चरणों की दासी बनाओ हरी।
मेरे मन की व्यथा को मिटाओ हरी॥

चौबोला—तुम्हारा रूप औ यश जब से है सुना मैंने।
है आप ही को समर्पण ये तन किया मैंने॥
तुम्हारे प्रेम में क्या क्या नहीं सहा मैंने।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये मन अमूल्य रतन भेंट में दिया मैंने ॥
मेरे जीवन की नैया बचाओ हरी ॥ १ ॥
बिछा के सेज चरण आप के दबाऊँगी ।
सुगंध आप के श्रीअङ्ग में लगाऊँगी ॥
विविध प्रकार के व्यंजन बना खिलाऊँगी ।
तुम्हारी आज्ञा शिर धरके मैं बजाऊँगी ॥
मुझे द्वारावती में बुलाओ हरी ॥ २ ॥
विवाह मेरा रुकुम ने यहाँ रचाया है ।
चँदेरी राज्य के युवराज को बुलाया है ॥
पिता के विरुद्ध प्रस्ताव ये उठाया है ।
अकार्थ आप को भी दोष कुछ लगाया है ॥
यहाँ अविलम्ब अति शीघ्र आओ हरी ॥ ३ ॥
किया विलम्ब तो जीवित न पाइयेगा प्रभू ।
लिखा है थोड़ा बहुत मन में लाइयेगा प्रभू ।
भवानी पूजने जाऊँ तो आइयेगा प्रभू ।
वहाँ से हर के चढ़ा रथ पः लाइयेगा प्रभू ॥
घिरी हरणी हरी से छुड़ाओ हरी ॥ ४ ॥
ये पत्र विप्र के द्वारा तुम्हें पठाती हूँ ।
औ अपनी दुःख भरी वार्ता सुनाती हूँ ॥
तुम्हारे नाम का यश, गुण चरित्र गाती हूँ ।
तुम्हारा ध्यान मैं 'बाँके पिया' लगाती हूँ ॥
मुझे मनमोहनी छवि दिखाओ हरी ॥ ५ ॥

इधर रुक्म ने ब्राह्मणों को मंत्रिन सहित टीका दे चँदेरी के राजा दमघोष के पास भेजा । सो नियत समय पर बरात साजि बिना गणपति पूजन करे ही पुत्र शिशुपाल को मौर जामा इत्यादि से विभूषित करि कुन्दनपुर चला और बरात में जरासंध, विदूरथ, शाल्व, गद, दन्तवक्र, पौंड्रक आदि नरेश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निज-निज सेना लै सम्मिलित हुये और कुन्दनपुर के निकट पहुँचि डेरा डाला। इधर भीष्मक ने रुक्म सहित बड़े ठाठ बाठ से अगवानी करि जनवासा दिया और विवाह की तयारी होने लगी और रुक्मिणी कृष्ण के न आने का मन में शोक और विलाप करने लगी। उधर कृष्ण ने पत्र बाँचि, विप्र का सत्कार करि उत्तर में अपने बेगि से आने का पत्र दे, विप्र को विदा किया। और आप रथ में शीघ्रगामी मेघपुष्प, सुग्रीव, बलाहक और सैव्य चार घोड़े जोड़ि और रथपर बैठि कुन्दनपुर की ओर चल दिये। और दूसरे दिन बलरामजी भी कृष्ण गमन का समाचार पाय एक बड़ी सेना सहित कुन्दनपुर जाय कृष्ण से मिल गये। और कुन्दनपुर से कुछ दूर डेरा डाला। तब भीष्मक कृष्णागमन की खबर पाय मुदित हो तहाँ पहुँचे और विवाह उत्सव में सम्मिलित होने के हेतु आगमन जानि, कृष्ण बलदेव का प्रेम से पूजन करि आदर सहित वासस्थान दिया। इसी अन्तर में विप्र ने आय पत्रोत्तर दिया सो पढ़ि रुक्मिणी अति हर्षित भई तदन्तर मङ्गल गान होता हुआ दासियों और वीर सेना के मध्य पूजन सामिग्री सहित रुक्मिणी गौरी पूजने चली और प्रेम से भवानी की पूजा और स्तुति वन्दना करि कृष्ण वर पाने का मन में वरदान माँगा। तब तहाँ की ब्राह्मणी पुरोहितानी ने इच्छित मनोरथ पूर्ण होने का आशीर्वाद दिया और तहाँ से लौटने पर मार्ग में कृष्ण ने मोहनी डारि अपना रथ लाय और रुक्मिणी को बाँह पकड़ि रथ पर बैठार लिया और अपने डेरे में चले आये। यह देखि जरासंध सब राजाओं सहित युद्ध करने आया तब बलदेवजी ने अपने हल मूशल से दन्तवक्र, विदूरथ और पौंड्रक को मारि भगाया और रिपु सेना का निपात करि सब को परास्त किया। तब शिशुपाल दुखित हो तप हेतु चलने को उद्यत हुआ किंतु मन्त्री समुझाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुझाय घर लौटाय लै गये और सब राजा लज्जित हो निज-निज देश को चले गये। यह देखि रुक्म ने क्रोधित हो प्रतिज्ञा करी कि विना कृष्ण का वध करे घर न लौटूँगा और कवच एवं सब आयुध धारण करि प्रबल सेना सहितं कृष्ण से युद्ध करने आया। तब कृष्ण ने घोर युद्ध करि उसके सब आयुध निष्फल कर दिये। तब रुक्म रथ से कूदि खड्ग लै कृष्ण की ओर दौड़ा। कृष्ण ने अपने खड्ग से उसके खड्ग को टूक-टूक कर दिया। और उसको पकड़ि धरती पर पटक दिया और छाती पर चढ़ि उसका मस्तक काटना चाहा। यह देखि बलदेवजी ने कृष्ण को अनीति करने से रोका और रुक्मिणी के विनय करने पर केवल उसका शिर मुण्डन करि छोड़ दिया और रुक्मिणी से बोले हे सुशीले! शोक मत करो, काल की गति मेघ और वायु समान है। काल विष्णु का रूप है, हमारे तुम्हारे भाव जगत के बंधन हैं, जो इनसे रहित है सोई मुक्तजन है। सुख दुख शत्रु मित्र सब कालाधीन हैं। इस कारण किसी को दोष देना उचित नहीं।

रुक्म अति लज्जित हो घर न गया किन्तु तहाँ पर भोजकट नाम नगर बसाय रहने लगा और कृष्ण बलराम रुक्मिणी सहित द्वारिका लौट गये। तहाँ पुरवासियों ने बड़ा आनन्द मनाया और भीष्मक ने शकटों में भराय विपुल दायज, दो सहस्र दासी, हय, गज, रथ, द्वारिका को पठाये। तदन्तर द्वारिका में रुक्मिणी कृष्ण का विवाह बड़े आनन्द से हुआ।

इस विवाह चरित्र को पढ़ने और श्रवण करने से मनः वांछित मनोरथ सिद्ध होते हैं और कृष्ण के चरणों में अचल प्रीति होती है।

सत्राजित यादव ने सूर्य की तपस्या करि उनसे एक सीमन्तक नाम मणि प्राप्त करी। एक समय उस मणि को बाँधि राजा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उग्रसेन की सभा में आया। कृष्ण ने वह मणि देखि सत्राजित से कहा कि यह मणि तो राजा उग्रसेन के योग्य है। यह सुनि सत्राजित खिन्न चित्त हो अपने घर चला गया। कुछ काल पीछे एक दिन सत्राजित का भ्राता प्रसेन उस मणि को बाँधि मृगया हेतु वन को गया। तहाँ एक सिंह उसे मारि मणि लै चला। कुछ दूर पर ऋक्षराज जाम्बवन्त ने सिंह को मारि मणि ले बिल द्वारा अपने स्थान पर जाय उस मणि को अपनी कन्या जाम्बवती के पलना में बाँधि दी। इधर भ्राता प्रसेन के घर न लौटने पर सत्राजित को संदेह हुआ कि कदाचित् कृष्ण ही ने भ्राता को मारि मणि ले ली होयगी। कृष्ण यह चर्चा सुनि मणि की खोज में यादव सेना सहित वन को गये और तहाँ प्रसेन और सिंह को मरा भया पाय रक्त और चरण चिन्ह देखते हुये ऋक्ष के बिल तक पहुँचे। तहाँ यादवन से सत्ताइस दिवस प्रतीक्षा की अवधि कहि कृष्ण बिल भीतर धसे और जाम्बवन्त को अपने भवन में सोता हुआ पाय और मणि को पलना में बँधी भई देखि उसको जगाया तब वह क्रोधित हो युद्ध करने लगा और कृष्ण से अट्ठाइस दिवस युद्ध करने के पश्चात श्रीराम का ध्यान करि कृष्ण को रामरूप पाया। तब चरणों में गिरि स्तुति करी और अपराध क्षमा कराय अपनी कन्या जाम्बवती मणि सहित कृष्ण को भेंट कर दी। इधर सत्ताइस दिवस अवधि व्यतीत होने पर सब यादव निराश हो रोते भये लौट गये। उधर मणि सहित जाम्बवती को साथ लिये कृष्ण द्वारिका में आये। तब कृष्ण को देखि सब हर्षित भये और जाम्बवती से कृष्ण का विवाह हो गया फिर कृष्ण ने सत्राजित को बुलाय सबके आगे वह मणि उसको दे दी। जब यह समाचार सत्राजित ने पाये, तब कृष्ण को मिथ्या कलंक लगाने से अति लज्जित हुआ और अपनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्त्री की सम्मति लै अपनी कन्या सत्यभामा कृष्ण को विवाह दी और वह मणि दायज में दे दी। किन्तु कृष्ण ने मणि को उसे लौटाय दिया। इस प्रकार कृष्ण का दूसरा एवं तीसरा विवाह हुआ।

एक समय जब कृष्ण हस्तानपुर अपनी बुआ कुन्ती के घर गये, तब अर्जुन संग मृगया को कालिन्दी तट पर गये। तहाँ अर्जुन ने एक कन्या को तप करते देखा। उससे तप का हेतु पूछने पर उसने कहा कि मेरा नाम कालिन्दी है और कृष्ण मेरे पति हों। इस मनोरथ से तप कर रही हूँ। तब अर्जुन के कहने पर कृष्ण ने उसे दर्शन दिये और साथ लै द्वारिका आय कालिन्दी के साथ विवाह किया। पंचम विवाह अवंतिकापुरी (उज्जैन) के प्रतापी राजा की कन्या मित्र वृन्दा को स्वयम्वर से कृष्ण के हरि लाने पर उसके साथ द्वारिका में हुआ। कौशल देश में अयोध्या के नृप नग्नजित की परम सुन्दरी कन्या सत्या के पिता ने प्रण किया था कि जो बलवान् पुरुष सप्त वृषभ जो अति बलिष्ठ उसके यहाँ थे उनको एक साथ नाथैगा उसको अपनी कन्या देउंगा। यह सुनि उसके स्वयम्वर में अयोध्या जाय कृष्ण ने सात स्वरूप धारण करि एक साथ सातों वृषभ नाथ दिये और सत्या के साथ विवाह किया और विदा कराय द्वारिका में लाये। फिर कैकेय देश के राजा की कन्या भद्रा से विवाह हुआ। फिर मत्स्य देश के नृपति वृहत्सेन की कन्या लक्ष्मणा के स्वयम्वर में जाय कृष्ण ने मत्स्य वेधि उसके साथ विवाह किया। इस प्रकार यह सब अष्ट पटरानी हुईं। आगे अन्य विवाह सुनो—भौमासुर दैत्य ने बीस सहस्र कन्याओं से एक साथ विवाह करना निश्चय करि स्वयम्वरों से हरि-हरि षोड़श सहस्र एक शत कन्यायें एकत्रित कीं। तिनका आर्त्तनाद सुनि कृष्ण ने भौमासुर (नरकासुर) से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युद्ध करि उसका संहार किया। तब सब कन्या कृष्ण का स्वरूप देखि मोहित हो गईं और कृष्ण ही को पति करने का मनोरथ एवं प्रार्थना करने लगीं। तब कृष्ण ने उन सब कन्याओं को द्वारिका लाय उतने ही स्वरूप धरि एक ही मुहूर्त्त में सब का पाणिग्रहण किया और प्रत्येक के लिये एक-एक मन्दिर बनवाय उतने ही रूप से सबके गृह में रहने लगे। इन सोरह हजार एक सौ आठ रानियों में प्रत्येक से दश-दश पुत्र और एक-एक कन्या उत्पन्न भई। रुक्मिणी के जेष्ठ पुत्र प्रद्युम्न को शौरि गृह से शम्बर दैत्य अपना शत्रु सुनि हर ले गया और समुद्र में डार दिया; वहाँ उसको एक बड़ा मत्स्य निगल गया। उसी मत्स्य को एक खेवट ने जाल में फाँसि शम्बर दैत्य की भेंट किया। दैत्य ने गृह की रसोइनी ब्राह्मणी को रींधने हेतु उस मत्स्य को पठाय दिया। जब उसका उदर चीरा गया तो उसमें से एक बालक निकला। तब मैंने तहाँ जाय रसोइनी को बताया कि यही तेरा पति है इसको यत्न से पालना। क्योंकि कामदेव को शिवजी के भस्म करने पर उसकी स्त्री रती के विलाप एवं प्रार्थनानुसार उसको वर मिला था कि तू अपने पति को फिर पावैगी। तब मैंने ही उसको शम्बर दैत्य के गृह रसोइनी बनकर रहने और अपने पति प्राप्ति की प्रतीक्षा करने की आज्ञा दी थी, सो बालक को पाय हर्षित हो, पति भाव से पालन सेवा करने लगी और बड़े होने पर उसके जन्म एवं अपनी सब व्यवस्था कहि सुनाई और पंच बाण सहित सब धनुष विद्या सिखाई। सोई प्रद्युम्न के शम्बर दैत्य को मारने पर अपना रति स्वरूप धारण करि विमान में बैठि दोनों आकाश मार्ग से द्वारिका पहुँचे। विमान के रुक्मिणी भवन में उतरने पर रुक्मिणी उनको न पहिचान कर आश्चर्य युत देखने लगी। तब सर्वज्ञ कृष्ण ने सब वृत्तान्त कहि सुनाया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिर आनन्द पूर्वक दोनों का विवाह हो गया और तिनसे अनिरुद्ध जो भगवान् के चार व्यूह में एक व्यूह हैं और जो प्रत्येक जीव में प्रचालक रूप से निवास करते हैं उत्पन्न भये।

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि श्रीहरि की विभूति रूप श्री अनिरुद्ध यहाँ क्यों प्रकट हुये, सो कृपा करि वर्णन करिये।

तब नारदजी हँसकर बोले कि भूभार उतारने को श्रीकृष्ण भगवान् ने स्वयं अवतार धारण किया तो उनकी चार मुख्य विभूति वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध का अवतार भी आवश्यक था।

अब आगे सुनो कि मनु सुत नृपति शर्यात ने दो सहस्र वर्ष राज करि अपने तीन पुत्र उत्तान बरहि, अनर्त्त और भूरसेन को तीन दिशा का राज्य बाँट दिया अर्थात् उत्तान बरहि को पूर्व में, भूरसेन को दक्षिण और अनर्त्त को पश्चिम में राज्य दै कहा कि इस मेरे राज्य में मेरे समान राज्य करना। यह सुनि अनर्त्त बोला कि हे पिताजी, यह सब पृथ्वी श्रीहरि की है, इसको तुम अपनी मानते हो सो मिथ्या है। यह वचन सुनि राजा शर्यात् क्रोधित हो बोला कि हे मूढ़, पिता को शिक्षा देता है, इस कारण तू मेरे राज्य से निकस जा। तब अनर्त्त तहाँ से निकसि सिंधु तट जाय तप करने लगा और दो सहस्र वर्ष घोर तप किया। तब श्रीहरि अपना भक्त जानि प्रकट हो "वरं ब्रूहि" अर्थात् वर माँगो ऐसा बोले। तब अनर्त्त बोला कि हे वासुदेव मुकुन्द! वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न और अनिरुद्ध चार व्यूह करि के विख्यात हे अन्तर्यामी, आपने ध्रुव को ध्रुवलोक का राज्य दिया। आप जानते ही हैं कि पिता ने अपने राज्य से निकाल दिया है सो जो उचित हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सो करिये। तब श्रीभगवान् हँसकर बोले कि हे वत्स कोई दूसरी पृथ्वी नहीं जहाँ का राज्य तुझको देउँ। तथापि तेरे हेतु उपाय करता हूँ। यह कहि वैकुण्ठ की शत योजन भूमिलाय सिंधु में चक्र पर स्थापित करि तहाँ का राज्य आनर्त्त को दिया तिस ही भूमि का नाम आनर्त्त देश पड़ा। फिर तिसके पुत्र रैवत ने विन्ध्याचल से एक पर्वत खण्ड लाय स्थापित किया तिस कारण उस पर्वत का नाम रैवत गिरि पड़ गया। फिर तहाँ कुशस्थली विरचि अपनी रैवती नाम कन्या बलदेवजी को विवाह दी और मोक्षद्वार होने के कारण उस स्थान का नाम द्वारावती हो गया। तहाँ मुख्य तीर्थ प्रभास क्षेत्र है, जहाँ स्नान दान करने से परम पद प्राप्त होता है। फिर एक समय द्वारावती देखि भक्त रैवत के नेत्रों से प्रेमजल बहने लगा सोई गोमती तीर्थ हो गया, जिसके स्नान से द्विज हत्यादि घोर पातकों का नाश होता है और प्रयाग स्नान से सहस्र गुण फल मिलता है और चक्रतीर्थ में स्नान करने से कोटि जन्म के पातक नाश होते हैं।

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि चक्रतीर्थ का चरित्र वर्णन करिये।

तब नारदजी बोले कि एक समय कुवेर ने वैष्णव यज्ञ किया उसमें सब देवतागण आये और धन के पति नल कूबर पूजन पर अग्निदेव, परोसने वारे, मरुतदेव, वीरभद्र रक्षक और कुवेर के मंत्री पार्श्व मौलि और घंटानाद दोनों अति अभिमानी और परस्पर वैरी भंडारी नियत हुये। सब देव द्विजों को मनमाना धन मिला। इसी अन्तर में दुर्वासा भी आये और कुवेर से बोले कि हमको अपना बचा भया समस्त धन देउ अन्यथा भस्म कर देउँगा। तब कुवेर ने समस्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन देने की आज्ञा दी। किन्तु उसके दोनों मंत्री बोले कि इस लोभी ब्राह्मण को केवल थोड़ा धन दै विदा करना उचित है। यह सुनि दुर्वासा ने उन दोनों को शाप दिया कि रे मत्त मौलि पार्श्व तू गज हो और हे दुर्बुद्धि घंटानाद तू ग्राह हो। यह शाप दै और कुवेर का दिया हुआ सब धन प्रसन्न हो तिन ही को सौंपि चले गये। तब विष्णु ने वैष्णव यज्ञ में विघ्न देखि दोनों मंत्रियों के स्तुति करने पर उनके शापो-द्धार का भार स्वयं लिया सोई मौलि पार्श्व रैवत पर्वत पर महामत्त गजराज हुआ और गोमती में घंटानाद एक प्रबल-ग्राह हुआ और तीर्थ प्रभाव से दोनों की स्मरण शक्ति पूर्ववत बनी रही। एक दिन जब गजराज अपने कुटुम्ब सहित गोमती में जल क्रीड़ा कर रहा था ग्राह ने आय पाँव पकड़ लिया और जल की ओर घसीटने लगा। तब दोनों में पञ्चावन वर्ष तक युद्ध होता रहा अन्त में जब ग्राह गज को घसीट लै चला और केवल सूँड़ जल से बाहर रह गई। तब व्याकुल हो सूड़ से एक कमल पुष्प तोड़ि विष्णु अर्पण करि आर्त्त-नाद से पुकारा कि हे विष्णु-जिष्णु परिपूर्ण परमेश्वर! हे अशरण शरण! तुम्हारे शरण हूँ रक्षा करिये। उसी समय विष्णु भगवान् आतुर हो गरुड़ छोड़ि प्रकट हो गये और चक्र से ग्राह का मस्तक काटि गज को छुड़ाय दिया। इसी कारण गोमती में चक्र के घूमने से सर्व पातकों का नाशक चक्र-तीर्थ प्रसिद्ध हुआ और गज एवं ग्राह शाप से मुक्त हो पूर्ववत कुवेर के मंत्री हो गये। आगे शंखोद्धार तीर्थ का वर्णन करते हैं।

कृष्ण भक्तजित नाम एक मुनि आनर्त्त देश में आय तीर्थ स्नान करि तीर्थ सेवन करने लगे। उनके पास एक शंख था जिसको उनके एक शिष्य शक्तीवान नाम ने चुराय लिया। तब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय, ...निधि, करौंदी ... वाराणसी-5

मुनि ने शाप दिया कि जिसने मेरा शंख चुराया हो वह शंख हो जाय। शक्तीवान ने भयभीत हो और शरण-शरण पुकारि विनय करी। तब मुनि बोले कि मैंने नहीं जाना कि तुमने चुराया है किन्तु मेरा वचन मिथ्या नहीं हो सकता, दुःख निकन्दन कृष्ण को भजो वही तुम्हारा उद्धार करैंगे। सोई शंख एक सरोवर में कृष्ण-कृष्ण रटता हुआ रहने लगा, एक शत वर्ष पीछे कृष्ण ने उस सरोवर पर जाय शंख-शंख कहि पुकारा। तब वह मुदित हो पाहि-पाहि कहि बोला उसको कृष्ण ने हाथ बढ़ाय सरोवर से बाहर निकाला। तब वह दिव्य रूप धारण करि और स्तुति करि विमान पर बैठि सबके देखते गोलोक चला गया। इस तीर्थ में स्नान दान करने से मोक्ष प्राप्त होती है। सिंह की बृहस्पति में गोदावरी स्नान, कुंभ की शंक्रांत में हरिक्षेत्र में, सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र में और चन्द्रग्रहण में काशी स्नान, दान से जो फल होता है उससे शतगुणा अधिक फल प्रभास क्षेत्र स्नान दर्शन और तहाँ दान करने से होता है। चन्द्रमा ने तहाँ स्नान करि दक्ष के शाप से छूटि पूर्ण कांति पाई। फिर तहाँ पीपर बोध नाम स्थान है, जहाँ कृष्ण ने ऊधव को ज्ञानोपदेश किया था और श्रीमद्भागवत् दी थी। तहाँ श्रीभागवत् वा उसके अर्ध श्लोक को भी पढ़ि सुनकर मनुष्य भगवत् धाम को जाता है। जो मनुष्य उस स्थान पर स्वर्ण सहित श्रीमद्भागवत् का दान करता है उसको अक्षय फल प्राप्त होता है। हे राजन्, जिस मनुष्य ने भागवत् श्रवण नहीं की उसका जन्म व्यर्थ है। गोमती में स्नान करने से अश्वमेध फल प्राप्त होता है, इस पर एक इतिहास कहता हूँ सुनो।

गजपुर (हस्तनापूर) में एक धनी महाजन वैष्य रहता था जो मदिरा पान, पर-दारा सङ्ग, चोरी, जुआ आदि दुष्कर्मों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में रत रहता, हरि कथा से भागता सुकर्मों से द्रोह रखता था। कुछ काल में उसका सब धन नष्ट हो गया क्योंकि अधर्म से लक्ष्मी का क्षय हो जाता है। धन नष्ट होने पर चोरी और डाका डालने लगा फिर जब नृपति की आज्ञा से सब चोर और डाकू निकाले गये तब वह वैश्य वन में रहकर जीव मारि-मारि खाने लगा। तब तहाँ बारह वर्ष अनावर्षण रहा सो दुष्ट पश्चिम दिशा को चला गया, तहाँ एक सिंह से मारे जाने पर यमदूत उसे बाँधि लै चले और उसके शरीर का कुछ मांस सिंह सियार और गिद्धों ने खाया और एक टूक मांस एक गिद्ध लेकर उड़ा तब आकाश के पक्षियों ने घेरा सो उड़ते-उड़ते गोमती तीर्थ पर पहुँचा। तब मांस का टूक गिद्ध के पंजे से छूटि गोमती में गिर पड़ा और उस तीर्थ के प्रताप से वह वैश्य चार भुजा धारण करि श्रीहरि धाम को गया। अब आगे रैवत पर्वत का माहात्म्य कहते हैं।

गौतम मुनि के पुत्र मेधावी ने विन्ध्याचल पर्वत पर दश-लाख वर्ष तप किया तिनके देखने को अपान्तरतम नाम मुनि पर्वत पर आये। किन्तु मेधावी ने न उनको प्रणाम किया और न आदर सत्कार किया। इस प्रकार अपमान से अपांतरतम ने रुष्ट हो शाप दिया कि पर्वत समान बैठे रहने से पर्वत हो जाउ। तब मेधावी पर्वत रूप हो गये। फिर मैंने एक दिन द्वारिका का माहात्म्य सुनाया, तब पर्वतरूप मेधावी ने कहा कि यदि रैवत राजा मुझको उठाय लै जावै तो मैं तहाँ निवास करने से अति प्रसन्न होउँ। तब मैंने जाय रैवत से कहा सो सुनि रैवत ने प्रतिज्ञा करी कि उस गिरि खण्ड को लाय जल-पान करूँगा। यह समाचार पाय प्रथम विन्ध्याचल पर्वत ने अपने सुत मेधावी पर्वत को समझाया। जब वह न माना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब विन्ध्याचल सुमेरु पर्वत की शरण गया और सुमेरु पर्वत सब पर्वतों को साथ ले राजा रैवत से युद्ध करने आया और जब राजा रैवत वाम हस्त से मेधावी खण्ड को उखाड़ कर ले चला। तब घोर युद्ध हुआ और वीर राजा ने एक हाथ से समस्त पर्वतों को विचलित कर दिया और लड़ते-लड़ते थक गया। तब मुझसे सुनि विष्णुजी ने आय राजा को अपना बल दिया। तब राजा रैवत ने सब पर्वतों को परास्त करि उस खण्ड को अपने नगर में लाय स्थापित कर दिया, सोई खंड रैवत पर्वत नाम से विख्यात है, जिसके हृदय में भगवत् भक्त का निवास है। ऐसे पुनीत पर्वत के दर्शन परिक्रमा और तहाँ ब्राह्मण भोजन कराने से अक्षय फल प्राप्त होकर श्रीहरि धाम में निवास मिलता है। फिर तहाँ एक कपिटंक नाम तीर्थ है, जहाँ बलदेवजीने नरकासुर के सखा द्विविद वानर को मारा था. उस तीर्थ के उज्ज्वल जल में देवगण स्नान करने आते हैं। तहाँ स्नान दान करने से सकल तीर्थों से शतगुण अधिक फल प्राप्त होता है। फिर तहाँ एक नृग कूप है उसके स्नान से द्विज हत्या छूटती है। नृग नाम राजा अति दानी था जिसने कोटिन सुरभी दान में द्विजों को दीं किन्तु विना जाने एक दिन एक विप्र की धेनु राजा के दान करने वाली सुरभियों में आय मिली। राजा ने उसको भी दान करि द्विज को दे दी और दोनों द्विजों में विवाद हुआ। राजा नृग उसके बदले में अन्य बहुत सी धेनु देता रहा किन्तु किसी ने न माना और छोड़कर चले गये। तिस ही असावधानी के कारण राजा ककिला योनि को प्राप्त हुआ और उसी कूप में आय पड़ा था जिसको कृष्ण ने निकारि उसका शापोद्धार किया और स्वर्ग को पठाया। तहाँ पर एक सुरभी दान देने से सहस्र गुण फल मिलता है और कोटि जन्म के पातक नाश होते हैं। फिर तहाँ गोपियों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के अंगराग से उत्पन्न गोपीचन्दन उत्पन्न होता है जिसको अङ्ग में एवं तिलक लगाने से वृन्दावन की रज समान फल मिलता है। गंगारज से दुगुण चित्रकूट रज, तिससे दशगुण पंचवटी रज और तिससे शतगुण अधिक फल गोपीचन्दन धारण करने से होता है। इस पर एक कथा सुनाता हूँ।

सिंधु देश में एक दीर्घ बाहु नाम नृप था जो महा पातकी और अधम था। एक दिन मृगया हेतु जब वन को गया तहाँ मंत्रियों ने उसको मार डाला। तब यम के दूत बाँधि लै चले और चित्रगुप्त उसको देखि बोले कि इसने जन्म भर घोर पातक किये हैं, एक पुण्य भी नहीं किया इसे एक कल्प पर्यन्त नरक में डार देउ। यम दूतों ने जब उसे कुंभीपाक नरक में डारा तो नरक शीतल हो गया और वह चार भुजा धारण करि श्रीहरि के धाम को चला गया। तब सबने विस्मित हो व्यासजी से पूछा व्यासजी बोले कि मरने के समय किसी के हाथ से गोपीचन्दन छूटकर इसके अंग पर गिर पड़ा था उस ही गोपीचन्दन स्पर्श के प्रताप से इसको यह दुर्लभ गति मिली है। फिर तहाँ सिद्धाश्रम है तिसकी कथा सुनो।

चन्द्रानना सखी के मुख से सिद्धाश्रम की महिमा सुनि कि तहाँ स्नान करने से हरि वियोग नहीं होता श्रीराधाजी अति उत्साह से सब सहचरियों के यूथ साथ लै सिद्धाश्रम द्वारिका में आई और इधर श्रीकृष्ण भी सब रानियों और यादव कुटुम्ब सहित माधव मास का बड़ा पर्व जानि तहाँ गये। यादव ने गोपियों का स्थान लेना चाहा किन्तु राधाजी की सहचरियों ने जो हाथों में छड़ी लिये थीं दिखाय यादवन को प्रथक स्थान पर ठहरने को कहा। तब कृष्ण की रानियों ने कृष्ण से पूछा कि यह कहाँ की स्त्री और कौन जाति की हैं हम से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृपा करि कहिये। तब कृष्ण हँसकर बोले कि यह मेरी प्राण प्रिया वृषभानु किशोरी हैं जो सकल व्रज गोपियों सहित सिद्धाश्रम स्नान हेतु आई हैं और जिनके भय से सब यादव भयभीत हैं। यह सुनि सब रानियों प्रति सत्यभामा गर्वित हो बोली कि क्या राधा हमसे अधिक सुन्दरी हैं। देखो मेरे हेतु कृष्ण ने शतधन्वा को मारा, कृतवर्मा और अक्रूर भजि गये, मेरी सीमन्तक मणि बीस मन कंचन प्रति दिवस देती है और सब आधि व्याधि को हर लेती है। इसी के कारण यह सब विभव दिखाई पड़ता है। हम कृष्ण साथ गरुड़ पर सवार रहती हैं, हमारे ही प्रेरणा से कृष्ण ने भूमासुर का वध करि इन सब रानियों को छुड़ाया और सबके साथ छै घड़ी में विवाह किया। मेरे ही कहने से कृष्ण इन्द्र से युद्ध करि पारिजात वृक्ष यहाँ लाये, हमने अपने पतिव्रत धर्म से कृष्ण को वश में किया है। मेरे सदृश रूपवती संसार में कौन है जिसने कृष्ण को मोहित कर लिया है। नारदजी को कृष्ण दान हम ही ने दिया था। कहाँ हम सब राजसुता और कहाँ यह गोप अहीरिनि दधि बेचने हारी। यह सुनि सब रानी बोलीं वाह-वाह यह कृष्ण की कैसी अनुचित बात है कि हमारे सामने इन ग्वालिन की बड़ाई कर रहे हैं फिर कृष्ण से सब रानी बोलीं कि तुम जिनकी बड़ाई कर रहे हो और जो तुमको अति प्रिय हैं तिनको हम सब भी देखना चाहती हैं। यह सुनि गर्व प्रहारी कृष्ण सब रानियों को संग लै राधिकाजी के डेरा में गये। तहाँ सब ने देखा कि रत्नसिंहासन पर राधाजी विराजमान हैं, सहचरीगण मणि जटित छत्र चँवर व्यजन लिये सेवा में खड़ी हैं, सुन्दर वितान जिसमें मुक्तों की झालर लगी है तना हुआ है। रंग विरंगे ज़री के मखमली गलीचा बिछ रहे हैं, तारागण मध्य शशि समान चारों ओर गोपी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया बीच में श्रीराधाजी बैठी माधव का गुण गान कर रही हैं। राधाजी के मुखकी शोभा देखि चन्द्र और रतिपति भी लज्जित हैं, यह निहारि सत्यभामा आदि सब रानी मूर्च्छित हो गईं। फिर सचेत हो गर्व रहित बोलीं—धन्य राधा, इनके समान त्रिभुवन में कोई नहीं। हमारे बड़े भाग्य थे जो इनका दर्शन पाया। फिर कृष्ण राधा के समीप गये उनको देखि राधाजी ने उठि गोपियों सहित कृष्ण को आलिङ्गन करि रत्न सिंहासन पर बैठारि पूजन और परिक्रमा करी और बोलीं कि आज हम सबका जन्म सफल हुआ। जो हम भक्ति शून्य को आपने कृपा करि दर्शन दिया। हमारे हित आपने अनेक कष्ट सहन किये, अनेक राक्षसों से रक्षा करी, गोवर्द्धन धारण किया, दावानल पान किया और शंख चूड़ इत्यादि दैत्यों से बचाया। यह कहि फिरि समस्त रानियों से मिलि सब को गादी तकिया लगे भये आसनों पर बैठारा और बोलीं कि जैसे चन्द्र एक है और चकोर अनेक, सूर्य एक है और कमल अनेक, तैसे ही कृष्ण एक हैं और हम सब अनेक। जैसे मणि के गुण परीक्षक, विद्या के गुण विद्वान, काव्य के भाव कवि जानता है। इसी प्रकार कृष्ण का प्रभाव भक्त रसिक ही जानते हैं। यह सुनि सब रानी बोलीं कि हे राधा आप धन्य हैं, जैसी सुनी थीं उससे अधिक हैं, कृपा करि हमारे डेरा में पधारिये। तब सब सहचरियों सहित श्रीराधाजी यादवों के डेरा में गईं और रानियों ने सब का आदर सत्कार करि आसन दिया और भोजन कराया फिर कृष्ण की सेवा में गईं और शयन समय रुक्मिणी ने कृष्ण को उदास देखि कारण पूछा तब कृष्ण बोले—तुमने राधा का सब प्रकार आदर सत्कार भली भाँति किया किन्तु दूध पिलाना भूल गईं। राधा शयन समय दूध नित्य पीती है। यह सुनि रुक्मिणी ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुरत दूध तयार किया और कनक कटोरा में दूध लेकर राधाजी को पिलाया और फिर कृष्ण चरण सेवा को कृष्ण ढिग गई। तब देखा कि कृष्ण के चरणों में छाले पड़े भये हैं सो देखि दुखित हो बोलीं कि अभी तो आपके चरणारविन्द अच्छे थे ये छाले कैसे पड़ि गये? तब कृष्ण बोले तुमने उतावली में राधा को गरम दूध पिलाय दिया, राधा के हृदय में मेरे चरण रहते हैं, इसी से राधा के हृदय दाह से मेरे चरणों में फफोला पड़ गये हैं। यह सुनि सब रानियों ने राधा माधव को एक एवं उनके निगूढ़ प्रेम का प्रभाव जाना और सब का अभिमान नष्ट हो गया और हाथ जोड़ि बोलीं कि जैसा रास आपने ब्रज में राधा और ब्रज गोपियों के साथ किया था सो हम को भी देखने की अभिलाषा है। यहाँ पर राधाजी और सभी ब्रजबाला संयोग वश एकत्रित हैं। यह सुनि कृष्ण बोले कि राधा से विनय करो, विना उनकी इच्छा के रास नहीं हो सकता। तब सब ने जाय राधाजी से विनय करी। राधाजी हँसकर बोलीं कि यह कार्य रासेश्वर कृष्ण का है, उनहीं से विनय करो। तब कृष्ण ने सब की इच्छा जानि पूर्णिमा में रास रचा और दो-दो गोपी एवं दो-दो रानियों मध्य अपने उतने ही रूप धारण किये, सो ऐसी शोभा थी जैसे दो-दो वैदूर्ज मणियों के मध्य एक-एक नील मणि शोभा देती है। फिर राधा माधव ने मध्य में विराजि रास और नृत्य किया और इस आनन्द में रात्रि व्यतीत हो गई। सब रानी प्रेम वश बहुत आनन्दित हुईं। सत्यभामा ने फिर गर्वित हो श्रीकृष्ण से कहा कि ऐसा रास तो न कभी पूर्व में हुआ और न आगे होगा। क्योंकि हम सब के सम्मिलित होने से और भी अधिक आनन्द हो गया। तब दर्पनिकन्दन कृष्ण बोले कि राधाजी से पूछो। तब सत्यभामा ने राधाजी से सोई वचन कहे। राधाजी ने मन ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन हँसि विचारा कि जैसे महिषी वेणु सुनि चारों पाइन से कूदती है, तैसे ही ये सब हरि की रानी रास का रस और मर्म न जानि इसी रास की प्रशंसा कर रही हैं। राधाजी बोलीं कि यहाँ न यमुना है, न वृन्दावन, न वह निकुञ्ज न वह वन वेली, न वह मन्द-मन्द समीर, कहाँ वह कृष्ण का नटवर वेष, कछनी और वेणु धारण करि षटराग और रागनियों सहित नृत्य गान कहाँ वह हाव भाव से कृष्ण का हाथ पकड़ि विलास और क्रीड़ा करना और कहाँ यह रास। जो जहाँ के योग्य है वह तहाँ ही सोहता है। वृन्दावन के रास की तुलना अन्य ठौर नहीं हो सकती। यह सुनि सब रानियों के अभिमान नष्ट हो गये। फिर श्रीकृष्ण सब रानी और व्रज बालन को ले द्वारावती चले आये और सब को तहाँ ही बसाया। इस सिद्धाश्रम के माहात्म्य श्रवण करने से सर्व अघ नाश होकर श्रीहरिधाम में निवास मिलता है। द्वारावती चार सौ योजन की है और चतुर गुण परिक्रमा है, मध्य में दशयोजन का दुर्ग है और दूसरा दुर्ग नवयोजन का, फिर तीसरा दुर्ग कृष्ण का है जिसका घेरा अट्ठाइस कोश का है, तिस में कृष्ण के समस्त नवलाख मंदिर हैं और श्रीराधाजी के मंदिर के निकट एक लीला सरोवर है जो सब तीर्थों का शिरताज गोलोक से आया है। उसमें स्नान करने का फल सहस्र वदन शेष भी वर्णन नहीं कर सकते। इसके अनन्तर षोड़श सहस्र एक सौ आठ अन्य तीर्थ हैं जिनकी प्रदक्षिणा करने से ज्ञान, भक्ति और वैराग प्राप्त होकर श्रीहरिधाम निवास मिलता है। पुनि कृष्ण का विशाल मंदिर पाँच योजन है तहाँ से सौ धनुष पर कृष्ण तन प्रभा से पूर्ण कृष्ण सरोवर है जहाँ जाम्बवती सुत शाम्ब का कुष्ट रोग नाश हुआ था। उसके पूरब दिशा में अट्ठाइस पद पर बलदेव तीर्थ है जहाँ रेवती सहित बलदेवजी ने यज्ञ किया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था सर्व तीर्थ के फल का देने हारा है। श्रीहरि मंदिर से एक हजार धनुष दक्षिण ओर सर्व पाप नाश कर्ता हेरम्वती तीर्थ है जहाँ प्रद्युम्न को शम्बर दैत्य के मारने पर पाय रुक्मिणी ने स्नान किया था फिर हरि मंदिर से दो सौ धनुष पर कल्याण कारक दान तीर्थ है, जहाँ कृष्ण ने दान किया था, तिसकी यात्रा और तहाँ दान देने से वद्रीवन, सैंधव वन और उत्पल वन यात्रा से सौ गुणा अधिक फल मिलता है। फिर हरि मंदिर से अर्ध कोश उत्तर माया तीर्थ है, तहाँ सिंहारूढ़ दुर्गाजी का मंदिर है जहाँ कृष्ण के जाम्वंत की गुफा में धँसने एवं प्रद्युम्न के प्राप्त होने पर कृष्ण की रानियों ने दुर्गा पूजन किया था, जिसके प्रभाव से जाम्वन्ती सहित सीमन्तकमणि लेकर कृष्ण वहुरि आय मिले थे। फिर पूरव द्वार पर दूसरे दुर्ग में इन्द्र तीर्थ है तहाँ स्नान दान से इन्द्र समान विभव प्राप्त होता है दक्षिण द्वार पर सूर्य कुण्ड है जहाँ सत्राजित ने सूर्य तपस्या करि मणि प्राप्त करी थी। तहाँ पद्मराग मणि के दान देने से सूर्य लोक वास मिलता है। तहाँ से पश्चिम दिशा पर सर्व फल दायक ब्रह्म तीर्थ है। फिर उत्तर द्वार पर नील लोहित नाम तीर्थ है, तहाँ नील लोहित शिव और सप्त ऋषियों का मंदिर है जहाँ रावण ने शिव पूजन से इन्द्र पर विजय प्राप्त करी थी, तहाँ स्नान से कैलाश निवास मिलता है और तहाँ ही सप्त समुद्र तीर्थ भी है, जहाँ सर्व देवगण का निवास रहता है और सर्व तीर्थ तहाँ आते हैं, तिसके स्नान से द्वारावती मात्र का फल प्राप्त होता है। तीसरे दुर्ग के पूर्व द्वार के रक्षक पवन-सुत हनुमानज़ी हैं, तिनके प्रणाम पूजन से हरि भक्ति मिलती है। दक्षिण द्वार पर चक्रसुदर्शन के दर्शन से सर्वपातक नाश होते हैं, पश्चिम द्वार पर जाम्वन्त भालु के दर्शन से हरि भक्ति मिलती है। उत्तर द्वार पर हरि पार्षद विष्वक्सेन के दर्शन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से हरि दर्शन समान फल है। द्वारावती द्वार के बाहर पिंडारक तीर्थ रैवतगिरि सागर के तट पर है, तहाँ राजसूय यज्ञ पीछे कृष्णाज्ञा से उग्रसेन ने स्नान दान किया था, तिसमें जगत् के सब तीर्थों का निवास रहता है, इसके स्नान से श्रीहरि धाम प्राप्त होता है। इस प्रकार हरि भगवान् कृष्ण के निवास स्थान द्वारिका की यात्रा का फल अमित है, शेष महेश भी वर्णन नहीं कर सकते।

इति श्रीगर्गसंहिता अन्तर्गत वाँकेपिया अनुवादित
द्वारिका खण्ड सम्पूर्ण शुभ मस्तु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ विश्वजित खण्ड प्रारम्भः

दोहा—विश्वविमोहन कृष्ण के, चरण कमल उर धारि।
लिखहुँ विश्वजित खंड यह, श्रीहरि लेहिं सम्हारि॥

नारदजी बोले कि कृष्ण की लीला अपार है। शेष महेश और शार्दा भी वर्णन नहीं कर सकते। किन्तु तुमको भक्त जानि मुख्य-मुख्य लीला जो कृष्ण ने द्वारिका में करीं सो संक्षेप में वर्णन कर दीं। अब आगे क्या श्रवण करना चाहते हो।

तब राजा बहुलाश्व कर जोरि बोला कि उग्रसेन राजा ने जिस भाँति राजसूय यज्ञ किया था, सो चरित्र श्रवण करने की इच्छा है।

तब नारदजी बोले कि सूर्य वंश में मरुतदेव ने हिमांचल पर्वत की उत्तर भूमि में राजसूय यज्ञ किया था, जिसमें बीस कोस में कुण्ड बनवाये। जहाँ एक योजन का ब्रह्म कुण्ड और दो-दो कोश के अन्य चार कुण्ड प्रत्येक एक हजार हाथ ऊँचा था। सब चार योजन में यज्ञ मण्डल था जो कदली खंभ पताका और मुक्ता झालर से सुशोभित था, तहाँ ब्रह्मा, शिवादि देवगण ऋषि, ब्रह्मऋषि सब आये। दश-दश लाख होता, पाँच लक्ष अध्वर्य और उतने ही उद्गाता थे और कोटि-कोटि व्रतधारी योगी ब्राह्मण आये। विश्वेदेवा अन्न परोसते थे और सम्वर्त्त आचार्य थे उनको सहस्र भार कंचन सहित जम्बूद्वीप दक्षिणा में दिया और कोटिन गज, हय धेनु,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीं और प्रत्येक द्विज को शत-शत भार स्वर्ण दिये। सब को स्वर्ण पात्रों में भोजन कराया सो उच्छिष्ट पात्र सब तहाँ पड़े रहे और जो अभी तक शतयोजन में भूमिस्थ हैं. ऐसा यज्ञ किसी ने नहीं किया। तब अग्निकुण्ड से विष्णु प्रकट हो बोले कि वर माँगु तब मरुतदेव ने चरण कमल की भक्ति माँगी सो दै विष्णु ने अन्य वर माँगने को आग्रह किया। तब मरुतदेव बोले कि भूतल में वैकुण्ठ की भूमि मँगाकर मुझको तहाँ का राज्य दीजिये और आप मेरे सहायक बनकर रहैं। विष्णु बोले कि अष्टविंशत चौकड़ी युग व्यतीत होने पर यह वर प्राप्त होगा। सोई भूमि वैकुण्ठ से आय द्वारिका भई और मरुतदेव उग्रसेन और कृष्ण अपनी संकर्षण शक्ति वल-देव सहित सहायक हुये।

एक दिन नृप उग्रसेन ने कृष्ण को पूजि कहा कि हे प्रभु, हमने नारद के मुख से राजसूय यज्ञ का बड़ा माहात्म्य सुना है सो उसके करने की इच्छा है। यह सुनि कृष्ण बोले कि यादव सब मेरे अंश से हैं सो सारी पृथ्वी के नृपतों को विजय करैंगे तब आप यज्ञ करियेगा। फिर सब यादवन को बुलाय बीड़ा उठाने को कहा, सो देखि सब चुप हो गये किन्तु प्रद्युम्न ने बीड़ा उठाय लिया। तब कृष्ण ने प्रसन्न हो गर्गाचार्य को बुलाय अभिषेप कराया और उग्रसेन ने तिलक किया और माला पहिराई फिर सबने लाय-लाय भेंट दीं। उग्रसेन नृप ने खड्ग, बलदेव ने कवच, कृष्ण ने अपना सारंग कुण्डल, कीटि, चँवर, पीताम्बर और छत्र दिये, वसुदेव ने शतचन्द्र नाम कटार दी, ऊधव ने हाटक माल, अक्रूर ने दक्षिणावर्ती शंख और गर्गाचार्य ने विजय मंत्र दिया। फिर देवगण आये, ब्रह्मा ने पद्मराग मणि, शिव ने त्रिशूल और पाश, यम ने दण्ड, सूर्य ने गदा, कुवेर ने मणिमाल, चन्द्रमा ने चन्द्र-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कान्ति मणि, धरणी ने पादुका, दुर्गा ने कुन्तल, इन्द्र ने रथ जिसमें मन समान है वेग गति जिनकी, ऐसे घोड़ लगे हैं विजय पताका एवं घंटा सहित दिया। फिर बहुत बाजन बजाये गये और पुष्प, फल, अक्षत, लावा, की वर्षा की गई। नव नृपति, गुरु आचार्य और कृष्ण बलदेव के चरणों की वन्दना करि. प्रद्युम्नजी चले। संग में ऊधवादि यादव, शूरसेन, अंधक, भोज, विष्णु, दशार्ह वंशी छप्पन कोटि यादवन की भीड़ चली और कृष्ण के भ्राता गद सारणादि और पुत्र साम्बादि कुण्डल, कीटि कवच धारण करि सब युद्ध सम्बन्धी सामान कुंजर, हय, रथ, डंका, ध्वजा, पताका अस्त्र शस्त्र इत्यादि लै साथ में चले और कृष्ण ने सब नीति वचन समुझाय विदा किया अर्थात् सोते भये, मत्त, स्त्री, शरणागत, अस्त्र शस्त्र रहित और भागते हुये पर शस्त्र न चलाना, सदा धर्म पर आरूढ़ रहना और जो रण में शूरवीर्ता से मरते हैं सो परम गति पाते हैं। क्षत्री होकर रण से भाजने पर रौरव नरक में वास होता है। गो, द्विज, वेद, निजधर्म और साधु का सदा आदर करना उचित है। राज प्रबन्ध और रक्षा के हेतु कृष्ण बलदेव द्वारिका में रहे। ऊधव को मंत्री करि प्रद्युम्न के साथ कृष्ण के अट्ठारह पुत्र वृक, अरुण, सुनन्दन, साम्ब, वृहद्रवि, अतिधन, वेद बाहु, न्यग्रोध, सुभानु, दीप्तमान, श्रुति-देव, मधुक, विचित्रभानु, सविरूपा और वृहद्भानु इत्यादि एवं अनिरुद्ध यह सब महारथी सेना सहित चले। सोलह कोश में इनकी भीड़ थी। अब सेना की संज्ञा कहते हैं, सौ गज, हजार रथ, दो हजार घोड़े सवार और एक लाख पैदल की एक सेना और उसकी द्विगुण चतुरंगनी कहाती है। दो सहस्र रथ, चार लाख घोड़े, चार सौ कुंजर और शतलक्ष अस्त्र धर पैदल की एक वाहिनी और इसकी द्विगुण प्रतिना होती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। दो हजार गज, दो लाख रथी दश कोटि घुड़सवार और घुड़सवार के सौगुने पैदल की एक अक्षौहिणी सेना कहाती है। अब वीरों की संज्ञा कहते हैं—सौ वीर के साथ संग्राम करने हारा शूर वीर कहाता है, सौ शूर वीर के साथ लड़ने वाला सामंत और सौ सामंत को जीतने हारा गजी कहाता है और अपने ही रथ, घोड़े और सुत की रक्षा करने हारे को रथी कहते हैं और जो अपने दल भर की रक्षा करै सो महारथी है और जो अपने दल की रक्षा करता हुआ पर दल को मारै सो अति रथी कहाता है। कृष्ण ही भूभार उतारने को यह लीला करि रहे हैं। प्रद्युम्न सब सेना सहित प्रथम कच्छदेश में गये, तहाँ का राजा गोकरण इस प्रबल सेना को देखि बहुत से गज, हय और बारह भार कंचन भेंट लै प्रद्युम्न से मिला और प्रणाम किया। प्रद्युम्न ने उसके गरे में माला डारि कहा कि तुम सुख से राज्य करो। फिर तहाँ से कलिंग देश में गये, तहाँ का राजा भारी सेना लै युद्ध को आया। तब अनिरुद्ध ने अकेले बढ़कर धनुष चढ़ाय सौ बाणों से राजा का धनुष काट दश-दश बाण मंत्रियों पर मारे और राजा का रथ घोड़ों सहित चूर्ण-चूर्ण कर डारा फिर गदा लै बहुत से कुञ्जर और वीरों का बध किया। महाबली नृपति कलिंग भी अकेला वीरता से लड़ता रहा, तब कृष्ण के भ्राता गद ने कोप करि गदा हाथ में लै कलिंगपति के कुञ्जर पर ऐसी मारी कि हाथी का शीश फट गया और चिक्कार मारि भागा। तब कलिंगपति गज से कूदि गदा युद्ध करने लगा। गद ने उसकी गदा पकड़ि और घुमाय उसको धरती पर पटक दिया और उसके मारने की घात लगाई, तब कलिंगपति प्रद्युम्न को टेरि शरण में आया। इस भाँति कलिंगपति को जीति मरुधन्व नगर को गये। तहाँ के गय नाम राजा के पास ऊधव को पठाय यह सँदेशा भेजा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि उग्रसेन नृपति ने राजसूय यज्ञ किया है सो कर देउ वा युद्ध करो। यह सुनि गय नृप क्रोध करि एक अक्षौहिणी सेना साथ लै अपने पर्वत के दुर्ग से युद्ध हेतु निकला और भयंकर युद्ध होने लगा। तब कृष्ण पुत्र दीप्तमान ने धनुष टंकारि तीक्ष्ण बाणों से बहुत सेना का संहार किया और गय का स्यंदन तोड़ि एक शक्ति द्वारा गय को मूर्च्छित करि और उसके गरे में धनुष डारि घसीट कर प्रद्युम्न के सामने लाय डारि दिया। तब गय ने मूर्च्छा भङ्ग होने पर प्रद्युम्न का पूजन किया और भेंट दी। फिर तहाँ से अवन्तिकापुरी में आये तहाँ कृष्ण के बहनोई विन्द और अनुविन्द भेंट लै प्रेम सहित प्रद्युम्न से मिले। फिर नर्मदा तट माहिष्मतीपुरी को गये, तहाँ के राजा इन्दु नील ने कहवाय पठाया कि हम दुर्योधन नृपति को वार्षिक कर देते हैं और वे हमारे रक्षक हैं। इसलिये हम दूसरे किसी को कर नहीं देहैंगे। सो सुनि प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि उग्रसेन नृपति को नहीं पहचानते। जब गय और कलिंग जैसी गति होयगी तब कर देउगे। यह सुनि और प्रबल शत्रु विचारि पाँच सहस्र गज उतने ही तुरङ्ग एवं बहुत धन लै प्रद्युम्न को भेंट में दिया। तहाँ से गुजरात को गये. तहाँ का राजा ऋष्य नाम भेंट लै मिला। फिर चेदि नगर में आये, तहाँ के नृप दमघोष जो कृष्ण का फूफा था उसके पास ऊधव गये और कहा कि महाराज उग्रसेन ने राजसूय यज्ञ किया है उनको कर देउ। तब उसका पुत्र शिशुपाल क्रोधित हो बोला कि काल की गति अति विचित्र है कि कुलाल ब्रह्मा होना चाहता है और काग हंस, मूर्ख पण्डित और सेवक स्वामी होना चाहते हैं। ययाति के शाप से भ्रष्ट भये यादव धन पाय उन्मत्त हो गये। जैसे निर्धन धन पाय सब को तृण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समान जानता है, तैसी ही यादवन की गति है उग्रसेन कब का भूप है जो कृष्ण के बल पर प्रसिद्ध होना चाहता है। कृष्ण मगधराज से भाजि समुद्र में बसा है। प्रथम अहीर नन्द की धेनु चराया किया, द्वै पिता का पुत्र कहिवाय लाज नहीं आती। यह कहि और धनुष बाण लै युद्ध करने चला। पिता दमघोष ने बहुत समुझाया कि यादव और चेद का एक सम्बन्ध है इसलिये सदा संधि उचित है, लड़ाई करने से कार्य में हानि होती है। किन्तु शिशुपाल अभिमानी न समझा फिर वसुदेव की भग्नी श्रुतिश्रवा दमघोष की स्त्री पुत्र शिशुपाल को गोद में बैठारि प्रेम से बोली - हे पुत्र, राम कृष्ण भैया के पुत्र से लड़ना उचित नहीं, प्रेम से उनकी पहुनाई करो और हर्ष सहित भेंट देउ, मैं उनको देखने जाती हूँ। तब शिशुपाल रुष्ट हो बोला कि यह राम कृष्ण मेरे वैरी हैं। अभी कुन्दनपुर से मेरी स्त्री विवाह समय हरि लै गये हैं। जो तुम सब उनका पक्ष करोगे तो कंस समान पिता की गति कर देऊँगा। राम कृष्ण मेरे काल सदृश्य हैं। तब दमघोष मौन हो गया और ऊधव ने आय सब वृत्तांत प्रद्युम्न से कह सुनाया। तब इधर से अक्रूर, सातिकी, कृतवर्मा आदि सेना ले आगे बढ़े और उधर से द्युमत, शक्ति, रङ्ग और पिङ्ग मंत्री एक अक्षौहिणी सेना लै निकसे। परस्पर शर, शक्ति, तोमर, भुशुंडी, परिघ और गदा चलने लगे प्रथम द्युमत और अक्रूर ने घोर युद्ध किया। द्युमत की शक्ति से जब अक्रूर मूर्च्छित हो गये तब सातिकी ने अपने वज्र समान बाणों से द्युमत का शीश काटि गिराया। फिर शक्ति ने अपने गदा से बहुत सेना का निपात किया, तब कृतवर्मा ने उसका रथ उठाय एक योजन पर घुमाय फेंक दिया फिर रङ्ग और पिंग मंत्री धनुष चढ़ाय लड़ने लगे और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनेक वीरों का संहार किया। यदु सेना को अधीर देखि प्रद्युम्न बोले कि हम इन वीरों को अभी मारते हैं। यह सुनि कृष्ण पुत्र भानु बोले कि तुम्हारे जाने की आवश्यकता नहीं, हम दोनों का शीश काटे लाते हैं। यह कहि भानु खड्ग लै रिपु दल में घुसे और बहुत सूर वीर गज हय सहित काटि डारे फिर रङ्ग पिंग के खड्ग काटि दोनों के मस्तक काटि गिराये और दोनों के शीश लाय प्रद्युम्न के आगे धरि दिये। तब यादव दल में दुंदुभी और शंखनाद होने लगा। अपने दल की पराजय सुनि चैद्य कुपित हो लड़ने आया और बाणों से बहुत यादव भट मारि गिराये। तब यादव सेना भागने लगी। यह देखि प्रद्युम्न इन्द्र के दिये हुये रथ पर चढ़ि शिशुपाल से युद्ध करने लगे। शिशुपाल ने परशुराम से प्राप्त अग्निबाण छोड़ा जिसकी शिखाओं से सेना जरने लगी। तब प्रद्युम्न ने परजन्य अस्त्र छोड़ि सब अग्नि बुताय दी। फिर शिशुपाल ने गज अस्त्र जो कुम्भ मुनि से मलयागिरि पर पाया था छोड़ा, तिससे कोटिन गज निकरि यादव सेना का मर्दन करने लगे। तब प्रद्युम्न ने नरहरि अस्त्र छोड़ा, तिसमें से भगवान् नृसिंह प्रकट भये और अपने नखों से सब गज समूह का नाश करि अन्तर्ध्यान हो गये। फिर शिशुपाल ने परिघ छोड़ि पुकारा कि अब नहीं बच सकते। तब प्रद्युम्न ने यम दण्ड छोड़ि उसके दो टूक करि दिये। फिर शिशुपाल खड्ग लै प्रद्युम्न को मारने दौड़ा। तब प्रद्युम्न ने उसके खड्ग को दण्ड से काटि उसको उठाय धरणी पर पटक दिया और छाती पर चढ़ि मारना ही चाहते थे कि कृष्ण के भ्राता गद ने आय हाथ पकड़ लिया और समुझाया कि इसके मारने की प्रतिज्ञा कृष्ण कर चुके हैं। यह सुनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रद्युम्न ने शिशुपाल को छोड़ दिया। तब दमघोष बहुत भेंट लै स्त्री सहित प्रद्युम्न से मिले और प्रेम से प्रद्युम्न को कण्ठ से लगाय बोले कि धन्य-धन्य प्रद्युम्न! तुमने आज मेरे पुत्र को जीवदान दिया और उसका अपराध क्षमा किया। चैद्य की हार सुनि बहुत से नरेशों ने आय-आय प्रद्युम्न को भेंट दी। फिर तहाँ से मनु तीर्थ स्नान करि कौंकण देश गये। तहाँ का राजा मेधावी शत्रु परीक्षार्थ मल्लवेष धरि गदा लै यादव दल में गया और बोला कि मैं अकेला तुम सब से गदा युद्ध कर सकता हूँ। मुझ से युद्ध करो वा मेरे पाँवन पर शीश धरो। तब कृष्ण के भ्राता गद क्रोध करि गदा लै युद्ध को उद्यत भये और युद्ध करि, एक गदा ऐसी मारी कि राजा के मुख से रुधिर धारा बहने लगी। तब कौंकण के नृप ने कहा कि मैं परीक्षा हेतु आया था, कहाँ श्रीहरि की सेना और कहाँ मैं प्राकृत् जीव। तदन्तर बहुत भेंट लाय आगे धरी। फिर तहाँ से कृष्णा वेणी होते भये तैलङ्ग देश को गये तहाँ का भूप विशाल अक्ष अपने उपवन में स्त्रियों सहित विहार कर रहा था। तब मंदार मालिनी नाम स्त्री बोली कि हे नृप! तुम सदा नृत्य गान में रहे, युद्ध करना नहीं जानते। देखो यादवन की प्रबल सेना आई है, युद्ध करो वा कर देउ। यह सुनि विशाल अक्ष बहुत भेंट लै प्रद्युम्न से मिला। फिर महाराष्ट्र के भूप हरि भक्त विमल से भेंट लै करणाटक गये, तहाँ के नृपति सहस्रजित से भेंट लै करूष नगर में आये. तहाँ महारङ्गपुर के नृप वृद्धशर्म जिनकी स्त्री श्रुतदेवा नाम कृष्ण की फूफी थी तिसके पुत्र दन्तवक्र ने भी शिशुपाल समान अपने मातु पिता की आज्ञा उल्लंघन करि युद्ध की तयारी की। यह दन्तवक्र कंस के सदृश्य अति बलवान और कज्जल गिरि के समान काला था, सो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रोधित हो लड़ने चला। इसका शरीर दश ताल ऊँचा था सो एक लक्ष भार की गदा लै अकेला ही युद्ध हेतु आया। तब प्रद्युम्न ने दश अक्षौहिणी सेना सहित प्रबल वीर भेजे। बाण, परश्वध, बरछी, भाला, तोप, शतघ्नी, शूल और शक्ति लिये हुये शूरवीरों ने उसको चारों ओर से इस प्रकार घेर लिया मानो सिंह को बकरियों ने घेर लिया हो। तब दन्तवक्र ने गदा घुमाय बहुत से मत्त गयंदों का संहार किया, कितनों को पुष्प तुल्य आकाश की ओर फेंक दिया, कितने भटों का पग से मर्द्दन किया, प्रद्युम्नादि ने अपने शरों से उसके शरीर को झंझर कर दिया। किन्तु अतिबली दन्तवक्र ने सब का बल हरि लिया। कृतवर्मा ने बाणों से सात्विकी ने खड्ग से और अक्रूर ने शक्ति से प्रहार किया। तब दन्तवक्र ने गदा से सब को मूर्च्छित कर दिया फिर जाम्बवती सुत शाम्ब अपनी गदा लै सन्मुख भये। दन्तवक्र ने गदा फेंकि शाम्ब को उठाय पटक दिया फिर शाम्ब ने उठि दन्तवक्र को पछाड़ दिया और दोनों वीर मल्ल युद्ध करने लगे। तब प्रद्युम्न ने अपना रथ आगे बढ़ाया, तिनको देखि दन्तवक्र बोला देखो काल की गति कि सियार भी सिंह से लड़ना चाहते हैं। तुम तो उन्हीं कृष्ण के बेटा हो जो मगधराज से भाग चुके हैं, जो नन्द अहीर के बेटा हैं, दूध दधि के चुराने हारे, परतिय लम्पट, उग्रसेन सुत घाती थे। यह सुनि प्रद्युम्न ने उत्तर दिया कि रे खल, कुन्दनपुर के संग्राम को भूल गया? जहाँ से सब भाज ठाढ़े भये थे। नन्दादिक गोप गोपीगण द्रोण वसु और गोलोक के गोपी ग्वाल सब कृष्ण अङ्ग से सम्भूत थे। उग्रसेन मरुतदेव है और कृष्ण परिपूर्णतम उग्रसेन की रक्षा हेतु एवं दैत्यों के निधन करने को प्रकट भये हैं। रे क्रूर शठ! तू वृथा निन्दा करि रोय रहा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह उत्तर सुनि दन्तवक्र ने अपनी गदा प्रद्युम्न के रथ पर मारी, तिसके लगने से रथ के सहस्र घोड़े व्याकुल हो गये। तब प्रद्युम्न ने गदा का प्रहार किया, जिससे दन्तवक्र कुछ विकल हो उठा, फिर परस्पर दोनों में घोर गदा युद्ध हुआ। दन्तवक्र ने प्रद्युम्न को उठाय धरती पर पकट दिया फिर प्रद्युम्न ने उठि दन्तवक्र को उठाय पुष्प तुल्य इतने जोर से भूमि पर पटका कि पृथ्वी हिल गई और दन्तवक्र के मुख से रुधिर की धार बहने लगी। तब दन्तवक्र ने हार मानि मात पिता सहित भेंट लाय प्रद्युम्न का पूजन किया और प्रेम से परस्पर मिले, तिस पीछे दक्षिणसिंधु का स्नान करि उशीनर नगर को गये, तहाँ के गोपगण दधि गोरस भेंट लाये। प्रद्युम्न ने उनको बहुत धन दिया। फिर चम्पावतीपुरी में आये तहाँ के भूप मागद ने दश सहस्र कंचन माला भेंट में दीं। फिर विदर्भ देश में कुन्दनपुर आये और नाना से मिलि भेंटि कुन्तभोजपुर गये तहाँ मलयाचल पर्वत पर अगस्त्त मुनि के दर्शन किये और उनसे ज्ञानवार्ता और भागवत् धर्म सुनि ताम्रपर्णी स्नान करि राजपुर में आये, तहाँ द्विविद वानर का सखा शाल्व राज्य करता था सो कोप करि प्रद्युम्न के दल में आय सेना दलन करने लगा। तब प्रद्युम्न ने कठिन बाण मारि उसको लंका भूमि में डार दिया, तहाँ से कूदि त्रिकूट मैनाक सिंहलद्वीप भरतखण्ड और हिम गिरि होता हुआ प्राग्जोतिषपुर में भाजि गया। इस प्रकार शाल्व को जीत बहुत सी भेंट लै मल्लार देश गये, तहाँ के भूप को जीति और भेंट लै दक्षिण मथुरा में आये फिर सेतुबन्ध रामेश्वर में सिंधु तट बैठि सब मंत्रियों के बीच प्रद्युम्न ने कहा कि लंका का राजा विभीषण बड़ा धनी और बीर है तिससे भी भेंट लेना आवश्यक है। तब ऊधव बोले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आप देवन के देव परिपूर्णतम श्रीकृष्ण रूप हैं, हम लोगों से मनुष्यों के समान क्या पूछते हैं। ब्रह्मादिक आप के आज्ञाकारी हैं फिर हम तो दासों के दास ही हैं। यह सुनि प्रद्युम्न ने विभीषण को पत्र में लिखा कि भोजराज उग्रसेन को कर देउ, नहीं तो बाणों का सेतु बाँधि घोर संग्राम करि तुम से भेंट लेउँगा। यह लिखि और धनुष बाण लै श्रवण पर्यन्त संधानि शर त्याग दिया सो बाण पत्र सहित घोर शब्द करता हुआ विभीषण की सभा में आय गिरा, जिसको देखि और पढ़ि सब चकित हो गये। इसी अन्तर में शुक्रजी का आगमन हुआ, विभीषण ने उनका पूजन करि और पत्र सुनाय पूछा कि यह कौन उग्रसेन और प्रद्युम्न हैं, तिनका वृत्तान्त कहिये?

तब शुक्राचार्य बोले कि एक समय बाल ब्रह्मचारी संकादि भगवान् के दर्शन को वैकुण्ठ में गये, जब मंदिर में प्रवेश करना चाहा तब जय और विजय द्वारपालों ने रोका। संकादि ने द्वारपालों का अनुचित कर्म देखि उनको शाप दिया कि तीन जन्म तक मृत्यु लोक में राक्षस योनि में उत्पन्न होउ। भगवान् ने यह समाचार सुनि भक्तों के वचन सत्य करने को उन द्वारपालों के उद्धार का भार स्वयं लिया और जब प्रथम बेर वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु असुर भये तब भगवान् ने वाराह और नृसिंह रूप धरि उनको मुक्त किया। फिर रावण और कुम्भकरण भये, तब रामरूप धरि उनका उद्धार किया। अब वेही दन्तवक्र और शिशुपाल भये हैं, तिनही के संहार और उद्धार हेतु स्वयं भगवान् ने कृष्ण बलदेव रूप धारण किया है और कंस को निधन करि द्वारिका में उग्रसेन की रक्षा कर रहे हैं। तिनके पुत्र प्रद्युम्न जो भगवान् के चार व्यूह में से एक व्यूह हैं, विश्व विजय हेतु आये हैं। यह सुनि भक्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभीषण ने प्रसन्न हो बहुत सा कंचन, मणि और मुक्ता लै आकाश मार्ग से आय प्रद्युम्न का पूजन किया और भेंट धरि स्तुति करी। तब प्रद्युम्न ने कण्ठ से लगाय और अनपाइनी भक्ति का वरदान दै विदा किया। तहाँ से ऋषभ शैल देखते भये श्रीरङ्ग और कांची गये, तहाँ काम कोष्णि कावेरी स्नान करि आगे वढ़े। तव एक हृष्टपुष्ट पुरुष को वालकों से घिरा हुआ देखा, कोई ताली पीटता, कोई उसका हाथ पकड़ि ऐंचता, कोई धूलि फेंकता, यह देखि प्रद्युम्न ने ऊधव से पूछा कि यह कौन पुरुष है? तब ऊधव ने कर जोड़ि कहा कि यह परम हंस अवधूत अत्रि पुत्र दत्तात्रेय हैं। प्रद्युम्न ने उनको लाय सिंहासन पर वैठारि पूजन किया और कर जोड़ि पूछा कि हे ब्रह्मन्! जगत् और ब्रह्म का भेद वर्णन करिये? तब दत्तात्रेयजी बोले कि जब तक रात्रि है, तब तक दीपक की भी आवश्यकता है। जब अंधकार नाश हुआ, तब वाती का कौन काम? इसी प्रकार जब ज्ञान रूपी सूर्य्य का उदय हो जाता है तब अज्ञान रूप तिमिर स्वयं नाश हो जाता है और ब्रह्म दिखाई पड़ने लगता है। यह सुनि प्रद्युम्न ने उनको साष्टंग प्रणाम करि तहाँ से द्रिविड़ देश में आये, तहाँ के राजा सत्य धर्म परायण से पूजित हो पंपासर में आये फिर तहाँ से गोदावरी भीमरथी होते भये महेन्द्र पर्वत पर गये, तहाँ परशुरामजी के दर्शन करि पूजन किया। परशुरामजी ने योग्य वल से सेना सहित सब यदुवंशियों को नाना भाँति के पक्वान भोजन कराये। प्रद्युम्न जी ने हाथ जोड़ि पूछा कि श्रीहरि को कौन भक्त अति प्रिय हैं। तब परशुरामजी बोले कि आप सब जानते भये भी लोक कल्याण हेतु पूछते हैं, सो सुनिये। जो हरि-पद के निष्किंचन भक्त हैं, जो सदा हरि कथा श्रवण कीर्त्तन में निमग्न रहते हैं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरि स्वरूप के रङ्ग में प्रति क्षण रंगे रहते हैं, जो सदा जीवों पर दया रखते हैं और सदा जीवों की रक्षा करते हैं और जो प्राकृत् गुणों से न्यारे रहते हैं वे भक्त श्रीहरि को अति प्रिय हैं और जगत् के पावन करने हारे हैं। ऐसे भक्त की तुलना ब्रह्मा, शेष और योगीजन भी नहीं कर सकते। तिन भक्तों को श्रीहरि पद कमल रज छोड़ि भुक्ति मुक्ति किसी वस्तु की काँक्षा नहीं रहती। ऐसे भक्तों के आधीन हो श्रीहरि भक्तानुकूल कार्य किया करते हैं।

पद

हरि को प्रेय है सोइ दास।
सदा सुमिरण करत हरि को, त्यागि पर की आस॥
श्रवण करि हरि चरित गावत, राखि हिय विश्वास।
प्रेम सों हरि नाम निश दिन, जपत है प्रति स्वास॥
दुःख सुख अपमान मान, समान अरु गत त्रास।
युक्त अहार विहार राखत, युक्त योगाभ्यास॥
लखत हरि को रूप इक रस, गुप्त और प्रकाश।
त्यागि निन्दा द्वेष स्तुति, करत निर्जन वास॥
तीन गुण तें रहित, जग तें सदा रहत उदास।
'बाँकेपिय' ता भक्त-पदरज, करत हिय तम नाश॥

यह सुनि प्रद्युम्नजी प्रणाम करि तहाँ से अङ्ग देश में आये, तहाँ के राजा से भेंट ले उड़ीसा में डामरपुर गये, तहाँ के नृप वृहद्बाहु से साम्ब ने युद्ध करि और भेंट लै वंग देश पहुँचे। तहाँ का नृपति धन्वा एक अक्षौहिणी दल लै युद्ध को आया। कृष्ण पुत्र चन्द्रभानु ने उसको युद्ध में जीति भेंट लै और उत्तर में ब्रह्म पुत्र के नृपति को परास्त करि भेंट लै कामरूप में आये,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तहाँ के राजा पुंड्र से घोर युद्ध हुआ। पुंड्र ने अपनी आसुरी माया से राक्षस गुह्यक गंधर्व प्रकट करि चारों ओर से यादव सेना को घेर लिया। तब प्रद्युम्न ने कृष्ण का दिया हुआ आध्यात्म शर छोड़ि सब पिशाची माया नष्ट कर दी और पुंड्र को रथ सहित उठाय गगन मंडल में दो घड़ी घुमाय पृथ्वी पर पटक दिया। फिर पुंड्र ने उठि गदा लै प्रद्युम्न पर चलाया। प्रद्युम्न ने अपनी गदा से बचाय ऐसी गदा मारी कि पुंड्र मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़ा और मुख से रुधिर धारा निकलने लगी। तब भेंट लै प्रद्युम्न के चरणों पर गिरा। फिर तहाँ से उत्तर विपाशा और सोन सिंधु तट केकय देश में आये, तहाँ का नृपति वसुदेव का बहनोई धृतकेतु जिनकी स्त्री श्रुति कीर्ति थी राज्य करता था। उससे प्रेम सहित मिलि पूजा कराय और भेंट में अपार धन लै मिथलापुर में आये। तब ऊधव ने कहा कि यह जनकपुरी है, यहाँ का राजा धर्मज्ञ और परम भक्त है जिसका पुत्र बहुलाश्व भी श्रीकृष्ण का परम भक्त है और कृपानिधान श्रीकृष्ण यहाँ के श्रुतिदेव ब्राह्मण और भक्त राजा का स्मरण किया करते हैं। यह सुनि प्रद्युम्न ऊधव सहित ब्रह्मचारी वेष धरि परीक्षा हेतु राज सभा में गये। देखा कि योगी ऋषि और मुनियों से सभा सुशोभित है। राजा ने उठि दोनों ब्रह्मचारियों का सनमान करि आसन दिया और पूजन किया। तब ब्रह्मचारी बोले हे राजा, तू बड़ा कृष्ण भक्त है, ऐसा हमने सुना है। राजा बोला कि मैं तो कृष्णदासानुदास हूँ भक्ति छोड़ि मुक्ति की आशा नहीं रखता। ब्रह्मचारी बोले तुम को यदि अहैतुकी भक्ति है तो कृष्ण सुग्रन जो दिग्विजय हेतु निकसे हैं, तुम्हारे देश में क्यों नहीं आये क्योंकि वह तो प्रेम के वश में हैं। राजा बोला कि कृष्ण तो सब ठौर हैं, इसलिये यहाँ भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवश्य हैं। यह सुनि ब्रह्मचारी बोले यदि ऐसे ज्ञानी भक्त हों तो यहाँ हरि सुत प्रकट हो जावैं। तब राजा ने प्रेम से गद्-गद् हो पुकारा कि हे कृष्ण! यदि दास में आप की किंचित भक्ति होय और यदि आप के दासों का दास होउँ तो कृपा करि प्रद्युम्न प्रकट हो जावैं। तब भक्ति भरे आर्त्तवचन सुनि प्रेम विवश श्याम रूप धारण करे, पीताम्बर वनमाल पहिरे, कुण्डल जिनके श्रवण में झलक रहे हैं, उनपर घुंघुरारी अलकावली शोभित है ऐसे प्रद्युम्न जी प्रकट हो गये। तब राजा ने प्रेम से विह्वल हो साष्टांग दण्डवत् करी। प्रद्युम्नजी बोले कि हे राजा तू धन्य है और कृष्ण का परम भक्त है, हम तेरी परीक्षा को आये थे। यह कहि राजा से पूजित हो मगध देश विजय हेतु गिरीव्रजपुर में आये। जरासंध यह समाचार पाय महा कुपित हुआ और अभिमान से बोला यह कादर तुच्छ यादव जगत् विजय करना चाहते हैं। इन का पिता कृष्ण तो मेरे भय से समर तजि समुद्र में जाय बसा है, अब इन यदुवंशियों का ही नाश कर देउँगा। यह कहि और तेइस अक्षौहिणी प्रबल सेना लै पुर के बाहर निकसा। इधर से दश अक्षौहिणी सेना सहित शाम्ब आय भिरे और परस्पर घोर संग्राम होने लगा। शाम्ब के कराल बाणों से मगध राज की सेना अस्तव्यस्त हो भागने लगी, तब जरासंध रथ बढ़ाय आगे आया और अपने बाणों से शाम्ब का रथ, ध्वजा, अश्व और धनुष काट दिया। शाम्ब ने दूसरे रथ पर बैठि ऐसे बाण चलाये कि जरासंध का रथ घोड़ों सहित चूर्ण चूर्ण होगया। तब जरासंध के पुत्र बृहद्रथ ने आगे बढ़ि घमसान युद्ध किया और उसके प्रचंड गज ने सूड़ से शाम्ब के रथ को उठाय नव योजन पर फेंक दिया। तब महाबली गद ने आय कुंजर के ऐसा मूका मारा कि वह भागा। तब जरासंध गदा लै आगे आया और गद पर गदा मारी, गद ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी भारी गदा लै चोट बचाई तदन्तर शाम्ब भी उठ कर आय पहुँचे और मगध राज को उठाय भूमि पर पटक दिया। जरा-संध ने क्रोध करि एक एक मूका से शाम्ब और गद को मूर्च्छित कर दिया तब बड़ा हाहाकार हुआ। यह देखि प्रद्युम्न ने अपने कठिन बाणों से बहुत सेना मारी। फिर जरासंध ने गदा लै यादवन की सेना का संहार किया और उसकी सेना भी यादव दल पर टूट पड़ी और महा मार करी। तब अंतर्यामी बलदेवजी यादव सेना पर भीर देखि प्रकट भये और अपने हल मूशल से शत्रु की सेना को ऐंचि सब वीरों का नाश कर दिया। यादव दल और नभ मंडल में जयजयकार हुआ और दुंदुभी बजने लगी और प्रद्युम्नादि बलदेव जी के चरणों पर गिरे। तब मगधराज बहुत सी भेंट लैकर आया और बलदेवजी अन्तर्ध्यान होगये। इस प्रकार मगध देश को जीति सूर्य कुण्ड और गोमती स्नान करि काशी पहुँचे। मगधराज की पराजय सुनि सुनि भयभीत हो सब नरेश भेंट लै-लै आने लगे और काशी राज पार्ष्णिग्राह भी भेंट लैकर आया। फिर कौशलपुर के नन्दग्राम में कृष्ण शशुर नग्नजित से मिले, तिसने नाती का पूजन करि बहुत भेंट दी। फिर उत्तर में नयपाल के नृप दीरघतम ने अपनी परम सुन्दरी बेटी सहित बहुत भेंट दी और पूजन किया। तहाँ से फिर प्रयाग में आय त्रिवेणी स्नान किया और विपुल दान दै कान्यकुब्ज नगर से भेंट लै कपिलदेश द्रुपद राज्य में गये। राजा द्रुपद ने हर्षित हो बहुत भेंट दी। तहाँ से विन्दपुर गये, तहाँ का राजा संधि हेतु आया और आदर सहित नगर में लैगया और बोला कि आप सब धनुष विद्या में अति चतुर और निपुण हैं मेरा मनोरथ पूर्ण करिये। मैंने पाँच काँच पात्र में जल भरि टाँगे हैं सो उनमें बाण मारिये कि न पात्र हिलै न फूटै और न गिरै केवल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्ध वाण काँच पात्र के भीतर रहै और अर्ध बाहर। जो ऐसा पराक्रम दिखावैगा उसको अपनी कन्या विवाह देउँगा। यह सुनि प्रद्युम्न ने दो बाँस खड़े और एक बेड़ा बँधाय उसमें पाँच जल पूरित कांच पात्र लटकवाय दिये, फिर ताकि के बाण मारा कि अर्ध बाण शीशी बाहर और अर्ध शीशी का जल शोषण करि भीतर रहा और न पात्र हिला, न टूटा और न गिरा। फिर दूसरा बाण भी उसी पात्र में प्रथम की समान मारा दूसरी शीशी में शाम्ब ने बाण चलाया जो शीशी के ऊपर पहुँचि अर्ध कट के गिर गया और अर्ध जल से बाहर निकसा रहा। फिर युयुधान ने जो बाण चलाया उससे शीशी फूट गई और जल की धार वहने लगी। तब सब हँस पड़े और कहने लगे कि वाह तुम तो सहस्र बाहु अर्ज्जुन और भीष्म समान धनुर्धारी हो। फिर उसकी ठौर अन्य शीशी लटकाई गई तब उसमें अनिरुद्ध ने बाण चलाया जो नीचे से सीधा ऊपर जाय अर्ध भीतर और अर्ध बाहर आकाश में लटका रहा, न शीशी हिली न फूटी और न गिरी। तब सब साधु-साधु बचन बोलने लगे। फिर दीप्तमान ने बाण चलाया कि शीशी भेद कर पार हो एक शिला में समाय गया, न जल गिरा न शीशी हिली और न फूटी। फिर भानु ने नेत्र मूँदि बाण चलाया कि एक उल्टी शीशी को सीधा करि बाण उसमें समाय गया, न शीशी फूटी न हिली और न गिरी। यह अद्भुत कर्म देखि सब साधु बचन बोल उठे। इस प्रकार कृष्ण के अट्ठारहों पुत्रों ने बाण विद्या दिखराई। तब राजा विन्द बहुत विस्मित और हर्षित हुआ और सबन को अपनी एक-एक कन्या विवाह दी और बहुत दायज दिया। तिन सब को प्रद्युम्न ने द्वारिका पठाय दिया, फिर तहाँ से विदा हो निषादपुर गये,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तहाँ के नृपसेनजित से भेंट लै और भद्रानगर के राजा वृहद्सेन से भेंट पूजा लै मथुरा में आये जहाँ शूरसेन और मधुवंशी बसते थे। तिनसे मिलि सब पुरी देखि गोकुल गये और नन्द-राय, यशोदा और वृषभानु आदि से मिले। तहाँ सब व्रज-वासियों ने कृष्ण पुत्र पौत्र जानि सब का पूजन सत्कार किया और कुछ दिन निवास करि निकटवर्त्ती नरेशों से भेंट लै कौरवों के जीतने को हस्तनापुर में आये। तहाँ देखा कि कौरवों की प्रवल सेना अस्सी कोश के घेरे में पड़ी है, सुन्दर बजार लग रहीं हैं, कौरवों का विभव वर्णन नहीं हो सकता सिंधु सहित जितने नृपति हैं सब कौरवों के अनुवर्त्ती हैं। यादवों की सेना ने जब प्रवेश किया तब नगर में बड़ा कुलाहल मच गया। प्रद्युम्न ने ऊधव को धृतराष्ट्र के पास पठाया। तब ऊधव ने जाय देखा कि सभा में बड़े-बड़े धनुर्धारी भीष्म, करण, द्रोणाचार्य, शल्य, धौम्य, वाह्लीक, भूरिश्रवा और अनेक नृप बैठे हैं और इन्द्र की सभा समान शोभा हो रही है। दुर्योधन और उसके शत भ्राता पुत्र पौत्र सहित और विदुर, शकुनि, अश्वत्थामा, सोमदत्त इत्यादि वीर सुसज्जित बैठे हैं। जिस सभा में काल को भी जीतने हारे ऐसे-ऐसे सूर वीर हों उस सभा की बड़ाई क्या करी जाय। ऊधव ने कर जोड़ि धृतराष्ट्र से कहा कि प्रद्युम्न ने कहा है कि महाराज उग्रसेन ने राजसूय यज्ञ का प्रारम्भ किया है और जम्बूद्वीप के समस्त नरेशों से कर और भेंट लेवेंगे। बहुत से महीपति मगधराज चैद्य, दन्तवक्र, शाल्व इत्यादि परास्त करि भेंट लाये हैं। इसलिये आप भी भेंट दै देयँ जिसमें यदु और कुरु में कलह न हो और परस्पर प्रेम बना रहै। दूत का कर्तव्य है कि स्वामी के वचन यथावत् कह देय इस कारण मैंने प्रद्युम्न का संदेशा आप की सेवा में कहि सुनाया। अब जो आप उत्तर देंगे सो अपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वामी से निवेदन कर देऊँगा। ऊधव के ऐसे वचन सुनि कौरव अति क्रोधित हो बोले देखो, काल की कैसी विचित्र गति है कि सियार आज सिंह को लात मारना चाहता है। जो यादव मेरे दिये खाते, मेरे किये भूप बने सो अब सर्प समान पय पान करि घात करना चाहते, जिनकी गणना कादरों में है सूर वीरों में नहीं। ऐसे यादव जिस पतरी में खाया उसी में छिद्र करते हैं। हे ऊधव, तुम जाय कहो कि भीष्म, करण, द्रोण इत्यादि जो औरन से भेंट लेने हारे हैं लड़कों को भेंट न देंगे अपनी लज्जा लै घर लौट जायँ अन्यथा सब यम सदन में पठाय दिये जायँगे। ऊधव ने यह सब उत्तर प्रद्युम्न के आगे आय सुनाया। तब प्रद्युम्न कोप करि बोले कि इन कौरवों को सेना सहित वध करूँगा। यह कहि सब सेना लै युद्ध को चले और उधर से कौरव प्रबल सेना सहित नगर बाहर आये दोनों ओर से युद्ध बाजन बजने लगे। पांडवों ने भी कौरवों की सहायता को दो प्रतिनी सेना पठाई। तब प्रद्युम्न दुर्योधन से, अनिरुद्ध भीष्म से, दीप्तमान कृपाचार्य से, शाम्ब वाह्लीक से, भानु द्रोणाचार्य से, बृहद्भानु शल्य से, वृक अश्वत्थामा से, देवबाहु शकुनी से, पुष्कर लक्ष्मण से, सुनंदन संजय से, गद विदुर से, श्रुतदेव दुश्शासन से, कृतवर्मा भूरिश्रवा से, ऊधव विक्रम से, मधु करण से, अक्रूर यज्ञकेतु से जोड़ की जोड़ युद्ध होने लगा। रथी-रथी से, पैदल पैदल से अभिरे, दोनों ओर से नाना प्रकार के शस्त्र चलने लगे और मेघ समान बाण वर्षा होने लगी। दोनों दल के अगणित सूरवीर, गज, हय और पदाति मारे गये। दुर्योधन ने दश बाणों से प्रद्युम्न की कवच काट दी और रथ के घोड़ा हत करि डारे फिर शत शर से धनुष काट दिया। तब प्रद्युम्न ने दुसरे रथ पर चढ़ि कृष्ण प्रदत्त धनुष से दुर्योधन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के सारथी को मारि रथ उठाय एक मुहूर्त्त आकाश में घुमाय भूमि पर पटक दिया जिससे रथ चूर्ण हो गया और घोड़े मरि गये। फिर दुर्योधन ने दूसरे रथ पर चढ़ि सर्प सदृश्य दश बाण प्रद्युम्न पर छोड़े उनको सहि प्रद्युम्न ने एक शायक ऐसा मारा कि दुर्योधन का रथ आकाश में उड़ गया और तुरन्त ही ऐसे बाण छोड़े कि रथ को लै जाय धृतराष्ट्र के ढिग डारि दिया तहाँ दुर्योधन मूर्च्छित हो गिर पड़ा और फिर बहुत सी सेना का वध किया, कौरव दल में हाहाकार मच गया। यह देखि भीष्मजी धनुष टंकारि वैष्णवास्त्र से यादव सेना का वध करने लगे तब अनिरुद्ध ने ब्रह्मास्त्र छोड़ि वैष्णवास्त्र को शांत करि और सेना में धँसि शरों से सारी रण भूमि पाट दी और कौरव दल का बहुत संहार किया तहाँ भूत पिशाच और वैताल योगिनी गण मग्न हो ताल बजाय बजाय नाचने और रुधिर पान करने लगे और जम्बुक नृत्य करि मांस खाने लगे और शम्भुगण शूर वीरों के शीश माला हेतु बटोरने लगे। फिर भीष्म ने एक भारी गदा से अनिरुद्ध पर प्रहार किया सो गदा अनिरुद्ध ने हाथ में रोकि एक भारी गदा भीष्म पर चलाई उसको भीष्म ने अपने अङ्ग पर ली और मूर्च्छित हो भूमि पर गिर पड़े। भीष्म को गिरते देखि कृपाचार्य ने शक्ति चलाई जिसको दीप्तमान ने बीच ही में काटि गिराया फिर कृपाचार्य ने क्रोधित हो दीप्तमान का रथ तोड़ दिया और धनुष काट डाला। द्रोण ने भानु पर आद्रयस्त्र छोड़ा तिसमें से गिरि निकसि-निकसि गिरने लगे। तब भानु ने वज्रास्त्र छोड़ि सब गिरि चूर्ण-चूर्ण कर दिये। वाह्लीक ने यादव सेना पर आग्नेयस्त्र छोड़ा, तब शाम्ब ने परजन्यास्त्र छोड़ि सब अनल बुताय दी। करण ने मधु को मूर्च्छित करि शाम्ब के रथ को अपने शर से उड़ाय एक कोश पर फेंक दिया, तब शाम्ब ने व्याकुल हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तहाँ से आय और गदा लै करण पर मारी और उसको मूर्च्छित कर दिया फिर धनुष लै रथ पर चढ़ि सोमदत्त पर पाँच बाण, लक्ष्मण पर दश, अश्वत्थामा पर दश, दुश्शासन पर बीस, संजय पर साठ भूरिश्रवा पर बावन बाण मारि हय, गज, रथी, पदाति बहुत से मारि गिराये। तब सब ने शाम्ब की प्रशंसा करी फिर भीष्म ने उठि धनुष चढ़ाय दश बाणों से शाम्ब का धनुष काट दिया फिर करण, द्रोण, भीष्म और दुर्योधन ने मिलकर यादव सेना का निपात किया और दश अक्षौहिणी सेना लै दुर्योधन भीष्म, करण, अश्वत्थामा, द्रोण, कृपाचार्य ने मिलकर प्रवल बाणों से धनुष चढ़ाय-चढ़ाय यादव सेना को विचलित कर दिया। तब दोनों सेना को अजेय विचार और भविष्य की लीला का ध्यान करि दोनों दल के बीच में रथारूढ़ भगवान कृष्ण और बलदेव प्रकट भये तिनको देखि दोनों सेना में हर्षध्वनि होने लगी, देवगण पुष्प वर्षा करने लगे और सब ने अस्त्र शस्त्र त्यागि वन्दना और जयजयकार करी और दुंदुभी बजाई। कृष्ण दोनों दल को हाथ जोड़े और मुदित देखि अपने पुत्र पौत्रों से खीज कर भीष्म, द्रोण को प्रणाम करि और दुर्योधन से मिलि मधुर वचन से बोले तुम शूर वीर और चक्रवर्ती राजा हो, इन बालकों के अपराध को क्षमा करो वा इनके बदले में हम को कटु वचन कह लेउ। हम तुम सब एक सम्बन्धीय हैं, हमारे तुम्हारे बीच युद्ध अनुचित है। इस प्रकार समुझाय परम चतुराई से आप ही ने सब से भेंट लै ली। फिर बाजन बजाते भये इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिरादि भ्राता और बुआ कुन्ती से मिले और प्रद्युम्नादि ने सब के चरणों में प्रणाम किया और कुशल प्रश्न पूँछि प्रेमालिङ्गन करि कृष्ण बलदेव द्वारिका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चले गये और युधिष्ठिर ने प्रद्युम्न के साथ अर्जुन को सहायतार्थ कर दिया और कृष्ण के अन्य पुत्र भी साथ में चले। तव विराट नृप से भेंट लै सरस्वती, कुरुक्षेत्र, विन्दु सरोवर, तृत वापी, सुदर्शन तीर्थ स्नान दर्शन करते हुये सारस्वत, कौशाम्वी नगर में आये। कुशाम्व नृप ने भेंट नहीं दी, तव रुक्मिणी के नव पुत्र चारुदेष्ण, भद्रचारु, चारु, सुदेष्ण, सुचारु, चारुगुप्त, शीशचारु, चारुदेह और सुविचारु तिसके जीतने को चले और चारों दिशा से नगर को घेर लिया। तव शत्रु को प्रवल देखि कौशाम्व नृप भेंट लैकर आया। तहाँ से सौवीर के राजा सुदेव, आभिर के भूप विचित्र से, सिंधु भूप चित्रांगद से, काश्मीर नृप सुमित्र से, लाक्षेश्वर पति धर्म महौजा से, गांधार नृप विड़ौजा से भेंट लेते भये अर्वुद म्लेच्छों के नगर में आये। तहाँ का राजा चंड जो कालयवन का पुत्र था मेरे (नारद) मुख से कृष्ण को पिता का शत्रु जानि भारी सेना लै युद्ध करने आया। तव प्रद्युम्न ने आज्ञा दी कि जो इसका शीश काट लावैगा वह सेनापति वनाया जावैगा। तव अर्जुन ने घोर युद्ध करि उसका शीश काटि अपने शर द्वारा प्रद्युम्न के आगे डार दिया। फिर तहाँ से वहुत सी भेंट लै और अर्जुन को सेनापति वनाय मौरंग के राजा मन्दहास्य से भेंट ली। इस प्रकार भरतखंड को विजय करि हिमालय के दक्षिण दिशा को गये और कैलाश पर्वत के निकट वाणासुर की राजधानी शोणितपुर में पहुँचे। वाणासुर यह समाचार पाय युद्ध करने को निकसा। तव शिवजी ने समुझाया कि यह प्रद्युम्न उन्हीं परि पूर्णतम अविनाशी श्रीकृष्ण के पुत्र हैं, जिनने तुम्हारी भुजा काटी थीं और अनिरुद्ध तुम्हारी पुत्री ऊषा के पति हैं तुमको पहुनाई करना उचित है। तव वाणासुर सब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को आदर सहित नगर में लै गया और पूजन करि बहुत भेंट आगे धरी तिसको लै अलकापुरी में आये। तहाँ श्रीनन्दा और अलक नन्दा नदी प्रवाहित थीं, नाग कन्या और गंधर्व कन्या डोल रही थीं और यह कुबेर की नगरी थी। कुबेर ने कहा कि हम मनुष्यों को भेंट नहीं देते वरंच उनसे भेंट लेते हैं। यह कहि हेम मुकुट नाम दूत पठाय कहवाय भेजा कि इन्द्र छोड़ि दूसरा पति नहीं, हम भेंट नहीं देयँगे लौट जायँ अन्यथा सब को मारि यमपुरी पठाय देऊँगा। यह सुनि प्रद्युम्न अति क्रोध करि बोले कि मूढ़ नहीं जानता कि यदुपति समस्त नरेशों के नरेश हैं जो इन्द्र को भी परास्त करि पारजात वृक्ष लाये और जिनको वरुणदेव ने श्यामकर्ण हय भेंट दिया, जिनके ढिग अमित अराडपति कृष्ण रहते हैं उनको यह मन्दमति कुबेर भेंट देना स्वीकार नहीं करता। यह कहि निषङ्ग से शायक निकारि धनुष पर चढ़ाय जिसकी द्युति द्वादश सूर्य के समान थी ऐसे बाण से कुबेर का छत्र और चँवर काट डारे। तब कुबेर रिस करि युद्ध हेतु निकला, तिसके साथ गंधर्व, यक्ष, गुह्यक, प्रेत, भूत, बैताल, कुष्मांड, डाकिनी, ब्रह्म राक्षस, निशाचर मयूर पर चढ़े स्वामिकार्तिक और मूषकारूढ़ गणेश युद्ध करने आये। महा भयंकर संग्राम और महा मार भई। सेना पति कुबेर पुत्र मणिग्रीव ने बहुत यादव सेना का संहार किया तब सत्यभामा सुत चन्द्रभानु ने मणिग्रीव के धनुष को काटि दिया फिर उसने शक्ति चलाई सो भी चन्द्रभानु ने बीच ही में काटि गिराई और मणिग्रीव के हृदय में ऐसी शक्ति मारी कि वह मूर्च्छित हो गिर पड़ा फिर द्योतिमान ने ऐसे तीक्ष्ण शर मारे कि रिपु दल को अंगहीन और बिन शीश करि डार दिया, सो सब प्राण लै लै भागे। यह देखि कुबेर पुत्र नलकूबर ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाणों से कृतवर्मा के कवच को वेध करि दश वाण अर्जुन पर मारे। तब कृतवर्मा ने कठिन वाणों से नलकूबर को मूर्च्छित कर दिया। तब कन्चनमाली नाम सारथी उसका रथ भगाय लै गया फिर अर्जुन ने धनुष चढ़ाय दो कोश के सब योद्धा संहार करि डारि दिये, तहाँ भूत प्रेत योगिनी गण मृतक का रुधिर कपालों में भरि भरि पान करने लगे और भैरव पिशाच नृत्य करने लगे। तब वीरभद्र ने भारी गदा से गद पर प्रहार किया सो गद ने पकड़ि अपनी गदा वीरभद्र पर मारी और उसको उठाय ऐसा फेंका कि कैलाश पर मूर्च्छित हो गिर पड़ा। तब स्वामिकार्तिक युद्ध को आये और अपनी शक्ति से अनिरुद्ध और साम्ब पर प्रहार किया जो रथ और घोड़ों को मारती हुई भूमि में प्रवेश कर गई। तब साम्ब ने क्रोधित हो ऐसे चोखे वाण चलाये जो निषङ्ग से निकसते दश, धनुष पर जोड़ते शत, चाप खैंचते सहस्र, छोड़ते लक्ष और पहुँचने पर कोटि शर हो जाते थे। उनसे कोटि कोटि सेना का संहार किया। फिर मूषक पर चढ़ि गणेश युद्ध करने लगे और महाघोर युद्ध किया। तब अनिरुद्ध ने एक नवीन युक्ति विचारि विलार का रूप धारण किया जिसको देखि गणेश का वाहन मूषक उनको लेकर भागा और विलार ने पीछा किया। गणेश के भागने पर कुवेर युद्ध करने लगे और ऐसी माया रची कि यादव दल विकल हो गया। यह देखि प्रद्युम्न ने निषङ्ग से एक शर निकारि सत्यमाया विद्या पढ़ि उसके मध्य काम बीजारोपण करि मुख में प्रणव पंख में श्री बीज धरि ऐसा छोड़ा कि सब आसुरी माया नष्ट हो गई। तब कुवेर लज्जित होकर लौट गये और भयभीत हो विपुल धन, मणि, मुक्ता, हय, कुंजर और चार लाख शकट कंचन से भराय एवं अगणित विचित्र पदार्थ भेंट में लै प्रद्युम्न का पूजन किया और प्रदक्षिणा स्तुति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करि अपराध क्षमा कराया और विदा हो अपनी पुरी को गये। कुवेर की पराजय देखि अन्य सब नृपति भेंट लै लै प्रद्युम्न के ढिग आये, तहाँ से प्राग्ज्योतिषपुर में आये तहाँ के राजा नरकासुर के पुत्र नील ने भयभीत हो भेंट दे दी। तहाँ से गोपुर में द्विविद् वानर को जीति यक्षों के मार्ग बताने पर किंपुरुष खण्ड में आये, तहाँ हेमकूट पर्वत के नीचे रङ्गवल्लिपुर में किंपुरुषों से मिले तिनने भक्ति पूर्वक स्तुति प्रणाम करि बहुत भेंट दी। तब प्रद्युम्न ने तहाँ के भूप चन्द्रवेध सुत सुबाहु को चूड़ामणि पुरस्कार में दे पूछा कि इस नगर का नाम रङ्गवल्लि किस भाँति हुआ। तब भूप बोला कि जब सुर असुरों ने सागर मन्थन किया था और उसमें से अमृत निकसा था उसको देखि विष्णु भगवान् प्रमुदित भये और प्रेम जल का बिन्दु जो नेत्रों से गिरा उसी से एक तुलसी वृक्ष प्रकट हुआ तब श्रीहरि ने इस स्थान का नाम रङ्गवल्लिपुर धरा। इस खण्ड के अधिपति हनुमान और आर्षिसेन गंधर्व इस वृक्ष के पूजने को नित्य आते हैं। प्रद्युम्न उसको प्रणाम करि आगे बढ़े, तहाँ एक दश योजन का वन देखा उसमें एक विषधर सर्प देखा जिसके विष से सेना व्याकुल होने लगी। तब सत्यभामा के दश पुत्रों ने अर्थात् भानु, सुभानु, अतिभानु, वृहद्भानु, स्वरभानु, प्रभानु, चन्द्रभानु, श्रीभानु, प्रतिभानु और भानुमान आगे बढ़ि बाणों से सर्प पर वर्षा करने लगे। तिन बाणों के लगते ही वह सर्प गंधर्वरूप हो स्वर्ग को चला गया।

यह सुनि राजा बहुलाश्व ने पूछा कि वह सर्प कौन था ?

तब नारदजी बोले कि अर्पसेन गंधर्व का अनुज सुमति नाम हिमांचल पर्वत पर गया, तहाँ वायु सुत हनुमान चौदह घड़ी तक नित्य भगवान् श्रीरामचन्द्र का ध्यान करते थे, सो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसने बड़ी बड़ी स्वाँस लै हनुमान का ध्यान तोड़ दिया। हनुमान ने उसको शाप दिया कि तू दीर्घश्वास्मी सर्प होजा। फिर उसके बहुत स्तुति करने पर बोले कि द्वापर के अन्त में श्रीकृष्ण भगवान् के पुत्रों के हाथ से तेरा उद्धार होगा। फिर तहाँ से चैत्र देश में आये, तहाँ के मनुष्य अति बलवान. जरा, स्वेद दुर्गंधि से रहित आनन्द से निवास करते थे जहाँ मणियों की अमित खानें थीं वसन्त ऋतु से कमल, माधवी आदि अनेक भाँति के सुगंधित पुष्प फूल रहे थे तहाँ के शृङ्गार तिलक नाम नृपति ने चैत्रा वीरों को बुलाय यादवों से युद्ध करने की आज्ञा दी। सो धनुष टंकार करते भये युद्ध को आये और घोर युद्ध हुआ और जब साम्ब, सुमित्र, सहस्त्रजित, चित्रकेतु, पुरजित, विजय, सुकृत, श्रुतिभानु, द्विविन्दु और शतजित से अपनी सेना को व्याकुल देखा, तब भूपति ने त्रिशूल से साम्ब को छेदकर भूमि पर डारि दिया और सब यादवों को बाणों से मूर्च्छित कर दिया। यह देखि गद ने राजा को उसके पुत्र सहित उठाय दूर फेंक दिया। तब भयभीत हो राजा शृङ्गार तिलक बहुत सी भेंट लै प्रद्युम्न से मिला। इस प्रकार किंपुरुष खण्ड को जीति हरिवर्ष खण्ड में आये जहाँ निषध पर्वत पर निषाद का राज्य था, तहाँ यादव दल का शब्द सुनि अगणित बड़े-बड़े गिद्ध एक कोश तक उड़ते हुये दौड़े और मनुष्यों को भक्षण करने लगे। तब प्रद्युम्न ने गरुड़ास्त्र छोड़ा जिसमें से गरुड़ ने निकसि बहुत गिद्धों का भक्षण किया और शेष भाज गये। फिर शत अक्षौहिणी सेना लै दशार्ण देश में प्रवेश किया, तहाँ के नृप सुभोग ने वेदव्यास के मुख से यादवों का प्रभाव सुनि भक्ति सहित भेंट दै दी। तब प्रद्युम्न ने देश का दशार्ण नाम पड़ने का कारण पूछा। राजा सुभोग बोला कि जब नृसिंहजी ने हिरण्यकशिपु का संहार किया और प्रह्लाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की ओर प्रेम से देखा तिस प्रेम जल के विन्दु से मंगलायन नाम एक सरोवर उत्पन्न हुआ और जब प्रह्लाद ने सविनय पूछा कि मैंने मातु पिता की अवज्ञा करी तिस अपराध से किस प्रकार मुक्त होऊंगा। तब नृसिंहजी बोले कि इस मंगलायन सर में स्नान करने से एक लक्ष ऋण छूटते हैं, इसमें स्नान करो तुम्हारे सब ऋण छूट जायँगे। तिसमें स्नान करि प्रह्लाद ऋण से मुक्त हुआ। अतएव मुख्य दश ऋण अर्थात् निज पितृ ऋण, औ पितृगण, गुरु द्विज और ऋषि ऋण से मुक्त करने के कारण इसका नाम दशार्ण तीर्थ पड़ा। यह सुनि सब यादवों ने स्नान करि दान दिया फिर कुरु खण्ड में गये, तहाँ का चक्रवर्ती राजा गुणाकर नाम दशवाँ अश्वमेध यज्ञ कर रहा था और अश्व के साथ उसका वीर पुत्र धन्वा दश अक्षौहिणी सेना सहित रक्षा में था। तिस श्यामकरण अश्व को नग्नजिती के दश पुत्र पकड़ लाये और ऊधव प्रद्युम्न की आज्ञा से राजा के पास जाय बोले कि महाराज उग्रसेन ने राजसूय यज्ञारंभ किया है। जम्बूद्वीप के समस्त भूप, किंपुरुष खण्ड, चैत्र, दशार्ण कुबेरादि को जीति कृष्ण पुत्र प्रद्युम्नादि आप से भी कर लेने आये हैं।

यह सुनि राजा ने क्रुद्ध हो युद्ध की आज्ञा दी और उसके पुत्र धन्वा से घोर संग्राम हुआ।

धन्वा बोला कि मेरे पिता ने वाराह क्षेत्र में दो सहस्त्र वर्ष तप करि श्रीवाराह भगवान् से यह वर प्राप्त किया है कि श्रीहरि छोड़ि किसी से पराजय न होगा। सो तुम हम से जीत नहीं सकते। यह सुनि प्रद्युम्न ने धन्वा को उठाय ऐसा फेंका कि नृप गुणाकर के आगे यज्ञशाला में जाय गिरा। तब राजा पुत्र को मूर्च्छित देखि स्वयं युद्ध करने को उठा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब आचार्य वामदेव मुनि ने राजा की बाँह पकड़ि रोका और बोले कि यह सब परिपूर्ण तम श्रीकृष्ण भगवान के अंश भूत हैं, यह अगणित कार्य करने को प्रकट भये हैं। इन से बढ़ कर दूसरा कोई नहीं है।

राजा गुणाकर आचार्य के मुख यह चरित्र सुन अति प्रसन्न हो प्रद्युम्न के पास बहुत भेंट साथ लै आया और दण्डवत् प्रणाम करि षोड़षोपचार से पूजन किया। प्रद्युम्न ने प्रसन्न हो ज्ञान और भक्ति का वर दिया।

इस प्रकार कुरु खण्ड विजय करि हिरण्य मय खण्ड में गये जो श्वेत अद्रिजा खण्ड की सीमा पर है, जहाँ कच्छप भगवान् का पूजन होता है और पुष्पमाल सर पर श्रीरामचन्द्र के समय के नलनील वंश के वानर रहते हैं, सो अति बलधारी वानर यादव सेना के गज हय आदि मारने लगे और रथों को पूँछ से लपेट लपेट फेंकने लगे।

तब अर्जुन के रथ पर बैठे भये हनुमान ने अपना स्वरूप योजन भर का विस्तार करि पूँछ में सबको लपेट लिया। यह देखि सब भयभीत हो और श्रीरामभक्त जानि चरणों में गिरे। तब कपीश सब की कुशल पूछि और प्रसन्न करि विदा हो अर्जुन के रथ की ध्वजा पर स्थित हुये। तदन्तर मकरध्वज नृप के मकर नगर में जो मकर गिरि की तलहटी में है आये। तहाँ से भँवरों का दल निकसि सेना को काटने लगा। तब प्रद्युम्न ने वायु अस्त्र छोड़ि सब भ्रमरों को भगाय दिया। तहाँ से डिंहिम नगर में आये जहाँ के मनुष्य गजमुख थे उनको देखि सब विस्मित भये। फिर त्रिश्रृङ्ग नगर में आये जहाँ की नगरी कंचन मयी थी और मनुष्यों के श्रृङ्ग थे। तहाँ रात्रि में शशिकान्ता नदी पर नाग कन्याओं को केलि करते देखा, तहाँ का राजा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवमुख नाम मेरे मुख यादवों का प्रभाव सुनि भेंट लै मिला।

तब प्रद्युम्न ने पूछा कि तुम सब की देव समान कान्ति होने का क्या कारण है ?

तब देवमुख बोला कि एक समय पितृपति अर्य्यमा ने कमठ भगवान् के चरण पखारे तिससे यह नदी भई, फिर एक दिन मनुपुत्र गुरु वशिष्ठ की धेनु चराता था उनमें से एक कपिला गाय को सिंह लै गया इस कारण गुरु से शाप पाय भूमि पर घूमने लगा, सो एक दिन इस चन्द्रकान्ता नदी में स्नान करने से शाप से मुक्त हो चन्द्र समान शरीर हो गया तब से इसका नाम शशिकान्ता सरिता पड़ा और हम सब इस में स्नान करके चन्द्रकान्त्य हो गये। तहाँ सब यादव स्नान दान करि और हिरण्य मय खण्ड जीति रम्यक खण्ड में आये जो नील गिरि की सीमा पर है, तहाँ कराल कालक देश में कलंक नाम राक्षस रहता था जो कालनेमि राक्षस का बेटा लंका रण से भाग कर तहाँ आय रहने लगा था, तिससे लक्ष्मणा के दश पुत्र आगे बढ़ि युद्ध करने लगे और घोर संग्राम हुआ। प्रबल राक्षस ने अनेक माया रचीं। सेना को व्याकुल देखि कृष्ण पुत्र प्रघोष ने कपिपति अस्त्र छोड़ा जिसमें से गदा लिये हनुमान ने प्रकट हो और निशचरी माया का विनाश करि अगणित राक्षसों का संहार किया। फिर एक मूका मारि कलंक का प्राणान्त कर दिया। तब सुरगणों ने आकाश से पुष्प वर्षा करी तहाँ से जाय अति रमणीक मनु नगरी देखी जो उस समय के मनु की राजधानी थी और तहाँ के निवासी मीन भगवान के उपासक थे, तहाँ मानव गिरि पर सूर्यवंशी चन्द्रवंशी आदि जन तप करते थे अपने परम पितामह श्राद्धदेव मनु और वसिष्ठ बृहस्पति इत्यादि को देखि सब यदुवंशियों ने दण्डवत् प्रणाम किया। तब मनु ने आदर से आसन दै सत्कार किया फिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दूसरे की वन्दना करि और तहाँ से विदा हो मेरु पर्वत के पूरब ओर केतु माल खण्ड में पहुँचे। माल्यवानगिरि की सीमा पर और अति सुन्दर शैल पर जहाँ चक्षु नाम गंगा बहती थी अति मनोहर पुरी देखी, तहाँ के श्याम रंग मनुष्य पीताम्बर धारी युवतियों के साथ क्रीड़ा करते भये परम शोभा देते थे। सो यादव सेना के ढिग आय कृष्ण चरित्र गाय गाय स्तुति करने लगे और सम्वत्सर नाम नरेश ने बहुत भेंट दी सो ले काम वन में आये, जहाँ का भूप कामदेव था जिसके काम शर से तीनों लोक मोहित हो जाते हैं सो भूप अंग सहित अनंग प्रद्युम्न को देखि तिन में मिल गया।

इस प्रकार केतुमाल खण्ड को जीति भद्राश्व खण्ड में आये जो गन्ध मादन पर्वत की सीमा पर है और सीता नाम नदी बहती है जिस देव क्षेत्र में हयग्रीव भगवान् की उपासना होती है, तहाँ के नृपति भद्रश्रवा ने आय प्रद्युम्न का पूजन किया और स्तुति करि बोला कि शंवर दैत्य जिसको आपने मारा है उसका लघु भ्राता उत्कच नाम दैत्य जिसका कृष्ण ने गोकुल में संहार किया था तिस ही का जेष्ठ भ्राता शकुनी दैत्य यहाँ काकर नाम पुरी में रहता है उसका संहार करिये, हम लोगों को बहुत दुःख दिया करता है।

प्रद्युम्न ने पूछा कि शकुनी का कितना प्राक्रम है? तब भद्रश्रवा बोला कि कश्यपजी के दो पुत्र हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु में से हिरण्याक्ष के नव बलवान् पुत्र थे—शम्बर, उत्कच, भूत सनतापन, हरिश्मश्रु, महानाभ, कालनाभ, हष्ट, वृक और शकुनी इनमें से दो मारे गये शेष जठर नाम गिरि की तराई चन्द्रावतीपुरी में रहते हैं। तिनने सकल देव गणों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को जीत लिया है और इन्द्रलोक से कामधेनु और कल्पवृक्ष लाय इन्द्रादिक को भयभीत करि राखा है।

यह सुनि प्रद्युम्न सब यदुवंशी दल लै चन्द्रावतीपुरी की ओर चले उधर शकुनि मेरे मुख निज शत्रु प्रद्युम्नागमन सुनि भ्रातों सहित दानव सेना ले नगर से बाहर निकसा इधर प्रद्युम्न ने गृद्ध व्यूह की रचना करी तुण्ड पर अनिरुद्ध, ग्रीवा पर वीरज, पृष्ठ पर साम्ब, दोनों पद पर दीप्तमान और गद, पुच्छ पर भानु और उदर में प्रद्युम्न स्थित हुये। इस प्रकार व्यूह रचि दानव से युद्ध करने लगे। प्रथम मित्र विन्दा के दश पुत्र युद्ध हेतु आगे बढ़े और कृष्ण पुत्र वृक ने धनुष चढ़ाय दानवों का वध किया। यह देखि दानव हृष्ट सिंह पर चढ़ि आगे आया और दश शर से वृक का धनुष काट दिया। चार बाण से घोड़े, दो बाण से सूत का वध किया, तीन शर से ध्वजा काट दी और बीस शर से रथ चूर्ण कर डारा। तब वृक दूसरे रथ पर चढ़ि रण स्थल में आये। हृष्ट ने दूसरा धनुष भी काट डाला। तब वृक ने भारी गदा लै प्रहार किया सो सिंह के लगी। तब सिंह क्रोधित हो सेना का मर्द्दन करने लगा और वृक को गिराय दिया। तब वृक ने उठि सिंह को उठाय पटक दिया और एक मुष्टिका मारि उसको मार डारा। फिर हृष्ट ने त्रिशूल चलाया। वृक ने त्रिशूल हाथ से पकड़ि छीन लिया। फिर उसने खड्ग चलाया सो वृक ने अपने खड्ग से काटि हृष्ट के शीश को काट गिराया। फिर भूत संतापन युद्ध करने आया इधर से भद्रा के दश पुत्र युद्ध करने लगे और कठिन बाणों से दानवों का संहार किया तब भूत संतापन ने रणजित के धनुष के गुण को काट दिया। रणजित ने दूसरा धनुष लिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और ऐसे शर छोड़े कि असुर के कवच को फोड़ि भूमि में धँस गये। तब बलवान असुर ने कुछ व्याकुल हो गज को आगे बढ़ाया। गज को आते देखि प्रद्युम्न ने उसकी शुंड काट दी सो सवार को धरणि पर डारि भागा। तब भूत संतापन ने चक्र चलाया जिसको रणजित ने चक्र से काट डारा। तब दानव ने पर्वत खण्ड उखाड़ि फेंकना चाहा। रणजित ने देव कूट गिरि धारण करि फेंका जिससे असुर के पर्वत के टूक टूक हो गये और बहुत दानव मारे गये और भूत संतापन प्राण रहित हो गया। तब शकुनि, वृक, हरिश्मश्रु काल नाभ और महा नाभ क्रोध करि आगे आये। शकुनि प्रद्युम्न से, वृक अनिरुद्ध से कालनाभ साम्ब से, दीप्तमान महानाभ से और भानु हरिश्मश्रु से युद्ध होने लगा। अनिरुद्ध ने वृक की बहुत सेना मारी और गज, हय, रथी, पदाति काटि काटि भूमि पाट दी। यह देखि रासभारूढ़ वृक ने अनिरुद्ध के धनु गुण को काट दिया। अनिरुद्ध ने दूसरा धनुष लिया और वृक के धनुष को काट दिया तब वृक ने त्रिशूल मारा सो अनिरुद्ध ने वाम हस्त से पकड़ि उसी त्रिशूल का ऐसा मारा कि वृक का वाहन प्राण रहित हो भूमि पर गिर पड़ा। तब वृक ने उठि और गर्जना करि गदा चलाई तिसको बचाय अनिरुद्ध ने कृपाण से उसकी भुजा काट डारी। तब महावीर वृक मुख पसारि जैसे अघासुर गोपबालकन को, बकासुर कृष्ण को निगल गया था इसी भाँति अनिरुद्ध को उठाय निगल गया। यह देखि गद ने झपटि एक भारी गदा वृक के शीश पर मारी तिस से असुर के मस्तक से रुधिर बहने लगा। फिर पार्थ ने खड्ग से उसके दोनों पाउँ काट डारे और अनिरुद्ध कटार से उसके उदर को विदीर्ण करि निकसि आये और वृक के शीश को काट गिराया। तब सब ने हर्षित हो दुंदुभी बजाई और देवगण ने पुष्पवर्षा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करी। फिर कालनाभ शूकर पर चढ़ि आगे आया और शरासन से बीस बीस शर अक्रूर और कृतवर्मा पर दश दश शर, अर्जुन और गद पर शत बाण, प्रद्युम्न पर पाँच पाँच बाण सात्यकि और दीप्तमान पर बीस बाण अनिरुद्ध पर मारे सो बाण सब ने बचाय बचाय घोड़ों को कटवाय दिये। तब प्रद्युम्न ने उसकी सराहना करि एक अमोघ बाण से असुर को समुद्र में लै जाय और दूसरे बाण से उसको आकाश में उड़ाय चन्द्रावती में फेंक दिया। फिर असुर ने तहाँ से आय और गदा लै बहुत सी यादव सेना का संहार किया फिर साम्ब से गदा युद्ध होने लगा। साम्ब ने ऐसी गदा असुर के हृदय में मारी कि उसके प्राण निकस गये सब ने जय जयकार किया और देवतों ने साम्ब पर पुष्प वर्षा करी फिर महानाभ उष्ट्रारूढ़ रण स्थल में आया और मुख से अग्नि वमन करने लगा जिससे यादव सेना जलने लगी। तब दीप्तमान ने सेना को विकल देखि आपदास्त्र छोड़ा जिसमें से मेघ गण ने निकसि और मूशलधार वर्षा करि सब अग्नि बुताय दी। फिर असुर ने त्रिशूल फेंका सो दीप्तमान ने अपने खड्ग से काटि गिराय दिया और ऊँट की ग्रीवा काट डारी। तब असुर गज पर चढ़ि दौड़ा और त्रिशूल चलाया तिसको दीप्तमान ने वाम हस्त से पकड़ि खड्ग से उसका शीश काट डारा। यह देखि सब अति हर्षित भये तदन्तर दीप्तमान ने धनुष लै उसकी प्रबल सेना का संहार किया। फिर हरिश्मश्रु जिह्वा निकारे दौड़ा और बोला तुम सब मेरे अहार हौ जिसमें बल होय सो आय मल्ल युद्ध करै।

यह सुनि सत्यभामा सुत भानु पिता का स्मरण करि आय मल्ल युद्ध करने लगा और असुर की जानु में हाथ डारि भूमि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर पटक दिया। तब हरिश्मश्रु ने उठि भानु को कण्ठ से लगाय प्रशंसाकरी और फिर लड़ने लगे।

असुर ने भानु को उठाय शत योजन आकाश में फेंक दिया, भानु ने भी उठि असुर को उठाय उतने ही योजन आकाश पर फेंक दिया, इस भाँति बहुत युद्ध होता रहा।

तब आकाश से वाणी भई कि इस असुर को वरदान है, जब तक इसके मुख के बार न उखाड़े जायँगे तब तक इसकी मृत्यु न होगी।

यह सुनि भानु ने असुर को उठाय भूमि पर पटक दिया और हाथ से उसकी डाढ़ी के बार उखाड़ डारे और छाती पर चढ़ि शीश पर ऐसा मूका मारा कि असुर का प्राणान्त हो गया। तब सब ने भानु की जय जयकार करी और नभ से पुष्प वर्षा भई।

इस प्रकार षट भ्राताओं को मरे देखि शकुनि बोला कि देखो काल की कैसी विचित्र गति है कि जिन मेरे भ्राताओं ने वायु इन्द्रादिक देवतों को विजय किया था और शम्भु से भी लड़े थे तिनको इन नर यादवों ने मार लिया अब सब महाबली असुरन को बटोरि यादव कुल का विनाश कर देउँगा।

यह कहि और प्रबल सेना ले रण स्थल में आया और यादव दल का संहार करने लगा। दश बाण से अर्जुन को उठाय चार कोश पर फेंक दिया और बारह शर से गद के रथ को उठाय और व्योम में घुमाय दूर फेंक दिया और चालीस बाणों से अनिरुद्ध के रथ को उठाय सोलह कोश पर फेंक दिया। और साम्ब के रथ को बत्तीस योजन पर फेंक दिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और शत बाणों से प्रद्युम्न के रथ को उठाय शत योजन पर डार दिया। पारथ, गद, साम्ब, अनिरुद्ध और प्रद्युम्न साहस करि आय आय फिर युद्ध करने लगे और प्रद्युम्न दूसरे रथ पर बैठि शकुनि के सन्मुख आये शकुनि ने फिर शत बाण छोड़े सो प्रद्युम्न ने बीच में काट दिये। तब शकुनि ने एक भारी गदा मारी और प्रद्युम्न ने अपनी गदा से निवारण करी फिर शकुनि ने त्रिशूल चलाया उसको भी प्रद्युम्न ने काट दिया तब शकुनि ने कठोर परिघ हृदय में मारी। तिसको प्रद्युम्न ने यम दण्ड से चूर्ण कर दिया और पुनि शकुनि के हृदय में मारि उसको मूर्छित कर दिया और बहुत से रिपु दल का संहार किया। यह देखि शकुनि ने उरगास्त्र छोड़ा जिसमें से कोटिन सर्प बीछी प्रकट हो यदुदल को काटने लगे। तब प्रद्युम्न ने गरुड़ास्त्र छोड़ि अगणित गरुड़ प्रकट कर दिये सो सब सर्प बीछी खाय अन्तर्धान हो गये। फिर शकुनि ने निश्चरि माया रचि कोटिन भूत प्रेत उत्पन्न किये। तब प्रद्युम्न ने सत्व अस्त्र छोड़ा उसमें से कोटिन चार भुजा धारण करे हरिजन प्रकट भये और सब भूत पिशाचों को भगाय दिया। फिर शकुनि ने गुह्यक माया रचि अस्ति, रुधिर, मज्जा और अङ्गारों की वर्षा करी। तब प्रद्युम्न ने कोड़ास्त्र छोड़ा उससे श्रीहरि के दर्शन भये और सब माया नाश हो गई। फिर शकुनि ने गंधर्व माया रची उससे अगणित सुन्दर स्त्रियाँ प्रकट हो नृत्य करि सब को मोहित करने लगीं। तब प्रद्युम्न ने ज्ञानास्त्र चलाय सब मोहिनी माया का विनाश कर दिया। फिर शकुनि ने राक्षसी माया रची कोटिन राक्षस उत्पन्न हो पर्वत डारि डारि यादव दल का नाश करने लगे। तब प्रद्युम्न ने नृसिंहास्त्र छोड़ि सब राक्षसों का विनाश कर दिया और रण में शंखनाद किया। फिर शकुनि ने मय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दैत्य से प्राप्त दैत्यी माया रची। मूशल धार जल पड़ने लगा और वायु वेग से पर्वत उड़ने लगे, महा अंधकार छाय गया, सब योधाओं ने अस्त्र शस्त्र डार दिये और त्राह त्राह मच गई। तब प्रद्युम्न ने कृष्णास्त्र छोड़ा जिससे नव कोटि विद्युत युत मेघवर्ण, चार भुजा, श्रीवत्स्य, वैजन्तीमाल कीट, कुण्डल, नूपुर, किंकिणी धारण करे कृष्ण भगवान् प्रकट भये सब यादवों ने दण्डवत् करी और माया का विनाश हो गया और शकुनि भाज गया। फिर कृष्ण यादवन को निकट बुलाय बोले कि इस शकुनि ने सुमेरु पर्वत पर चार युग पर्यन्त घोर तप करि शिवजी से वरदान पाया था कि यदि भूमि पर मरै तो भूमि स्पर्श करते ही जीवित हो जावै जो कोई नभ में मारै तो दो घड़ी मृत्यु न होय और शिवजी ने इसको एक शुक दै कहा है कि इसको यत्न से रखना इस शुक की मृत्यु होने पर तुम्हारी मृत्यु होयगी।

यह समुझाय कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये। तब प्रद्युम्न ने गरुड़ से कहा कि यह कार्य तुम करो।

गरुड़ आज्ञा पाय लघु शरीर धारण करि चन्द्रावतीपुरी में गये और जिस भवन में शकुनि निज स्त्री मंदालसा सहित बैठा था तहाँ पहुँचे। देखा कि मंदालसा पति को समुझाय रही है कि देखो तुम्हारे आठ भ्राता मर चुके हैं यादवों से मेल कर लेउ अन्यथा तुम्हारी भी मृत्यु हो जायगी।

यह सुनि अभिमानी शकुनि बोला कि मैं अभी सब यादवों का वध करे देता हूँ। मेरी मृत्यु का भेद कोई नहीं जानता। इस कारण मेरी मृत्यु नहीं हो सकती।

फिर प्रिय स्त्री के आग्रह करने पर बोला कि मतंग पर्वत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर एक चन्द्रनाम उपद्वीप है, तहाँ बड़े यत्न से एक शुक पक्षी को रख छोड़ा है उसके मरने पर मेरी मृत्यु संभव हो सकती है।

यह वार्ता सुनि गरुड़ तहाँ से चले और शतयोजन समुद्र पार एक सिंहल नाम उपद्वीप में पहुँचे तहाँ से लंका के आगे पाँच जन्य नाम सुन्दरपुरी में पहुँचे क्षुधा लगने पर समुद्र तट बैठि जलचर भक्षण करने लगे और एक दीर्घ मत्स्य को पकड़ा सो गरुड़ को जल में खैंच लै चला। तब गरुड़ ने चोंच से प्रहार किया सो लगते ही वह मत्स्य एक दिव्य विद्याधर का स्वरूप धारण करि विनय पूर्वक बोला कि मैं हेम कुण्डल नाम विद्याधर हूँ। एक समय आकाश गंगा में स्नान करने गया, तहाँ जल भीतर एक ऋषि का पग पकड़ि खैंचा तब ऋषि ने कुपित हो शाप दिया कि नक्र होजा। बहुत विनय करने पर ऋषि बोले कि गरुड़ से युद्ध करने पर तेरी मोक्ष होयगी। सो आज आप की कृपा से शापोद्धार हुआ। यह कहि निज लोक चला गया और गरुड़ तहाँ से हरिन नाम द्वीप में आये, तहाँ अपान्तरतम नाम मुनि तप कर रहे थे तहाँ गरुड़ का एक पंख गिर गया, तब मुनि बोले कि पंख को मेरे शीश पर धरो गरुड़ ने मुनि की आज्ञा से पंख को तिनके शीश पर धरा। तब गरुड़ का नवीन पंख जमि आया। गरुड़ ने विस्मित हो कारण पूछा। तब मुनि बोले कि प्रत्येक कल्प में जब श्रीकृष्ण अवतार धारण करते हैं तब तुम्हारा एक पंख टूट कर गिर पड़ता है। तिन प्रभु आनन्द राशि करुणा कर अन्तर्यामी को कोटिशः प्रणाम है।

तदन्तर मुनि के पद वन्दन करि गरुड़ आगे चले और रमणक द्वीप में अपना भाग एक सर्प लै प्रवर्तक द्वीप पहुँचे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तहाँ सुधा पान करि शुक्र द्वीप को गये फिर मेरे बताने पर उत्तर दिशा में चन्द्रद्वीप को गये। तहाँ के जल दुर्ग का जल चोंच से भरि भरि अग्नि दुर्ग में डारि अग्नि बुझाय दी, तब मतंग गिरि की गुफा से एक लक्ष असुर निकसे उनमे घोर संग्राम करि और सब को मारि दुर्ग के भीतर पहुँचे देखा कि एक विष धर पींजरा के चारों ओर कुण्डली मारे बैठा है सो गरुड़ को देखि भयभीत हो भाजि गया। गरुड़ पींजरा को चोंच में दाबि आकाश मार्ग से चले। तब दैत्यन सहित शकुनि ने पीछा किया। तिन से युद्ध करते भये सुमेरु पर्वत के शिखर पर पहुँचे। तहाँ से पींजरा को पटक दिया सो शुक सहित चूर्ण-चूर्ण हो गया। फिर तहाँ से आय सब समाचार प्रद्युम्न को सुनाय चले गये। यादवों ने दुंदुभी बजाई और बड़ा उत्सव किया। इधर शकुनि प्रबल दानवन सहित बारह अक्षौहिणी सेना लै यादवों से युद्ध करने लगा।

यादव वीर भी चाप चढ़ाय चढ़ाय युद्ध करने लगे और महा भयानक संग्राम होने लगा। तब यादव सेना को व्याकुल और विचलित जानि श्रीकृष्ण प्रकट भये और सारंग चढ़ाय बहुत दानवों का संहार किया। शकुनि ने प्रलयकाल समान युद्ध किया और शत रूप धरि बाण बरसाने लगा। तब कृष्ण ने सहस्र रूप धारि उसके सब बाण काट डारे और सात बेर उसका शीश काटा किन्तु धड़ पर धरने से पुनि जीवित हो जाता था। तब चक्र से उसका शीश काट आकाश में उड़ाय दिया और यादवों को आज्ञा दी कि ऐसे बाण चलाओ कि असुर का शीश दो घड़ी तक भूमि पर न गिरने पावै और धड़ से अलग रहै। यह सुनि दीप्तमान ने शत योजन, साम्ब ने सहस्र योजन, अर्जुन ने अयुत योजन, अनिरुद्ध ने लक्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योजन, प्रद्युम्न ने दश लक्ष योजन और कृष्ण ने कोटि योजन शीश को उड़ाया। इस प्रकार दो घड़ी बीतने पर कृष्ण ने शीश को लै जाय समुद्र में डार दिया और धड़ से एक योति निकसि कृष्ण में लय हो गई।

नारदजी बोले कि हिरण्याक्ष के नव पुत्रों ने बैर भाव से भक्ति करी सो मोक्ष को प्राप्त हुये। फिर जो प्रेम भाव से स्मरण करता है उसका कहना ही क्या किसी भाव से भगवान् में प्रीति रखने से उसी भाव द्वारा मोक्ष होती है।

यादवों ने इस विजय पर दुंदुभी बजाई और देवताओं ने पुष्प वर्षा करी। शकुनि के मरने पर उसकी स्त्री मंदालसा ने अपने पुत्र को लाय कृष्ण के चरणों में डारि बहुत स्तुति करी और कृष्ण ने उसको निज भक्ति और अभय वर दिया और इन्द्र को काम धेनु, कल्पवृक्ष और उच्चैश्रवा प्रदान किया। इस प्रकार यादव सेना भद्रखण्ड जीति इलावर्त्त खण्ड में आई।

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि ये हिरण्याक्ष के नव पुत्र पूर्व-जन्म में कौन थे जिनकी मोक्ष हुई।

नारदजी बोले कि ब्रह्म कल्प में परावसु गंधर्व के नव पुत्र मन्दर, मम्बर, मन्दी, सौधक, सुधन, सुदेव, महाविल, मन्द-हास्य और श्रीभानु नाम अति सुन्दर थे। सो एक दिन ब्रह्मा को निज सुता शार्दा पर मोहित देखि हँसने लगे। तब ब्रह्मा ने शाप दिया कि दैत्य हो जाउ सोई बाराह कल्प में हिरण्याक्ष के नव पुत्र हुये और अपांतर मुनि के मुख से श्रीहरि ही मोक्ष दाता हैं ऐसा सुनि वैर भाव को प्रिय मानि हरि स्मरण करने लगे और सोई भाव से श्रीहरि ने संहार करि मुक्त किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इलावर्त्त खण्ड में कंचन पर्वत और जम्बूनद देखा, तहाँ की पुरी अति रमणीक और कंचनमयी थी जहाँ संकर्षण शिव गिरिजा सहित निवास करते हैं उस पुरी को देखि तहाँ के शोभन नाम नृप से भेंट प्राप्त की।

अर्जुन ने एक कनक मय सरोवर देखि कृष्ण से पूछा कि हे कृपानिकेत यह सरोवर किसका है।

तब कृष्ण बोले स्वायंभुवमनु के वंश में राजा प्रथु के तप से इस कुण्ड की उत्पत्ति हुई है इसके जलपान करने से समस्त पापन का नाश हो जाता है।

यह कहि तपो भूमि में प्रवेश किया जहाँ अष्टा सिद्धियाँ रूप धारण करे निवास करती हैं। ऊधव ने पूछा कि यह तपोभूमि किसकी है।

तब कृष्ण बोले कि यहाँ स्वायंभुवमनु ने तप किया था। यह कहि सेना सहित उत्कट नाम देश में आये, तहाँ लीलावती पुरी देखी जहाँ अग्निदेव मूर्त्तिमान वसते हैं। अग्नि ने आय कृष्ण का पूजन किया और भेंट दी। तहाँ से जम्बूद्वीप के वेद नाम पुर में आये जहाँ सब वेद मूर्त्ति धारण किये वसते हैं उरवसी आदि अप्सरा और गंधर्व नृत्यगान करते है। गिरा तहाँ सभापतिनी है, षटराग अपनी भार्या और पुत्रों सहित सभासद हैं गंधर्व गण विविध प्रकार के वाजन वजाय ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत भेद से सप्त स्वर और अष्टताल तीन ग्राम करके गान करते हैं।

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि हे मुनिवर सब राग और उनकी भार्या एवं पुत्रों के नाम भी वर्णन करिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब नारदजी बोले कि भैरव, मेघमलार, हिंडोल, मालकोश, दीपक और श्री यह षट राग हैं। प्रत्येक की पाँच पाँच भार्या और अष्ट अष्ट पुत्र हैं तिनके नाम सुनो। प्रथम भैरवराग का स्वेत रंग, माल कोश का हरित, मेघ मलार का रंग मयूर समान, हिंडोल का हंस समान दीपक का पीत रंग और श्रीराग का लाल रंग है। भैरव की भार्या चित्रा, विचत्रा, व्रजमलार, अंधकारी और जैजैवन्ती यह पाँच भार्या हुईं और ललित, पंचम, महर्षि, बिलावल, वैशाख, माधव, पिंगल और सुद्ध यह अष्ट पुत्र हुये; मेघमलार की भार्या बृज हंस, जलधार, केदारा, मल्लारी और विहाग तिनके पुत्र कामरूप, कान्हरा, सुख कल्याण, गौड़ कल्याण, रगा, संजीवन, मन्दहास्य और शुभ काम फिर दीपकराग की भार्या सर्मनि, गुनाकरी, गन्धारी, सुर गंधारी और धनाश्री; तिनके अष्ट पुत्र सिंधु, धवल, आभीर, विमोहक, मारव, पूर्वी, सुभ्राम और चन्द्रकास फिर मालकोश राग की भार्या गोरावटी, गौरी, चन्द्रकला, करनाटी और वैराटिका; तिनके पुत्र माधव, कौशिक, मारु, मेणरा, कुन्तल, कान्हरा, नायक, सांभन फिर श्रीराग की भार्या त्रिवनि, पूर्वी, मालव, गौरी और रंकिका तिनके पुत्र गौर, गोविन्द, हमीर, पंचक्षर, सारंग मरुत, भिगारक और सांगर फिर हिंडोल राग की भार्या हारि, परज, सुन्दरी, वसंती और तैलङ्गी; तिनके अष्ट पुत्र मङ्ग, वसंतक, कुमुद, विमोद, शंकराभरन, प्रमोद, मोहन और विभास इन सब की संतान छप्पन कोटि हैं।

अब अष्टताल के नाम सुनो रूपक, पंचरीक, परमट, कमठ, विराट, वलीक, कटिंजरा और तालु; ऋषभ, निषाद और गंधार यह तीन ग्राम हैं; स्वर, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद यह सप्त स्वर हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा बहुलाश्व ने पूछा कि वेद के अंग कौन कौन हैं।

तब नारदजी बोले कि बेद का मुख व्याकरण, नयनज्योतिष, रसना गांधर्व, चरण पिंगल, मीमांसा दोनो हस्त, धनुर्वेद उदर, आयुर्वेद पीठ, वैशेषिक जंघा, सांख्य बुद्धि, अहंकार न्याय, चित्त वेदान्त और सब राग विहारस्थल हैं। जब कृष्ण भगवान् वेद नगर में पहुँचे तब सकल अंगों सहित वेद ने स्तुति करी और कृष्ण का पूजन किया और बोले कि जो आप हम पर प्रसन्न हों तो श्रीराधा सहित दर्शन दीजिये। तब कृष्ण भगवान ने गोलोक और श्रीराधा सहित दर्शन दिये तिस स्वरूप को देखि सब मूर्च्छित हो गये फिर उठि नृत्य गान करि प्रत्येक ने स्तुति करी। इस प्रकार सब वेद और रागों की स्तुति सुनि और प्रसन्न हो रथ पर बैठि कृष्ण द्वारावती चल गये। और प्रद्यु-म्नादि यादव दल कामदुग्ध समुद्र पर शतयोजन की मालती पुरी में आये तहाँ गंधर्वों का स्थान था और पतंग नाम महि-पाल था सो प्रद्युम्नागमन सुनि शत कोटि गंधर्व लै युद्ध हेतु निकसा और दोनों दल में प्रलय काल समान युद्ध होने लगा। पतंग ने एक भारी गदा से प्रहार किया और गद को मूर्च्छित कर दिया और सेना का संहार कर । लगा। तब यादव सेना को विचलित जानि द्वारावती से एक तेज आया उसमें से बलदेवजी प्रकट हुये और हल से गधर्वों को घसीट मूशल से उनका निपात किया और पुरी के सब मंदिर गिराय दिये। तब पतंग हार मानि शरण में आया और सुवर्ण, मणि, हय, गज रथ एवं अन्य विचित्र पदार्थ भेंट में आगे धरि बहुत विनय करी और बलदेवजी द्वारावती लौट गये और यादव दल तहाँ से मधुधारा नद के तट पर आये जहाँ हेमवती पुरी और वेत्र-वती सरोवर देखा जो वसुदेवों की नगरी थी तिनके ढिग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊधव को भेंट लाने के हेतु पठाया। तब इन्द्र का सखा तहाँ का नृप बोला कि सब देवता मेरा भय मानते हैं। तब मनुष्यों की कौन गिनती है। यह कहि और क्रोधित हो ऊधव को बन्दी-गृह में डार दिया, कई दिवस पीछे हम से समाचार पाय प्रद्युम्न ने कुपित हो रण भेरि बजवाय दी और इधर से इन्द्र सखा दश अक्षौहिणी सेना ले बाहर निकसा और महा भयंकर युद्ध होने लगा। तब बलदेव भ्राता सारन ने धनुष चढ़ाय बहुत सेना का संहार किया। यह देखि शक्र सखा तीन हैं शुंड जिसके ऐसे महा भयंकर गज पर चढ़ि आगे आया और अर्जुन, साम्ब, गद, अनिरुद्ध पर कठिन शर मारे और उसके गज ने बहुत रथ पैदल सेना का मर्द्दन किया। तब यादव सेना भयभीत हो भागने लगी। यह देखि गद ने भारी गदा मारि गज को गिराय दिया और शक्र सखा को उठाय शतयोजन पर फेंक दिया। तब शक्र सखा यादवन का बल देखि परास्त हो भेंट लेकर आया और अमित द्रव्य, चारदन्त वारे श्वेत कुंजर और अनेक विचित्र विचित्र पदार्थ भेंट में दिये और बहुत वन्दना करी। तब प्रद्युम्न ने हर्षित हो एक बहुमूल्य मणियों की माला शक्रसखा के गरे में डारि उसको अभय कर दिया। फिर तहाँ से अरुण उद्का नदी तट पर आये जो सिद्ध किन्नर की राजधानी थी सो शक्रसखा की पराजय सुनि और भयभीत हो बहुत सी भेंट लाये फिर तहाँ प्रद्युम्न ने डेरा डारा और इन्द्र सब समाचार पाय सभा में आया और बोला कि यहाँ लीलावती पुरी में विद्याधर की परम सुन्दरी कन्या का स्वयंवर है सो आप भी चलैं। तब प्रद्युम्न तहाँ गये और तिनका मोहनी रूप को देखि सब सभासद सहित वह कन्या मोहित होगई और प्रद्युम्न के गरे में जयमाल डार दी। तब प्रद्युम्न विवाह करि उसको रथ पर बैठारि चले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

तहाँ जो देवता ईर्षा वश युद्ध को आये उनको प्रद्युम्न ने अपने शरों से मार भगाया । इस प्रकार इलावर्त्त खंड को जीति दुंदुभी बजाते हुए भरतखंड में आये और द्वारावती में आय नृप उग्रसेन एवं पिता पितामह के चरणों में पड़े और जो जो युद्ध हुए थे सब कहि सुनाये । फिर द्वारिका वासियों ने भेरि दुंदुभी मृदंग बजाते हुए पूजन की सामिग्री लै गर्गाचार्य को आगे करि सब यदुवीरों का अभिवादन करि आरती उतारी इसके पीछे यज्ञारंभ की विधि होने लगी और गर्गाचार्य यज्ञ के आचार्य बने और समस्त ऋषि, मुनि गण, देव, पितृ, गंधर्व, किन्नरादि आये। समस्त तीर्थ रूप धरि धरि आये जाम्बवंत ऋक्षोंसहित, हनुमान वानरों सहित, गरुड़ पक्षियों सहित, वासुकि नागों सहित और देश देश के नृपति दुर्योधनादिक दल बल सहित यज्ञमंडप में आय विराजे और व्रज के नन्द, उपनन्द, वृषभानु गोपवृन्द युवतियों सहित आये और श्रीराधाजी समस्त सहचरियों सहित पंधारीं । इस प्रकार यज्ञ में सब देवगण निज निज भाग लै प्रसन्न हुए फिर कनक भाजनों में सबको भोजन कराया गया और यथा योग्य मणि मुक्ता आभूषण विचित्र वस्त्र पहिराय पहिराय सबकी विदा हुई ।

नारद जी बोले कि यह सब परिपूर्ण तम कृष्ण की लीला जो भूमि भार उतारने और सुर असुरों का मद नाश करने को एवं शापमोचन हेतु और वरप्राप्त मनोरथों के पूर्ण करने को अवतार धारण करि प्रकट भये, जिनके चरित्र सुनि और कीर्तन करि मनुष्य जन भवसागर से तरि जाते हैं ।

इति श्रीगर्गसंहितान्तरगत बाँकेपिया अनुवादित विश्वजित खंड सम्पूर्ण शुभमस्तु ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ बलदेव खण्ड प्रारंभः

दोहा—ध्यान राखि राधा रमण, त्यागि दंभ पाखण्ड ।
प्रीति सहित वर्णन करौं, यह श्री हलधर खण्ड ॥

राजा बहुलाश्व बोला कि हे मुनिवर, आप की कृपा से श्रीकृष्ण चरित्र श्रवण किये । किन्तु एक शंका उठती है कि श्रीकृष्ण की सन्तान में इतने यदुवंशी उत्पन्न भये परन्तु श्रीबलदेवजी के एक पुत्र भी उत्पन्न न हुआ इसका क्या कारण है ! सो कृपा करि मेरी शंका निवारण करिये ।

नारदजी बोले कि एक दिन मुनि प्राड्विपाक हस्तनापुर में शिष्य दुर्योधन नृप के गृह गये । दुर्योधन ने आदर से अभिवादन करि सिंहासन पर बैठारि षोड़शोपचार से पूजन किया फिर कर जोरे पूछा कि हे भगवन् संकर्षणजी किसके अवतार हैं, जिन बलदेवजी ने मेरे हस्तनापुर को अपने हल से आकर्षण किया था और गदा युद्ध में मेरे गुरु हैं तिनके चरित्र श्रवण करने की इच्छा है सो कृपा करि वर्णन करिये ।

तब मुनि बोले कि द्वापर के अन्त में जब भूमि पर असुरों का बहुत भार हो गया, तब पृथ्वी गोरूप धारण करि ब्रह्मा और शिव को देव गण सहित साथ लै वैकुण्ठ में श्रीविष्णु की शरण में गई । तिनकी आज्ञा से समस्त ब्रह्माण्ड के बाहर जाय और वामन विवर में पैठि ब्रह्म द्रव में आई, तहाँ बहुत अण्ड समूह देखे फिर सब ने विरजा नदी पार करि एक वृहत् ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखा तदन्तर जिनका स्वेत स्वरूप और सहस्र मुख हैं ऐसे शेषजी को देखा जो गोलोक को शीश पर धारण किये थे। फिर तहाँ वृन्दावन, गोवर्द्धन, गोलोक यमुना और निकुंज देखे तब एक सखी की आज्ञा लै भीतर भवन में गये। तहाँ श्रीकृष्ण को राधा सहित शृंगार किये देखि स्तुति करी और अपने आगमन का कारण सुनाया। दीनवंधु गोपाल ने भूमि भार उतारने का प्रण किया और शेष को वसुदेव यादव की स्त्री रोहिणी में नन्द गृह गोकुल में जन्म लेने की आज्ञा दी। तब सुमति नाम सूत के रथ लाने पर शेषजी उसमें वैठि चलने को उद्यत भये और हल मूशल आयुध रूप धरि साथ में चले। इसी अन्तर में रमा वैकुण्ठ के सहस्र वदन वारे शेष, जिनकी सेवा में पाणिन पतंजलि रहते हैं, अजित वैकुण्ठ के शेष भूत प्रेत गणों सहित, श्वेतद्वीप के सहस्र मुखवारे शेष जिनका श्वेत वर्ण है, इलावर्त्त खण्ड के भवानीनाथ सहस्र वदनवारे शेष जिनकी कोटि युवती सेवा करती हैं और भूमि धारण करनेवारे शेष जो श्रीहरि की तामसी कला हैं और जिनकी सेवा में सर्व मुनि और वासुकि आदि सर्व सर्प रहते हैं आय आय और स्तुति करि करि संकर्षण के रूप में प्रवेश कर गये। फिर एकादशरुद्र भूत गणों सहित आय संकर्षण रूप में लय हो गये। तब संकर्षणजी बोले कि हे सूत, हे हलमुशल आयुध, तुम सब यहीं रहो। हमारे स्मरण करने पर तुरन्त हमारे पास आया करना। और हे अहि गणों, तुम सब मृत्यु लोक में यादवकुल में उत्पन्न होउ। और हे व्यासादि मुनि, हे अहि गणों, हम यादवकुल में जन्म लेते हैं। तुम सब को तहाँ हमारा दर्शन होयगा।

यह आज्ञा शिर धारि सब निज निज स्थान को चले गये फिर नाग सुता गण को आज्ञा दी कि तुम सब व्रज में गोपिका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होउ। किसी समय यमुना तट तुम्हारे सङ्ग रास करौंगा और कलियुग के निज हितु पूछने पर आज्ञा दी कि तुम धृतराष्ट्र गृह दुर्योधन नाम से उत्पन्न होउ तहाँ तुम को गदा युद्ध की शिक्षा देउँगा। प्राड्विपाक मुनि बोले कि सोइ कलियुग का तुम्हारा अवतार है। फिर संकर्षणजी ने शेष की नारि को आज्ञा दी कि तुम रेवती विग्रह में लय हो मेरी सेवा करौगी और हम प्रथम कृष्णाज्ञा से कश्यप गृह में कद्रु स्त्री के पुत्र होकर शेष भये और पृथ्वी को शीश पर धारण किया और चक्षुष सुत चाक्षुष मनु के सिद्धआदि पुत्रों के यज्ञ में ज्योतिष्मती नाम कन्या उत्पन्न भई। विवाह योग्य होने पर पिता ने निजवर स्थिर करने की आज्ञा दी। तब कन्या बोली कि जो सब से अधिक बलवान होगा उसको वरौंगी। प्रथम इन्द्र से पूँछा कि तुम से अधिक बलवान कौन है। इन्द्र ने वायु को बताया और वायु ने गिरि को, गिरि ने पृथ्वी को और पृथ्वी ने शेष को अधिक बलवान बताया। जो अनन्त शक्तिमान संकर्षण भगवान् आदि देव हलधारी हैं।

यह सुनि उस कन्या ने पिता की आज्ञा लै विन्ध्याचल पर्वत पर जाय मेरे हितु एक लक्ष वर्ष घोर तप किया इन्द्रादिक सुर गणों के मोहित करने पर भी मोहित न हो दृढ़ता से मेरे ही में अनुराग करती रही और सब को अपने तप से भयभीत कर दिया और सब सुर गणों को शेष की निन्दा करने पर एक एक शाप दिया। तब क्रोधित हो सब देवों ने शाप दिया कि तूने किंचित निन्दा करने पर हम लोगों को ऐसा घोर शाप दिया इस हेतु तू इस जन्म में अविवाही रहैगी और आगे तेरे कोई सन्तान न होयगी। तदन्तर वह कन्या फिर तप करने लगी। तब ब्रह्मा के आने और वर माँगने की आज्ञा देने पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

कन्या बोली कि सेष मेरे पति हों यही इच्छा है। ब्रह्मा बोले कि वैवस्वत मन्वन्तर में अट्ठाइस चौकड़ी युग वीतने पर इच्छित वर मिलैगा।

यह सुनि कन्या क्रोधित हो बोली कि आप सब कुछ कर सकते हैं। ऐसा उपाय कीजिये कि शीघ्र ही पति प्राप्त हो अन्यथा आप को भी शाप देती है। तब ब्रह्मा उसको धैर्य धराय बोले कि तुम रैवत गृह सुता रूप से जन्म लेउगी तहाँ एक सौ बारह युग क्षण में व्यतीत हो जायँगे यह कहि ब्रह्मा निज लोक को चले गये।

मुनि बोले कि वही कन्या रैवत नृप के गृह रेवती नाम से उत्पन्न भई और विवाह समय पिता के पूछने पर पूर्व समान वचन बोली कि सब से अधिक बलवान पति को वरोंगी। तब रैवत नृप ब्रह्मा से पूछने गये, तहाँ सभा में बैठे-बैठे अट्ठाइस चौकड़ी युग व्यतीत हो गये और अहि स्त्री रैवति में प्रवेश कर गई और श्रीकृष्णजी ने अपनी संकर्षण शक्ति से बलदेव रूप में अवतार धारण किया फिर ब्रह्माजी की आज्ञा से रैवत नृप ने तहाँ से आय अपनी कन्या रेवती को द्वारिका में बलदेवजी से विवाह दिया। इसी कारण बलदेवजी के कोई सन्तान रेवति में नहीं हुई।

इस प्रकार बलदेवजी के चरित्र सुनि दुर्योधन ने प्राड्विपाक मुनि की वन्दना करि श्रीबलदेवजी में अनुराग रहने का वर माँगा और सो वर पाय मुनि से फिर पूछा कि श्रीकृष्ण ने बलदेवजी में अवतार धारण करि फिर किस प्रकार गुप्त रूप से कृष्ण अवतार धारण किया।

तब प्राड्विपाक मुनि बोले कि जब देवक नृप ने वसुदेव को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपनी देवकी नाम कन्या बिवाही और कंस रथ पर बैठि पहुँचाने चला। तब आकाशवाणी भई कि हे कंस जिसका रथ तू हाँकता है इसका अष्टम पुत्र तेरा काल होगा। यह सुनि जब कंस देवकी के मारने को उद्यत हुआ तब वसुदेव ने प्रतिज्ञा करी कि इसके सब पुत्र तुमको दै देउँगा। तब कंस ने दोनों को बन्दीगृह में डार दिया और तहाँ जिस प्रकार कृष्ण ने अवतार लिया फिर जैसे नन्द के भवन में प्रतिपालन हुआ और जो-जो कृष्ण बलदेव ने ब्रज में लीला करीं वह सब एवं द्वारिका के सब चरित्र मुनि ने दुर्योधन से कहि सुनाये और कहा कि जब तुम से और पाण्डवों से युद्ध होगा तब बलदेवजी भूमि प्रदक्षिणा और तीर्थ यात्रा करने चले जायँगे। कारण कि नैमिषारण्य में जाय व्यास शिष्य पौराणिक सूत का उसके बलदेवजी प्रति अपमान करने पर बलदेवजी ने वध कर डारा था, और फिर शौनक को व्यासासन पर बैठारि बल्वल दैत्य का संहार किया। फिर जब तुमने अपनी कन्या लक्ष्मणा के के स्वयम्वर में कृष्ण पुत्र साम्ब को बन्द कर दिया था तब उसके छुड़ाने को आने पर और तुम्हारे कठोर वचन कहने पर हस्तनापुर को हल से आकर्षण करि टेढ़ा कर डाला।

यह सुनि दुर्योधन ने पूछा कि बलदेवजी ने जैसे रमणियों साथ ब्रज में रमण किया सो चरित्र एवं जो जो तीर्थ देखे सो भी सुनाइये।

तब प्राड्विपाक मुनि बोले कि प्रथम द्वारिका की प्रदक्षिणा करि सरस्वती, सैंधव पर्वत, जाम्बु माल, उत्पल, आनर्त, मेरु पर्वत, विन्दुसर अत्रि आश्रम, श्राद्धदेव तीर्थ, पश्चिम में पर्शना कैलाश करवीर महायोग गण नाथ, घन नाथ, प्राग्ज्योति, रंगवल्ली सीताराम क्षेत्र, चैत्र देश, वसन्त टीका, दशार्णा, भद्रा, कूर्म देश,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुष्पमाला, चित्रवन, चन्द्रकान्ता, मनु शैल. चत्तुगंगा, कामशालिनी, कामवन, वेदक्षेत्र, पृथु, सीता, तपोभूमि, लीलावती, वेदपुर, गांधर्व,शक्रतीर्थ, उत्तर पूरव में ब्रह्मतीर्थ, चक्रतीर्थ, वद्रीवन, केदार, गंगा, यमुना, हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, मथुरा, पुष्कर, नैमिषारण्य, सर्यू कुंड कौशिक, मानसरोवर, गण्डकी, गौतमि अवध, नन्दग्राम, वर्हिष्मति, ब्रह्मावर्त, प्रयाग, चित्रकूट, विन्ध्याचल, काशी, शोननद, विपास सर, मैथिलपुर, गया, गंगासागर, दक्षिण में महद्रगिरि, गोदावरी, पानीपत, पम्पासर, भीमरथी, गुहक्षेत्र, श्रीगिरि, व्यंकटाचल, कांची, कावेरी, श्रीरङ्ग ऋषिभाद्र सिंधु, सेतबन्ध, कृतमाला, ताम्रपर्णी, मलयाचल, कुवलाचल, फाल्गुण पंच, अप्सराख्य, गोकर्ण, सूर्पारक, तापी. पयोष्णि, निरविन्ध्यवन. दंडकारण्य, रेवा और अवंतिका फिर तुम्हारे युद्ध में तुम को देखि द्वारिका जायँगे।

आगे मुनि बोले कि एक दिन द्वारिका में बलदेवजी को व्रज की सुधि आई और रथ पर चढ़ि गोकुल में आय नन्द यशोदा से प्रेम पूर्वक मिले और गोप गणों से मिलि यमुना तट पर आये तहाँ जिन गोपियों ने बलदेव पंचाङ्ग धारण करि बलदेव जी की आराधना करी थी उनके साथ वसंत ऋतु की पूर्णिमा में रास विलास किया और श्रमित हो जल क्रीड़ा हेतु रविसुता यमुना यमुना टेरि बुलाने लगे। जब यमुना न आई तब हल से आकर्षण करि और क्रोधित हो बोले कि तू मद में भरी मेरी अवज्ञा करती है मूशल से तुझे टूक टूक कर देउँगा। तब यमुना भयभीत हो आई और कर जोड़ि विनती करने लगी कि मैं जड़ जाति हौं, मैंने आप के प्रभाव को नहीं जाना, मेरा अपराध क्षमा करिये। बलदेवजी ने प्रसन्न हो छोड़ दिया। फिर जल क्रीड़ा करी तब यमुना ने आभूषण और नीलाम्बर लाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भेंट किये सो बलदेवजी ने एवं सब गोपियों ने पहिरे। व्रज काम वन में यमुना वर्तमान काल तक टेढ़ी देख पड़ती हैं।

तदन्तर एक दिन गर्ग मुनि यमुना तट पर गये तहाँ देखा कि गोपकुमारि कृष्णाराधना कर रही हैं। तब जो नाग कन्यां गोपी हो अवतरीं थीं सो गर्ग मुनि से पूछने लगीं कि श्रीबलदेव जी की आराधना किस प्रकार करी जाती है। तब गर्ग मुनि ने बलदेव पंचाङ्ग विधि सहित बताया जिसको धारण करि श्रीबलदेवजी का पूजन और ध्यान करने लगीं। वह बलदेव पंचाङ्ग इस भाँति है—

अथ श्रीबलभद्र पंचांग प्रारम्भः

दुर्योधन उवाच—रामस्य पद्धतिं ब्रूहि यथा सिद्धिं व्रजाम्यहम्। त्वंभक्तवत्सलो ब्रह्मन्गुरु देव नमोस्तुते ॥ १ ॥

प्राड्विपाक उवाच—राम मार्गस्य नियमं शृणु पार्थिव सत्तम। येन प्रसन्नोभवति बलभद्रोमहा प्रभुः ॥ २ ॥ सहस्र वदनो देवो भगवान्भुवनेश्वरः ॥ न दानैर्नच तीर्थैश्च भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ॥ ३ ॥ सत्संगमेत्याशु शिद्धेद्धक्षिवै श्रीहरेर्गुरोः। ससिद्धः कथितो जातं यस्य वै प्रेम लक्षणम् ॥ ४ ॥ ब्राह्ममुहूर्त उत्थाय राम कृष्णेति च ब्रुवन् ॥ नत्वागुरुं भुवंचैव ततो भूम्यां पदं न्यसेत् ॥ ५ ॥ वार्युपस्पृश्य रहसिस्थितो भूत्वाकुशासने। हस्तावुत्संग आधायस्व नासाग्र निरीक्षणः ॥ ६ ॥ ध्यायेत्परं हरिं देवं बलभद्रं सनातनं। गौरं नीलाम्बरं हृद्यं वनमाला विभूषितम् ॥ ७ ॥ एवं ध्यान परोनित्यं प्रीत्यर्थं हलिनः प्रभोः। त्रिकाल संध्या कृच्छुद्धो मौनी क्रोध विवर्जितः ॥ ८ ॥ अकामी गत लोभश्च निर्मोहः सत्य वाग्भवत् ॥ द्विवारं जल पानार्थी एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भुक्तो जितेंद्रियः ॥ ९ ॥ क्षौमांवरो भूमिशायी भूत्वा पायस भोजन ॥ एवं निर्जित्त षड्वर्गो भवेदेकाग्र मानसः ॥ १० ॥ तस्य प्रसन्नो भवति सदा संकर्षणो हरि ॥ परिपूर्णतमः साक्षात्सर्व कारण कारणः ॥ ११ ॥ इत्थं श्रीबलभद्रस्य कथिता पद्धतिर्मया ॥ कौरवेन्द्र महावाहो किं भूयः श्रोतु मिच्छसि ॥ १२ ॥

दुर्योधन उवाच—मुनीन्द्र देव देवस्य पटलं ब्रूहि मे प्रभोः ॥ येन सेवां करिष्यामि तत्पदांवुजयोः सदा ॥ १३ ॥

प्राड्विपाक उवाच—वलस्य गुह्यं पटलं निद्धि सिद्धि प्रदायकम् ॥ एकांते ब्रह्मणा दत्तं नारदाय महात्मने ॥ १४ ॥ प्रणवं पूर्व मुद्धृत्य काम वीजं ततः परम् ॥ कालिन्दी भेदन पदं संकर्षण मतः परम् ॥ १५ ॥ चतुर्थ्यं तं द्वयं कृत्वा स्वाहा पश्चा-द्विधाय च ॥ मंत्र राज मिमं राजन्ब्रह्मोक्तं षोडशाक्षरम् ॥ १६ ॥ जपेल्लक्षं व्रती भूत्वा सहस्राणि च षोडश ॥ इहा मुत्र परां सिद्धिं सं प्राप्नोति न संशयः ॥ १७ ॥ अथ जप्तस्य मंत्रस्य महा पूजां समा चरेत ॥ द्वा त्रिंशत्पत्र संयुक्तं कर्णिकाकेसरोज्ज्वलम् ॥१८॥ भव्यं कंजं पंच वर्णैर्लिखित्वा स्थंडिले शुभे ॥ तस्यो परिन्य सेद्राजन्हेम सिंहासनं शुभम् ॥ १९ ॥ तस्मिन्श्री वलदेवस्य परा-मर्चां प्रपूजयेत् ॥ ऊँ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय वासुदेवाय संकर्षणाय सहस्र वदनाय महानन्ताय स्वाहा ॥ अनेनमन्त्रेण शिखा वंधनं कृत्वा सर्व तस्तं प्रणम्य तत्संमुखो भूत्वा स्वयं-नतो भवेत् ॥ ऊँजय जयानंत वलभद्र काम पाल ताळांक कालिन्दी भंजन आविराविर्भूय मम संमुखो भवेति ॥ अनेन मंत्रेणावाहनं कुर्यात् । ऊँनमस्ते स्तुसीर पाणे हल मुसलधर रौहिणेयनीलाम्वर राम रेवती रमण नमस्तेस्तु ॥ अनेन मंत्रेणा-सन पाद्यार्घ्यस्नान मधुपर्क धूपदीप यज्ञोपवीत नैवेद्य वस्त्र भूषण गन्ध पुष्पाक्षत पुष्पांजलि नीराजनादी नुपचारान्प्रकल्प-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

येत् ॥ ॐ विष्णवे मधुसूदनाय वामनाय त्रिविक्रमाय श्रीधराय हृषीकेशाय पद्म नाभाय दामोदराय संकर्षणाय वासुदेवाय प्रद्युम्नायानिरुद्धायायाधोक्षजाय पुरुषोत्तमाय श्रीकृष्णायनमः ॥ इति पाद गुल्फ जानूरु कट्युदर पार्श्व पृष्ठ भुजाकन्धर नेत्र शिरांसिपृथक्पृथ क् पूजयामीति मंत्रेण सर्वांग पूजां कुर्यात् ॥ अथ शंख चक्र गदा पद्मासि धनुर्बाण हल मुसल कौस्तुभ वनमाला श्रीवत्स पीताम्बर नीलाम्बर वन्शी वेत्र गरुड़ांकृताल्लांक रथ दारुक सुमति कुमुद कुमुदाक्ष श्रीदामादीन्प्रणव पूर्वेण चतुर्थी तेन नमः संयुक्तेन नाम मंत्रेण प्रथक् प्रथक् संपूज्य तथा विष्वक्सेन वेदव्यास दुर्गा विनायक दिक्पाल ग्रहादीन्कमले सर्वतः स्वे स्वे स्थाने संपूजयेत् ॥ पुनःपरि समूहनादिस्थाली पाक विधानेन वैश्वानरं संपूज्य पूर्वोक्तेन मूल मंत्रेण पंच विंशति सहस्रारााया हुतीर्जुहुयात् ॥ तथाष्टौ सहस्राणि द्वादशाक्षरेण तथाष्टौसहस्राणि चतुर्व्यूह मंत्रेणाहुतिर्जुहुयात् ॥ ततोग्निं प्रदक्षिणी कृत्य नमस्कृत्याचार्यं महार्हवस्त्र सुवर्णा भरण ताम्र पात्र स वत्सगो सुवर्ण दक्षिणाभिः संपूज्य तथा ब्राह्मणान्भोजनाद्यैः सम्पूज्य नग रजनेभ्यो भोजनं दत्वाचार्य्यान्प्रणमेत् ॥ इत्थंबलस्य पटलानुसारेणायो नुस्मरति इहामुत्र सिद्धि समृद्धिभिः संवृतो भवति ॥ श्रीराम पटलं गुह्यं मया तेह्यनुवर्णितम् ॥ सर्व सिद्धि प्रदं राजन्किंभूयः श्रोतु मिच्छसि ॥ २० ॥ इति श्रीमद्गर्ग संहितायां श्रीबलभद्र खण्डे पद्धति पटल वर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥

दुर्योधन उवाच—स्तोत्रं श्रीबलदेवस्य प्राड्विपाक महा मुने ॥ वदमां कृपया साक्षात्सर्व सिद्धि प्रदायकम् ॥ १ ॥

प्राड्विपाक उवाच—स्तव राजंतु रामस्य वेदव्यास कृतं शुभम् ॥ सर्व सिद्धिप्रदं राजंशृणु कैवल्यदं नृणाम् ॥ २ ॥ देवादि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देव भगवन्काम पाल नमोस्तुते ॥ नमोनन्ताय शेषाय साक्षाद्रा-मायतेनमः ॥ ३ ॥ धराधराय पूर्णाय स्वधाम्ने सीर पाणये ॥ सहस्र शिर से नित्यं नमः संकर्षणायते ॥ ४ ॥ रेवती रमणस्त्वं वैवलदेवोच्युताग्रजः ॥ हलायुधप्रलंबघ्नपाहिमां पुरुषोत्तम ॥ ५ ॥ वलाय वलभद्राय तालांकाय नमोनमः ॥ नीलाम्वराय गौराय रौहिणेयायतेनमः ॥ ६ ॥ धेनुकारिर्मुष्टिकारिः कूटारिर्वल्वलांतकः ॥ रुक्म्यरिः कूपकर्णारिः कुभांडारिस्त्व मेवहि ॥ ७ ॥ कालिंदी भेदनोसित्वं हस्तिनापुर कर्षकः ॥ द्विविदारिर्यादवेंद्रो व्रजमंडल मण्डनः ॥ ८ ॥ कंसभ्रातृ प्रहंतासि तीर्थ यात्रा करः प्रभुः ॥ दुर्योधन गुरुः साक्षात्पाहि पाहि प्रभोत्वतः ॥ ९ ॥ जय जयाच्युत देव परात्परस्व यमनंत दिगंत गतश्रुत ॥ सुर मुनींद्र फणींद्रवरा-यते मुसलि ने वलि ने हलिनेनमः ॥ १० ॥ यः पठेत्सततंस्तवनं नरः सतुहरेः परमं पद मा व्रजेत् ॥ जगति सर्व वलंत्वरि मर्दनं भवति तस्यधनं स्वजनं धनम् ॥ ११ ॥ इति श्रीमद्गर्ग संहितायां वलभद्र खण्डे वलभद्रस्तव राज वर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥

दुर्योधन उवाच—गोपीभ्यः कवचंदत्तं गर्गाचार्येणधीमता ॥ सर्व रक्षा करं दिव्यं देहि मह्यं महामुने ॥ १ ॥

प्राड्विपाक उवाच—स्नात्वाजले क्षौम धरः कुशासनः पवित्र पाणिः कृतमंत्र मार्जनः ॥ स्मृत्वाथनत्वा वल मच्युताग्रजं संधारयेद्वर्म समाहितो भवेत ॥ २ ॥ गोलोक धामाधिपतिःपरे-श्वरः परेषु मां पातु पवित्र कीर्तनः ॥ भूमण्डलं सर्षपवद्वि-लक्ष्यते यन्मूर्ध्निमां पातुस भूमि मंडले ॥ ३ ॥ सेना सुमां रक्षतु सीर पाणिर्युद्धे सदा रक्षतु मां हलीच ॥ दुर्गेषुचाव्यान्मुसली सदा मां वनेषु संकर्षण आदि देवः ॥ ४ ॥ कालिन्द जा वेगहरो जलेषु नीलाम्वरो रक्षतु मां सदाग्नौ ॥ वायौच रामो वतुखे वलश्च महार्णवेनंत वपुः सदा माम् ॥ ५ ॥ श्रीवासुदेवो वतु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर्वतेषु सहस्त्र शीर्षा च महा विवादे ॥ रोगेषु मां रक्षतु रौहिणेयो मां काम पालो वतु वाविपत्सु ॥ ६ ॥ कामात्सदा रक्षतु धेनुकारिः क्रोधात्सदा मां द्विविद प्रहारी ॥ लोभात्सदा रक्षतु बल्व लारिर्मोहात्सदा मां किलमागधारिः ॥ ७ ॥ प्रातः सदा रक्षतु वृष्णि धर्यः आह्णे सदा मां मथुरा पुरेंद्रः ॥ मध्यं दिने गोप सखः प्रपातुस्वराट् पराह्णे वतु मां सदैव ॥ ८ ॥ सायं फणींद्रोवतु मां सदैव परात्परो रक्षतु मां प्रदोषे ॥ पूर्णे निशीथे च दुरंतवीर्यः प्रत्यूपकाले वतु मां सदैव ॥ ९ ॥ विदिक्षु मां रक्षतु रेवतीपतिर्दिक्षुप्रलंबारि रधो यदूद्वहः ॥ ऊर्द्ध्वं सदा मां बलभद्र आरात्तथा समंताद्बल देवएवहि ॥ १० ॥ अंतः सदा व्यात्पुरुषो-त्तमोबाहिर्नागेंद्र लीला वतु मां महा बलः ॥ सदांतरात्मा च वसन्हरिः स्वयं प्रपातु पूर्णः परमेश्वरो महान् ॥ ११ ॥ देवासुराणां भय नाशनं च हुताशनं पापच येधंनानाम् ॥ विनाशनं विघ्न घटस्य विद्धि सिद्धासनं वर्मवरं बलस्य ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीबलभद्र खण्डे स्तोत्र कवच वर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

दुर्योधन उवाच—बलभद्रस्य देवस्य प्राड्विपाक महामुने ॥ नाम्नां सहस्रं मे ब्रूहि गुह्यं देव गणैरपि ॥ १ ॥

प्राड्विपाक उवाच—साधु साधु महा राज साधु ते विमलं यशः ॥ यत्पृच्छसे परमिदं गर्गोक्त देव दुर्लभम् ॥ २ ॥ नाम्नां सहस्रं दिव्यानां वक्ष्यामितवचाग्रतः ॥ गर्गाचार्येण गोपीभ्योदत्तं कृष्णातटे शुभे ॥ ३ ॥ ॐ अस्यश्रीबलभद्र सहस्र नामस्तोत्र मंत्रस्य गर्गाचार्य ऋषिः अनुष्टुप् छंदः संकर्षणः परमात्मादेवता बलभद्र इति बीजं रेवतीति शक्तिः अनंत इति कीलकं बलभद्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ ध्यानम्—स्फुरद मल किरीटं किंकिणी कंकणार्हं चल दलक कपोलं कुंडल श्रीमुखाब्जम् ॥ तुहिन गिरि मनोज्ञं नील मेघां वराढ्यं हल मुसल विशालं काम पालं समीडे ॥ ४ ॥ ॐ बलभद्रो राम भद्रो रामः संकर्षणोच्युतः ॥ रेवतीरमणोदेवः काम पालो हलायुधः ॥ ५ ॥ नीलाम्बरः श्वेतवर्णो बलदेवोच्युताग्रजः ॥ प्रलंबघ्नो महावीरो रौहिणेयः प्रतापवान् ॥ ६ ॥ तालांको मुसली हलीहरिर्यदुवरोबली ॥ सीरपाणिः पद्मपाणिर्लगुडीवेणु वादनः ॥ ७ ॥ कालिंदी भेदनो वीरो बलः प्रबल ऊर्द्ध्वगः ॥ वासुदेव कलानंतः सहस्र वदनः स्वराट् ॥ ८ ॥ वसुर्वसुमती भर्ता वासुदेवो वसूत्तमः ॥ यदूत्तमो यादवेंद्रो माधवो वृष्णि बल्लभः ॥ ९ ॥ द्वारकेशो माथुरेशो दानी मानी महामनाः ॥ पूर्णः पुराणः पुरुषः परेशः परमेश्वरः ॥ १० ॥ परिपूर्णतमः साक्षात्परमः पुरुषोत्तमः ॥ अनंतः शाश्वतः शेषो भगवान्प्रकृतेः परः ॥ ११ ॥ जीवात्मा परमात्मा च ह्यंतरात्मा ध्रुवोव्ययः ॥ चतुर्व्यूहश्चतुर्वेदश्चतुमूर्तिश्चतुष्पदः ॥ १२ ॥ प्रधानं प्रकृतिः साक्षी संघातः संघवान् सखी ॥ महामना बुद्धि सखश्चेतोहंकार आवृतः ॥ १३ ॥ इंद्रियेशो देवतात्माज्ञानं कर्मचशर्मच ॥ अद्वितीयो द्वितीयश्च निराकारो निरंजनः ॥ १४ ॥ विराट् सम्राण्म हौघश्चाधारः स्थास्नुश्चरिष्णुमान् ॥ फणींद्रः फणिराजश्च सहस्र फणमंडितः ॥ १५ ॥ फणीश्वरः फणिस्फूर्तिः फूत्कारी चीत्करः प्रभुः ॥ मणिहारो मणिधरो वितली सुतली तली ॥ १६ ॥ अतली सुनलेशश्च पातालश्च तलातलः ॥ रसातलो भोगितलः स्फुरद्दंतो महातलः ॥ १७ ॥ वासुकिः शंखचूड़ाभोदेव दत्तोधनं जयः ॥ कंबलाश्वोवेग तरो धृतराष्ट्रो महा भुजः ॥ १८ ॥ वारुणी मद मत्तांगो मदघूर्णित लोचनः ॥ पद्माक्षः पद्ममालीच वनमाली मधुश्रवाः ॥ १९ ॥ कोटि कंदर्प लावण्यो नाग कन्या समर्चितः ॥ नूपुरी कटि सूत्री च कटकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कनकांगदी ॥ २० ॥ मुकुटी कुंडली दंडी शिखंडी खण्ड मंडली ॥ कलिः कलिप्रियः कालोनिवात कवचेश्वरः ॥ २१ ॥ संहारक मूर्द्धवपुः कालाग्निः प्रलयोलयः ॥ महाहिः पाणिनिः शास्त्रो भाष्यकारः पतंजलिः ॥ २२ ॥ कात्यायनो पक्षिमाभः स्फोटायन उरंगमः ॥ वैकुण्ठो याज्ञि को यज्ञो वामनो हरिणो हरिः ॥ २३ ॥ कृष्णा विष्णुर्महाविष्णुः प्रभविष्णुर्विशेषवित् ॥ हंसो योगेश्वरः कूर्मो वाराहो नारदो मुनिः ॥ २४ ॥ सनकः कपिलो मत्स्यः कमठो देव मंगलः ॥ दत्तात्रेयः पृथुर्वृद्ध ऋषभो भार्गवो-त्तमः ॥ २५ ॥ धन्वंतरिर्नृसिंहश्च कल्किर्नारायणोनरः ॥ राम-चन्द्रो राघवेंद्रः कोशलेंद्रो रघूद्वहः ॥ २६ ॥ काकुत्स्थः करुणा-सिंधू राजेन्द्रः सर्व लक्षणः ॥ शूरो दाशरथिस्त्राता कौसल्यानंद वर्द्धनः ॥ २७ ॥ सौमित्रिर्भरतो धन्वी शत्रुघ्नः शत्रु तापनः ॥ निषंगी कवची खड्गी शरीज्याहत कोष्ठकः ॥ २८ ॥ बद्ध गोधां-गुलित्राणः शंभु कोदंड भंजनः ॥ यज्ञत्राता यज्ञभर्ता मारीच वध कारकः ॥ २९ ॥ असुरारि स्ताटकारिर्विभीषण सहाय कृत् ॥ पितृ वाक्य करो हर्षी विराधारिर्वने चरः ॥ ३० ॥ मुनिर्मुनि प्रियश्चित्र कूटा रण्य निवास कृत् ॥ कबंध हा दंड केशो रामो राजीव लोचनः ॥ ३१ ॥ मतंग वन संचारी नेता पंचवटी पतिः ॥ सुग्रीवः सुग्रीव सखो हनुमत्प्रीत मानसः ॥ ३२ ॥ सेतुबंधो रावणारिर्लंका दहनतत्परः । रावणायारिः पुष्पकस्थो जानकी विरहातुरः ॥ ३३ ॥ अयोध्याधिपतिः श्रीमाँल्लावणारिः सुरा-र्चितः ॥ सूर्यवंशी चन्द्रवंशी वंशी वाद्य विशारदः ॥ ३४ ॥ गोप पतिर्गोप वृन्देशो गोपो गोपी शतावृतः ॥ गोकुले शोगोप पुत्रो गोपालो गोगणाश्रयः ॥ ३५ ॥ पूतनारिर्बकारिश्च तृणावर्त निपातकः ॥ अघारिर्धेनुकारिश्च प्रलंबारिर्व्रजेश्वरः ॥ ३६ ॥ अरिष्ट हा केशिशत्रुर्व्योमासुर विनाश कृत् ॥ अग्नि पानो दुग्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पानो वृन्दावन लताश्रितः ॥ ३७ ॥ यशोमती सुतो भव्यो रोहिणी लालितः शिशुः ॥ रास मंडल मध्यस्थो रास मंडल मंडनः ॥ ३८ ॥ गोपिका शत यूथार्थी शंखचूड़ वधोद्यतः ॥ गोवर्द्धन समुद्धर्ता शक्रजिद्व्रज रक्षकः ॥ ३९ ॥ वृषभानु वरोनंद आनन्दो नंदवर्धनः ॥ नन्दराजसुतः श्रीशः कंसारिः कालियांतकः ॥ ४० ॥ रजकारिमुष्टकारिः कंस कोदण्ड भंजनः ॥ चाणूरारिः कूट हंता शलारिस्तोशलांतकः ॥ ४१ ॥ कंस भ्रातृ निहंता च मल्लयुद्ध प्रवर्तकः ॥ गजहंता कंसहंता कालहंता कलंकहा ॥ ४२ ॥ मागधारिर्यवन हा पांडु पुत्र सहाय कृत् ॥ चतुर्भुजः श्यामलांगः सौम्य श्चौपगविप्रियः ॥ ४३ ॥ युद्ध भृदुद्धव सखा मन्त्री मन्त्र विशारदः ॥ वीर हा वीर मथनः शंख चक्र गदाधरः ॥ ४४ ॥ रेवती चित्त हर्ता च रेवती हर्ष वर्द्धनः ॥ रेवती प्राण नाथश्च रेवती प्रिय कारकः ॥ ४५ ॥ ज्योतिर्ज्योतिष्मती भर्ता रैवताद्रि विहार कृत् ॥ धृत नाथो धना ध्यक्षो दानाध्यक्षो धनेश्वरः ॥ ४६ ॥ मैथिलार्चित पादाब्जो मान दो भक्त वत्सलः ॥ दुर्योधन गुरुर्गुर्वी गदा शिक्षा करः क्षमी ॥ ४७ ॥ मुरारि मर्दनो मंदो निरुद्धो धन्विनां वरः ॥ कल्प वृक्षः कल्प वृक्षी कल्प वृक्ष वनप्रभुः ॥ ४८ ॥ स्यमंतक मणिर्मान्यो गांडीवी कौरवेश्वरः ॥ कुभांड खण्डन करः कूप कर्ण प्रहार कृत् ॥ ४९ ॥ सेव्यो रैवत जामाता मधु माधव सेवितः ॥ वलिष्ठः पुष्ट सर्वांगो हृष्टः पुष्टः प्रहर्षितः ॥ ५० ॥ वाराणसी गतः क्रुद्धः सर्वः पौंड्रक घातकः ॥ सुनन्दी शिखरी शिल्पी द्विविदांग निषूदनः ॥ ५१ ॥ हस्तिनापुर संकर्षी रथी कौरव पूजितः ॥ विश्वकर्मा विश्वधर्मा देवशर्मा दया निधिः ॥ ५२ ॥ महाराजच्छत्र धरो महाराजो पलक्षणः ॥ सिद्ध गीतः सिद्ध कथः शुक्लचामर वीजितः ॥ ५३ ॥ ताराक्ष कीर नासश्च विंबोष्ठः सुस्मितच्छविः ॥ करींद्र करदोर्दंडः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रचंडो मेघ मण्डलः ॥ ५४ ॥ कपाट वृक्षः पीनांसः पद्म पाद स्फुरद् द्युतिः ॥ महाविभूतिर्भूतेशो बंध मोक्षी समीक्षणः ॥ ५५ ॥ चैद्य शत्रुः शत्रु संधो दंत वक्र निषूदकः ॥ अजात शत्रुः पापघ्नो हरिदास सहायकृत् ॥ ५६ ॥ शाल बाहुः शाल्व हंता तीर्थ यायी जनेश्वरः ॥ नैमिषारण्य यात्रार्थी गोमती नीर वास कृत् ॥ ५७ ॥ गंड की स्नान वान्स्रग्वी वैजयन्ती विराजितः ॥ अम्लांन पंकज धरो विपाशी शोण संप्लुतः ॥ ५८ ॥ प्रयाग तीर्थ राजश्च सरयूः सेतुबन्धनः ॥ गया शिरश्च धनदः पौलस्त्यः पुलहाश्रमः ॥ ५९ ॥ गङ्गासागर संगार्थी सप्त गोदावरी पतिः ॥ वेणी भीमरथी गोदाताम्रपर्णी वटोदका ॥ ६० ॥ कृतमाला महा पुण्या कावेरी चपयस्विनी ॥ प्रतीची सुप्रभा वेणी त्रिवेणी सरयूपमा ॥ ६१ ॥ कृष्णा पंपा नर्मदाच गंगा भागीरथी नदी ॥ सिद्धाश्रमः प्रभासश्च विन्दुर्विन्दु सरोवरः ॥ ६२ ॥ पुष्करः सैंधवो जम्बू नर नारायणाश्रमः ॥ कुरुक्षेत्र पती रामो जाम दग्न्यो महा मुनिः ॥ ६३ ॥ इल्वलात्मज हंताच सुदामा सौख्य दायकः ॥ विश्व जिद्विश्वनाथश्च त्रिलोक विजयी जयी ॥ ६४ ॥ वसन्त मालती कर्षी गदो गद्यो गदा ग्रजः ॥ गुणार्णवो गुण निधिर्गुण पात्री गुणाकरः ॥ ६५ ॥ रंग वल्ली जला कारो निर्गुणः सगुणो बृहत् ॥ दृष्टः श्रुतो भवद्भूतो भविष्यच्चाल्प विग्रहः ॥ ६६ ॥ अनादि रादि रानंदः प्रत्यग्धामा निरंतरः ॥ गुणा तीतः समः साम्यः सम दृष्टिर्विकल्पकः ॥ ६७ ॥ गूढ़ो व्यूढ़ो गुणो गौणो गुणा भासो गुणा वृतः ॥ नित्योक्षरो निर्विकारः क्षरो जस्र सुखोऽमृतः ॥ ६८ ॥ सर्वगः सर्व वितसार्थः सम बुद्धि सम प्रभः ॥ अक्लेद्योच्छेद्य आ पूर्णः शोष्यो दाह्यो निवर्तकः ॥ ६९ ॥ ब्रह्म ब्रह्म धरो ब्रह्मा ज्ञापको व्यापकः कविः ॥ अध्यात्मकोधिभूतश्चाधिदैवः स्वाश्रयाश्रयः ॥ ७० ॥ महा वायुर्महावीरश्चेष्टा रूप तनुस्थितः ॥ प्रेरको बोधको बोधी त्रयो विशंति को गणः ॥ ७१ ॥ अंशांशश्च नरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेशो वतारो भूपरिस्थित: ॥ महर्जनस्तप: सत्यं भूर्भुव: स्वरिति-
त्रिधा ॥ ७२ ॥ नैमित्तिक: प्राकृतिक आत्यंतिकमयोलय: ॥ सर्गो
विसर्ग: सर्गादिर्निरोधो रोधऊतिमान् ॥ ७३ ॥ मन्वंतरावतारश्च
मनुर्मनुसुतोनघ: ॥ स्वयंभू: शांभव: शंकु: स्वायंभुव सहाय-
कृत् ॥ ७४ ॥ सुरालयो देवगिरिर्मेरुर्हेमार्चितोगिरि: ॥ गिरीशो
गण नाथश्च गौरीशो गिरि गह्वर: ॥ ७५ ॥ विन्ध्यस्त्रिकूटो मैनाक:
सुवेल: पारि भद्रक: ॥ पतङ्ग: शिशिर: कंको जारुधि शैल-
सत्तम: ॥ ७६ ॥ कालंजरो बृहत्सानुर्दरी भृन्नंदिकेश्वर: ॥ सन्तान
स्तरु राजश्च मन्दार: पारिजातक: ॥ ७७ ॥ जयंत कृज्जयंतांगो
जयंती दिग्जयाकुल: ॥ वृत्रहा देव लोकश्च शशी कुमुदबांधव: ॥
७८ ॥ नक्षत्रेश: सुधा सिन्धुर्मृग: पुष्प: पुनर्वसु: ॥ हस्तोभिजिच्च
श्रवणो वैधृतिर्भास्करोदय: ॥ ७९ ॥ ऐन्द्र: साध्य: शुभ: शुक्लो
व्यतीपातो ध्रुव:सित: ॥ शिशुमारो देव मयो ब्रह्म लोको विल-
क्षण: ॥ ८० ॥ रामो वैकुण्ठनाथश्च व्यापी वैकुण्ठ नायक: ॥ श्वेत
द्वीपो जित पदो लोका लोका चलाश्रित: ॥ ८१ ॥ भूमिर्वैकुण्ठ देव-
श्च कोटि ब्रह्मांड कारक: ॥ असंख्य ब्रह्मांड पतिर्गोलोकेशो गवां
पति: ॥ ८२ ॥ गोलोक धामधिषणो गोपिका कण्ठ भूषण: ॥
श्रीधार: श्रीधरो लीला धरो गिरिधरो धुरी ॥ ८३ ॥ कुन्तधारी
त्रिशूली चवीभत्सी घर्घरस्वन: ॥ शूल सूच्यर्पित गजो गज चर्म
धरो गजी ॥ ८४ ॥ अंत्रमाली मुण्डमाला व्याली दंडक मण्डलु: ॥
वेताल भृद्भूतसंघ: कूष्मांड गणसंवृत: ॥ ८५ ॥ प्रमथेश: पशुपति-
र्मृडानीशो मृडोवृष: ॥ कृतांत काल संघारि: कूट: कल्पांत
भैरव: ॥ ८६ ॥ षड़ाननो वीर भद्रो दक्ष यज्ञ विघातक: ॥ खर्प
राशी विषाशी च शक्ति हस्त: शिवार्थद: ॥ ८७ ॥ पिनाक टंकार
करश्च लज्झंकार नूपुर: ॥ पण्डितस्तर्क विद्वान्वै वेद पाठी
श्रुतीश्वर: ॥ ८८ ॥ वेदांत कृत्सांख्य शास्त्री मीमांसी कण नाम
भाक् ॥ कणादिर्गौतमो वादी वादो नैयायिकोनय: ॥ ८९ ॥ वैशे-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षिको धर्म शास्त्री सर्व शास्त्रार्थ तत्वगः ॥ वैयाकरण कृच्छन्दो वैयासः प्राकृतिर्वचः ॥ ९० ॥ पाराशरी संहिता वित्काव्य कृन्ना-टकप्रदः ॥ पौराणिकः स्मृति करो वैद्यो विद्या विशारदः ॥ ९१ ॥ अलंकारो लक्षणार्थो व्यंग्य विद्ध्वनिविद्ध्वनिः ॥ वाक्यस्फोटः पदस्फोटः स्फोटवृत्तिश्च सार्थवित् ॥ ९२ ॥ शृंगार उज्ज्वलः स्वच्छोद्भुतो हास्यो भयानकः ॥ अश्वत्थो यव भोजी च यव क्रीतो यवाशनः ॥ ९३ ॥ प्रह्लाद रक्षकः स्निग्धपैल वंश विवर्द्धनः ॥ गताधिरं बरीषांगोवि गाधिर्गाधिनांवरः ॥ ९४ ॥ नाना मणि समा कीर्णो नाना रत्न विभूषणः ॥ नाना पुष्पधरः पुष्पी पुष्प धन्वाप्र पुष्पितः ॥ ९५ नाना चन्दन गन्धाढ्यो नाना पुष्प रसा-र्चितः ॥ नाना वर्ण मयो वर्णो नाना वस्त्र धरः सदा ॥ ९६ ॥ नाना पद्म करः कौशी नाना कौशेय वेषधृक् ॥ रत्न कंवल धारीच धौत वस्त्र समावृतः ॥ ९७ ॥ उत्तरीयधरःपर्णोघनकंचुक संघवान् ॥ पीतोष्णीषः सितोष्णीषो रक्तोष्णीषो दिगम्वरः ॥ ९८ ॥ दिव्यांगो दिव्यरचनो दिव्यलोक विलोकितः ॥ सर्वोपमो निरूपमो गोलोकां की कृतांगणः ॥ ९९ ॥ कृतस्वोत्संग गोलोकः कुण्डली भूत आस्थितः ॥ माथुरो माथुरा दर्शी चलत्खंजन लोचनः ॥ १०० ॥ दधिहर्ता दुग्ध हरो नवनीत सिताशनः ॥ तक्रभुक्तक्रहारीच दधि चौर्य कृतश्रमः ॥ १०१ ॥ प्रभावती वद्ध करो दामी दामो-दरो दमी ॥ सिकता भूमिचारीच वाल केलिर्व्रजार्भकः ॥ १०२ ॥ धूलिधूसर सर्वांगः काम पक्ष धरः सुधीः ॥ मुक्त केशी वत्स वृन्दः कालिन्दी कूल वीक्षणः ॥ १०३ ॥ जल कोलाहली कूली पंक प्रांगण लोपकः ॥ श्रीवृन्दावन संचारी वंशीवट तट स्थितः ॥ १०४ ॥ महावन निवासी च लोहार्गलवनाधिपः ॥ साधुः प्रिय तमः साध्यः साध्वीशो गतसाध्वसः ॥ १०५ ॥ रंग नाथो विट्ठलेशो मुक्ति नाथोऽघनाशकः ॥ सुकीर्तिः सुयशाः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्फीतो यशस्वी रंग रंजनः ॥ १०६ ॥ रागषट्‌ को राग पुत्रो रागिणी रमणोत्सुकः ॥ दीप को मेघ मल्हारः श्रीरागोमाल कोशकः ॥ १०७ ॥ हिन्दोलो भैरवाख्यश्च स्वर जातिस्मरो मृदुः ॥ तालो मान प्रमाणश्च स्वरगम्यः कलाक्षरः ॥ १०८ ॥ शमाश्यामी शतानन्दः शतयामः शतक्रतुः ॥ जागरः सुप्त आसुप्तः सुषुप्तः स्वप्न ऊर्वरः ॥ १०९ ॥ ऊर्जः स्फूर्जोनिर्जरश्च विज्वरो ज्वर वर्जितः ॥ ज्वर विज्ज्वर कर्ताच ज्वर युक्तित्रज्वरो ज्वरः ॥ ११० ॥ जांववांजंवुकाशंकी जंबूद्वीपो द्विपारिहा ॥ शाल्मलिः शाल्मलिद्वीपः प्लक्षः प्लक्ष वनेश्वरः ॥ १११ ॥ कुशधारी कुशः कौशी कौशिकः कुश विग्रहः ॥ कुशस्थलीपतिः काशीनाथो भैरव शासनः ॥ ११२ ॥ दाशार्हः सात्वतो वृष्णिभोजोंधक निवास कृत् ॥ अंधको दुन्दुभिर्द्योतः प्रद्योतः सात्वतां पतिः ॥ ११३ ॥ शूरसेनोनुविषयो भोज वृष्ण्यंधकेश्वरः ॥ आहुकः सर्वनीतिज्ञ उग्रसेनो महोग्रवाक् ॥ ११४ ॥ उग्रसेन प्रियः प्रार्थ्यः प्रार्थो यदु सभापतिः ॥ सुधर्माधिपतिः सत्वं वृष्णि चक्रावृतोभिषक् ॥ ११५ ॥ सभाशीलः सभादीपः सभाग्निश्च सभारविः ॥ सभाचन्द्रः सभा भासः सभादेवः सभापतिः ॥ ११६ ॥ प्रजार्थदः प्रजा भर्ता प्रजा पालन तत्परः ॥ द्वारका दुर्ग संचारी द्वारका ग्रह विग्रहः ॥ ११७ ॥ द्वारकादुःख संहर्ता द्वारका जन मंगलः ॥ जगन्माता जगत्राता जगद्भर्ता जगत्पिता ॥ ११८ ॥ जगद्‌बंधुर्जगद्धाता जगन्मित्रो जगत्सखः ॥ ब्रह्मण्य देवो ब्रह्मण्यो ब्रह्म पाद रजोदधत् ॥ ११९ ॥ ब्रह्मपाद रजः स्पर्शी ब्रह्मपाद निषेवकः ॥ विप्रांघ्रिजल पूतांगो विप्र सेवा परायणः ॥ १२० ॥ विप्र मुख्यो विप्रहितो विप्र गीत महा कथाः ॥ विप्र पाद जलार्द्रांगो विप्रपादोदकप्रियः ॥ १२१ ॥ विप्रभक्तो विप्रगुरुर्विप्रो विप्रपदानुगः ॥ अक्षौहिणी वृतो योद्धा प्रतिमा पंच संयुतः ॥ १२२ ॥ चतुरोंगिराः पद्मवर्ती सांमंतो-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्धूत पादुकः ॥ गजकोटि प्रयायी च रथकोटि जयध्वजः ॥ १२३ ॥ महारथश्चातिरथो जैत्रं स्यंदन मास्थितः ॥ नारायणास्त्री ब्रह्मास्त्री रणश्लाघी रणोद्धटः ॥ १२४ ॥ मदोत्कटो युद्ध वीरो देवा सुर भयंकरः ॥ करि कर्ण मरुत्प्रेजत्कुन्तल व्याप्त कुण्डलः ॥ १२५ ॥ अग्रगोवीरसंमर्दोमर्दल्लो रण दुर्मदः ॥ भटः प्रति भटः प्रोच्यो बाण वर्षीपु तोयदः ॥ १२६ ॥ खड्ग खंडित सर्वांगः षोडशाब्दः षडक्षरः ॥ वीर घोषः क्लिष्ट वपुर्वज्रांगो वज्र भेदनः ॥ १२७ ॥ रुग्णवज्रोभग्न दंडः शत्रु निर्भर्त्सनोद्यतः ॥ अट्टहासः पट्टधरः पट्टराज्ञी पतिः पटुः ॥ १२८ ॥ कलः पटह वादित्रो हुंकारो गर्जितस्वनः ॥ साधु भक्त पराधीनः स्वतंत्रः साधु भूषणः ॥ १२९ ॥ अस्वतंत्रः साधुमयः साधुग्रस्त मना मनाक् ॥ साधु प्रियः साधु धनः साधु ज्ञातिः सुधाघनः ॥ १३० ॥ साधु चारी साधु चित्तः साधु वासी शुभास्पदः ॥ इति नाम्नांसहस्त्रंतं बलभद्रस्य कीर्तितम् ॥ १३१ ॥ सर्व सिद्धिप्रदं नृणां चतुर्वर्ग फलप्रदम् ॥ शतवारं पठेद्यस्तु सविद्या वान्भवेदिह ॥ १३२ ॥ इंदिरांच विभूतिं चाभिजनं रूप मेवच ॥ बल मोजश्च पठनात्सर्व प्राप्नोति मानवः ॥ १३३ ॥ गंगा कूलेथकालिंदी कूले देवालये तथा ॥ सहस्त्रावर्त पाठेन बलात् सिद्धिः प्रजायते ॥ १३४ ॥ पुत्रार्थी लभतेपुत्रं धनार्थी लभते धनम् ॥ बंधात्प्रमुच्यते बद्धो रोगी रोगान्निवर्तते ॥ १३५ ॥ अयुतावर्त पाठेच पुरश्चर्या विधानतः ॥ होम तर्पण गोदान विप्रार्चन कृतोद्यमात् ॥ १३६ ॥ पटलंपद्धतिं स्तोत्रं कवचंतु विधायच ॥ महा मंडल भर्तास्यान् मंडितो मंडलेश्वरैः ॥ १३७ ॥ मत्ते भकर्ण प्रहिता मद गंधेन विह्वला ॥ अलंकरोति तद्द्वारं भ्रमंद्भृंगावली भृशम् ॥ १३८ ॥ निष्कारणः पठेद्यस्तु प्रीत्यर्थं रेवती पतेः ॥ नाम्नोसहस्रं राजेंद्र सजीवन्मुक्त उच्यते ॥ १३९ ॥ सदा वसेत्तस्य गृहे बलभद्रोच्युताग्रजः ॥ महा पातक्यपिजनः पठेन्नाम सहस्रकम् ॥ १४० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छित्त्वा मेरु समं पापं भुक्त्वा सर्वं सुखं त्विह ॥ परात्परं महाराज गोलोकं धाम यातिहि ॥ १४१ ॥

इति श्रीवलभद्र सहस्र नाम स्तोत्र संपूर्ण ॥

इसी बलदेव पंचांग के प्रभाव से बलदेवजी ने सब के साथ पूर्व वर्णित रमण किया था। मुनि बोले कि इस बलदेव चरित्र के पढ़ने और श्रवण करने से मनुष्य चारों पदार्थ सहज ही में पाता है। इस प्रकार वर्णन करि प्राड्विपाक मुनि निज स्थान को चले गये।

इति श्रीगर्गसंहिता अन्तर्गत बाँके पिया अनुवादित श्रीवलदेव खण्ड सम्पूर्ण शुभमस्तु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ विज्ञान खण्ड प्रारंभः

दोहा—ध्यान धारि राधा रमण, जे करुणा रस खान ।
पुनि गुरु पद अम्बुज सुमिरि, लिखौं खण्ड विज्ञान ॥

नृप बहुलाश्व ने पूछा कि हे मुनि वर आप के मुख से श्रीकृष्ण बलदेव चरित्र और लीला श्रवण करि परम आनन्द प्राप्त हुआ अब कृपा करि जिस प्रकार श्रीकृष्ण चरण कमलों में भक्ति हो सो भक्ति मार्ग वर्णन करिये । तब श्रीनारदजी प्रसन्न हो बोले कि तुम धन्य हो कि जगत् में जो सार वस्तु है उसको पूछते हो सो इस विषय में व्यास कथित आख्यान तुम से कहता हौं, चित्त लगाय श्रवण करो । श्रीकृष्ण हरि अपने भुज बल से जीति इन्द्रलोक से सुधर्मा सभा लाये जिसका मंडफ कोटि वैदूर्य मणियों के खंभों से बना था विश्व कर्मा रचित पद्मराग मणि की भूमि थी और सुन्दर चँदोवों में मुक्तों की झालर लग रही थीं तिसके मध्य भाग में रत्न सिंहासन सुशोभित था जिसमें कनक कलश लगे थे और जहाँ गंधर्वनि विद्याधरी शृङ्गार करे नृत्य कर रही थीं पारिजात पुष्पों से महक रहा था जहाँ निर्मल जल से भरे सरोवरों में अनेक भाँति के कमल खिल रहे थे उनपर भ्रमर गुंजार कर रहे थे सभा का विस्तार चालीश कोश का और पाँच योजन ऊँचा था तोरण, ध्वजा पताका से सुसज्जित थी सिंहासन पर बैठने से षट विकार का नाश होकर चतुराई आती थी उस धर्म मय सुधर्मा सभा में जब तक मनुष्य बैठता था तब तक अमर रहता था तिस सभा में छप्पन कोटि यादव उग्रसेन नृपति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहित विराजते थे एक दिन श्याम स्वरूप जटा जूट बाँधे श्रीव्यास मुनि पधारे तब उग्रसेन ने यादवन सहित उठि प्रणाम करि अभिवादन किया और सिंहासन पर बैटारि षोड़शोपचार से पूजन किया और कर जोड़ि पूछा कि हे भगवन् वह उपाय कहिये जिससे दोनों लोक में सुख हो और श्रीकृष्ण भगवान् प्रसन्न हों और उनकी सदा कृपा रहै क्योंकि जहाँ साधु जन के चरण पड़ते हैं तहाँ सकल आनन्द रहिता है और गोविन्द की कृपा रहिती है मेरे पूर्व जन्म की कौन सुकृति थी जिससे यदुकुल में जन्म ले श्रीहरि परवार का सङ्ग तथा आप के दर्शन भये तब व्यास मुनि प्रसन्न हो बोले कि हे राजा तुम पूर्व जन्म में मरुत देव थे और महा यज्ञ करि भगवान् को प्रसन्न किया था जिसके फल से यह सब प्राप्त हो रहा है और अमित ब्रह्माण्ड पति परिपूर्णतम गोलोक पति राधा रमण श्रीकृष्णचन्द्र तुम्हारे भवन में तुम्हारे आज्ञाकारी हो निवास कर रहे हैं जो हम को भी दुर्लभ हैं इस कारण हे भूप तुम धन्य हो राजा उग्रसेन बोले कि कृपा करि कर्म्म के दृढ़ लक्षण वर्णन करिये जिसके कारण जीव इस संसार चक्र में पड़ि भ्रमण कर रहे हैं यह सुनि व्यास मुनि बोले कि सकल जगत् कर्म्म में बँधा है और जीव गण निज निज कर्मानुसार सुख दुख भोगते हैं जे निष्काम शुभ कर्म करते हैं सोई त्रिगुणात्मक माया को तरि मुक्ति प्राप्त करते हैं सत्व गुण कर्म से स्वर्ग, रजो गुण से मर्त्यु लोक और तमोगुण कर्म से नरक मिलता है किन्तु निष्काम कर्म करि प्रेम पथ से श्रीहरि धाम में वास मिलता है। पंचाग्नि तपि आरण्य वास करि योगीजन सप्तर्षि लोक को, सन्यासी वर सत्य लोक को, अष्टांग योगधारी महर्जन लोक को, यज्ञ करने हारे इन्द्र लोक को, दान व्रत करने हारे सूर्य्य और चन्द्र लोक को, तीर्थ सेवी अग्निलोक को, सत्यव्रती वरुणलोक को, शैवी कैलाश को, स्मार्त्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर्ग को, पित्र भक्त पित्र लोक को, प्रजापति कायजन करने हारे दक्षपुर को, भूत प्रेत यक्ष का सेवन करने हारे पापी यमपुर में जाय नरक यातना पाते हैं और वैष्णव श्रीहरि के धाम में जाते हैं। जितने ब्रह्मादिलोक हैं सब पुनरावर्त्ती हैं कर्म के जाल में पड़ि जीव मीन सदृश्य भ्रमण करते हैं इस हेतु कर्म व्यवहार त्यागि ज्ञान, वैराग और प्रेम सहित कृष्ण को निष्काम भाव से भजो उग्रसेन बोले कि पुनरावर्त्ती लोकों की मुझको कामना नहीं श्रीकृष्ण आनन्द कन्द का अच्युत लोक चहिये तिसके पाने का उपाय बताइये तब व्यास मुनि बोले कि ब्रह्माण्ड से परे जो गोलोक है सोई कृष्णचन्द्र का अच्युत स्थान है तहाँ आवागमन का भय नहीं है उस गोलोक के विस्तार का वर्णन नहीं हो सकता तहाँ रवि, शशि, अग्नि इत्यादि का प्रवेश नहीं, न लोभ, मोह, काम क्रोध और वासना है। ऐसा अलख, अकथ, शब्द ब्रह्म जहाँ वाणी और मन पंगु हैं केवल भक्ति ही से प्राप्त होता है। फिर उग्रसेन ने पूछा कि ऐसी भक्ति कितने प्रकार की है। तब पराशर नन्दन व्यास बोले कि कृष्ण भक्ति दो प्रकार की है एक निर्गुण और द्वितीय सगुण, सोई फिर तीन गुण करि के तीन तीन प्रकार की है दर्प द्वेष हिंसा क्रोध युक्त हृदय से जो भक्ति है सो तामसी है, धन विद्या और स्वरूप के अभिमान, मान और अति परिश्रम युक्त भक्ति रजोगुणी है। शौच सहित, द्वेष रहित और मोक्ष हेतु जो भक्ति है वह सात्यकी कहाती है। आरत, अर्थार्थी, जिज्ञासु और ज्ञानी यह चार प्रकार के भक्त होते हैं। यह सब सगुण भक्त कहाते हैं और जो निर्गुण भक्त हैं सो सब तजि केवल सर्वाधार, उदार और दयालु गोपाल का भजन करते हैं ऐसे भक्त सालोक्यादि मुक्ति की भी चाहना नहीं करते और जैसे नृप के निकट बसने से मान का भग्न हो जाता है तैसे सामीप्य मुक्ति भी ग्रहण नहीं करते और स्वामी का स्व-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूप हो जाना भी स्वीकार नहीं करते। केवल दास भाव ही स्वीकार करते हैं और समस्त संकल्प विकल्प त्यागि एक रस कृष्ण ही को भजते हैं और जे निर्गुण उपासी सर्व गुण तजि केवल ब्रह्म ही मानते हैं और जीव ब्रह्म का भेद न मानि अपने को भी ब्रह्म बताते हैं तिनको जैसे स्वाद रहित व्यंजन होता है तैसे ही जगत् का सुख प्राप्त नहीं होता। क्योंकि स्वयं गुण में वर्त्तते भये निर्गुण गृहण करना ऐसा है जैसा ऊँट और बैल को गाड़ी में जोति मंजिल पार करना चाहै। इस कारण निष्काम भक्ति ही योग्य है सो नव प्रकार की है, श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, भजन, अर्चन, पदवन्दन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन। जे कृष्ण चरण कमल के भ्रमर हैं, सब जीवों पर दया रखते, अष्टयाम हरिस्मरण करते, मुख से सदा प्रत्येक समय कृष्ण कृष्ण गोविन्दहरि बोलते, सब वस्तु में कृष्ण को देखते, कभी गाते, कभी नाचते, कभी हँसते और कभी रोते। ऐसे प्रेम में विभोर भक्तों के दर्शन जगत् को कृतार्थ और पवित्र करते हैं। तिनकी रक्षा में श्रीहरि के पंचायुध शारङ्ग, शंख. चक्र, गदा और खड्ग संग रहते हैं, ऐसे भक्तों का संग महातप और सुकृति से मिलता है क्योंकि बिना सतसंग के सांख्य योग, तप, व्रत, दान और यज्ञ से कृष्ण प्राप्ति नहीं होती। फिर नृप उग्रसेन ने पूछा कि दंतवक्र शिशुपालादि ऐसे खल जीवों को किस प्रकार कृष्ण की प्राप्ति हो गई यह बड़ा आश्चर्य है।

तब व्यास मुनि बोले कि संसारी जीव गुणों में बँधे होने से अनिश्चितकाल के वश हो मृत्यु को प्राप्त होते हैं इस हेतु जिस भाव से मुकुन्द का भजन करते हैं उसी भाव से उनकी मुक्ति होती है, स्नेह, काम, भय, क्रोध, सौहृद वैर किसी भाव से श्री हरिस्मरण करने से जीव हरि को प्राप्त होते हैं। दन्तवक्र शिशु-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पालादि वैर भाव से निरन्तर कृष्ण के ध्यान में रहते थे इसी कारण उनकी मुक्ति हो गई लोहा किसी विधि से पारस स्पर्श्य से कंचन हो जाता है और नालियों का जल गंगा में मिलि पवित्र गंगाजल हो जाता है। इसी प्रकार निर्विकार हरि के स्मरण से जीव विकार रहित हो मुक्त हो जाता है। हे नृप उग्रसेन देखो शंख-चूड़, द्विविद, वकी, मधु कैटभ केशी, प्रलंब, धेनुक, रावण, हिरण्याक्षादि ने महा पाप करि जीवों को दुख दिया था किन्तु वैर भाव ही से हरि स्मरण करने पर तरि गये और नारद, असित, पराशर, बाणासुर, संकादि, गाधि, भरत, अर्जुन रुक्मांगद, जनक प्रियव्रत, अम्बरीष, सुग्रीव, अंगद, हनुमान, जाम्ववंत, जटायु, कागभुसुण्ड, प्रह्लाद ध्रुव गुह, ऊधव और सुदामा आदि सब भक्ति भाव से तरि गये, कुन्ती द्रोपदी आदि सौहृद भाव से और कुब्जा एवं वृज गोपिका आदि प्रेम भाव से श्री हरि को प्राप्त भई। कपोत किसी दिशा में भी उड़ कर छतुरी ही पर आय बैठता है भक्ति नसेनी द्वारा चढ़ि हरिधाम गमन करने को सांख्य योग्य और वेद भाव छै कीला समान और कथा छत्र समान है।

फिर उग्रसेन नृप ने पूछा कि संसारी जीव कर्म में बँधे होने से बहुधा गृहस्त ही होते हैं, सो गार्हस्त जीवन को किस उपाय से श्रीहरि भक्ति में व्यतीत करना उचित है।

यह सुनि व्यास मुनि बोले कि प्रथमाचरण सतसंग है पुनि हरि सेवा है सो सुनो श्रीहरि प्रेमी गुरुवंशीय को गुरु करि भगवत् सेवा का अभ्यास करै श्रद्धा और भक्ति सहित उत्तर मुख हरि मंदिर बनाय उसको सब विधि से सजाय निज गुरुदेव से श्रीहरि विग्रह पधराय श्रीगुरु की बताई भई विधि से नित्य सेवा पूजन करै किन्तु श्रद्धा और भक्ति यह दो मूल हैं इनसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहित विना लोन के व्यंजन समान सब फीका है। निर्अभिमान दैन्य भाव से भगवत् सेवा करै और हरिजन वैष्णवों का सत संग करै सदा शौच से रहै हरि चरित्र और हरि नाम का कीर्त्तन करै भगवतोत्सवों को आनन्द मग्न हो श्रद्धा और भक्ति से करै जो भगवत् वेदाध्यन, योग, तप, यज्ञ, व्रत और दान से दुष्प्राप्त है जिसका अन्तवेद भी नहीं पाते सो भगवत् केवल प्रेम भक्ति से सहज ही में प्राप्त होता है। हे नृप, यह परम विज्ञान तुम से वर्णन किया सो तुम पर तत्व श्रीकृष्णचन्द्र की भक्ति प्रेम सहित किया करो और अहर्निश उन्हीं के ध्यान में मग्न रहा करो। यह कहि व्यासजी अपने स्थान को चले गये।

ग़ज़ल

इक कृष्ण ही परिपूर्ण अरु पर तत्व विश्वाधार है।
प्राकृतिक दृश्य ये सत्य, चिद्, आनन्द ही का प्रसार है॥
ऐश्वर्य्य अरु मधुर्य्य उसी श्रीकृष्ण के दो अंग हैं।
इक निराकार स्वरूप है अरु दूसरा साकार है॥
आनन्द का जो स्रोत है राधा उसी का नाम है।
अरु विश्व के कण कण में व्यापक प्रेम उसी का सार है॥
उस प्रेम आकर्षण से है परमाणुओं का यह मिलन।
बस कृष्ण ही के प्रेम का सारा जगत् भंडार है॥
विन दो के है क्रीड़ा असम्भव इसलिये दो रूप धरि।
रस प्रेम अपना चख रहा वो स्वतन्त्र नन्दकुमार है॥
सब नाम, गुण, रस, रूप का वह कृष्ण ही इक धाम है।
न्यारा है प्राकृत गुणों से अरु सब गुण आगार है॥
असुरों का बल बढ़ता है जब करने को दैत्यों का निधन।
भक्तों की रक्षा के लिये रखता वही अवतार है॥
माया उसी श्रीकृष्ण की आज्ञा से करती कार्य्य है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizágtion by eGangotri

अरु कामना जीवों के बधन हेतु उसी का द्वार है॥
तीनों गुणों से हो अलग निष्काम करता कर्म जो।
आवागमन से जगत् के होता वही उद्धार है॥
जप योग, ब्रह्म समाधि धरि पाते हैं जिसको कष्ट से।
वह भक्ति ही से है सुलभ लीला अचिन्त्य अपार है॥
ज्ञाता औ ज्ञेय के मध्य में विज्ञान का स्थान है।
'बाँकेपिया' भक्ती सहित यह सत्य ब्रह्म विचार है॥

इस प्रकार श्रीगर्गाचार्य के शौनकजी से श्रीनारद और बहुलाश्व नृप का सम्वाद वर्णन करने पर शौनकजी ने गर्गाचार्य का पूजन करि विदा किया।

इति श्रीगर्गसंहिता अन्तर गत बाँकेपिया अनुवादित श्रीविज्ञान खण्ड एवं श्रीगर्गसंहिता सम्पूर्ण शुभमस्तु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ पार्षदोद्धार खण्ड प्रारम्भः

दोहा—श्रीराधा रमण स्मरण करि, गुरुपद रज शिरधार।
अन्तिम लीला को लिखौं, खण्ड पार्षदोद्धार॥

यह खण्ड मूल ग्रंथ से प्रथक् (क्षेपक) श्रीमद्भागवत् के आधार पर श्रीकृष्ण लीला पूर्ण करने के हेतु लिखा जाता है। क्योंकि श्रीगर्गाचार्य ने श्रीकृष्णावतार का मूल कारण शिशुपाल और दन्तवक्र वध एवं श्रीकृष्ण के अन्तर्ध्यान की लीला तथा कुछ अन्य मुख्य लीलायें और यदुवंश का क्षय नहीं वर्णन किया। जिससे ज्ञात होता है कि महाभारत होने से प्रथम ही श्रीगर्गमुनि और शौनक सम्वाद हुआ था। अतएव महाभारत सम्बन्धीय और शेष मुख्य लीलायें संक्षेप में लिखी जाती हैं। भगवत् पार्षद जय और विजय को जब संकादिक प्रति अपराध करने से शाप मिला था तब कृपालु और ब्राह्मण वचन का आदर करने हारे श्रीकृष्ण भगवान् ने प्रतिज्ञा करी थी कि इन मेरे पार्षदों का उद्धार उनके तृतीय जन्म में मेरे द्वारा होयगा। इस हेतु जब जय और विजय प्रथम हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु रूप में उत्पन्न हुये तब श्रीवाराह और नृसिंह अवतार धरि उनका संहार किया। फिर द्वितीय जन्म में रावण और कुंभकरण हुये, तब श्रीराम अवतार धरि उनका संहार किया और अंतिम जन्म में जब दन्तवक्र और शिशुपाल रूप में उत्पन्न हुये उस समय इतनी प्रबल दानव शक्तियाँ प्रकट हो गई थीं एवं इतने कार्य करना थे कि बिना पूर्ण शक्ति के कार्य होना असंभव था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसलिये पूर्णतम श्रीकृष्ण ने स्वयं अवतार धारण किया और दन्तवक्र शिशुपाल का वध करि उनको शाप से मुक्त किया।

शिशुपाल के उत्पन्न होने के समय उसके तीन नेत्र और चार भुजा थे, उसके पिता दमघोष के पण्डित और ज्योतिषियों से पूछने पर सब ने बताया कि जिसकी दृष्टि से इस बालक का तृतीय नेत्र और दो भुजा लुप्त हो जायँगे उसी के हाथ से उसकी मृत्यु होयगी। कुछ काल पश्चात् एक दिन किसी उत्सव में शिशुपाल की माता अपने भ्राता वसुदेव के गृह गई, तहाँ श्रीकृष्ण से मिलने पर उनकी दृष्टि से शिशुपाल का तृतीय नेत्र और दो भुजा लोप हो गये। तब माता ने अपने पुत्र शिशुपाल को वध न करने का वरदान श्रीकृष्ण से माँगा। श्रीकृष्ण बोले कि इसके शत अपराध क्षमा करौंगा इससे अधिक अपराध करने पर इसका वध कर देउँगा। तब माता ने विचार किया कि चैद्य और यदु का निकट सम्बन्ध होने से न यह बालक कटु वचन कहैगा और न इसकी मृत्यु होगी। किन्तु शिशुपाल पूर्व जन्मों के वैर से सदा कृष्ण से द्वेष करता रहा और श्रीकृष्ण उसकी मृत्यु के कारण हैं इसलिये उनको काल समझकर सदा उनका चिन्तवन करता रहा। सोई स्मरण उसकी मोक्ष का हेतु हो गया।

इधर जब राजा युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ का निमन्त्रण आया और अक्रूर के मुख धर्मराज का कष्ट सुना तब श्री कृष्ण ने सभा जोड़ि सम्मति लई कि प्रथम उत्पाती राजाओं का संहार किया जावै वा युधिष्ठिर के यज्ञ में सम्मिलित होना उचित है। तब सबने निज निज सम्मति दई तदन्तर श्रीकृष्ण ने एकान्त में ऊधव का मत लै स्थिर किया कि प्रथम यज्ञ में जाने से तहाँ दोनों कार्य सिद्धि हो जावैंगे। यह विचारि बलदेवजी को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारिका की रक्षा हेतु छोड़ि श्रीकृष्ण हस्तनापूर निज फूफी कुन्ती के गृह धर्मराज के यज्ञ में गये और तहाँ यज्ञारंभ समय प्रथम पूजन किस का होय और चरण किसके पखारे जायँ ऐसा प्रश्न उठने पर सहदेव के मति की सब ऋषि मुनियों ने प्रशंसा करी कि श्रीकृष्ण ही सर्वोपरि हैं उन्हीं का प्रथम पूजन किया जावै और जब युधिष्ठिर कृष्ण के चरण धोने लगे तब अभिमानी और बैर भाव से पूर्ण हृदय शिशुपाल ने कृष्ण की निन्दा और कटु वचन कहना आरम्भ किया जिस को श्रवण न करने के हेतु से बहुत लोग उठ कर चले गये, बहुतेरों ने श्रोत-छिद्र बन्द कर लिये और बहुत से शिशुपाल को ताड़ना देने को उद्यत हो गये। तब कृष्ण ने सब को रोका और उसके कहे हुये शत कटु वचन गिनते रहे और जब शत से अधिक कठोर बचन कहा तब श्रीकृष्ण की आज्ञा से सुदर्शन चक्र ने शिशुपाल का शीश काट गिराया और उसका जीवात्मा श्रीकृष्ण के अंग में प्रवेश कर गया। यह देखि उसके पक्षपाती राजा भाजि गये। इस प्रकार शिशुपाल का वध करि और फिर भीमसेन द्वारा मगध देशाधिपति जरासिंध का वध और युधिष्ठिर का यज्ञ पूर्ण कराय एवं यज्ञ में कौरव पाण्डवों का बैर भाव बढ़ाय कृष्ण द्वारिका लौट गये। तहाँ देखा कि राजा शाल्व और प्रद्युम्न से घोर युद्ध हो रहा है क्योंकि रुक्मिणि हरण में अपनी पराजय और पुनि शिशुपाल वध के उपरान्त राजा शाल्व ने शिवजी का तप करि एक ऐसा मायावी सौभ नाम विमान प्राप्त किया था कि जो देवताओं और मनुष्यों से अजेय था उसमें बैठि और समय पाय यादवों के नाश करने का विचार करि द्वारिका पर चढ़ दौड़ा था। तब कृष्ण ने बाणों से उसकी सब माया का ध्वंस करि एक कठिन शर से उसका शीश काट डाला। फिर दंत-बक्र और उसका भ्राता विदूरथ अपने मित्र शिशुपाल का बदला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चुकाने को युद्ध करने आये उनका भी कृष्ण ने कौमोदिकी नाम गदा से संहार किया और दन्तवक्र की जीवात्मा कृष्ण में प्रवेश कर गई। इस भाँति शिशुपाल और दन्तवक्र का वध करि जय विजय पार्षदों का उद्धार किया और वह पुनि द्वारपाल स्वरूप को प्राप्त हुये।

फिर एक दिन करूष देश का राजा पौंड्रक अपने मित्र शिशुपालादि की मृत्यु सुनि मित्र काशीराज से मिलने काशी गया और तहाँ से एक दूत द्वारा द्वारिका में कृष्ण से कहवाय पठाया कि वास्तव में वासुदेव मैं हौं तुम ने जो शंख चक्रादि मिथ्या चिह्न धारण कर लिये हैं उनको एवं अपने वासुदेव नाम को त्याग देउ वा मुझसे युद्ध करो। यह सँदेश द्वारिका में दूत के मुख से सुनि सब सभासद बहुत हँसे। तब कृष्ण ने काशी में आय पौड्रक और काशीराज का संहार किया तदन्तर काशीराज के पुत्र सुदक्षिण ने जब देखा कि उसका पिता और कुण्डल, कौस्तुभमणि, वनमाला और पीत वस्त्र एवं शंख चक्रादि बनावटी चिह्न सहित पौंड्रक के मृतक शव काशी द्वारपर पड़े हैं। तब अति दुखी हो शिवजी का आराधन करने लगा। भोलानाथ श्रीशंकरजी ने प्रसन्न हो जब वर माँगने की आज्ञा दी तब सुदक्षिण ने यदुवंशियों के नाश करने का वर माँगा। शिवजी उसकी दुष्टता देखि बोले कि दक्षिणाग्नि हेतु यज्ञ करो। उस अग्नि द्वारा ब्राह्मण भक्ति शून्य जीवों का संहार होयगा। तब सुदक्षिण ने यज्ञ किया उसमें से कृत्या नाम अग्नि अति कराल रूप धारण करे निकली और द्वारिका में आय द्वारिका को जलाने लगी तब द्वारिका वाशी बहुत भयभीत हो कृष्ण की शरण गये। तब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र को आज्ञा दई और उसने कृत्या को भस्म करि और काशी जाय समस्त काशी नगरी को भस्म कर दिया। फिर एक समय सुदामा नाम अति दरिद्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्राह्मण जो सांदीपन गुरू के गृह कृष्ण का सहपाठी मित्र था अपनी स्त्री के आग्रह से द्वारिका में कृष्ण से मिलने आया तब द्वारपालों से खबर पाय स्वंयं कृष्ण द्वार पर आय बड़े आदर से उसको भीतर ले गये और सिंहासन पर बैठारि निज कर से चरण पखारे और उत्तम भोजन कराये। फिर बोले की भाभी ने जो सौगात हमारे लिये भेजी होय सो देउ और एक पोटली कच्चे तन्दुलकण की जो सुदामा बगल में छिपाये भये थे देख कर खींच लई जीर्ण वस्त्र होने से सब चाँवल बिथुर गये तब कृष्ण ने उनमें से दो मूठी भरि पाय लये और उसके द्वारा सुदामा को दो लोक की सम्पदा प्रदान करदी फिर विदा किया और सुदामा लौट आये देखा कि एक अति रमणीक नगर सुदामा पुरी नाम से सब प्रकार के विभव सहित बस गया है तब निज स्त्री सुशीला से मिलि कृष्ण भक्ति और प्रेम में विभोर होगये और आनन्द से रहने लगे। फिर एक समय वाणासुर जिसने शिव जी का तप करि सहस्र भुजा प्राप्त करी थीं पृथ्वी विजय करि शिवशंकर के ढिग जाय बोला कि आप मुझसे युद्ध करिये तब मेरी सहस्र भुजा सफल होयँगी। ऐसे अभिमान भरे उसके वचन सुनि शिवजी बोले कि द्वापर के अन्त में श्री कृष्ण जी अवतार धारण करैंगे तब तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होयगा। फिर उसको एक ध्वजा देकर कहा कि इसके गिरने पर तुझको सूचना मिलैगी, सो ध्वजा वाणासुर ने अपने मन्दिर पर आरोपण करी और प्रतीक्षा करने लगा। कुछ काल पीछे उसकी कन्या ऊषा प्रद्युम्न पुत्र अनिरुद्ध को स्वप्न में देखि मोहित हो गई और जागने पर विरह से व्याकुल होगई। तब उसकी सहेली कुष्माण्ड नाम मन्त्री की बेटी चित्रलेखा जो चित्रकला एवं मायावी विद्या में निपुण थी चित्र द्वारा परिचय कराय और आकाश मार्ग से द्वारिका में जाय सोये भये अनिरुद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को उठाय लाई और दोनों प्रेम सहित रहने लगे। एक दिन बाणासुर यह समाचार पाय और ध्वजा को गिरी देखि ऊषा के मन्दिर में आया और अनिरुद्ध को पाय उनको कारागार में कर दिया। इधर नारद जी के मुख से सब व्यवस्था सुनि और सेना लै श्रीकृष्ण बाणासी में आये और बाणासुर से भीषण युद्ध हुआ जिसमें शिवजी भी निज भक्त बाणासुर की सहायता करने आये और शीतज्वर का प्रयोग किया तव कृष्ण ने तप्तज्वर से उसको परास्त कर दिया। इस भाँति घोर संग्राम पीछे श्री कृष्ण ने बाणासुर की दो भुजा छोड़ि शेष भुजायें काट डालीं फिर शिवजी ने मेल कराय अनिरुद्ध को ऊषा सहित विदा कराय दिया और द्वारिका में आय दोनों का विवाह हो गया। इस ऊषा अनिरुद्ध के चरित्र श्रवण करने से शीतज्वर का भय नहीं रहता। फिर एक समय नारद जी को भ्रम उत्पन्न हुआ कि एक कृष्ण इतनी स्त्रियों को किस भाँति संतुष्ट करते होंगे। तब द्वारिका जाय कृष्ण की प्रत्येक रानी के भवन में गये और सब भवनों में कृष्ण को कोई न कोई कार्य करते पाय निश्चय किया कि श्रीकृष्ण पूर्ण तम आत्मा राम हैं और सब भ्रम छोड़ि श्री कृष्ण की बहुत स्तुति करी। फिर एक समय एक ब्राह्मण के बालक को मृत्यु से रक्षा करने में जब अर्जुन ने प्रण किया कि यदि बालक न बचाय सका तो चिता में बैठि भस्म हो जाऊँगा और बालक को न बचाय सके। तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन की रक्षा हेतु ब्राह्मण बालक को भूमालोक से लाय दिया। फिर एक समय श्रीकृष्ण की भगनी सुभद्रा को देखि अर्जुन मोहित होगये और सब वृत्तान्त सत्य सत्य अपने मित्र कृष्ण से कह सुनाया। तब श्रीकृष्ण के बताये भये उपाय से अर्जुन ने सुभद्रा का हरण किया और जब श्रीबलदेव जी क्रोधित हो अर्जुन को पकड़ने चले तब कृष्ण ने उनको समझाय बुझाय शान्त कर दिया और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन को बुलाय सुभद्रा के साथ विवाह कराय दिया। फिर जब पापी दुर्योधन ने पाण्डवों को छल से जुए में जीति भरी सभा में एक वस्त्र धारण करे रजस्वला द्रौपदी को दुशासन द्वारा केश खींचते हुये बुलाय नग्न कराने की आज्ञा दई और दुश्शासन वस्त्र खींचने लगा तव द्रौपदी श्रीकृष्ण का स्मरण करि दीन भाव से विकल हो पुकारी—

पद

हे कृष्ण द्वारिका वाशी। है विपति ग्रसित यह दासी॥
हे मुनि मन ज्ञान प्रकाशी। सह राधा कुञ्ज विलासी॥
प्रभु निर्मल प्रेम उपासी। नित कमला करत खवासी॥
टेरत अनाथ अवलासी। हे कृष्ण० ॥ १ ॥
यह कौरव दल अन्याई। तिन सभा अधर्म रचाई॥
गई गुरु जन मत वौराई। बोलत नहिं रहे चुपाई॥
छाई चहुँ ओर उदासी। हे कृष्ण० ॥ २ ॥
दुश्शासन गृह महँ आयो। गहि केश सभा महँ लायो॥
कुरु-पति कुल-धर्म गँवायो। चाहत खल नग्न करायो॥
अब होत तुम्हारी हाँसी। हे कृष्ण० ॥ ३ ॥
पति प्रवल गये मोहिं हारी। सो रहे मौन को धारी॥
दुर्योधन आज्ञा कारी। दुश्शासन करत उघारी॥
तुम जानत हृदय निवासी। हे कृष्ण० ॥ ४ ॥
हे राधा रमण मुरारी। प्रभु दीनन के हितकारी॥
मैं आई शरण तिहारी। संकट तें लेहु उवारी॥
तुम हौ प्रभु करुणा राशी। हे कृष्ण० ॥ ५ ॥
सुनि टेर, वाँके पिय धाये। प्रभु सारी माँहिं समाये॥
अम्बर के ढेर लगाये। लखि कौरव सब खिसियाये॥
रक्षा करी हरि अविनाशी॥ हे कृष्ण० ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्रौपदी का इस प्रकार आर्त्तनाद सुनि श्रीकृष्ण ने उसके चीर को अनन्त कर दिया और दुश्शासन खींचते खींचते हार कर लज्जित हो गया। फिर लाक्षा गृह में अग्नि से भीमसेन की रक्षा करी फिर युधिष्ठिर के वनवास समय दुर्योधन के निमंत्रित करि पठाये भये साठ सहस्र शिष्यों सहित दुर्वासा के शाप से द्रौपदी की टोकनी से एक कण शाक पाय और दुर्वासा सहित शिष्यों का उदर पूर्ण करि युधिष्ठिर की रक्षा करी फिर वसीठी हेतु पाण्डवों के पठाने पर श्रीकृष्ण ने हस्तनापुर जाय धृतराष्ट्र और दुर्योधन को पाण्डवों को केवल पाँच ग्राम देने के लिये बहुत समझाया किंतु जब अभिमानी दुर्योधन न समझा और कृष्ण के बन्दी कर देने की आज्ञा दी तब श्रीकृष्ण ने अपना उग्ररूप दिखाया और उसका निमन्त्रण परित्याग करि विदुर भवन में जाय विदुरानी के प्रेम वश दिये भये केला के छिलके अतिरुचि से पाये। फिर युद्ध के आरम्भ में अर्जुन को मोह ग्रसित देखि * गीतोपदेश करि युद्ध में प्रवृत्त कराया और महाभारत युद्ध में भीष्म और करण से अर्जुन की, द्रोणास्त्र से भीमसेन की और निशा युद्ध में पाण्डवों की रक्षा करी और दुर्योधन के दुश्शासनादि शत भ्राताओं का भीमसेन द्वारा नाश कराय पाण्डवों एवं द्रौपदी की प्रतिज्ञा पूर्ण कराई फिर दुर्योधन भीमसेन के गदायुद्ध में दुर्योधन का वध कराया और अन्त में अश्वत्थामा के शृङ्गी नाम अस्त्र से भीमसेन और गर्भ स्थित अभिमन्यु पुत्र परीक्षित की एवं जयद्रथ वध

* कवित्त—वेदन को सार सर्व शास्त्र को विचार पार्थ, कृष्ण को सम्वाद कर्म, भक्ति, ज्ञान तत्व सनी। पार्थ मोह नाशन को बाँके पिया कृष्ण कही, सत्यवती पुत्र व्यास जीवोद्धार हेतु भनी ॥ गीता गङ्गा गायत्री औ सीता सत्या सरस्वती, ब्रह्म विद्या ब्रह्म वल्ली त्रिसन्ध्या मुक्ति गेहनी। अर्ध मात्रा चिदा नन्दा वेदत्रयी परानन्ता, तत्वार्थ ज्ञान मञ्जरी भवघ्नी भय नाशिनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय अर्जुन की रक्षा करि और युधिष्ठिर को राज सिंहासन पर बैठारि एवं गन्धारी का शाप स्वीकार करि धृतराष्ट्र से भीमसेन को बचाया तदन्तर धर्मराज से अश्वमेध यज्ञ कराय शेष उत्पाती और अधर्मी राजाओं का विनाश किया।

इस प्रकार महाभारत सम्बन्धीय लीला समाप्त करि श्रीकृष्ण द्वारिका लौट गये तदन्तर एक दिन श्रीकृष्ण को एकान्त में पाय ब्रह्माजी ने आय और स्तुति करि विनय करी कि आप के समस्त कार्य पूर्ण हो चुके अब यदि आपकी इच्छा होय तो अपने गोलोक धाम में पधारिये। तब श्रीकृष्ण बोले कि मेरा भी यही विचार है शेष कार्य पूर्ण करि शीघ्र ही आता हौं। फिर निज सखा ऊद्धव को ज्ञानभक्ति का उपदेश दै बद्रिकाश्रम जाने की आज्ञा दी और ऊद्धवजी कृष्ण विरह से कातर और प्रेम वश नेत्रों में जल भरे हुये बद्रिकाश्रम चले गये।

पद

प्रेम वश नयना सजल भये।
वाणी कहत कण्ठ अवरोध्यो अधर कपाट दये॥
ऊद्धव कृष्ण-विरह तें व्याकुल उर उपदेश लये।
हरि आज्ञा शिर धारि बाँके पिय बद्री विपिन गये॥

इसी अन्तर में प्रभास क्षेत्र का कुम्भ उपस्थित हुआ और सब यदुवंशी कुम्भ स्नान हेतु प्रभास क्षेत्र को गये और स्नान दान करि तहाँ आये भये ऋषि मुनियों के दर्शन करने लगे और हरि इच्छा से दुर्वासा ऋषि को समाधिस्थ देखि उनकी परीक्षा लेने को साम्ब के उदर में एक लोह तवा बाँधि और उसको स्त्री वेष बनाय दुर्वासा के ढिग लै गये और पूछा कि यह बधू गर्भवती है इसके पुत्र उत्पन्न होगा वा कन्या। तब दुर्वासा ने अन्तर्दृष्टि से उनका छल जानि उत्तर दिया कि इसके-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गर्भ से वह उत्पन्न होगा जिसके द्वारा समस्त यदुवंश का नाश होयगा। यह सुनि सब महा दुखित हुये और उग्रसेन ढिग जाय सब वृत्तांत कहि सुनाया। तब उग्रसेन ने शोकातुर हो लुहार बुलाय उस लोह को रितवाय डाला और शेष टूक समुद्र में फिंकवाय दिया जिसको तुरन्त एक मत्स्य निगल गया। फिर उसको एक जरा नाम व्याधा ने, जो पूर्वजन्म में वाली नाम वानर था और जिसको श्रीरामचन्द्र ने वृक्ष की ओट से मारा था, अपने जाल में पकड़ा और उसके उदर चीरने पर उस लोह टूक को पाय उससे अपने बाण की गांसी बनाई और रेते भये लोह की दैव इच्छा से समुद्र तट पर पतावर जमि आई। उधर दूसरे दिन अधर्म के प्रभाव से हतवुद्धि हो मदिरा पान किये सब यदुवंशी परस्पर वचन युद्ध करने लगे जिसके परिणाम स्वरूप अस्त्र शस्त्र चलने लगे जब वह भी समाप्त हो गये तब उस उपजी भई पतावर को उखाड़ि उखाड़ि उससे प्रहार करने लगे और एक ही दिवस में सब यदुवंशी समाप्त हो गये। इस लीला के अनन्तर श्रीकृष्ण भगवान् एक पीपल के वृक्ष के नीचे योगासान से बैठे और उनके चरण कमल की धुति को मृग नेत्र अनुमान करि उसी जरा नाम व्याधा ने बाण चलाया। पीछे जब निकट आया तब श्रीकृष्ण को देखि अपने दुष्कर्म से बहुत दुखी हुआ। तब श्रीकृष्ण भगवान् उसको आश्वासन करि बोले कि यह कार्य मेरी लीला से ही हुआ है, तू शोच मतकर। फिर उस वधिक को स्वर्ग पठाय दारुक सूत को आज्ञा दी कि तुम जाय सब समाचार द्वारिका में कहो और उग्रसेन से कहना कि आज रात्रि में द्वारिका समुद्र में बूड़ जायगी इसलिये तहाँ से निकल जावें। यह कहि श्रीकृष्ण भगवान् पृथ्वी भार उतारि और सब आवश्यक कार्य समाप्त करि निज अह्लादिनी शक्ति स्वरूपा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधा एवं गोलोक निवासी लीला सहायक परिकर सहित निज धाम गोलोक को पधार गये। तदन्तर यह समाचार पाय श्री बलदेवजी योग द्वारा अनन्त भगवान् में लय हो गये और देव रूप यदुवंशी देह त्यागि सब निज निज रूप में प्रवेश कर गये और अष्ट पटरानी तथा अन्य स्त्रियाँ निज निज पति का चिन्ह लै और चिता बनाय भस्म हो निज निज अंशी को प्राप्त हो गईं और सेष सोलह सहस्र एक सौ रानियों को साथ लै अर्जुन हस्तनापुर को चले तिनको मार्ग में कोल भीलों ने लूट लिया और अर्जुन का गांडीव धनुष निरशक्ति और निष्तेज हो गया। तब अर्जुन पूर्व सुना हुआ गीतोपदेश का स्मरण करि और शांत हो हस्तनापुर चले गये और प्राकृत दृश्य व्रज भूमि अपने दिव्य गोलोक रूप सहित अब भी उपस्थित है। जहाँ आंशिक रूप से श्रीकृष्ण भगवान् श्रीराधा तथा अन्य लीला परिकर सहित नित्य विहार करके निज रसिक जनों को सदा दर्शनों का सुख देते हैं तथा उनके भावानुसार मनोंर्थ पूर्ण करते हैं।

इति पार्षदोद्धार खण्ड बाँके पिया विरचितं सम्पूर्ण शुभ मस्तु।

छन्द

लीला रहस्य श्रीकृष्ण यह जो सुनैं, पढ़ै गुनै सदा।
तेहि होहिं कर तल चार फल नित रहै श्रीहरि की कृपा॥
गोलोक पुनि व्रज भूमि मथुरा द्वारिका-लीला कथा।
वर्णन करीं संक्षेप में, हैं प्रेम युत भक्तिप्रदा॥
नहिं पार पावत शेष शारद निगम गावत सर्वदा।
सो कृष्ण लीला अतुल महिमा मन्द मति वर्णौं कहा॥
परिपूर्णतम श्रीकृष्ण प्रभु, सह शक्ति निज श्रीराधिका।
करि कृपा देहिं निवास श्रीवृन्दा विपिन तट भानु जा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्नीस सौ सम्वत् छियासी महँ लिख्यो बाँके पिया।
यह भाष्य सह अनुराग लै श्रीगर्गमुनि कृत संहिता ॥

इति श्रीकृष्ण लीला रहस्य बाँके पिया विरचितं संपूर्णं
शुभ मस्तु।

पद

हृदय प्रेम किम रहत दुराये।
नयनन बहत प्रेम जल धारा नेह सिंधु उर बिच अवगाहे ॥
रसिकन मरम रसिक ही जानैं बनत न औरन के मुख गाये।
बाँके पिया देह सुधि बिसरत नन्द नँदन रसिया उर आये ॥

इति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाम संकीर्त्तन

ध्वनि (वारी निंदिया जगाय लाये रे)

पद

माधव मुकुन्द मधु सूदन श्री राधे राधे गोविन्द गोपाल बोलोरे ॥ कृष्ण मुरारी गोवर्द्धन धारी रे निकुञ्जविहारी वनवारी गिरिधारी कृष्ण-नन्द के लाल बोलो रे ॥ १ ॥ दीन बन्धु करुणा रस सागर रे-घट घट वाशी अविनाशी सुख राशी कृष्ण-परम दयालु बोलो रे ॥ २ ॥ बाँके पिय मन मोहन नागर रे-आनन्द कन्द वृजचन्द श्री गोविन्द कृष्ण-जन प्रतिपाल बोलो रे ॥ ३ ॥

इति

विनय

पद—सुन मुरली वारे मेरी तो तेरे लग दौर (रे)
शरण आये को को न उवारयो, जिन लीन्हीं दृढ़ पौरि ॥ (रे १
हौं अति दीन पातिको पामर, सब पतितन शिर मौर ।
दीन दयालु पतित पावन प्रभु, तुम दोउ श्यामल गौर (रे) २
तुमहीं इक जीवन धन मेरे, दूजो कोउ न और ।
बाँके पिया दास को दीजे, चरण कमल में ठौर ॥ (रे) ३

ग़ज़ल

जो स्वाद श्री कृष्ण प्रेम में है किसी से उसका बयाँ हो कैसे ।
हलावते क़न्द वे ज़बाँ के, लबे दहाँ से अयां हो कैसे ॥ १
लगन लगी प्रेम की जहाँ पर, वो कब छिपे मिस्लें मुश्को अम्बर ।
हों जारी आँखों से दोनों सोते, तो रांज़े दिल फिर निहाँ हो कैसे ॥ २
कोई निराकार उसको कहता, कोई उसे लौं पता बताता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बसा हो आँखों में जिसका जिल्वा वो वा निशाँ बे निशाँ हो कैसे ॥ ३
वही खिला है ब सूरते गुलें, चहक रहा है ब शक्ले बुल बुल।
मुक़ीम हो दिल में भक्त के जो, वो बामकाँ ला मकाँ हो कैसे ॥ ४
न हो जो मौसूफ़ तो किसी भी, सिफ़त का होना है ग़ैर मुमकिन।
बग़ैर जिल्वा तुमः के जिल्वा, कहो वो किसका, कहाँ हो कैसे ॥५
खिले हैं गुल बागे दह्र में जो यही बनाते हैं उस सनम को।
नहो जहाँ नख़्लो, बर्गो, गुल्शनें, वहाँ पः फिर बाग़बाँ हो कैसे ॥६
पिया हो प्याला जो प्रेम रस का, तो खौफ़े बाँके पिया हो किसका।
वहमें हों दो दोस्तें जिस जगहें पर क़यामे वहदतें वहाँ हो कैसे ॥ ७

---

(१) हलावते=स्वाद (२) बेज़वाँ=मूक (३) लबे=ओष्ठ (४) दहाँ=मुख (५) अयाँ=प्रकट (६) मिस्ल=समान (७) मुश्को=कस्तूरी (८) अम्बर=अगर (९) राज़=भेद (१०) निहाँ=गुप्त (११) लापता=विना खोज (१२) जिल्वा=रूप (१३) बानिशा=सहित खोज (१४) बे निशा=विना खोज (१५) बसूरते= समान (१६) गुल=फूल (१७) वशक्ले=समान (१८) मुक़ीन=निवासी (१९) बा मकाँ=स्थान धारी (२०) ला मकाँ=विना स्थान (२१) मौसूफ़=विशेष (२२) सिफ़त=विशेषण (२३) ग़ैरमुमकिन=अनहोनी (२४) बग़ैर=विना (२५) जिल्वातुमः=रूपसहित (२६) दह्र=संसार (२७) सनम=प्रीतम (२८) नख्लो=वृक्ष (२९) वर्गो=पत्ती (३०) गुल्शन=बगीचा (३१) बागबाँ=माली (३२) खौफ़=डर (३३) वहम=एकठौर (३४) दोस्त=मित्र (३५) जगह=ठौर (३६) क़यामे=स्थिति (३७) वहदत=एक ही।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
[illegible]निधि, चौक
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi